

# UPSC



www.upsciq.com

मई 2019



टॉपर्स टॉक



बर्निंग इश्यूज़



प्रीलिम्स कैप्सूल



मैन्स आंसर राइटिंग



स्पाइस ऑफ़ द मंथ



**AIR 9**  
CSE 2018



## सूची

टॉपर्स से वार्ता	1	अर्थव्यवस्था	
कला और संस्कृति		1) आरबीआई का डॉलर रुपया स्वेप उपकरण	67
1) भारत के साथ थाईलैंड की सांस्कृतिक जड़ें	3	2) भारत में पर्यटन को बढ़ावा, जीडीपी पर पर्यटन का प्रभाव	69
राजनीति		3) राष्ट्रीय विरोधी मुनाफाखोरी प्राधिकरण	71
1) भारतीय सर्वोच्च न्यायालय की अवकाश पीठ	4	4) पीएसयू टेलीकॉम और उनके मुद्दे	73
2) भारत में न्यायिक नियुक्ति, कार्यकारी बनाम कॉलेजियम	6	5) भारत अमेरिकी व्यापार विवाद	74
3) पुडुचेरी एलजी किरण बेदी पर मद्रास हाई कोर्ट का फैसला	8	6) भारत अमेरिका ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा कर चोरी की जाँच करने के लिए समझौता	76
4) चुनाव का राज्य अनुदान	10	7) चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम क्या है?	78
5) अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता 2019 की रिपोर्ट	13	8) रिकॉर्ड जीएसटी संग्रह, अप्रैल में 1.13 रु ट्रिलियन एकत्र किए गए	80
6) एक्जिट पोल और ओपिनियन पोल में अंतर	15	9) सेबी ने अनुचित ब्रोकर एक्सेस पर एनएसई को जुर्माना लगाया	82
7) चुनाव आयोग ने पश्चिम बंगाल में अनुच्छेद 324 को लागू किया	17	10) SBI ने बड़े बचत खातों की ब्याज दर को रेपो रेट से जोड़ा	84
8) ईसीआई और विवादास्पद राय विवाद	19	11) भारत के विदेशी मुद्रा रिजर्व में वृद्धि	86
9) जीरो पेंडेंसी कोर्ट्स प्रोजेक्ट	21	12) मध्य आय का जाल	88
शासन एवं सामाजिक न्याय		13) पोल्ट्री फार्मिंग के लिए ड्राफ्ट नियमों का विश्लेषण	90
1) अमेरिकी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली	22	14) भारत में चीनी दूध उत्पादों पर प्रतिबंध	91
2) पोक्सो अधिनियम के तहत सहमति और उम्र का अंतर	24	15) पेप्सिको बनाम गुजरात आलू किसान विवाद	92
3) लघु जल उद्यम क्या हैं?	26	16) भारत में शहरी विकास योजनाएँ	94
4) सुप्रीम कोर्ट ने प्रमोशन में SC ST आरक्षण के लिए कर्नाटक कानून को बरकरार रखा	28	17) यूएस ट्रेडिंग ऑर्डर झुकने ग्लोबल ट्रेडिंग सिस्टम	96
5) महिला कार्यबल भागीदारी	30	18) सामाजिक प्रभाव बांड क्या हैं?	99
6) जॉनसन एंड जॉनसन में कैंसर पैदा करने वाला पदार्थ पाया गया	32	19) भारत को एक समर्पित औद्योगिक नीति की आवश्यकता क्यों है?	101
7) 5 मृत्यु दर और कम जन्म वजन के तहत, लैंसेट ग्लोबल हेल्थ जर्नल का विश्लेषण	33	20) RBI ने NBFC के लिए लिक्विडिटी रिस्क मैनेजमेंट फ्रेमवर्क का मसौदा तैयार किया	104
8) ओबीसी के भीतर उप-वर्गीकरण	35	21) नियामक सैंडबॉक्स क्या है?	106
अंतर्राष्ट्रीय संबंध		22) SEBI पैनल ने एफपीआई नियमों को आसान बनाने के लिए समर्थन दिया	108
1) बेल्ट एंड रोड फोरम, 2019	37	23) क्या भारत का GDP डेटा सही है?	110
2) 2015 की संयुक्त व्यापक योजना की व्याख्या	39	24) विश्व व्यापार संगठन अपीलीय शारीरिक विवाद विवाद	112
3) भारत को आर्कटिक परिषद में पर्यवेक्षक के रूप में फिर से चुना गया	41	25) विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक मंदी	114
4) संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार के साथ भारत कटौती संचार	43	26) अर्थव्यवस्था में निजी निवेश को बढ़ावा देना	116
5) चीन के दुर्लभ पृथ्वी खनिज	45	27) पेप्सिको बनाम आलू किसानों का विवाद	118
6) यूएस ने भारत को करेंसी मॉनिटरिंग लिस्ट से हटा दिया	47	28) मोदी 2.0 सरकार के लिए आर्थिक प्राथमिकताएं	120
7) श्रीलंका ने भारत और जापान के साथ पोर्ट डील पर हस्ताक्षर किए	48	29) भारत की व्यापार नीति	122
8) अफ्रीका की बढ़ती जनसंख्या	50	30) अमेरिका ने हुआवे पर प्रतिबंध लगा दिया	124
9) इंडो पैसिफिक क्षेत्र में विकास	52	31) भारत को नई कुक्कुट नीति की आवश्यकता क्यों है?	126
10) रूस का संप्रभु इंटरनेट कानून	54	32) भारत में बैंकिंग संकट, नॉन परफॉर्मिंग एसेट मुद्दा कितना बुरा है?	128
11) आईएमएफ से \$ 6 बिलियन बेलआउट स्वीकार करने के लिए पाकिस्तान	56	सुरक्षा	
12) संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रपति महाभियोग	58	1) 2019 श्रीलंका ईस्टर बम विस्फोट	130
13) नरेंद्र मोदी शपथ ग्रहण	60	2) वैश्विक आतंकवादी के रूप में मसूद अजहर का पदनाम	132
14) अमेरिकी कार्यकारी विशेषाधिकार क्या है?	62	3) भारत में इस्लामिक स्टेट का प्रभाव	134
15) अमेरिका ने ईरान तेल पर भारत के लिए छूट समाप्त कर दी	63	4) भारत 'क्राइस्टचर्च कॉल टू एक्शन' पहल पर हस्ताक्षर किये	136
16) अमेरिका ईरान तनाव	65	5) सरकार ने LTE पर एक और 5 साल के लिए प्रतिबंध बढ़ा दिया	138
		6) जम्मू-कश्मीर में ISIS	140
		7) गढ़चिरौली नक्सल हमला	142
		8) जम्मू-कश्मीर में मानवाधिकार उल्लंघन	144
		9) भारत में ISIS का प्रभाव	146
		10) व्हाइट हाउस ने मुस्लिम ब्रदरहुड को आतंकवादी संगठन घोषित करने के लिए बल्लेबाजी की	148
		11) स्किमिंग क्या है?	150
		12) कश्मीर के मोस्ट वांटेड मिलिटेंट जाकिर मूसा की हत्या	152

## आपदा प्रबंधन

- 1) चक्रवात फानी 154  
 2) नदी परियोजना के लिए कक्ष क्या है 156  
 3) सुरत की आग से सबक 158

## विज्ञान और प्रौद्योगिकी

- 1) मंकीपॉक्स का संक्रमण 160  
 2) IACG द्वारा रोगाणुरोधी प्रतिरोध रिपोर्ट के आर्थिक प्रभाव 162  
 3) लक्षद्वीप द्वीप समूह के लोगों पर आनुवंशिक अध्ययन 164  
 4) विश्व का पहला मलेरिया वैक्सीन 166  
 5) रडार कैसे काम करता है 168  
 6) प्रोजेक्ट ब्लू मून क्या है 170  
 7) प्रोजेक्ट मानव: मानव एटलस पहल क्या है? 172  
 8) पृथ्वी के करीब से गुजरेगा एपोफिस क्षुद्रग्रह 174  
 9) भारत को अपना पहला अपाचे गार्डियन अटैक हेलीकॉप्टर मिला 176  
 10) इसरो द्वारा लॉन्च किया गया RISAT 2B अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट 178  
 11) मेड इन इंडिया एरियल टारगेट ड्रोन अभ्यास डीआरडीओ 180  
 12) जैव ईंधन का उपयोग करने के लिए भारतीय वायुसेना 182  
 13) सेरोटोनिन मस्तिष्क की कोशिकाओं को तनाव से निपटने में मदद करता है। 184  
 14) इसरो के 5 उपग्रहों ने चक्रवात फानी से कई लोगों की जान बचाई 185  
 15) नासा डार्ट मिशन क्या है 187  
 16) रूस से कामोव 31 हेलीकॉप्टर खरीदने वाला भारत 189  
 17) डी.आर.डी.ओ. ने आकाश एम.के. -1 एस मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया 190  
 18) चेहरे की पहचान तकनीक कैसे काम करती है, 192  
 19) स्कॉर्पीन क्लास सबमरीन INS वेला लॉन्च की गई 194  
 20) किलोग्राम की नई परिभाषा 196  
 21) इंटरनेट ऑफ थिंग्स के लिए ब्लॉकचेन 197

## पर्यावरण

- 1) अंटार्कटिका के सम्राट पेंगुइन की आबादी में गिरावट आई 199  
 2) रॉस आइस शेल्फ 200  
 3) हंगुल या कश्मीर स्टैग की तेजी से जनसंख्या में गिरावट 202  
 4) हिमालय में येती के पैरों के निशान 204  
 5) भारतीय बुलफ्रेड अंडमान में शुरूआती आक्रामक व्यवहार करते हैं 206  
 6) इंडोनेशिया नई राजधानी बनाएगा 207  
 7) चीनी प्रतिबंध से प्लास्टिक कचरे का पुनर्निर्माण सशक्त किया जाएगा 209  
 8) ईशाद आम अपने ही प्रदेश में दुर्लभ हो रहा है 211  
 9) लक्षद्वीप कृतक खतरे से लड़ने के लिए बार्न उल्लू की भर्ती करता है 212  
 10) क्या 'रूसी चिनार के बीज कश्मीर में बीमारी का कारण बन सकते हैं? 214  
 11) चिंकारा अभयारण्य को अधिसूचित किया गया। 215  
 12) गुजरात के गिर के जंगल में शाकाहारी जनगणना 216

- 13) भारत, चीन वैश्विक हरियाली के प्रयासों का नेतृत्व करते हैं 218  
 14) संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट- विलुप्त होने के खतरे में एक मिलियन प्रजातियां 220  
 15) सनस्क्रीन क्रीमों द्वारा प्रवाल भित्तियों का हनन 222  
 भूगोल 224  
 1) कंचनजंगा बनाम एवरेस्ट 224  
 स्पाइस ऑफ़ द मंथ 226  
 मुख्य परीक्षा के अभ्यास प्रश्न 238  
 प्रीलिम्स कैप्सूलस 239  
 प्रीलिम्स प्रश्नों के हल 248

## टॉपर्स टॉक

**अखिल भारत रैंक-9 गुंजन द्विवेदी**, लखनऊ की शान, यू.पी. एस.सी. अभ्यर्थियों के लिए प्रेरणा

**साक्षात्कारकर्ता:** हमारे साथ यू.पी.एस.सी. टॉपर में से एक लखनऊ की गौरव, सुश्री गुंजन द्विवेदी हैं, जिन्होंने यू.पी.एस.सी. परीक्षा-2018 में 9वीं रैंक हासिल की है। आज, हम उनसे यू.पी.एस.सी. परीक्षा के दौरान उनकी तैयारी की यात्रा को जानेंगे।

मेरा पहला प्रश्न यह है कि जब आपको ज्ञात हुआ कि आपने 9 वीं रैंक हासिल की है तब आपको कैसा महसूस हुआ?

**गुंजन द्विवेदी:** मुझे पहली बार में विश्वास नहीं हो रहा था कि मैंने एकल अंक रैंक प्राप्त किया है। इसे समझने में ही मुझे 20-30 मिनट लग गए।

**साक्षात्कारकर्ता:** हमें अपने बारे में बताएं, अपनी शैक्षिक पृष्ठभूमि, अपने करियर के बारे में बताएं। आपने किस समय निर्णय लिया कि आप यू.पी.एस.सी. परीक्षा की तैयारी करेंगे?

**गुंजन द्विवेदी:** मेरे पिता एक आईपीएस अधिकारी हैं और इस सेवा का लोगों के जीवन पर एक बड़े स्तर पर प्रभाव पड़ता है, एक संभावित कैरियर के रूप में यह मेरे अंदर पहले से ही प्रवृत्त था।

► **11-12वीं में मेरे विषय वाणिज्य व गणित** थे, परंतु मैंने अपने **भविष्य के कैरियर को ध्यान में रखते हुए स्नातक के विषयों** का चयन करने का फैसला किया। उस समय मैंने दृढ़ता से निर्णय लिया कि मैं सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करूंगी।

► मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलत राम कॉलेज से **राजनीतिक विज्ञान ऑनर्स में स्नातक की उपाधि** प्राप्त की तथा और इस परीक्षा के लिए समाचार पत्र पढ़ने जैसे कॉलेज स्तर से ही छोटी तैयारी की शुरुआत कर दी।

► मैंने **वर्ष 2014 में स्नातक किया और तुरंत ही स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए जाने के बजाय यू.पी.एस.सी. परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी**, जिससे मैं अपना पहला प्रयास वर्ष 2016 में दे सकूँ।

► मैंने **वर्ष 2015 में सामान्य अध्ययन की कोचिंग** की और **दिल्ली में 7-8 महीने तक रही**। परंतु यह महसूस करने पर कि मैं दिल्ली में प्रभावी ढंग से अध्ययन नहीं कर पा रही हूँ, मैं **लखनऊ लौट आई**।

► **अपने पहले दो प्रयासों में मैं प्रीलिम्स परीक्षा भी उत्तीर्ण नहीं कर पाई**, अतः **तीसरे प्रयास में, मेरी तैयारी का प्राथमिक केंद्र प्रारंभिक परीक्षा ही था**।

**साक्षात्कारकर्ता:** इस परीक्षा के विभिन्न चरणों के लिए आपकी क्या रणनीति थी? तथा वैकल्पिक परीक्षा पत्रों के लिए आपकी रणनीति क्या थी?

**गुंजन द्विवेदी:** मेरे गुरु ने सुझाव दिया था कि मुझे अपनी प्रारंभिक तैयारी को मुख्य परीक्षा की तैयारी के साथ करते रहना चाहिए। एक विचार देने के लिए, मैं अपने संसाधनों/पुस्तक सूची को साझा कर रही हूँ, कि मैंने विभिन्न चरणों के लिए किस प्रकार तैयार की।

► मेरा उद्देश्य बेसिक्स से शुरू करना रहा। सर्वप्रथम शुरू से अंत तक और लगभग 4-5 बार हर विषय पढ़ना उद्देश्य था। पहली बार पूरी किताब को पढ़ने में 20-25 दिन लगते हैं। परंतु अगले या बाद के दौर में कम से कम समय लगता है।

### संसाधन/पुस्तिका सूची

#### प्रीलिम्स परीक्षा

- **इतिहास:** कक्षा 6- 12 एन.सी.ई.आर.टी. और तमिलनाडु कक्षा 11 स्टैण्डर्ड पाठ्यपुस्तक
- **भूगोल:** कक्षा 6-12 एन.सी.ई.आर.टी. + पेरियार प्रकाशन की पुस्तकें
- **राजनितिक शास्त्र:** एम. लक्ष्मीकांत + क्लास पाठ्यपुस्तक
- **पर्यावरण:** शंकर आई.ए.एस. नोट्स
- **संस्कृति:** एन.सी.ई.आर.टी. कक्षा 11 ललित कला पुस्तक + नितिन सिंघानिया + क्लास पाठ्यपुस्तक
- **अर्थव्यवस्था:** भारतीय अर्थव्यवस्था के मूल बिंदु + आर्थिक सर्वेक्षण
- **सामयिकी:** कोचिंग संस्थानों द्वारा वार्षिकी संस्करण

**टेस्ट श्रृंखलाएं** विशेष रूप से प्रीलिम्स परीक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह सही उत्तर तक आने के लिए गलत विकल्पों को अस्वीकार करने हेतु रणनीति विकसित करने में आपकी सहायता करता है। इसके अतिरिक्त, यह आपको समय प्रबंधन में भी सहायता प्रदान करता है।

### मुख्य परीक्षा

#### निबंध लेखन

- मुझे एक भी निबंध का अभ्यास करने का समय नहीं मिला।

### सामान्य अध्ययन 1

- **संस्कृति:** एन.सी.ई.आर.टी. कक्षा 11 ललित कला पुस्तक + नितिन सिंघानिया + क्लास पाठ्यपुस्तक
- **आधुनिक इतिहास:** स्पेक्ट्रम + एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकें
- **विश्व इतिहास:** एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकें
- **स्वतंत्रता के बाद:** एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकें
- **सामाजिक मुद्दे:** कक्षा 11-12 की एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकें + मुख्य परीक्षा हेतु कोचिंग संस्थानों का संकलन
- **भूगोल:** कक्षा 11-12 की एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकें

### सामान्य अध्ययन 2

- **राज्यव्यवस्था एवं शासन:** एम. लक्ष्मीकांत + द्वितीय ए.आर. सी.रिपोर्ट + सामयिकी
- **अंतर्राष्ट्रीय संबंध:** सामयिकी

### सामान्य अध्ययन 3

- **अर्थव्यवस्था:** आर्थिक सर्वेक्षण + नीति आयोग का तीन वर्ष एजेंडा
- **सुरक्षा:** येलो बुक
- **पर्यावरण:** शंकर आई.ए.एस. नोट्स + सामयिकी
- **आपदा प्रबंधन:** पी.डी.एफ.



**सामान्य अध्ययन 4**

● **नीतिशास्त्र:** क्लास नोट्स + कोट्स (अनुदीप दुरीशेट्टी नोट्स) इसके अतिरिक्त, **मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज** ज्वाइन किया था।

**साक्षात्कार**

- साक्षात्कार के लिए, मैंने समाचार पत्रों यथा द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस और टाइम्स ऑफ इंडिया को पढ़ा।
- इसके अतिरिक्त, मैंने वर्तमान मुद्दों को समझने के लिए राज्यसभा टीवी तथा स्टडी आई.क्यू. से संदर्भ लिए।
  - वस्तुतः, **स्टडी आई.क्यू. ने मेरे साक्षात्कार की तैयारी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।**

**साक्षात्कारकर्ता:** आपकी यू.पी.एस.सी. परीक्षा की यात्रा में आपके पिता की क्या भूमिका थी?

**गुंजन द्विवेदी:** उन्होंने निरंतर मेरा मार्गदर्शन किया तथा मुझे इस यात्रा के दौरान प्रेरित किया।

**साक्षात्कारकर्ता:** इस यात्रा द्वारा प्रकट निम्न बिंदुओं के दौरान आपने खुद को कैसे संतुलित किया?

**गुंजन द्विवेदी:** यहां मेरे गुरु ने एक महान भूमिका निभाई और मुझे बताया कि नकारात्मकता को अपने अंदर हावी न होने दें।

**साक्षात्कारकर्ता:** यू.पी.एस.सी. परीक्षा में सफल होने हेतु अभ्यर्थी जिसके पास दिल्ली में महंगी कोचिंग का व्यय उठाने वाले संसाधनों की कमी हो, किस प्रकार तैयारी करे?

**गुंजन द्विवेदी:** किसी भी अभ्यर्थी को कोचिंग के लिए दिल्ली आने की आवश्यकता नहीं है। आजकल, यू.पी.एस.सी. की तैयारी हेतु अधिकांश आवश्यक संसाधन ऑनलाइन उपलब्ध हैं और वह भी निःशुल्क। अतः एक बार व्यक्ति द्वारा संसाधनों को एकत्र करने के बाद वह कहीं से भी तैयारी कर सकता है।  
► मैंने साक्षात्कार की तैयारी के लिए स्टडी आई.क्यू. के वीडियो अपने फोन पर देखे थे। इस प्रकार बिना कोचिंग के यू.पी.एस.सी. परीक्षा में सफल होना 100 फीसदी संभव है।

**साक्षात्कारकर्ता:** यू.पी.एस.सी. अभ्यर्थियों के लिए आपके आखिरी शब्द।

**गुंजन द्विवेदी:** अभ्यर्थियों से मैं यहीं कहूंगी कि उम्मीद कभी नहीं केएचओएनआई खोनी चाहिए। खुद पर यकीन रखिये। अपने प्रति ईमानदार रहें। पिछले वर्ष के प्रश्नपत्रों को देखें और यह विचार प्राप्त करें कि यह परीक्षा आपसे क्या उम्मीद करती है। एक बार जब आप इस परीक्षा की मांग को समझ गए, तो निश्चिततः आप सफल होंगे।

**नोट्स**

## कला और संस्कृति

## भारत के साथ थाईलैंड की सांस्कृतिक जड़ें



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 1 || कला और संस्कृति || भारत की संस्कृति || भारतीय संस्कृति का वास

## शीर्षक

भारत के साथ थाईलैंड की सांस्कृतिक जड़ें

## सुर्खियों में क्यों ?

- ▶ थाईलैंड ने अपने नए राजा के लिए एक विस्तृत राज्याभिषेक समारोह आयोजित किया।
- ▶ पिछली बार देश में इस तरह का एक समारोह मई 1950 में राजा भूमिबोल अदुल्यादेज के लिए मनाया गया था, जिन्हें रामा IX के नाम से भी जाना जाता था।

## राज तिलक की भारतीय जड़ें

- ▶ राज्याभिषेक समारोह बौद्ध और ब्राह्मणवादी अनुष्ठानों का एक दिलचस्प मिश्रण है, जो प्रतीकात्मक रूप से राजा को देवराज (भगवान-राजा) घोषित करता है और थाईलैंड में बौद्ध धर्म का धारक है।
- ▶ थाई राजा के राज्याभिषेक समारोह की भारतीय जड़ें उस समृद्ध और दीर्घ संबंध से जुड़ी हैं जो दक्षिण पूर्व एशियाई देशों ने भारत में हिंदू और बौद्ध समुदायों के साथ साझा किया है।
- ▶ थाई राज्याभिषेक समारोह के ब्राह्मणवादी चरित्र को ऐसे सांस्कृतिक आदान-प्रदान के संदर्भ में स्थित होना चाहिए।
- ▶ सियामी लोगों ने देश के राज तिलक के रूप में "राज्याभिषेक" नामक प्राचीन शब्द को संरक्षित किया था, जिसे प्राचीन भारत में राजाओं के राज्याभिषेक के लिए साधारण रूप से संदर्भित किया जाता था।
- ▶ सियामी लोगों के लिए, राजाभिषेक बल्कि एक राजसूय है, जो एक सम्राट के अभिषेक का एक समारोह होता है, और वे यह खोजने के लिए बेहद आतुर हैं कि इसकी कुछ विशेषताएँ उन्हें शतपथ ब्राह्मण में वर्णित वैदिक राजसूय में मिल सकती हैं।

## SE एशिया में भारतीयकरण

- ▶ फ्रांसीसी विद्वान जॉर्ज कोएड्स को पहले व्यक्ति के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया में "भारतीयकरण" की प्रक्रिया का गहन अध्ययन किया था, जिसके तहत उन्होंने 'फारदर इंडिया' शब्द गढ़ा था।

- ▶ व्यापार शायद दो क्षेत्रों के बीच संपर्क का सबसे महत्वपूर्ण कारण था।
- ▶ कोएड्स के अनुसार, व्यक्तिगत व्यापारियों ने शायद दक्षिण पूर्वी एशियाई राज्यों में छोटे राज्य स्थापित किए थे, जिसमें उनके साथ बौद्ध और हिंदू सांस्कृतिक रूपांकन और मूल्य प्रणालियां शामिल थीं।

## ब्राह्मणवादी विशेषताएं

- ▶ राज्याभिषेक समारोह में ब्राह्मणवादी विशेषताओं के अस्तित्व का पता तेरहवीं शताब्दी के सुखोथाई साम्राज्य से लगाया जा सकता है।
- ▶ तब से, देश में बौद्ध धर्म के विकास के बावजूद, ब्राह्मणों की, शाही अदालत में एक महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- ▶ यद्यपि बौद्ध धर्म लोगों का धर्म था, और राजाओं द्वारा संरक्षित था, हिंदू धर्म को अभी भी राजशाही के लिए आवश्यक माना जाता था, जिसने शाही पक्ष का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त किया।
- ▶ अयुथया साम्राज्य की अवधि के दौरान, कंबोडिया और भारतीय प्रायद्वीप से ब्राह्मणों को अदालत में नियुक्त किया गया था।
- ▶ अदालती समारोहों की ब्राह्मणवादी प्रकृति को तब ही नष्ट कर दिया गया था जब 18 वीं शताब्दी में कोनबंग राजवंश के बर्मी सैनिकों द्वारा अयुथया साम्राज्य को बर्बाद कर दिया गया था।
- ▶ राजा राम प्रथम, जिन्होंने 18 वीं शताब्दी के अंत में रतनकोसिन साम्राज्य की स्थापना की, ने राज्याभिषेक समारोह की ब्राह्मणवादी परंपरा को पुनर्स्थापित किया जिसे आज तक देखा जा सकता है।

## अतिरिक्त जानकारी

<https://indianexpress.com/article/research/thailand-king-maha-vajiralongkorns-coronation-puts-spotlight-on-indian-aspects-of-ceremony-5709876/>

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- ▶ भारत और थाईलैंड के द्विपक्षीय संबंधों पर टिप्पणी करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



## राजव्यवस्था

## भारतीय सर्वोच्च न्यायालय की अवकाश पीठ क्या है ?



हिंदी में

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 2 || राजसत्ता || न्यायपालिका || सुप्रीम कोर्ट

## शीर्षक

भारतीय सर्वोच्च न्यायालय की अवकाश पीठ क्या है? पहली बार CJI करेंगे अवकाश पीठ की अध्यक्षता

## सुर्खियों में क्यों ?

► 9 मई 2019 को, सुप्रीम कोर्ट ने 13 मई से अपनी **वार्षिक गर्मियों की छुट्टी** को अधिसूचित किया, और उन **न्यायाधीशों को सूचीबद्ध** किया जो इस अवधि के दौरान आवश्यक मामलों की सुनवाई के लिए अवकाश पीठों में शामिल होंगे।

## अवकाश पीठ

► **विशेष पीठ:** सर्वोच्च न्यायालय की यह अवकाशकालीन पीठ **भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा गठित** एक विशेष पीठ है।

► **सुप्रीम कोर्ट के नियमों, 2013 के आदेश II के नियम 6 के तहत**, भारत के मुख्य न्यायाधीश अवकाश को अवधियों में विभाजित करते हैं और छुट्टी के दौरान ज़रूरी विविध मामलों की सुनवाई और नियमित सुनवाई मामलों के लिए डिवीजन बेंच को नियुक्त करते हैं।

► **2 छुट्टियां:** अदालत हर साल दो लंबे अवकाश लेती है, गर्मियों और सर्दियों में छुट्टी होती है, लेकिन इन अवधि के दौरान यह तकनीकी रूप से पूरी तरह बंद नहीं होती है।

► **तत्काल मामला:** मुकदमा दर्ज करने वाले अवकाश में भी सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकते हैं और अगर अदालत यह फैसला करती है कि याचिका एक "ज़रूरी मामला" है, तो अवकाश पीठ मामले की सुनवाई अपने सामर्थ्य के आधार पर करेगी।

**प्रादेश:** हालांकि "ज़रूरी मामले" की कोई विशिष्ट परिभाषा नहीं है, छुट्टियों के दौरान अदालत आम तौर पर बंदी प्रत्यक्षीकरण, प्रमाणन, निषेध और किसी भी मौलिक अधिकार के प्रवर्तन के लिए वारंट मामलों से संबंधित प्रादेश स्वीकार करती है।

## नियम 6

► **नियम 6**, जो अधिसूचना में उल्लिखित है, कहता है:  
 ► "मुख्य न्यायाधीश गर्मियों या सर्दियों की छुट्टियों के दौरान तत्काल प्रकृति के सभी मामलों की सुनवाई के लिए एक या एक से अधिक न्यायाधीशों की नियुक्ति कर सकते हैं, जो इन नियमों के तहत एक न्यायाधीश द्वारा अकेले में सुना जा सकता है, और जब भी आवश्यक हो, तो उनके द्वारा जिनकी **न्यायाधीशों की खंडपीठ द्वारा सुनवाई आवश्यक** हो, उसी के लिए एक डिवीजन न्यायालय नियुक्त किया जा सकता है, ताकि अवकाश के दौरान तत्काल मामलों की सुनवाई की जा सके।"

## अन्य न्यायालय

► अपने अधिकार क्षेत्र के तहत तत्काल मामलों की सुनवाई करने के लिए, उच्च न्यायालयों और मुकदमों की अदालतों में भी अवकाश खंडपीठ मौजूद हैं।

## महत्व

► **राजनीतिक मामले:** महत्वपूर्ण राजनीतिक मामलों में अवकाश पीठ की महत्ता बढ़ जाती है।

► पिछली गर्मियों की छुट्टी के दौरान, जब कर्नाटक विधानसभा के परिणामों की घोषणा की गई थी, तो कर्नाटक के राज्यपाल द्वारा **भाजपा को आमंत्रित करने के निर्णय को कांग्रेस ने अवकाश पीठ के समक्ष चुनौती** दी थी।

► **तत्काल मामले** पर 18 मई, 2018 को सुनवाई हुई और अदालत ने अगले दिन उस पर औपचारिक चर्चा करने के लिए एक अंतरिम आदेश पारित किया।

► अंतरिम आदेश ने सरकार बनाने से संबंधित घटनाओं को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

► **CJI रंजन गोगोई** स्वयं 25 मई से 30 मई तक अवकाश पीठ के प्रमुख होंगे।

► यह 23 मई को होने वाले लोकसभा चुनाव परिणामों की घोषणा के तुरंत बाद होगा।

## अतिरिक्त जानकारी

## प्रदेश

Type of Writ	Meaning of the word	Purpose of Issue
Habeas Corpus	You may have the body	To release a person who has been detained unlawfully whether in prison or in private custody.
Mandamus	We Command	To secure the performance of public duties by lower court, tribunal or public authority.
Certiorari	To be certified	To quash the order already passed by an inferior court, tribunal or quasi judicial authority.
Prohibition	-	To prohibit an inferior court from continuing the proceedings in a particular case where it has no jurisdiction to try.
Quo Warranto	What is your authority?	To restrain a person from holding a public office which he is not entitled.

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- अवकाश पीठ क्या हैं? उनका महत्व क्या है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## भारत में न्यायिक नियुक्तियां, कार्यकारी बनाम कॉलेजियम



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || राज्यव्यवस्था || न्यायतंत्र || न्यायिक सुधार

### शीर्षक

भारत में न्यायिक नियुक्तियां, कार्यकारी बनाम कॉलेजियम, क्या न्यायपालिका की स्वतंत्रता खतरे में है?

### सुर्खियों में क्यों ?

► सरकार और सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम इन दिनों न्यायिक नियुक्तियों के लिए सिफारिशों पर असहमत दिख रहे हैं।

### हाल की घटनाएँ

► इस संदर्भ में नवीनतम चिंता, झारखंड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश अनिरुद्ध बोस और गुवाहाटी उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ए.एस. बोपन्ना से संबंधित है, जिनके लिए 12 अप्रैल को उच्चतम न्यायालय में पदोन्नति की सिफारिश की गयी थी।

► **सरकार और SC कॉलेजियम के बीच असहमति:** सरकार ने दोनों नामों पर पुनर्विचार की मांग की थी।

► कॉलेजियम ने अब अपनी सिफारिशों को दोहराया है, जिसमें इस बात पर दबाव दिया गया है कि दोनों न्यायाधीशों के खिलाफ उनके "आचरण, क्षमता और अखंडता" के संदर्भ में कुछ भी प्रतिकूल नहीं है और यह भी कि सरकार के साथ सहमत होने का कोई कारण नहीं है।

► वर्तमान प्रक्रिया के तहत, **सरकार अब सिफारिश को स्वीकार करने के लिए बाध्य है।**

A JURY OF JUDGES		
WHAT IS THE COLLEGIUM SYSTEM?	CRITICISMS	
<ul style="list-style-type: none"> <li>• A forum which decides on appointments, transfers (A/Ts) of judges.</li> <li>• Comprised of Chief Justice of India, 4 Supreme Court Judges</li> <li>• President merely approves CJI's choice</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Born from 'Three Judges Cases' which gave primacy to CJI's call on A/Ts</li> <li>• Judiciary gets greater say than Executive on A/Ts</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Administrative burden of checking professional background data</li> <li>• Closed-door affair, lacks transparency</li> <li>• Exclusivity sidelines talented junior judges, advocates</li> </ul>
SOME OF THE CHANGES SOUGHT:		
<ul style="list-style-type: none"> <li>• CJI cannot make unilateral choice</li> <li>• Consulted judges' views need to be in writing</li> <li>• Non-compliance must make CJI choice non-binding</li> <li>• Transfer of Judges reviewable only in case of non-compliance</li> </ul>		

### चिंताएँ

► उच्च न्यायालय की नियुक्तियों के लिए कुछ सिफारिशें, या उच्चतम न्यायालय में होने वाली पदोन्नतियों को, सरकार से अस्वीकृतियां प्राप्त होती हैं।

► ऐसे मामलों में, नामों को मंजूरी देने के लिए कॉलेजियम द्वारा पुनर्विचार की आवश्यकता होती है।

► यदि अनुशंसित लोगों की उपयुक्तता पर गंभीर परामर्श का संकेत है तो यह हमेशा चिंता का कारण नहीं होना चाहिए।

► हालांकि, विशेष प्रत्याशियों की नियुक्ति को रोकने या विलंबित करने के लिए **यदि सरकार आपत्तियों के उद्देश्य एक परोक्ष मकसद अपनाती है** तो, यह एक विवाद का रूप धारण करता है।

► प्रणाली के अंतर्गत, नियुक्तियों में कॉलेजियम प्रणाली को बनाए रखने की सलाह एक प्रमुख चिंता है; और प्रक्रिया के संदर्भ में, विभिन्न उच्च न्यायालयों और निचली अदालतों में रिक्तियों की एक बड़ी संख्या अन्य समस्या है।

► 1 मई तक, सभी उच्च न्यायालयों में कुल रिक्तियों की संख्या 396 है।

► सुप्रीम कोर्ट वर्तमान रिक्तियों को भरने के लिए इच्छुक है।

► **दो और न्यायाधीशों की भी सिफारिश की गयी है**, बंबई उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति बी. आर. गवई और शीर्ष अदालत में नियुक्ति के लिए हिमाचल प्रदेश के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत।

► यदि ये सभी चार सिफारिशें स्वीकार ली जाती हैं, तो अदालत के पास 31 न्यायाधीशों का पूरक होगा।

► अतुल्य भारत 2.0, साहसिक पर्यटन के लिए दिशानिर्देश, भारत पर्यटन मार्ट, स्वच्छ पर्यटन मोबाइल एप्लीकेशन यात्रा और पर्यटन की दिशा में अन्य सरकारी प्रयास हैं।

### समाधान

► **निश्चित समय सीमा:** रिक्तियों को भरने की प्रक्रिया उस सापेक्ष गति पर निर्भर करती है जिस गति के साथ कॉलेजियम नियुक्तियों के लिए प्रस्ताव पेश करता है, आंतरिक विचार-विमर्श के बाद इसकी सिफारिशें करता है, और इसमें सरकार को नामों को संसाधित करने में समय लगता है।

► यह सच है कि रिक्तियों को भरना एक निरंतर और सहयोगात्मक प्रक्रिया है जिसमें कार्यपालिका और न्यायपालिका शामिल हैं, और इसके लिए कोई समय सीमा नहीं हो सकती है।

► **संस्थागतकरण:** हालांकि, यह समय इस भर्ती प्रक्रिया एक स्थायी और स्वतंत्र निकाय बनाने का है।

► कॉलेजियम प्रणाली की ज्ञात अपर्याप्तता और क्या भविष्य में एक नया ज्ञापन आने वाला है, यह एक रहस्य बन गया है और यही कारण है कि क्यों सांविधानिक परिषद के प्रस्ताव को पुनर्जीवित किए जाने की आवश्यकता है — पर्याप्त सुरक्षा उपायों के साथ न्यायपालिका की स्वतंत्रता को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

► संभव है कि समय आ गया है कि एक प्रणालीगत और प्रक्रियात्मक जीर्णोद्धार किया जाए।

### मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

► भारत में न्यायिक नियुक्तियों से संबंधित क्या मुद्दे हैं? क्या कार्यकारी व्यवस्था, कॉलेजियम की प्रधानता को कम कर रही है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## पुडुचेरी के उप-राज्यपाल किरण बेदी पर मद्रास उच्च न्यायालय का फैसला



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || राजव्यवस्था || राज्य सरकार || राज्यपाल

### शीर्षक

पुडुचेरी के उप-राज्यपाल किरण बेदी पर मद्रास उच्च न्यायालय का फैसला, राज्यपाल तथा उप-राज्यपाल की शक्तियां

### सुर्खियों में क्यों ?

- मद्रास उच्च न्यायालय का फैसला आया है कि उप-राज्यपाल **पुडुचेरी में निर्वाचित सरकार के दैनिक कार्यों** में हस्तक्षेप नहीं कर सकती हैं।
- न्यायालय के इस फैसले से कम से कम पुडुचेरी की **उप-राज्यपाल किरण बेदी और मुख्यमंत्री नारायणसामी** के मध्य लंबे समय से चली आ रही बहस बंद होगी। नारायणसामी ने सरकार की कार्यप्रणालियों में दखलंदाजी के लिए उप-राज्यपाल के खिलाफ शिकायत दर्ज की थी। न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि उप-राज्यपाल **निर्वाचन के माध्यम से लोगों द्वारा चुने गए विधानसभा द्वारा लिए गए फैसलों का पालन करेंगी**।

### मामले की पृष्ठभूमि

- **यह मामला वर्ष 2017 का है**, जब राजभवन निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधि **विधायक के.लक्ष्मीनारायणन** ने उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की थी जिसमें कहा गया था कि उप-राज्यपाल अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठकें कर रही हैं और समानांतर सरकार को तत्काल कार्यवाही हेतु आदेश दे रही हैं।
- वर्ष 2017 में कांग्रेस विधायक के. लक्ष्मीनारायणन द्वारा दायर याचिका की अनुमति देते हुए निर्णय सुनाया गया और उप-राज्यपाल की शक्तियों के संबंध में केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा जारी दो स्पष्टीकरणों को खारिज कर दिया गया। न्यायाधीश ने कहा कि संवैधानिक प्रावधानों तथा अन्य कानूनों के संदर्भ के बिना उन वार्ताओं को जारी किया गया था।
- पुडुचेरी की उप-राज्यपाल की कार्यविधियों की **निरंकुश शैली के बारे में शिकायत की**।
- उप-राज्यपाल ने सड़कों पर उतरकर लोगों को हेलमेट पहनने के निर्देश दिए थे, जबकि सरकार ने इसे चरणबद्ध तरीके से लागू करने का सुझाव दिया था।
- सरकार ने उप-राज्यपाल पर **'एकपक्षीय निर्णय'** लेने का आरोप लगाया है।

### उच्च-न्यायालय ने क्या कहा?

- अपने फैसले में, मद्रास उच्च न्यायालय ने कहा कि प्रशासक (पुडुचेरी की उप-राज्यपाल) निर्वाचित सरकार के दिन-प्रतिदिन के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं कर सकती हैं।
- **मंत्रिपरिषद् और मुख्यमंत्री द्वारा लिया गया निर्णय, केंद्र-शासित प्रदेश के सचिवों तथा अन्य अधिकारियों के लिए बाध्यकारी है।**
- केंद्र सरकार, साथ ही प्रशासक (उप-राज्यपाल), लोकतांत्रिक सिद्धांतों की अवधारणा के प्रति सचेत होना चाहिए। अन्यथा, लोकतांत्रिक व गणतंत्र देश की संवैधानिक योजना पराजित हो जाएगी।
- प्रशासक (उप-राज्यपाल) के अधीन संवैधानिक सिद्धांतों अथवा मुद्दे को नियंत्रित करने वाले संसदीय कानूनों को हटाने हेतु प्रशासन को चलाने का कोई 'विशेष अधिकार' नहीं है।
- अंत में न्यायालय ने निर्णय दिया कि **निर्वाचित सरकार द्वारा लिया गया आदेश अंतिम है।**

### राज्यपाल तथा उप-राज्यपाल के कार्य सीमा:

#### राज्यपाल

- भारत में, राज्यपाल राज्य का प्रमुख होता है, जिसे राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाता है।
- पूर्व में, राज्यपाल को केवल एक राज्य के लिए नियुक्त किया जा सकता था, परंतु सातवें संवैधानिक संशोधन, 1956 के बाद उसे एक से अधिक राज्यों के लिए नियुक्त किया जा सकता है।

#### उप-राज्यपाल

- **उप-राज्यपाल एक केंद्र शासित प्रदेश का प्रमुख होता है।**
- **भारतीय संविधान के अनुच्छेद 239 के अंतर्गत, केंद्र शासित प्रदेशों के संबंध में, भारत के राष्ट्रपति को एक राज्य में राज्यपाल के समान स्थिति प्राप्त है।**
- हालाँकि, भारत में, यह पद केवल कुछ केंद्र शासित प्रदेशों में मौजूद है। अन्य केंद्र-शासित प्रदेशों में, प्रशासक नियुक्त किए जाते हैं।
- **प्रशासक के अंतर्गत केंद्र-शासित प्रदेश:** चंडीगढ़, दादर और नागर हवेली, दमन और दीव, लक्षद्वीप हैं।
- **उप-राज्यपाल के अंतर्गत केंद्र-शासित प्रदेश:** दिल्ली, पुडुचेरी, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह हैं।

### केंद्र शासित प्रदेशों का प्रशासन

- भारतीय संविधान का भाग VIII केंद्र शासित प्रदेशों के प्रशासन से संबंधित है।
- केंद्र शासित प्रदेशों का प्रशासन तथा कुछ केंद्र शासित प्रदेशों के लिए स्थानीय विधान-सभा या मंत्रिपरिषद् या दोनों का गठन भारतीय संविधान, 1949 के अनुच्छेद 239 और 239 अ के अंतर्गत परिभाषित किया गया है।
- **इस अनुच्छेद के अंतर्गत निम्न प्रावधान किये गए हैं:**



## भारतीय संविधान का अनुच्छेद 239: "केंद्र शासित प्रदेशों का प्रशासन"

- ▶ प्रत्येक केंद्र शासित क्षेत्र का प्रशासन राष्ट्रपति या संसद द्वारा कानून के अनुसार संचालित किया जाता है, यदि वे उचित समझे तो वे प्रशासक को पदनाम देकर नियुक्त कर सकते हैं।
- ▶ भाग VI में निहित होते हुए भी, राष्ट्रपति राज्य के राज्यपाल को आसन्न केंद्र शासित प्रदेश के प्रशासक के रूप में नियुक्त कर सकते हैं, और जिस केंद्र शासित प्रदेश में राज्यपाल को नियुक्त किया जाता है, वह ऐसे प्रशासक के रूप में मंत्रिपरिषद् में स्वतंत्र रूप से अपने कार्यों का निर्दिष्ट करेगा।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 239 अ "केंद्र शासित प्रदेशों के लिए स्थानीय विधान-सभा या मंत्रिपरिषद् या दोनों का गठन"

- ▶ संसद केंद्र-शासित प्रदेश पुडुचेरी के लिए विधि बना सकती है
- ▶ एक निकाय, निर्वाचित हो या आंशिक रूप से नामांकित अथवा आंशिक रूप से निर्वाचित, केंद्र-शासित प्रदेश के लिए विधानमंडल के रूप में कार्य करेगा, या
- ▶ **मंत्रिपरिषद्**, या दोनों ऐसे संविधान, शक्तियों और कार्यों के साथ, प्रत्येक मामले में, जैसा कि विधि द्वारा निर्दिष्ट किया
- ▶ खंड (1) में उल्लिखित विधि को अनुच्छेद 368 के प्रयोजनों के लिए इस संविधान के संशोधन के रूप में नहीं माना जाएगा कि इसमें कोई भी प्रावधान शामिल है जो इस संविधान में संशोधन करने या संशोधित करने का प्रावधान करता है।

## अनुच्छेद 239 अ और 239 अअ के बीच अंतर

- ▶ **150 पत्रों के निर्णय में**, मद्रास उच्च न्यायालय ने संविधान के अनुच्छेद 239 अ तथा 239 अअ के अंतर्गत पुडुचेरी और दिल्ली की विधान-सभाओं में प्रदान की गई शक्तियों में महत्वपूर्ण अंतर को इंगित किया।
- ▶ **पुडुचेरी के उप-राज्यपाल** केंद्र शासित प्रदेश के दिन-प्रतिदिन के प्रशासन में हस्तक्षेप नहीं कर सकती थी जब तक निर्वाचित सरकार नियुक्त है।
- ▶ चूंकि, अनुच्छेद 239 अअ दिल्ली की विधान-सभा पर कई प्रतिबंध आरोपित करता है, परंतु अनुच्छेद 239 अ के अंतर्गत पुडुचेरी के स्थिति में इस प्रकार का प्रतिबंध स्पष्ट था।
- ▶ **उपर्युक्त अनुच्छेद** केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी के मामले में प्रशासक के ऊपर विधान-सभा के वर्चस्व का प्रतीक है।
- ▶ न्यायाधीश ने कहा कि पुडुचेरी प्रशासन के सचिवों को **सभी आधिकारिक मामलों पर मुख्यमंत्री की अध्यक्षता वाली मंत्रिपरिषद्** को रिपोर्ट करना आवश्यक था।

## निष्कर्ष

- ▶ इस निर्णय के साथ, पुडुचेरी सरकार ने एक बड़ी कानूनी जीत हासिल की है।
- ▶ उच्च न्यायालय ने **स्पष्ट किया कि उप-राज्यपाल की शक्तियां कुछ परिस्थितियों में विवेकाधीन के संबंध में बरकरार है।**
- ▶ अपने अंतिम शब्दों में, न्यायालय ने **स्पष्ट किया कि अधिकारियों को अपने संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति सचेत रहना चाहिए तथा चर्चा व विचार-विमर्श के अधीन कार्य करना चाहिए।**

## अतिरिक्त जानकारी

<https://www.thehindu.com/news/cities/puducherry/bedi-cannot-interfere-in-day-to-day-affairs-of-elected-govt-puducherry-not-like-delhi-hc/article26992263.ece>

## मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- ▶ उप-राज्यपाल और राज्यपाल की शक्तियों के संदर्भ में चर्चा करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## चुनावों के लिये राज्य अनुदान



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || राजव्यवस्था || राजनीतिक गतिशीलता || चुनाव

### शीर्षक

चुनावों के लिये राज्य अनुदान, क्या यह राजनीति से काले धन को समाप्त कर सकता है?

### सुर्खियों में क्यों?

- वित्त मंत्रालय की चुनावी बॉन्ड योजना ने राजनीतिक दलों को दानकर्ता की पहचान का खुलासा किए बिना धन दान करने का एक तरीका बताया है।
- गुमनामी प्रावधान पारदर्शिता का विरोधी है - बॉन्ड केवल "लिखित रूप से" गुप्त हस्तांतरण को सक्षम करते हैं।

### पृष्ठभूमि

- EC ने ज़ब्त किए नकदी, ड्रग्स, शराब आदि : आम चुनाव की घोषणा के बाद केवल 28 दिनों में ही चुनाव आयोग (EC) ने 1,800 करोड़ रुपये की नकदी, ड्रग्स, शराब, कीमती धातु और अन्य सामान ज़ब्त किए हैं।
- इसकी तुलना प्रति उम्मीदवार के खर्च करने की कानूनी ऊपरी सीमा से की जा सकती है - जो 70 लाख रुपए है।
- साधारण अंकगणित से पता चलता है कि ज़ब्त की गई राशि प्रत्येक 543 निर्वाचन क्षेत्रों में से पांच उम्मीदवारों को पूरी तरह से वित्त प्रदान कर सकती है।
- ज़ब्त की गयी राशि को हिमशैल की तुलना में देखा जाये तो वह उसका टुकड़ा भर है। किसी भी चुनाव में होने वाला खर्च, कानूनी ऊपरी सीमा से कई गुना अधिक होने का अनुमान होता है।

### राज्य द्वारा वित्त पोषण

- बेहिसाब धन: चुनावीकरण पर राजकोषीय बाधाएं बेहिसाब धन की समस्या को जन्म देती हैं।
- कुछ समाधान ज़रूर किये गये हैं। हालांकि, इन सभी को जवाबदेही और पारदर्शिता के बीच प्रतिकूल संबंधों के लिए आधार बनाया जाता है।
- वैकल्पिक रूप से, मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के लिए राज्य द्वारा किये जाने वाले वित्त पोषण और कॉर्पोरेट फंडिंग की घोषणा चुनावी प्रक्रिया को निष्पक्ष और अधिक सहभागी बनाने में सहायक हो सकती है।

### विधायी पहल

- **1962 विधेयक:** 1962 में स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कॉर्पोरेट्स को चुनावी चंदा देने से रोकने के लिए एक निजी सदस्य का विधेयक पेश किया था।
- यह तर्क दिया गया था कि चूंकि सभी शेरधारकों को कॉर्पोरेट द्वारा राजनीतिक समर्थन की सदस्यता लेने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए उनकी सहमति के लिए दान की अनुमति देना अनैतिक था।
- वाजपेयी जी ने प्रस्ताव दिया था कि इस तरह के धन से केवल कॉर्पोरेट हित ही ध्यान में रखे जाएंगे।
- जबकि सभी राजनीतिक दलों ने विधेयक का स्वागत किया, लेकिन तत्कालीन सत्ता ने इसके पक्ष में मतदान नहीं किया। इसके बाद फिर कभी ऐसा विधेयक पेश नहीं किया गया।

### RPA प्रावधान

- **RPA 1951 की धारा 29B:** जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 29B के तहत, राजनीतिक दल किसी विदेशी स्रोत को छोड़कर किसी भी व्यक्ति से दान स्वीकार करने के लिए स्वतंत्र हैं।
- इससे दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं -
- पहला, धन राजनीतिक एजेंडे को बाधित करने की क्षमता रखता है;
- दूसरा, विदेशी धन चुनावी अखंडता को कमजोर करता है।
- दोनों ही कारण किसी भी व्यक्ति के लिए समान रूप से मान्य होंगे जो चुनाव प्रक्रिया से अलग हो - यानि कि एक गैर-मतदाता।
- विदेशी-धन से उत्पन्न होने वाली चिंताएं कॉर्पोरेटों से प्राप्त धन पर समान रूप से लागू होती हैं, बस अंतर इतना है कि विदेशी धन एक न्यायिक विदेशी है; गैर-प्रतिभागी होने के कारण कॉर्पोरेट धन, विदेशी है। हालांकि पार्टी हित, कानून के अधिक विस्तार को रोकते हैं।

### RPA प्रावधान

- **RPA 1951 की धारा 29B:** जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 29B के तहत, राजनीतिक दल किसी विदेशी स्रोत को छोड़कर किसी भी व्यक्ति से दान स्वीकार करने के लिए स्वतंत्र हैं।
- इससे दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं -
- पहला, धन राजनीतिक एजेंडे को बाधित करने की क्षमता रखता है;
- दूसरा, विदेशी धन चुनावी अखंडता को कमजोर करता है।
- दोनों ही कारण किसी भी व्यक्ति के लिए समान रूप से मान्य होंगे जो चुनाव प्रक्रिया से अलग हो - यानि कि एक गैर-मतदाता।
- विदेशी-धन से उत्पन्न होने वाली चिंताएं कॉर्पोरेटों से प्राप्त धन पर समान रूप से लागू होती हैं, बस अंतर इतना है कि विदेशी धन एक न्यायिक विदेशी है; गैर-प्रतिभागी होने के कारण कॉर्पोरेट धन, विदेशी है। हालांकि पार्टी हित, कानून के अधिक विस्तार को रोकते हैं।

## चुनावी बॉन्ड

- **गुमनाम:** वित्त मंत्रालय की चुनावी बॉन्ड योजना ने राजनीतिक दलों को दानकर्ता की पहचान का खुलासा किए बिना धन देने का एक तरीका अपनाने की सुविधा दी है।
- पिछले 15 महीनों में इस योजना के माध्यम से दान किए गए 2,722 करोड़ रुपये में से लगभग 95 प्रतिशत सत्तारूढ़ दल के पास गए, जिसमें 31.34 प्रतिशत वोट शेयर शामिल है।
- 68.66 प्रतिशत वोट शेयर के साथ शेष प्रतियोगी केवल 5 प्रतिशत फंड प्राप्त कर सकेंगे।
- योजना के तहत **गुमनामी का प्रावधान** पारदर्शिता का विरोधी है - बांड केवल "लिखित रूप से" गुप्त हस्तांतरण को सक्षम करते हैं।
- **स्टेट बैंक** सुविधाकर्ता के रूप में जमाकर्ता और राजनीतिक पार्टी द्वारा वित्त पोषण के विवरण से अनभिज्ञ रहेगा, जो अप्रत्यक्ष रूप से सत्तारूढ़ दल को अपने प्रतिद्वंद्वियों की निगरानी करने की अनुमति देता है। दूसरों के लिए क्या अज्ञात होगा, यह सत्ता पक्ष द्वारा जाना जा सकता है।

## अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण

- **ब्राजील:** 2015 में, ब्राजील के सुप्रीम कोर्ट ने चुनावों के कॉर्पोरेट वित्तपोषण को असंवैधानिक घोषित किया था।
- अदालत ने यह समझा कि समानता का अधिकार और आंतरिक (विचारधाराओं के बीच उचित विकल्प) और बाहरी (उम्मीदवारों के बीच निष्पक्ष विकल्प) धारणाओं के माध्यम से निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक था।
- क्योंकि अभियान का सारा वित्त का 95 प्रतिशत कॉर्पोरेट से आया था, इसलिए अदालतों को लगा कि प्रकटीकरण मानदंड केवल बाहरी पहलू को संबोधित कर सकते हैं।
- हालांकि कॉर्पोरेट, अभी भी राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को प्रेरित करके, कुछ सामाजिक-आर्थिक विचारधाराओं (कल्याणकारी उपायों, नियंत्रित अर्थव्यवस्था, मजदूरी-श्रम नियमों) को सामूहिक रूप से दबाने में सक्षम होंगे।
- इसलिए, चुनावी मुकाबला कुछ नीतियों को फलने-फूलने नहीं देगा, चाहे जो भी जीते। समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए कॉर्पोरेट फंडिंग को रेखांकित करना महत्वपूर्ण है।

## व्यवहार्य विकल्प

- **राज्य वित्त पोषण:** मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों का राज्य द्वारा वित्त पोषण एक व्यवहार्य विकल्प है।
- **चुनाव उपकर:** यह राज्य वित्त पोषण योजना, प्रत्यक्ष करों पर चुनाव उपकर लगाने के माध्यम से व्यवहार्य होगी।
- वर्तमान जीडीपी-प्रत्यक्ष कर अनुपात और मतदाता संख्या में, 1 प्रतिशत चुनावी उपकर, लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनावों में डाले गए प्रत्येक वोट के लिए 500 रु का अनुदान दे सकता है।
- उपकर के प्रगतिशील होने का कारण यह निर्धन उम्मीदवारों को चुनाव की लागतों में वित्त पोषण के दबाव से मुक्त कर देगा।
- **राष्ट्रीय चुनाव कोष:** राष्ट्रीय चुनाव कोष, चुनाव आयोग द्वारा बनाए रखा जा सकता है, जिसमें इस उपकर से प्राप्त राशि जमा की जा सकती है।
- राजनीतिक दलों को सीधे दान की अनुमति केवल उन व्यक्तियों से दी जा सकती है, जो मतदान के हकदार हैं। जो वोट के हकदार नहीं हैं वे तटस्थ राष्ट्रीय चुनाव कोष में योगदान कर सकते हैं।

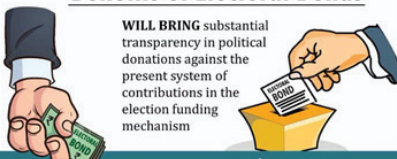
- इस फंड में आने वाला कॉर्पोरेट्स का दान चुनाव प्रक्रिया को विकृत नहीं करेगा, बल्कि इससे लोगों की चुनावी पसंद की अखंडता में सुधार होगा।
- सरकार में अधिक समावेशी एजेंडे को अपनाने के लिए पार्टियों को इच्छुक किया जाएगा क्योंकि अधिक वोटों का अर्थ होगा राज्य द्वारा अधिक वित्त पोषण।
- केवल पहला पद प्राप्त करने की होड़ की तुलना में पार्टियों को पूर्ण संख्या के वोट के लिए भी तैयार रहना होगा। तब लोकतंत्र वास्तव में लोगों का, लोगों के लिए और लोगों के द्वारा होगा।

## अतिरिक्त जानकारी

### चुनावी बॉन्ड

- एक चुनावी बॉन्ड को प्रॉमिसरी नोट (Promissory Note) की तरह एक **धारक इंस्ट्रूमेंट के रूप में अभिकल्पित** किया गया है - वास्तव में, यह एक बैंक नोट के समान होगा जो कि एक धारक की मांग पर देय और ब्याज से मुक्त होगा।
- इसे भारत के किसी भी नागरिक या भारत में निगमित निकाय द्वारा खरीदा जा सकता है।
- बॉन्ड **1,000, रु., 10,000, रु., 1 लाख रु., 10 लाख रु. और 1 करोड़ रु. के गुणक** में जारी किये जाएंगे और भारतीय स्टेट बैंक की निर्दिष्ट शाखाओं पर उपलब्ध होंगे।
- दानकर्ता अपनी पसंद की पार्टी को बांड दान कर सकते हैं जिसे 15 दिनों के भीतर पार्टी के सत्यापित खाते से नकद लिया जा सकता है।
- **जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 (1951 का 43) की धारा 29A** के तहत पंजीकृत हर पार्टी जिसने हालिया लोकसभा या राज्य चुनाव में कम-से-कम एक प्रतिशत मतदान हासिल किया है, उसे भारत निर्वाचन आयोग द्वारा एक सत्यापित खाता आवंटित किया जाएगा। इस खाते के जरिए ही चुनावी बॉन्ड ट्रांजेक्शन किए जा सकते हैं।
- केंद्र सरकार द्वारा जारी किये गए निर्देशों के अनुसार, **बांड प्रत्येक तिमाही की शुरुआत में 10 दिनों की अवधि के तक खरीदने के लिए उपलब्ध होंगे**, अर्थात् जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्टूबर में।
- लोकसभा चुनाव के वर्ष में केंद्र सरकार द्वारा 30 दिनों की अतिरिक्त अवधि निर्दिष्ट की जाएगी।

### Benefits of Electoral Bonds



<b>WILL BRING</b> substantial transparency in political donations against the present system of contributions in the election funding mechanism	<b>HOW MUCH</b> funding comes, what kind of funding it is, the source of funding and where it will be spent will be known clearly
<b>NON DISCLOSURE</b> of recipients will ensure people are free to donate to any political party of their choice	<b>WILL REINFORCE</b> the idea of moving away from a cash system towards clean money which cheque system could not achieve
<b>15 DAYS</b> between buying and selling will ensure they don't turn into a parallel economy	

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► क्या चुनावों में राज्य का धन राजनीति से काला धन खत्म कर सकता है? जांच करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 2 || राजनीति || संवैधानिक ढांचा || मौलिक अधिकार

## शीर्षक

अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग

## सुर्खियों में क्यों?

► अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (यू.एस.सी.आई.आर.एफ.) ने अपनी 2018 की रिपोर्ट में भारत को विशेष संबंध में टीयर 2 देशों में श्रेणीबद्ध किया है।

## कौन प्रकशित करता है?

► अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (यू.एस.सी.आई.आर.एफ.)

• यह द्विदलीय स्वतंत्र संघीय सरकार आयोग है।

## रिपोर्ट

यह रिपोर्ट धार्मिक स्वतंत्रता के हनन में शामिल देशों को, अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम (आई.आर.एफ.ए), 1998 के अंतर्गत दो समूहों में विभाजित करती है:

► टीयर I:

• इन्हें "विशेष संबंध वाले देश (सी.पी.सी.)" के रूप में नामित किया गया है।

- ये राष्ट्र धार्मिक स्वतंत्रता के विशेषतः गंभीर हनन के दोषी हैं।
- राज्य सचिव धार्मिक स्वतंत्रता के ऐसे गंभीर हनन को दूर करने के लिए प्रतिबंध आरोपित कर सकते हैं।

► टीयर II:

- इस वर्ग को पूर्व में ध्यानसूची कहा जाता था।
- सीपीसी के रूप में निर्दिष्ट होने पर अपनी सीमा का अतिक्रमण नहीं किया है।
- हालांकि, धार्मिक स्वतंत्रता का हनन किए जाने और अपनी ऐसी प्रकृति होने के कारण, जिन्हें सरकार लगातार बर्दाश्त करती है, इन पर कड़ी निगरानी रखी जाती है।
- उदाहरण: अफ़ग़ानिस्तान, अज़रबैजान, बहरीन आदि।

## निष्कर्ष: भारत

► नकारात्मक

- वर्ष 2009 से भारत टीयर 2 देश के रूप सूचीबद्ध है।
- भारत में अल्पसंख्यकों के लिए स्थिति पिछले एक दशक में बिगड़ी है।

• हिन्द राष्ट्रवादी समूहों द्वारा चलाए जाने वाले बहुआयामी अभियान जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और विश्व हिंदू परिषद (VHP) नामक संस्थाएं, गैर-हिंदुओं और निम्नजाति के समूहों के बीच धार्मिक हिंसा और उत्पीड़न को बढ़ावा देने के साथ ही उन्हें अलग करने के लिए महत्वपूर्ण रूप से उत्तरदायी होते हैं।

• भारत में "वर्ष 2018 में धार्मिक स्वतंत्रता की स्थिति समग्र रूप से बिगड़ी" है।

• भारत में, धर्म तथा राजनीति को पृथक करना कठिन है, यह एक ऐसी रणनीति ऐसे लोगों के लिए बनाई गई है जो जानबूझकर जो कुछ धार्मिक समुदायों के अधिकारों के विरुद्ध भेदभाव तथा उन्हें प्रतिबंधित करना चाहते हैं।

• यू.एस.सी.आई.आर.एफ. रिपोर्ट यह दर्शाती है कि धर्मांतरण-रोधी कानून का प्रयोग उन मुस्लिमों और ईसाइयों के खिलाफ किया जाता है, जो धर्मान्तरण में शामिल हैं।

► सकारात्मक:

• पूर्णतः बिगड़ी हुई स्थिति के बावजूद इसमें "सकारात्मक घटनाक्रम" शामिल थे।

• पिछले दिसंबर से गृह मंत्री राजनाथ सिंह के अवलोकन द्वारा यह ज्ञात होता है कि वर्ष 2017 के स्तर के अपेक्षाकृत वर्ष 2018 में सांप्रदायिक हमलों में 12% की गिरावट आई, अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय के बजट में 12% की वृद्धि हुई और हिंसा को रोकने के लिए 11-सूत्रीय योजना के लिए सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय लिया।

## यू.एस.सी.आई.आर.एफ. का पक्ष

उनके अनुसार जो सरकारें अपनी कार्यावाहियों पर रोक लगाती हैं, जब वे उचित रूप से स्थगित की जाती हैं तो अक्सर आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप को रोक देती हैं।

## भारत का पक्ष

भारत सरकार इस रिपोर्ट के निष्कर्षों से सहमत नहीं है।

## विश्वसनीयता

► यूएससीआईआर के भीतर मतभेद करने वाला स्वर:

• आयोग की अध्यक्ष टेंजिन दोर्जी ने इस बात को लेकर चिंता व्यक्त की है कि भारत की धार्मिक स्वतंत्रता 2018 में लगातार गिरावट आई है। उनकी राय में "भारत एक मजबूत लोकतांत्र और न्याय प्रणाली के साथ एक खुला समाज है।" उनका मानना है कि भारत में धार्मिक सद्भाव विद्यमान है।

• भारतीय मूल की शिकागो की एक नई आयोग की सदस्य अनुरिमा भार्गव ने लिखा है कि इस आयोग को आधिकारिक तौर पर एक दशक में भारत आने का अवसर नहीं मिला था और उसने भारत के साथ मजबूत जुड़ाव व लाभकारी बातचीत की मांग की थी।

## यह रिपोर्ट चिंता का विषय क्यों नहीं होना चाहिए?

► इस आयोग के अंदर जनित असंतोष दर्शाता है कि यह रिपोर्ट, जिसने भारत को एक दशक तक टियर -2 के तहत रखा है, हमारी समावेशी संस्कृति की जमीनी हकीकत को नहीं दर्शाती है।

उदाहरण के लिए

- इस आयोग के **अध्यक्ष 30 वर्षों तक भारत में एक तिब्बती शरणार्थी के रूप में रह चुके हैं, और उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर भारत की समावेशी संस्कृति के समर्थन में उन्होंने के मजबूत कदम उठाया है।**

## यह रिपोर्ट चिंता का विषय क्यों है?

► धर्मनिरपेक्षता और सहिष्णुता हमारे संविधान का अभिन्न अंग है, भारत नागरिक एवं राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आई.सी.सी.पी.आर.) का एक हस्ताक्षरकर्ता राष्ट्र है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र होने के परिणामस्वरूप भारत ने हमेशा विश्वभर में सहिष्णुता तथा समावेशिता का समर्थन किया है।

- परंतु **प्रचलित धार्मिक असहिष्णुता**, अभद्र भाषा आदि हमारे इरादे तथा अभ्यास के बीच एक बड़ी खाई दर्शाते हैं।

- **राजनीतिक दल धार्मिक असहिष्णुता** (जैसे भीड़ द्वारा हत्या) के प्रति इतने सहिष्णु हो गए हैं कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय को सरकार के मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा और उसे यह निर्देशित करना पड़ा कि ऐसी क्रूरता के लिए दंडित करने हेतु कानून बनाए।

- यहां तक कि एन.एच.आर.सी. ने नफरत फैलाने तथा सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने के लिए कई राज्यों की सरकारों (विशेषतः यूपी.) की आलोचना की है।

- **आर.ओ.पी. (RoP) अधिनियम, 1951 की धारा 123 (3) पर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बावजूद**, ऐसे मामले सामने आए हैं, जहां उम्मीदवारों ने धर्म के आधार पर लोगों को संगठित करने के लिए कुछ प्रयास किए हैं।

## आगे की राह

► हालाँकि, यह रिपोर्ट पूर्ण वास्तविकता को प्रतिबिंबित नहीं करती है, फिर भी यह सच है कि हमारे समाज में धार्मिक असहिष्णुता अभी भी विद्यमान है।

- राजद्रोह, हत्या, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर रोक लगाना, पत्रकारों और लेखकों की हत्या, जैसी घटनाएँ दर्शाती हैं कि हमने अभी तक भी एक सम्मिलित समाज के उन उद्देश्यों को हासिल नहीं किया है जिसकी महत्वाकांक्षा हमारे देश की नींव रखने वाले देश के पिताओं ने की थी।

- **एक समाज के रूप में हमें एक सच्चा समावेशी व विविधतापूर्ण समाज बनने का प्रयास करना चाहिए।** इसके साथ-साथ हमारे शासी निकाय विशेष रूप से पुलिस को बिजॉय इमैनुएल मामले, 1986 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन करने की आवश्यकता है: "हमारी परंपरा सहिष्णुता सिखाती है; हमारा दर्शन सहिष्णुता का उपदेश देता है; हमारा संविधान सहिष्णुता का पालन करता है। हमें इसे खोना नहीं चाहिए।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## EXIT और ओपिनियन पोल में क्या है फर्क ?



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || राजनीतिक || राजनीतिक गतिशीलता || चुनाव

### शीर्षक

एग्जिट पोल और ओपिनियन पोल में अंतर

### सुर्खियों में क्यों?

17वां लोक सभा चुनाव, 2019

### एग्जिट पोल क्या है और यह जनमत सर्वेक्षण से कैसे अलग है?

#### ► ओपीनियन पोल (जनमत सर्वेक्षण):

- जनमत सर्वेक्षण, चुनाव से संबंधित मुद्दों पर मतदाताओं के विचारों को जानने के लिए एक पूर्व-चुनाव सर्वेक्षण है।
- सर्वेक्षण के नमूने** में यह शामिल होता है कि कौन वोट दे सकता और कौन नहीं।

#### ► एग्जिट पोल:

- लोगों द्वारा मतदान करने के तुरंत बाद एग्जिट पोल आयोजित किया जाता है, और राजनीतिक दलों और उनके उम्मीदवारों के समर्थन का आकलन करता है।
- सर्वेक्षण के नमूने में केवल वे लोग शामिल होते हैं जिन्होंने वास्तव में चुनाव में मतदान किया है।**

### चुनाव आयोग (EC) बहु-चरण चुनाव के दौरान जनमत सर्वेक्षण और एग्जिट पोल मीडिया कवरेज का विरोध क्यों कर रहा है?

- दोनों प्रकार के चुनाव विवादास्पद हो सकते हैं यदि उन्हें संचालित करने वाली एजेंसी को पक्षपाती माना जाता है।
- आलोचकों का कहना है कि इन सर्वेक्षणों के अनुमान, पूछे गये प्रश्नों की पसंद, शब्दावलियों और समय से और तैयार किए गए नमूने की प्रकृति से भी प्रभावित हो सकते हैं।
- राजनीतिक दल अक्सर यह आरोप लगाते हैं कि कई मत और एग्जिट पोल अपने प्रतिद्वंद्वियों से प्रेरित और प्रायोजित होते हैं, और मतदाताओं पर चुनाव में एक विकृत प्रभाव डाल सकते हैं, बजाय इसके कि वे जनता की भावनाओं या विचारों को प्रतिबिंबित करें।**

### चुनाव आयोग ने पहली बार इस तरह के सर्वेक्षणों पर अंकुश लगाने का प्रयास कब किया?

#### ► दिसंबर 1997:

- चुनाव आयोग** ने एग्जिट और ओपिनियन पोल पर राजनीतिक दलों के साथ अपना पहला परामर्श पेश किया।
- बैठकों में, अधिकांश राष्ट्रीय और राज्य दलों के प्रतिनिधियों ने कहा कि ये चुनाव अवैज्ञानिक थे, और नमूनों के आकार व प्रकृति में पक्षपात से ग्रसित थे।

### 11 जनवरी 1998

- गुजरात, हिमाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैंड और त्रिपुरा में आगामी लोकसभा चुनावों और विधानसभा चुनावों के मद्देनज़र, चुनाव आयोग ने संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत दिशा-निर्देश जारी किए, अखबारों और समाचार चैनलों को जनमत सर्वेक्षण के एग्जिट पोल व ओपीनियन पोल को परिणाम घोषित करने से पहले कुछ समय के लिये प्रकाशित करने से रोक दिया गया।
- चुनाव आयोग ने यह भी कहा कि एग्जिट और ओपिनियन पोल के नतीजों को आगे बढ़ाते हुए, समाचार पत्रों और चैनलों को निम्नलिखित तथ्यों को प्रस्तुत करना चाहिए:

- चुनावी आकार का नमूना**
- मतदान पद्धति का विवरण**
- त्रुटि की आशंका**
- मतदान एजेंसी की पृष्ठभूमि।**

### चुनाव आयोग के दिशानिर्देशों पर मीडिया की क्या प्रतिक्रिया है?

- मीडिया** की ओर से कड़े विरोध प्रदर्शन हुए, जिन्होंने तर्क दिया कि दिशानिर्देशों ने उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 19) का उल्लंघन किया।
- चुनाव आयोग के आदेश को सर्वोच्च न्यायालय और दिल्ली और राजस्थान के उच्च न्यायालयों में चुनौती दी गई थी।
- उच्चतम न्यायालय ने आयोग के दिशानिर्देशों पर रोक नहीं लगाई, जिससे 1998 के लोकसभा चुनाव देश के एकमात्र ऐसे चुनाव थे, जिसमें एक महीने के लिए ओपीनियन और एग्जिट पोल दोनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

### मौजूदा चुनाव आयोग का प्रतिबंध एग्जिट पोल तक ही सीमित क्यों है?

#### ► 1999:

- चुनाव आयोग ने इन दिशानिर्देशों को फिर से लोकसभा चुनाव से पहले लागू करने की कोशिश की।
- चुनाव आयोग के इस आदेश पर शीर्ष अदालत की संविधान पीठ ने सुनवाई की, जिसमें पाया गया कि चुनाव आयोग वैधानिक मंजूरी के अभाव में ऐसे दिशानिर्देशों को लागू नहीं कर सकता है।

#### ► 2004:

- चुनाव आयोग ने छह राष्ट्रीय दलों और 18 राज्य दलों के समर्थन के साथ कानून मंत्रालय से संपर्क किया और आयोग द्वारा निर्दिष्ट अवधि के दौरान एग्जिट और ओपिनियन पोल दोनों पर प्रतिबंध लगाने के लिए RoP अधिनियम, 1951 में संशोधन की मांग की।
- सिफारिश को भाग में स्वीकार किया गया था।



## ► 2010:

• अधिनियम में धारा 126 (A) की शुरुआत के माध्यम से केवल एग्जिट पोल पर प्रतिबंध लगाए गए थे।

## ► 2013:

• चुनाव आयोग ने चुनाव पूर्व जनमत सर्वेक्षणों को भी प्रतिबंधित करने की अपनी मांग को पुनर्जीवित करने के लिए राजनीतिक दलों के साथ विचार-विमर्श किया।

• यह सुझाव कानून मंत्रालय को भेजा गया था, लेकिन अभी तक इस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

## ► 2017:

• दैनिक जागरण ऑनलाइन संपादक को IPC (लोक सेवक द्वारा विधिवत आदेश देने के लिए अवज्ञा) की धारा 188 के तहत यूपी एग्जिट पोल प्रकाशित करने के लिए गिरफ्तार किया था।

### अन्य देश ओपिनियन पोल और एग्जिट पोल से कैसे निपटते हैं?

► यूरोपीय संघ के 16 देश मतदान के समय की रिपोर्टिंग पर प्रतिबंध लगाते हैं, साथ ही मतदान के समय यानि पूरे महीने से लेकर मतदान के दिन 24 घंटे पहले तक प्रतिबंध लगाया जाता है।

► फ्रांस द्वारा 1977 में लगाए गए 7-दिवसीय ब्लैकआउट को एक अदालत के आदेश द्वारा पलट दिया गया, जिसने इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन माना।

► मतदान के दिन से 24 घंटे पहले तक फ्रांसीसी प्रतिबंध कम कर दिया गया है।

► ब्रिटेन में, जनमत सर्वेक्षणों के प्रकाशन पर कोई प्रतिबंध नहीं है; हालांकि, मतदान समाप्त होने तक एग्जिट पोल के परिणाम प्रकाशित नहीं किए जा सकते।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## देश में पहली बार ARTICLE 324 का उपयोग

BY PRASHANT DHAWAN

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || राजनीतिक || राजनीतिक गतिशीलता || चुनाव

### शीर्षक

अनुच्छेद 324

### सुर्खियों में क्यों?

► चुनाव आयोग ने कोलकाता में भाजपा और टीएमसी के कार्यकर्ताओं द्वारा सड़क पर हिंसा के बाद पश्चिम बंगाल में चुनाव प्रचार के लिए अनुच्छेद 324 के तहत अपनी शक्तियों को लागू किया है।

### ईसीआई (भारतीय चुनाव आयोग) ने इस अनुच्छेद के तहत क्या कार्रवाई की?

- अभियान को नियत समय अवधि से पहले समाप्त कर दिया गया।
- राज्य के गृह सचिव और एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी को हटा दिया गया।

### अनुच्छेद 324 के तहत ईसीआई में निहित शक्ति

- संविधान के अनुच्छेद 324 में देश भर में स्वतंत्र और निष्पक्ष मतदान सुनिश्चित करने के लिए भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई) की विभिन्न शक्तियों और जिम्मेदारियों का वर्णन किया गया है।
- यह चुनाव आयोग को "चुनावों के अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण" की शक्ति देता है।
- संविधान "चुनाव की दिशा, नियंत्रण और निर्देशन" शब्दों को परिभाषित नहीं करता है।

### संविधान में अनुच्छेद 324 डालने के पीछे संविधान सभा की मंशा

- संविधान सभा मुख्य रूप से चुनाव आयोग की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने से संबंधित थी।
- डॉ. अंबेडकर ने 15 जून, 1949 को इस अनुच्छेद की शुरुआत करते हुए कहा था कि "पूरी चुनाव मशीनरी एक केंद्रीय चुनाव आयोग के हाथों में होनी चाहिए, जो अकेले रिटर्निंग अधिकारियों, मतदान अधिकारियों और अन्य को निर्देश जारी करने का हकदार होगा।"

### क्या अनुच्छेद 324 का प्रयोग एक अभूतपूर्व कृत्य था

► चुनाव आयोग ने अनुच्छेद 324 को लागू किया है, ताकि पहली बार पश्चिम बंगाल में संसदीय चुनावों से पहले प्रचार अभियान में कटौती की जा सके।

### अनुच्छेद 324 पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी

- एन पी पोन्नूस्वामी (1952): यहां तक कि अदालतों को भी चुनावी प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। इसने 2002 में भी इस दृष्टिकोण को दोहराया।
- मोहिंदर सिंह गिल और ए. एन. आर. बंनारजी और अन्य (1977):

### a ईसीआई को शक्ति प्रदान करता है

► अनुच्छेद 324 "कानून द्वारा अप्रभावित क्षेत्रों में संचालित होता है और 'अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण' के साथ-साथ 'भी चुनावों के सञ्चालन में' सबसे व्यापक शब्द हैं।"

► अनुच्छेद 324 ईसीआई में राष्ट्रीय और राज्य चुनावों के लिए पूरी जिम्मेदारी देने वाला एक पूर्ण प्रावधान है "और इसलिए, उस कार्य का निर्वहन करने के लिए आवश्यक शक्तियाँ प्रदान करता है।"

► संविधान के निर्माताओं ने "आयोग की अवशिष्ट शक्ति के प्रयोग की गुंजाइश इसके स्वयं के अधिकार में छोड़ दी थी, संविधान के एक निर्माता के रूप में, विभिन्न प्रकार की परिस्थितियाँ समय-समय पर उभर सकती हैं ..."

► अनुच्छेद 324 ईसीआई में राष्ट्रीय और राज्य चुनावों के लिए पूरी जिम्मेदारी देने वाला एक पूर्ण प्रावधान है "और इसलिए, उस कार्य का निर्वहन करने के लिए आवश्यक शक्तियाँ प्रदान करता है।"

► संविधान के निर्माताओं ने "आयोग की अवशिष्ट शक्ति के प्रयोग की गुंजाइश इसके स्वयं के अधिकार में छोड़ दी थी, संविधान के एक निर्माता के रूप में, विभिन्न प्रकार की परिस्थितियाँ समय-समय पर उभर सकती हैं ..."

► कानून निर्माता भविष्यद्वक्ता नहीं, बल्कि व्यवहारवादी हैं, और इसलिए अनुच्छेद 324 में अप्रत्याशित घटनाओं से निबटने के लिए व्यापक प्रावधान किया गया है

### शक्ति के दुरुपयोग को रोकने के लिए ECI को निर्देश

► "यह शक्ति स्वयं अपना ही प्रयोग करती है, न तो बिना सोचे समझे और न ही बदनीयत से, न ही मनमाने ढंग से और न ही पक्षपात के साथ, बल्कि कानून के शासन के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए और राष्ट्रपति की अधिसूचना या मौजूदा कानून का उल्लंघन करती है।"

नोट्स

- "हमारी संवैधानिक व्यवस्था में कोई भी एक सर्वोच्च सत्ता नहीं है। यह मानना उचित है कि आयुक्त अनुच्छेद 324 से लैस कानून की अवहेलना नहीं कर सकते।
- आयुक्त के कार्य निष्पक्षता के मानदंडों के अधीन हैं और वह मनमाने ढंग से कार्य नहीं कर सकता है। अनियंत्रित शक्ति हमारी प्रणाली के लिए प्रतिकूल है। "

### क्या ईसीआई के लिए शक्ति का कोई अन्य स्रोत है?

- **संसद ने जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950** और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 को आयोग की शक्तियों को परिभाषित करने और विस्तार करने के लिए लागू किया।
- 1951 के आरपी अधिनियम में धारा 28 A के अनुसार चुनाव की अधिसूचना से लेकर चुनाव के परिणाम की घोषणा तक सभी अधिकारियों को "चुनाव आयोग के पास प्रतिनियुक्ति पर" माना जाएगा।
- "ऐसे अधिकारी, उस अवधि के दौरान, चुनाव आयोग के नियंत्रण, अधीक्षण और अनुशासन के अधीन हो सकते हैं।"

### ईसीआई की विश्वसनीयता पर सवाल क्यों उठाया जा रहा है?

- विशेषज्ञों की राय में ईसीआई अपने कार्यों में निष्पक्षता बनाए रखने में सक्षम नहीं है।
- आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायतों पर कार्रवाई करते हुए यह चयनात्मक रहा है।
- उदाहरण: 15 अप्रैल, 2019 को जब माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने नफरत फैलाने वाले भाषण देने वाले नेताओं के खिलाफ त्वरित कार्रवाई नहीं करने के लिए चुनाव आयोग से नाराजगी जाहिर की थी, तो आयोग ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय को बताया कि राजनेताओं को अनुशासित करने की उनकी शक्तियां "बहुत सीमित थीं।"**
- **आयुक्तों के बीच आंतरिक विवाद है**, जिसे अब सार्वजनिक रूप से व्यक्त किया जा रहा है।

### निष्कर्ष

बाधा उत्पन्न करने वालों के खिलाफ दंडात्मक उपाय करने में ईसीआई (भारतीय चुनाव आयोग) कानूनी और संवैधानिक रूप से सही है। हालांकि, संवैधानिक निकाय होने के नाते इसे अपने आचरण में एकरूपता सुनिश्चित करनी चाहिए। माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों का अच्छी तरह से पालन करना चाहिए, और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शक्ति का प्रयोग मनमाना न हो।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 2 || राजसत्ता || संवैधानिक निकाय || चुनाव आयोग

## शीर्षक

**भारतीय चुनाव आयोग और विरोधी राय को लेकर विवाद, ECI कैसे फैसले लेता है? ईसीआई की संरचना और विनियम की व्याख्या**

## सुर्खियों में क्यों?

► चुनाव आयोग ने 2: 1 के बहुमत से फैसला किया, कि आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) विवादों में असहमतिपूर्ण राय को किसी अंतिम आदेश का हिस्सा नहीं बनाया जाएगा और पिछले कार्यप्रणाली के अनुसार केवल आंतरिक फाइलों में ही शामिल किया जाएगा।

## विवाद

► मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा और लवासा और चुनाव आयुक्त सुशील चंद्रा सहित पूर्ण पीठ के समक्ष जब यह मुद्दा आया, कि लवासा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा प्रमुख अमित शाह के कुछ भाषणों के आदेशों के मामले में चुनाव आयुक्त की बैठकों में शामिल न होने पर असहमतिपूर्ण आपत्ति जताई है।

► अपना निर्णय सुनाते हुए, लवासा ने सीईसी को तीन बार लिखा, कि वे आदर्श आचार संहिता से संबंधित कार्यवाही से दूर रहना चाहेंगे, यदि उनके असंतोष के विचारों को आदेशों में शामिल नहीं किया जाएगा तो।

## कानून

► अनुच्छेद 324: संविधान का अनुच्छेद 324 भारत के चुनाव आयोग में चुनावों के अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण को निहित करता है।

► **बहु-सदस्य निकाय:** इसमें मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्तों की संख्या शामिल होती है, यदि कोई बदलाव होना होता है, तो राष्ट्रपति समय-समय पर तय कर सकते हैं।

○ वर्तमान में चुनाव आयोग एक बहु-सदस्यीय निकाय है, जिसमें एक मुख्य चुनाव आयुक्त और दो अन्य सदस्य होते हैं।

► **सर्वसम्मति:** कानून कहता है कि चुनाव आयोग के सभी निर्णय, जहां तक संभव हो, सर्वसम्मति से लिए जाने चाहिए।

## हालांकि, विच्छेद अधिनियम में ही प्रदान किया गया है

► "यदि मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त की राय अलग-अलग हैं ... तो ऐसे मामले का फैसला बहुमत के हिसाब से किया जाएगा"।

## प्रक्रिया

► **बहुमत:** जहां मतभेद है, वहाँ पर निर्णय बहुमत द्वारा लिया जाता है।

○ सभी मतों का बराबर हिस्सा होता है, जिसका अर्थ है कि CEC को दो EC द्वारा अधिभूत किया जा सकता है।

फ़ाइल में रिकॉर्ड किया गया: यदि मौखिक विचार-विमर्श और चर्चा के बाद भी कुछ मतभेद बने रहते हैं, तो इस तरह की असहमति फ़ाइल में दर्ज की जाती है।

○ **सामान्य व्यवहार में,** कार्यकारी मामलों में आयोग के निर्णय को संप्रेषित करते समय, बहुमत के दृष्टिकोण से संबंधित पक्षों से सभी को अवगत कराया जाता है। असहमति फ़ाइल में दर्ज की जाती है।

○ यदि **न्यायिक प्रकृति** के मामले में असंतोष दर्ज किया जाना है, तो असंतुष्ट सदस्य एक अलग राय/आदेश रिकॉर्ड दर्ज कर सकता है।

► हालांकि, 1993 के बाद से बहुमत से निर्णय लेने के प्रावधान के अस्तित्व के बावजूद, बहुत कम ही असंतोष दर्ज किया गया है।

► जब 3 आयुक्तों द्वारा किसी भी मामले पर विचार किया जाता है, तो वे आम तौर पर कार्रवाई की एक सामान्य क्रियाविधि के लिए सहमत होते हैं।

► हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि आयुक्तों के बीच कोई मतभेद नहीं है।

## हाल का निर्णय

► **तकनीकी और कानूनी रूप से सही:** हाल ही में आदेशों में असहमतिपूर्ण राय को रिकॉर्ड करने की लवासा की मांग को खारिज कर दिया गया है, उनकी मांग तकनीकी और कानूनी रूप से सही है।

► **चुनाव आयोग की आलोचना की गई है:** हालांकि, उनकी मांग को पूरा करने का मामला वास्तव में मजबूत था। प्रधानमंत्री जैसे उच्च अधिकारियों के खिलाफ शिकायतों के संबंध में यह विशेष रूप से सच है।

○ पीएम को 'क्लीन चिट्स' की श्रृंखला देने के लिए चुनाव आयोग की व्यापक आलोचना की गई है।

सशस्त्र बलों के नाम पर वोट मांगने वाली कुछ संदिग्ध टिप्पणियों के बावजूद यह फैसला लिया गया।

○ विवाद के साथ जुड़े इस मुद्दे में मोदी के खिलाफ की गई शिकायतों के निपटारे में कई हफ्तों की अस्पष्ट देरी की गई थी।

○ इस संदर्भ में, चुनाव आयोग के आदेशों में योग्यता का समावेश करने के लिए, लवासा की असहमति की राय प्रासंगिक हो सकती है।



- इस संदर्भ में, चुनाव आयोग के आदेशों में योग्यता का समावेश करने के लिए, लवासा की असहमति की राय प्रासंगिक हो सकती है।
- लोग यह जानने के हकदार हैं कि पोल पैनल के प्रमुख फैसले एकमत हैं या नहीं।
- वर्तमान मामले में, लवासा ने इस मुद्दे को तीन पत्रों के माध्यम से उठाया है। इसलिए यह पता लगाना उचित है कि उनकी शिकायत का कोई आधार है।

## LAVASA RECUSES HIMSELF

► Election commissioner **Ashok Lavasa** on Tuesday demanded that dissent notes be recorded in all EC orders on model code violations

► EC maintained that dissent notes cannot be made part of the order as poll code



violation cases are not quasi-judicial in nature and are not signed by the chief election commissioner and fellow commissioners

► As his demand was not met, Lavasa recused himself from cases relating to model code of conduct violations

► Lavasa had dissented on a series of clean chits given to PM Narendra Modi and BJP president Amit Shah

**चुनाव आयोग के दायित्व:** चुनाव आयोग का दायित्व है कि वह सभी को समान स्तर पर बनाए रखे और चुनाव संहिता पर उच्च आचरण का दबाव बनाए रखे, खासकर जब इसकी विश्वसनीयता सवाल के घेरे में हो।

► यदि चुनाव आयोग में बहुमत किसी भी सार्वजनिक प्रतिक्रिया से डरता है, तो यह दुर्भाग्यपूर्ण होगा, जिसला परिणाम एक विभाजित राय का प्रकटीकरण हो सकता है।

### प्रश्न

► आदर्श आचार संहिता के प्रति चुनाव आयोग की कमजोर प्रतिबद्धता चिंता का कारण है। टिप्पणी कीजिये।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## जीरो पेंडेंसी कोर्ट्स प्रोजेक्ट



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || राजनीति || न्यायपालिका || न्यायिक सुधार

### शीर्षक

जीरो पेंडेंसी कोर्ट्स प्रोजेक्ट (शून्य लंबित न्यायालय प्रोजेक्ट)

### सुर्खियों में क्यों?

- मामलों के जमाव पर दिल्ली उच्च न्यायालय की पायलट परियोजना की रिपोर्ट में कहा गया है कि राजधानी को एक वर्ष में सभी लंबित मामलों को हटाने के लिए 143 की वर्तमान संख्या में 43 और अधिक न्यायाधीशों की आवश्यकता है।
- 'जीरो पेंडेंसी कोर्ट्स प्रोजेक्ट' भारत में अपनी तरह की एक अलग परियोजना है जिसका उद्देश्य उन मामलों का अध्ययन करना है जो आवश्यक समयसीमा के साथ आते हैं।

### जीरो पेंडेंसी कोर्ट्स प्रोजेक्ट

- समय पर न्याय सुनिश्चित करने की तत्काल आवश्यकता से प्रेरित हो, दिल्ली उच्च न्यायालय ने जनवरी 2017 से दिल्ली में कुछ अधीनस्थ न्यायालयों में पायलट परियोजना शुरू की।
- यह भारत में अपनी तरह का एक भिन्न अध्ययन है, जिसका उद्देश्य मामलों के लिए आवश्यक समयसीमा के साथ आने वाले मुकदमों के जीवन चक्रों का अध्ययन करना है।
- परियोजना का प्राथमिक लक्ष्य बैकलॉग (जमाव) की अनुपस्थिति में मामलों के प्रवाह का अध्ययन करना था।
- "जीरो पेंडेंसी कोर्ट परियोजना" को न्यायमूर्ति एम.एन. वेंकटचलिया (भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश) द्वारा प्रेरणा मिली है।

### देरी की लागत

- हाल ही में 2016 की तरह, यह अनुमान लगाया गया था कि न्यायिक देरी में भारत के सालाना सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 1.5% खर्च होता है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि दिल्ली में आपराधिक मामलों की संख्या दीवानी मामलों की संख्या से कहीं अधिक है।
- **20 मार्च, 2019** तक, दिल्ली में अधीनस्थ न्यायालयों में 5.5 लाख आपराधिक मामले और 1.8 लाख सिविल मामले लंबित थे।
- यह कहा गया कि प्रति सुनवाई के लिए लिया जाने वाला औसतन अधिकतम समय अंतिम आदेश या निर्णय के परिणामस्वरूप अंतिम तर्क या न्याय के समय ही लिया गया।
- अंतिम निर्णय सुनाए जाने से पहले मुकदमा विधियों आदि पर शोध करने के लिए काफी समय लिया जाता है। इस प्रकार, प्रत्येक सुनवाई में बहुत समय व्यतीत होता है।

### देरी का कारण

- रिपोर्ट के अनुसार देरी का कारण, गवाहों की अनुपस्थिति थी।
- साक्ष्य चरण, एक मामले का एक महत्वपूर्ण रूप है। सबूत के चरण के दौरान गवाहों की अनुपस्थिति मुकदमे की प्रगति के लिए एक गंभीर बाधा का कारण बनती है।
- इसके अलावा, एक मामले में अधिवक्ताओं या पार्टियों द्वारा विभिन्न चरणों में मांगे जाने वाले अनावश्यक स्थगन, कार्यवाही में देरी करते हैं, इस प्रकार मुकदमे के समय को लम्बा खींचते हैं।
- इसके अतिरिक्त, सम्मन के कार्य में देरी, विशेषकर बाह्य पक्षों के लिए।

### चिंता का बिंदु

- **कार्यभार में वृद्धि:** न्यायाधीशों की कम संख्या के साथ, एक अकेले न्यायाधीश का कार्यभार बढ़ सकता है।
- **विश्वसनीयता का मुद्दा:** लगातार देरी के साथ प्रणाली कम विश्वसनीय हो जाती है क्योंकि मुकदमों को उनके मामलों को हल करने के लिए दशकों तक इंतजार करना पड़ता है।
- **पेंडेंसी (लंबित मामलों) में वृद्धि:** फाइलिंग की संख्या में वृद्धि के साथ, मामलों को लंबित करने की प्रवृत्ति बढ़ती है यदि समस्या को दूर करने के लिए कोई उचित लक्षित कदम नहीं उठाए जाते हैं।

### समय की आवश्यकता

- सिस्टम में लंबित मामलों को संभालने के लिए एक सर्वोत्कृष्ट इष्टतम न्यायाधीश संख्या को प्राप्त किया जाए। एक वर्ष में सभी लंबित मामलों को निपटाने के लिए न्यायाधीशों की वर्तमान संख्या को 143 से बढ़ाकर एक आदर्श संख्या 186 न्यायाधीशों किया जाए।

### अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.thehindu.com/news/cities/Delhi/capital-needs-43-more-judges-to-clear-pending-cases-in-1-year/article27044183.ece>

### प्रश्न

भारत में मुकदमों की न्यायिक देरी का अभिप्राय।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## शासन एवं सामाजिक न्याय

### यूएसए पब्लिक हेल्थकेयर सिस्टम



हिंदी में

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

जीएस 2 || शासन और सामाजिक न्याय || मानव विकास || स्वास्थ्य

### शीर्षक

यूएस पब्लिक हेल्थकेयर सिस्टम, उदाहरण जो भारत यूएसए के हेल्थकेयर से सीख सकता है?

### सुर्खियों में क्यों ?

► देखभाल और बीमा के एक नए मॉडल ने अमेरिका में काम करना शुरू कर दिया है। भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में सुधार के लिए अमेरिका के एसीओ मॉडल से प्रेरणा ली जा सकता है।

### इंडिया

► **सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित स्वास्थ्य प्रणाली:** भारत ने सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित स्वास्थ्य प्रणाली के एक प्रमुख पुनः निर्धारण पर जोर दिया है। जिसमें समाविष्ट हैं,

- शीर्ष पर,
- नए एम्स का विकास,
- पुराने मेडिकल कॉलेजों का जीर्णोद्धार और विस्तार, और निचले स्तर पर,
- स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों के लिए स्वास्थ्य उप-केंद्रों का रूपांतरण।
- स्वास्थ्य बीमा उन्नयन आयुष्मान भारत राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के माध्यम से किया गया है।
- अंत में, सरकार जनसंख्या के स्वास्थ्य में सुधार के लिए गंभीर हो रही है। लेकिन, इस प्रक्रिया में, हमें दुनिया के विभिन्न मॉडलों से सीखने की जरूरत है।

### यूएस मॉडल

- देखभाल और बीमा के एक नए मॉडल ने अमेरिका में काम करना शुरू कर दिया है।
- जवाबदेह देखभाल संगठन (एसीओ): एसीओ डॉक्टरों, अस्पतालों और अन्य देखभाल प्रदाताओं का एक समूह है जो एक साथ रोगियों के समूह की देखभाल का प्रबंधन करते हैं।

- ACO प्रणाली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर काम करती है और यह रोगियों को उनकी बीमारियों का प्रबंधन करने और अस्पताल में अनावश्यक और रोकथाम योग्य प्रवेश को रोकने और कम करके स्वास्थ्य देखभाल की लागत को कम करने में मदद के लिए डिज़ाइन की गई है।
- ACO मॉडल में, डॉक्टर और स्वास्थ्य बीमा योजना प्रबंधक एक-दूसरे से बात करते हैं ताकि उनके लिए रोगी की देखभाल के विषय में एक-दूसरे से समन्वयन किया जा सके।
- यह एक भुगतान तंत्र है जो लोगों को उनकी स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों के लिए सार्वजनिक और निजी स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के संयोजन में गुणवत्ता देखभाल के लिए अनुमति देता है।
- मरीजों को स्वास्थ्य सेवा योजना में नामांकित करने के लिए सहायता और मार्गदर्शन भी प्रदान किया जाता है, यदि वे ऐसी स्वास्थ्य सेवा के अंतर्गत नहीं आते हैं।
- इसके अतिरिक्त, ACO मॉडल स्वास्थ्य पैकेज एकीकरण पर काम करता है, जो रोगियों को एकीकृत स्वास्थ्य तक पहुँच पाने में सहायता करता है और उनको इसके योग्य बनाता है कि वे प्राथमिक देखभाल की स्थिति में वे सेवाओं का उपयोग कर सकें।
- उच्च श्रेणी के चिकित्सा या सर्जिकल उपचार की आवश्यकता वाले मरीजों को आसपास के अस्पतालों में जल्द भेजे जाने की सहायता प्रदान की जाती है।
- अक्सर, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ACO मॉडल में रोगी सेवा नहीं होती है, हालांकि यह सप्ताहांत के दौरान कम घंटों के साथ सप्ताह में सात दिन काम करते हैं।

### भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली

- भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली निः शुल्क चिकित्सा परामर्श, बुनियादी प्रयोगशाला परीक्षण, निः शुल्क दवाएं और आवश्यक होने पर टीके और सहायता प्रदान करती है। इसलिए इस प्रणाली को मजबूत किया जाना चाहिए।
- निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श, परीक्षण और दवाओं और नियमित टीकाकरण होना चाहिए, वेलनेस सेंटर प्रोग्राम का मुख्य मुद्दा होना चाहिए।
- इसमें कुछ बीमारियों जैसे रक्तचाप, मधुमेह और हृदय रोगों जैसे रक्त में लिपिड के स्तर की स्क्रीनिंग की सुविधा होनी चाहिए।
- कैसर, किडनी की बीमारियों और आंखों की समस्याओं के लिए स्क्रीनिंग को सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में भी जोड़ा जाना चाहिए।
- **PHC-इन-आयुष:** आयुष के साथ, एक ही छत के नीचे प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का एकीकरण होना चाहिए, क्योंकि ये सेवाएं गैर-आक्रामक और समुदायों के साथ लोकप्रिय हैं, साथ ही उच्च स्तर की देखभाल के लिए अस्पतालों में त्वरित रेफर किए जाने की सुविधा दी जानी चाहिए।

- ऐसे प्रत्येक केंद्र के अंतर्गत आने वाली आबादी के लिए यह बहुत अच्छा काम कर सकता है।
- राज्य द्वारा संचालित बीमा योजनाएं अपने लाभ पैकेज पर लोगों को सलाह देने में मदद करके एक प्रवेश द्वार प्रदान कर सकती हैं, जो पहले से ही एनएचपीएस के तहत योजनाबद्ध हैं।
- **सहायक नर्स दार्ई (एएनएम):** एएनएम'स द्वारा संचालित कई उप-केंद्र ग्रामीण भारत में प्राथमिक मातृ एवं शिशु देखभाल सेवा वितरण केंद्र हैं।
- ये एएनएम स्टाफ से लैस हो सकते हैं, टीके के लिए फ्रीजर जैसी सुविधाएं और ACO मॉडल में वेलनेस सेंटर चलाने के लिए आयुष दवाओं सहित एक पूर्ण दवा वितरण फार्मसी होनी चाहिए।
- सरकार पहले से ही प्रत्येक स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी लगाने की योजना बना रही है।
- **सभी सामाजिक क्षेत्र कल्याण योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए हब:** एक और अनूठी विशेषता, जो इस समुदाय केंद्र को, लोगों को सभी प्रकार की सामाजिक क्षेत्र कल्याण योजनाओं की जानकारी देने का केंद्र बना सकती है।
- विभिन्न योजनाओं में शामिल सामुदायिक कार्यकर्ता प्रत्येक सप्ताह एक निश्चित दिन या दो दिन पर आ सकते हैं और संबंधित लाभार्थियों को जानकारी और कागजी कार्रवाई प्रदान कर सकते हैं।

## प्रणाली

- **आय मानदंड:** इस मॉडल के टिकाऊ होने के लिए आय मानदंडों के आधार पर नामांकन की एक प्रणाली होनी चाहिए, जो राशन / आधार कार्ड से जुड़ी हो, और कम आय वाले समूहों को मुफ्त प्रदान की जाए लेकिन बाकी के लिए सह-भुगतान के साथ।
- **प्राथमिक देखभाल प्रणाली-एनएचपीएस:** प्राथमिक देखभाल प्रणाली और एनएचपीएस को जोड़ने का एक तरीका प्रत्येक उप-स्वास्थ्य केंद्र और सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्र को एनएचपीएस के लिए पंजीकरण बिंदु बनाना हो सकता है।
- **अनिवार्य चिकित्सा परीक्षा:** एनएचपीएस में नामांकन करने से पहले एक चिकित्सा परीक्षा को भी अनिवार्य किया जा सकता है ताकि एनएचपीएस से कई समस्याओं का जल्द पता लगाया जा सके और उनका इलाज किया जा सके।
- **यह एनएचपीएस के लिए एक परामर्श प्रणाली** और लोगों के दिमाग में एक कड़ी स्थापित करने में भी मदद करेगा कि उन्हें एनएचपीएस का लाभ पाने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में पहले जाना होगा।
- ऐसे प्रतिरोधों से रोकथाम को बढ़ावा देकर और धोखाधड़ी को कम करके लागत को कम किया जा सकता है।

## अतिरिक्त जानकारी

## आयुष्मान भारत

- आयुष्मान भारत राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा योजना है, जो 10 करोड़ गरीब और कमजोर परिवारों (लगभग 50 करोड़ लाभार्थियों) को कवर करेगी, जो माध्यमिक और तृतीयक देखभाल अस्पताल में भर्ती के लिए प्रति वर्ष प्रति परिवार 5 लाख रुपये तक कवरेज प्रदान करते हैं।

- आयुष्मान भारत - राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मिशन राष्ट्रीय स्तर पर प्रायोजित योजनाओं - राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना (RSBY) और वरिष्ठ नागरिक स्वास्थ्य बीमा योजना (SCHIS) की जगह लेगा।

## मुख्य विशेषताएं

- **आयुष्मान भारत** - राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मिशन में प्रति वर्ष लाभ कवर प्रति परिवार 5 लाख निर्धारित होगा।
- **देश भर में योजना के लाभ वहनीय हैं** और इस योजना के तहत कवर किए गए लाभार्थी को देश भर के किसी भी सार्वजनिक / निजी निजी अस्पतालों से कैशलेस लाभ लेने की अनुमति होगी।
- आयुष्मान भारत - राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मिशन एक पात्रता आधारित योजना होगी, जिसमें SECC डेटाबेस में वंचित मानदंड के आधार पर निर्णय लिया जाएगा।
- लाभार्थी सार्वजनिक और निजी दोनों तरह की सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं।
- लागतों को नियंत्रित करने के लिए, उपचार के लिए भुगतान, पैकेज दर के (सरकार द्वारा पहले से परिभाषित) आधार पर किया जाएगा।
- आयुष्मान भारत के मूल सिद्धांतों में से एक - राष्ट्रीय स्वास्थ्य संरक्षण मिशन सहकारी संघवाद और राज्यों का लचीलापन है।
- **केंद्र और राज्यों के बीच नीति निर्देश देने और समन्वय को बढ़ावा देने के लिए, केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री की अध्यक्षता में शीर्ष स्तर पर आयुष्मान भारत राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मिशन परिषद (AB-NHPMC) की स्थापना प्रस्तावित है।**
- योजना को लागू करने के लिए राज्यों को राज्य स्वास्थ्य एजेंसी (SHA) की आवश्यकता होगी।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि धन समय पर SHA तक पहुँच जाए, आयुष्मान भारत के माध्यम से केंद्र सरकार से धन का हस्तांतरण - राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मिशन से लेकर राज्य स्वास्थ्य एजेंसियों तक सीधे एस्करो खाते (escrow account) के माध्यम से किया जा सकता है।
- NITI Aayog के साथ साझेदारी में, एक मजबूत, मॉड्यूलर, स्केलेबल और इंटरऑपरेबल आईटी प्लेटफॉर्म को चालू किया जाएगा, जिससे एक पेपरलेस, कैशलेस ट्रांजेक्शन की आवश्यकता होगी।

## प्रश्न

- भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए सुधारों का सुझाव दें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



## पोक्सो अधिनियम के तहत सहमति की आयु



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || शासन और सामाजिक न्याय || कमजोर वर्ग || बच्चे

### शीर्षक

POCSO अधिनियम के तहत सहमति की आयु और आयु का अंतर

### सुर्खियों में क्यों ?

- POC SO अधिनियम के तहत यौन उत्पीड़न के आरोपों से एक युवा अभियुक्त को बरी करते हुए, मद्रास उच्च न्यायालय ने दो महत्वपूर्ण सुझाव दिए:
- एक "बच्चे" की उम्र की परिभाषा 18 की बजाय 16 के रूप में ली जा सकती है, और
- यह अधिनियम सहमति से बनाए गए यौन संबंध में शामिल, अपराधी और लड़की के बीच, उम्र के अंतर के लिए उत्तरदायी है

### मद्रास उच्च न्यायालय का फैसला

- POC SO अधिनियम की धारा 2 (d) के तहत 'बच्चे' की परिभाषा को 18 की बजाय 16 के रूप में पुनः परिभाषित किया जा सकता है।
- 16 वर्ष की आयु के बाद सहमति से बनाए गए किसी भी यौन संबंध को POC SO अधिनियम के कठोर प्रावधानों के तहत नहीं रखा जा सकता है और यदि इस प्रकार का कोई यौन अपराध होता भी है तो उस पर अधिक उदार दृष्टि से विचार किया जा सकता है।
- सहमति से 16 वर्ष या उससे अधिक की पीड़ित लड़की के साथ संबंध बनाए जाने वाले व्यक्ति की आयु उससे पाँच वर्ष या उससे भी अधिक होगी तो, अधिनियम में इस आशय से संशोधन किया जा सकता है।
- जबकि कानूनी विशेषज्ञों और बाल अधिकार कार्यकर्ताओं ने "बच्चे" शब्द की इस दोबारा की गई परिभाषा का स्वागत किया है, तो उनमें से कुछ ने संशोधन के सुझाव, जो उम्र में अंतर का कारक होंगे पर, भविष्य में विचार-विमर्श के लिए भी कहा है।

### आपसी सहमति से बनाए गए संबंधों को वैधता क्यों दी गई?

- उच्चतम न्यायालय के एक वरिष्ठ अधिवक्ता ने 16 से 18 वर्ष की उम्र के लोगों के बीच सहमति से बनाए गए यौन संबंधों का समर्थन किया है।

- यह प्रावधान इस आयु वर्ग में आने वाले युवाओं को सहमति से यौन संबंध बनाए जाने वाली एजेंसी के जाल से और ऐसे परिवारों से भी सावधान रहने के लिए कहता है जो जातिवादी, सांप्रदायिक या रूढ़िवादी और प्रतिगामी विचारों से प्रेरित होते हैं और झूठी आपराधिक शिकायतों की पैरवी करते हैं।
- विभिन्न अध्ययन हमें बताते हैं कि 16-18 के बीच के आयु वर्ग में, बहुत-सी प्रयोगात्मक यौन क्रियाएं होती हैं।
- हालांकि, ज्यादातर मामलों में, लड़की के माता-पिता लड़के के खिलाफ शिकायत दर्ज करते हैं कि यह असहमति से हुआ था।
- यह फैसला सहमति या रोमांटिक तरीके से बनाए गए अनुचित यौन संबंधों के अपराधीकरण को खत्म करने में सहायता करेगा।

### उम्र के अंतर को लेकर विवाद?

- एक वृद्ध व्यक्ति अपनी शक्ति और पद का उपयोग करके यदि एक युवा महिला का शोषण करता है तो उसे अपराधीकरण के अधीन माना जाएगा।
- परन्तु सिर्फ इसलिए कि कथित अपराधी और पीड़ित के बीच उम्र का अधिक अंतर है, एक सहमति के साथ संबंध बनाए गए संबंध को इस अधिनियम में अपराध नहीं माना जा सकता।
- फिर भी, यह एक वृद्ध व्यक्ति को एक नाबालिग और उसकी मासूमियत का शोषण करने से रोक सकता है।
- ब्रिटेन में आयु का अंतर 4-5 वर्ष होना चाहिए, इससे अधिक का अनुगमन वहाँ नहीं किया जाता है।
- अमेरिका में भी क्लोज़-इन-एज छूट दी जाती है, जिसे रोमियो और जूलियट कानून भी कहा जाता है

### अगला क्या?

- सरकार को सहमति या रोमांटिक तरीके से बनाए गए अनुचित यौन संबंधों को अपराधीकरण से छूट देने के लिए कदम उठाने होंगे।
- अधिनियम में कड़े दंड की छूट से भी इसका दुरुपयोग किया जा सकता है।
- तो यहां सबसे महत्वपूर्ण बात, किशोरों के बीच सहमति से बनने वाले यौन सम्बन्धों के बीच अंतर करना और दुर्व्यवहार या शोषण के बीच अंतर करना है।
- दोनों के बीच अंतर करने के का दायित्व जांच अधिकारियों पर है।
- लेकिन इंस्पेक्टर और एसआईएस अक्सर संभोग और यौन क्रियाओं को किसी व्यक्ति या घटना के संदर्भ के अनुसार ही यह परखते हैं।
- उन्हें संवेदनशील होना चाहिए और बुद्धिमत्ता और आत्म-जागरूकता के साथ कानून का बारीकी से अध्ययन और उपयोग करना चाहिए।

## मुख्य परीक्षा का प्रश्न

POCSO अधिनियम को परिभाषित करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## सूक्ष्म-स्तरीय जल उद्यम क्या हैं?



हिंदी में

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || शासन और सामाजिक न्याय || मानव विकास  
|| पीने का पानी और स्वच्छता

### शीर्षक

सूक्ष्म-स्तरीय जल उद्यम क्या हैं? महिला सशक्तिकरण में इसकी क्या महत्वपूर्ण भूमिका है?

### सुर्खियों में क्यों ?

► सूक्ष्म-स्तरीय जल उद्यम (एस.डब्ल्यू.ई.) सबसे व्यवहार्य विकल्प के रूप में विकसित हुआ है, जो महिला के सशक्तिकरण और समुदायों को सुरक्षित पेयजल के प्रावधान के दोहरे उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

### सूक्ष्म-स्तरीय जल उद्यम (एस.डब्ल्यू.ई.)

► एस.डब्ल्यू.ई. विभिन्न ग्रिड सामुदायिक जल प्रणाली, स्टेशन, या बूथ (घरेलू कनेक्शन के साथ) स्थानीय जल व्यवसायों के रूप में संचालित होते हैं जो उपभोक्ताओं को सुरक्षित, किफायती जल का विश्वसनीय स्रोत प्रदान करते हैं।  
► परिचालन व्ययों को शामिल करने तथा तकनीकी सर्विसिंग व मरम्मत हेतु रखरखाव भण्डारण निधि में योगदान करने के लिए उपभोक्ताओं को जल के विनिमय में निम्न शुल्क आरोपित किया जाता है। यदि संभव हो, इसके अतिरिक्त एस.डब्ल्यू.ई. पूंजी प्रतिलाभ में योगदान कर सकते हैं।

### भू-जल संदूषण

► **फ्लोराइड:** भू-जल में फ्लोराइड संदूषण से हानिकारक फ्लोरोसिस उत्पन्न होता है।  
► यह रोग बच्चों को शीघ्र ग्रसित करता है, उनके विकास को प्रभावित करता है, उनके दांत झड़ते एवं सड़ते हैं और हड्डियों के अपक्षरण के कारण वे शीघ्र ही वृद्ध हो जाते हैं।

### महिलाओं की भूमिका

► महिलाओं तथा जल के मध्य संबंध सार्वकालिक है।  
► महिलाओं ने पारंपरिक रूप से जलवाहक के रूप में मीलों पैदल चल घर तक जल को ढोया है।

► वे असमान रूप से अभुक्त घरेलू कार्यों के बोझ से दबी हुई हैं, रोगियों की देखभाल कर रही हैं, जिससे उनके कौशल का विकास नहीं हो पाता है अथवा नौकरी के अवसर भी नहीं मिल रहे हैं।

► **विश्व बैंक की रिपोर्ट:** विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत, महिला श्रमिक भागीदारी दरों में 131 देशों में से 120वें स्थान पर है।

► भारत में महिलाओं का आर्थिक योगदान सकल घरेलू उत्पाद का 17 प्रतिशत है, जो वैश्विक औसत के आधे से भी कम है।

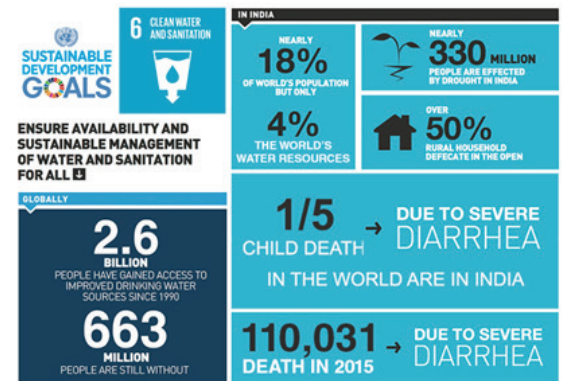
► किसी अर्थव्यवस्था के लिए निरंतर विकास करना बहुत मुश्किल हो जाता है यदि उसकी आधी जनसंख्या का कार्यबल सक्रिय रूप से भागीदार नहीं है।

► राष्ट्रीय कार्यबल में कम से कम 50 प्रतिशत महिलाएं शामिल करने से भारत की जी.डी.पी. विकास 1.5 प्रतिशत अंक तक बढ़ सकती है।

### महत्त्व

► **महिला उद्यमिता को बढ़ावा देना:** सूक्ष्म-स्तरीय जल उद्यम (एस.डब्ल्यू.ई.) महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने और राष्ट्र के विकास में उनकी आर्थिक भागीदारी सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

► **जल प्रबंधन:** एस.डब्ल्यू.ई. महिलाओं को जलवाहकों से जल प्रबंधकों की ओर बढ़ने, सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता व पहुंच में सुधार, आजीविका अर्जित तथा जीवन स्तर में सुधार करने के अवसर प्रदान कर सकता है।



► लगभग 13.8 करोड़ परिवारों में 69 करोड़ लोग शामिल हैं, जिनके पास पीने का सुरक्षित जल उपलब्ध नहीं है।

► दूषित पेयजल के सेवन के कारण भारत में प्रति वर्ष लगभग 2 लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है।

► **दोहरा लक्ष्य:** एस.डब्ल्यू.ई. के प्रबंधन में महिलाओं को शामिल करना, महिलाओं के सशक्तिकरण तथा समुदायों को सुरक्षित पीने के जल के प्रावधान के दोहरे लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान कर सकता है, जो संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों 6 (स्वच्छ जल), 5 (लैंगिक समानता) और 8 (समृद्धि व आर्थिक विकास) को हासिल करने में योगदान करेगा।

## पहल

- **सुरक्षित जल नेटवर्क भारत (एस.डब्ल्यू.एन.आई.):** एस.डब्ल्यू.ई. की अवधारणा को बढ़ावा देते हुए, एस.डब्ल्यू.एन.आई. ने **क्षेत्रीय महिलाओं-स्वयं सहायता समूहों या झुग्गी-स्तरीय संघ के कौशल को सशक्त** करने, प्रौद्योगिकी का प्रसार करने, और उनके कार्य-अवधि कम करने, उन्हें आर्थिक गतिविधियों की मुख्यधारा में शामिल करने की पहल की, तथा इस प्रकार, यह **जलवाहक से सुरक्षित जल प्रबंधकों** तक उनकी ऐतिहासिक भूमिका में परिवर्तन ला रहा है।
- सामाजिक बाधाओं, लिंग भूमिकाओं अथवा जिम्मेदारियों, वित्तीय पहुंच के अतिरिक्त कौशल प्रणालियों की कमी होने पर उनकी यात्रा आसान नहीं थी।
- इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, **प्रशिक्षण कार्यक्रमों** की एक श्रृंखला विकसित की गई तथा स्थानीय भाषाओं में कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, जहाँ महिला उद्यमियों को उपचार सुविधाओं की अवधारणा व परिचालन पहलुओं को समझाने हेतु प्रशिक्षित किया गया।
- जल स्टेशनों पर परिनियोजित **प्रौद्योगिकी नवाचारों** ने कार्य-गृह संतुलन को बनाए रखने के लिए महिला उद्यमियों को लचीली कार्य-अवधि प्रदान की।
- **iJal स्टेशन प्रबंधकों** को ग्राहकों के साथ जुड़ने तथा उनके समुदाय सदस्यों को सुरक्षित पेयजल के सेवन के लाभों के संबंध में प्रशिक्षित किया गया।
- ये परिणाम उल्लेखनीय रूप से प्रभावशाली रहे। जल ढोने की पद्धति में एक स्पष्ट बदलाव दिखा।
- iJal स्टेशनों पर, उदाहरणतः, पुरुष (75 प्रतिशत से अधिक) अपने पूर्वदत्त आर.एफ.आई.डी. कार्ड का प्रयोग करके अपनी साइकिल व मोटरसाइकिल पर डब्बे में जल लेने आते हैं।
- इसके अतिरिक्त, इन जल स्टेशनों पर काम करने वाली महिलाएं न केवल आजीविका अर्जित करती हैं, बल्कि अपने समुदायों के भीतर सकारात्मक व दीर्घकालिक प्रभाव डालती हैं और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान करती हैं।
- **सरकार द्वारा संचालित पहल:** सरकार द्वारा संचालित कौशल विकास योजना तथा प्रधानमंत्री मुद्रा योजना जैसी पहल, उद्यमिता के लिए एक सक्षम वातावरण को बढ़ावा दे रही हैं, परंतु महिलाओं को लाभकारी रोजगार प्राप्त करने तथा अधिक संभावनाएं बनाने हेतु आवश्यकता निरंतर बनी हुई है।

## निष्कर्ष

- **एस.डब्ल्यू.ई. को बढ़ावा दिया जाना चाहिए:** भारत की उल्लेखनीय जी.डी.पी. विकास दर के बावजूद, एक बड़ी जनसंख्या का कोई उपयोग नहीं किया गया है।
- एस.डब्ल्यू.ई. में निवेश विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं, समुदायों के स्वास्थ्य में सुधार करने तथा आजीविका कमाने के लिए एक अवसर प्रदान करता है।
- **लिंग समानता:** अर्थव्यवस्था में लैंगिक समानता बनाने हेतु और अधिक पहल किए जाने की आवश्यकता है। अधिक समावेशी, सतत् और समृद्ध भविष्य के लक्ष्य को साकार करना सरकार एवं समाज का सामूहिक उत्तरदायित्व है।

## अतिरिक्त जानकारी

## सुरक्षित जल नेटवर्क

- सुरक्षित जल नेटवर्क एक **अलाभकारी संस्था** है जिसकी स्थापना **वर्ष 2006** में अभिनेता और समाज-सेवी पॉल न्यूमैन ने अन्य नागरिक व व्यवसायिक नेताओं के साथ मिलकर की थी।
- इस संस्था की **स्थापना पानी के बंद पड़े निकायों का कारण पता करने के लिए** और उनको सही करने के लिए की गई थी कि क्या काम कर रहा था, क्या नहीं कर रहा और क्यों।
- सुरक्षित जल नेटवर्क स्थानीय स्थिरता एवं स्तरीय बाधाओं को दूर करने हेतु निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के साथ काम करता है।
- ये समुदायों को सशक्त बनाते हैं, भारत तथा घाना में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व स्थानीय सरकारी प्राधिकरणों के साथ-साथ गैर-सरकारी संगठनों तथा निजी क्षेत्र की संस्थानों और कंपनियों के साथ कार्य करते हैं।
- ये प्रकाशनों, कार्यशालाओं तथा अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से सर्वोत्तम अभ्यास भी करते हैं।

## मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- सूक्ष्म-स्तरीय जल उद्यम (एस.डब्ल्यू.ई.) क्या है? महिला सशक्तिकरण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 2 || शासन और सामाजिक न्याय || कमजोर वर्ग || अनुसूचित जाति

## शीर्षक

सुप्रीम कोर्ट ने पदोन्नति में SC ST आरक्षण के लिए कर्नाटक कानून को बरकरार रखा है, करेंट अफेयर्स 2019

## सुर्खियों में क्यों ?

► सर्वोच्च न्यायालय ने कर्नाटक के सरकारी सेवकों को अनुवर्ती वरिष्ठता आरक्षण के आधार पर पदोन्नत (राज्य की नागरिक सेवा में पदों के लिए) के अधिनियम, 2018 के विस्तार की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा है।

## कर्नाटक का कानून

► कर्नाटक कानून अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों की परिणामी वरिष्ठता को आरक्षण के आधार पर बढ़ावा देता है।

► सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बीके पवित्रा बनाम भारत संघ में 2002 अधिनियम को अमान्य करने के बाद कर्नाटक विधायिका ने 2018 कानून बनाया।

► 2017 में 2002 के कानून पर प्रहार करते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि अधिनियम की धारा 3 और 4, संविधान के अनुच्छेद 14 और 16 के अधिकार क्षेत्र से बाहर थे, इस आधार पर कि नागराज फैसले में जनादेश को लागू नहीं किया गया था।

► नागराज (2006) में निर्णय के अनुसार, कर्नाटक सरकार ने निम्नलिखित डेटा एकत्र करने के लिए एक समिति नियुक्त की -

► SC / ST समुदायों के "पिछड़ेपन",

► सेवाओं में उनके प्रतिनिधित्व की अपर्याप्तता और

► प्रशासन की दक्षता पर आरक्षण का समग्र प्रभाव - रोजगार में आरक्षण का विस्तार करने की शक्ति पर संवैधानिक सीमाओं के रूप में 2006 के फैसले में निर्धारित मानदंड।

**Offering respite**

The Supreme Court has held that there is no need to collect quantifiable data of backwardness to provide reservation in promotions in government jobs for SCs/STs

**The Nagaraj verdict**

The court in the M. Nagaraj verdict in 2006 had said that States were bound to provide quantifiable data on the backwardness of SCs/STs before providing them quota in promotions

**The Indra Sawhney verdict of 1992**

The Supreme Court had held that a "test or requirement of social and educational backwardness cannot be applied to SCs/STs, who indubitably fall within the expression 'backward class of citizens'"

**The court held that the portion of data collection in the Nagaraj judgment was "contrary" to the Indra Sawhney verdict, and held it "invalid"**

**What next?**

The judgment will boost efforts to provide "accelerated promotion with consequential seniority" for Scheduled Castes/ Scheduled Tribes members in government services

► रिपोर्ट के आधार पर, राज्य ने एक नया कानून बनाया, जिसे अब इस आधार पर बरकरार रखा गया है कि यह नागराज सूत्रीकरण के साथ-साथ **जरनैल सिंह मामले** (2018) में पाये गये स्पष्टीकरण के अनुरूप है।

## कोर्ट का अवलोकन

► **अनुच्छेद 335** यह प्रावधान करता है कि एक राज्य या संघ के मामलों के संबंध में सेवाओं और पदों पर नियुक्तियाँ करने में **अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों** के सदस्यों के दावों को लगातार **प्रशासन की दक्षता के रखरखाव** के साथ लिया जाएगा।

► **संविधान में यह परिभाषित नहीं किया गया** है कि प्रशासन के वाक्यांश में 'दक्षता' से निर्माताओं का क्या मतलब था।

► यदि दक्षता के इस **मानक को बहिष्करण में आधार** बनाया जाता है, तो यह शासन के एक ऐसे पैटर्न को उत्पन्न करेगा जो हाशिए के लोगों के खिलाफ विषम होगा।

► यदि दक्षता के इस **मानदंड को समान पहुंच** में रखा जाता है, तो यह परिणाम एक सामाजिक व्यवस्था बनाने के लिए संविधान की प्रतिबद्धता को दर्शाएगा।

► अनुच्छेद 335 दावा करता है कि, संघ या किसी राज्य के मामलों के संबंध में सेवाओं और पदों पर नियुक्तियों के निर्माण में, प्रशासन की दक्षता के रखरखाव के साथ लगातार, अनुसूचित जातियों और जनजातियों के सदस्यों का भी ध्यान रखेगा।

► यह रूढ़िवादी है क्योंकि यह सामाजिक पूर्वाग्रह को गहराई से जोड़ देता है।

► प्रशासन की दक्षता के लिए मानक, एक योग्य खुली श्रेणी के उम्मीदवार के प्रदर्शन से मापा गया कोई अमूर्त आदर्श नहीं है।

► यह कहता है कि **योग्यता प्रदर्शन में ही नहीं बल्कि समानता को बढ़ावा देने जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी निहित है** और यह कि भारत का परिवर्तनकारी संविधान अवसर की औपचारिक समानता की ही नहीं, बल्कि समानता की उपलब्धि की भी परिकल्पना है।

► सर्वोच्च न्यायालय का यह आदेश महत्वपूर्ण है क्योंकि यह रेखांकित करता है कि "एक 'मेधावी' उम्मीदवार केवल वह नहीं है जो 'प्रतिभाशाली' या 'सफल' है, बल्कि वह भी है जिसकी नियुक्ति SC और ST के सदस्यों के उत्थान के संवैधानिक लक्ष्यों को पूरा करती है और "प्रतिनिधि प्रशासन" एक विविधता सुनिश्चित करती है।

## महत्व

► यह स्वागत योग्य है कि **अब SC और ST के पिछड़ेपन को प्रदर्शित करने की आवश्यकता नहीं है।**

► नीति-निर्माताओं को निर्णय में निहित अपील पर ध्यान देना चाहिए:

► प्रशासन में दक्षता की अवधारणा और **समाज के विभिन्न वर्गों को शामिल** करने के बीच कोई विरोध नहीं है।

► जबकि प्रतिनिधित्व के लिए डाटा की आवश्यकता हो सकती है, आरक्षण का प्रशासन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, इस विचार को अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।

- प्रशासन में दक्षता की अवधारणा और **समाज के विभिन्न वर्गों को शामिल करने के** बीच कोई विरोध नहीं है।
- जबकि प्रतिनिधित्व के लिए डाटा की आवश्यकता हो सकती है, आरक्षण का प्रशासन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, इस विचार को अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।
- **आरक्षण को सही ठहराने के लिए प्रयोग किए जा रहे क्वांटिफ़िबल डेटा** का पहला उदाहरण होने के लिए यह निर्णय उल्लेखनीय है।
- इस निर्णय में एक प्रमुख सिद्धांत यह है कि जहां SC/ST उम्मीदवारों के लिए आरक्षण का संबंध है, वहां समुदाय के 'पिछड़ेपन' को प्रदर्शित करने की आवश्यकता नहीं है।
- एक मान्य प्रणाली के अन्य **पूर्व अपेक्षित बिंदु** निम्नलिखित हैं -
- आरक्षण के लिए पहचाने गए लोगों की कक्षाओं में 'प्रतिनिधित्व की अपर्याप्तता' पर मात्रात्मक डेटा और
- प्रशासन की दक्षता" पर इस तरह के कोटा के प्रभाव का आकलन - मान्य है।
- यह आरक्षण के अनुसार ऐतिहासिक और सामाजिक औचित्य को भी परिप्रेक्ष्य में लाता है, जो इस तर्क को खारिज करते हैं कि, दिया जाने वाला **कोटा, प्रशासनिक "दक्षता" को प्रभावित करता है।**

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- पदोन्नति में कोटा क्या दक्षता को नुकसान पहुंचाता है? विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## महिला कार्यबल भागीदारी, भारत में कामकाजी महिलाओं की चुनौतियाँ

हिंदी में



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || शासन और सामाजिक न्याय || कमजोर वर्ग || महिलाएं

### शीर्षक

महिला कार्यबल भागीदारी, भारत में कामकाजी महिलाओं की चुनौतियाँ

### सुर्खियों में क्यों ?

- ▶ भारत एक ऐतिहासिक चुनाव के बीच में है, जो कई मामलों में उल्लेखनीय है, उनमें से एक है महिलाओं के रोजगार पर अभूतपूर्व ध्यान केंद्रित करना।
- ▶ प्रमुख राष्ट्रीय दल, भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस महिलाओं तक पहुँच रहे हैं, और उनके संबंधित घोषणापत्रों में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में अधिक आजीविका के अवसर पैदा करने के उपायों की बात की गई है, जिसमें अधिकतम महिलाओं को रोजगार देने के लिए व्यवसायों के प्रोत्साहन शामिल हैं।

### महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी

- ▶ **निम्नतम:** वर्तमान में, भारत के कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी विश्व स्तर पर सबसे कम है।
- ▶ **LFPR:** भारत में महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) 2011-2012 में 31.2% से गिरकर 2017-2018 में 23.3% रह गई है।
- ▶ यह गिरावट ग्रामीण क्षेत्रों में तेज़ हुई है, जहाँ 2017-2018 में महिला LFPR 11 प्रतिशत से अधिक गिरी है।
- ▶ सामाजिक वैज्ञानिकों ने लंबे समय से इस घटना को समझाने की कोशिश की है, और इतना ही नहीं अधिक महिलाओं के लिए शिक्षा के बढ़ते स्तर के संदर्भ में भी बातें समझाने की कोशिश की है।

### घटक

- ▶ इसका जवाब कारकों के एक जटिल समूह में पाया जा सकता है -
- ▶ **सामाजिक:** घर के बाहर काम करने वाली महिलाओं की कम सामाजिक स्वीकार्यता

- ▶ **सुरक्षा:** सुरक्षित कार्यक्षेत्रों में कार्य करने का अभाव
- ▶ **समानता:** गरीब और असमान मजदूरी का व्यापक प्रसार और
- ▶ **बेमेल मांग-कौशल:** सम्माननीय और उपयुक्त नौकरियों की कमी।
- ▶ भारत में अधिकांश महिलाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि में निर्वाह स्तर के काम में लगी हुई हैं, और शहरी क्षेत्रों में घरेलू सेवा और छोटे-मोटे गृह-आधारित विनिर्माण जैसे कम भुगतान वाली नौकरियों में कार्यरत हैं।

### MISSING WOMEN



### शिक्षा व कार्य का अंतर्संबंध

- ▶ हाल ही में किए गए एक अध्ययन में एक महिला के शिक्षा स्तर और कृषि व गैर-कृषि मजदूरी कार्य में और परिवारिक खेतों में उसकी भागीदारी के बीच एक **मजबूत नकारात्मक संबंध देखा गया।**
- ▶ बेहतर शिक्षा के साथ, महिलाएं आकस्मिक मजदूरी या परिवार के खेतों और उद्यमों में काम करने से इनकार कर रही हैं।
- ▶ अनिवार्य रूप से, **उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाएं** घर के बाहर ऐसा शारीरिक श्रम नहीं करना चाहती हैं, जो कि उनको, उनकी योग्यता से कम आंकता हो।
- ▶ इस अध्ययन में **वेतनभोगी नौकरियों के लिए महिलाओं में एक प्राथमिकता** भी दिखाई गई क्योंकि उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ जाती है; लेकिन ऐसी नौकरियां महिलाओं के लिए बेहद सीमित हैं।
- ▶ यह अनुमान है कि किसानों, खेत मजदूरों और सेवाकर्मियों के रूप में काम करने वाले लोगों (25 से 59 वर्ष) के बीच, लगभग एक तिहाई महिलाएं हैं, जबकि पेशेवरों, प्रबंधकों और लिपिक श्रमिकों के बीच महिलाओं का अनुपात केवल 15% (NSSO, 2011- 2012) है।

### मान्यतारहित कार्य

- ▶ हालांकि, **यह एक अकेला मामला नहीं है कि महिलाएं केवल कार्यबल के क्षेत्रों से पीछे हट रही हैं।**
- ▶ इसके विपरीत, समय-समय पर किए गए सर्वेक्षणों में पाया गया है कि वे काम करने के लिए वे अपने समय का **एक बड़ा हिस्सा समर्पित करती हैं** जिसे काम के रूप में नहीं माना जाता है, बल्कि कर्तव्यों का विस्तार समझा जाता है, जो कि मोटे तौर पर अवैतनिक है।
- ▶ इस अवैतनिक श्रम की घटना और मादकता बढ़ रही है।
- ▶ इसमें बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की देखभाल और पानी इकट्ठा करने जैसे घरेलू काम शामिल हैं, जो कि अवैतनिक देखभाल कार्य हैं।

## नीतिगत दृष्टिकोण

► कोई भी सरकार जो **महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और आजीविका के समान उपयोग को सुनिश्चित करने के बारे में गंभीर** है, को उन कई चुनौतियों का सामना करना होगा जो अवैतनिक, कम आय वाले और भुगतान किए गए कार्यों की अत्यधिक निरंतरता के साथ मौजूद हैं।

► **दो-आयामी दृष्टिकोण:** दो-आयामी दृष्टिकोण से महिलाओं के लिए सभ्य काम के अवसर आसान हो सकते हैं -

- सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करना,
  - नियुक्तियों में भेदभाव को खत्म करना,
  - समान और सभ्य मजदूरी सुनिश्चित करना,
  - सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की सुरक्षा में सुधार, और
  - महिलाओं के अवैतनिक कार्य को पहचानना, कम करना, पुनर्वितरित करना, और पारिश्रमिक देना
- **महिलाओं की मांगें:** काम के सवाल पर, महिलाओं की मांगों में लैंगिक-उत्तरदायी सार्वजनिक सेवाएँ शामिल हैं, जैसे -
- मुफ्त और सुलभ सार्वजनिक शौचालय,
  - घरेलू पानी के कनेक्शन,
  - सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन, और
  - सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने के लिए पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था और CCTV कैमरे और
  - ताकि उनकी गतिशीलता बढ़ाई जा सके।
  - इसके अलावा, वे उचित और सभ्य जीवन यापन और मातृत्व लाभ, बीमारी लाभ, भविष्य निधि और पेंशन सहित उचित सामाजिक सुरक्षा चाहती हैं।

► **प्रवासी श्रमिक:** महिलाओं ने उन नीतियों की आवश्यकता भी व्यक्त की है जो प्रवासी श्रमिकों के लिए सुरक्षित और गरिमामय कामकाज और रहने की स्थिति सुनिश्चित करती हैं।

► उदाहरण के लिए, शहरों में, सरकारों को प्रवास संबंधी सुविधा और संकट केंद्र (अस्थायी आश्रय सुविधा, हेल्पलाइन, कानूनी सहायता और चिकित्सा और परामर्श सुविधाएं) स्थापित करना होगा।

► उन्हें महिला श्रमिकों के लिए सामाजिक आवास स्थान भी आवंटित करना चाहिए, जिसमें किराये के आवास और छात्रावास शामिल हों।

► उन्हें सभी बाजारों में महिला दुकानदारों और महिला फेरीवालों के लिए स्थान सुनिश्चित करना चाहिए।

► **किसानों के रूप में मान्यता:** इसके अलावा, महिलाओं ने कृषि और मत्स्य पालन जैसे क्षेत्रों में किए जाने वाले अवैतनिक और कम भुगतान वाले कार्यों की गणना और पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता पर जोर दिया है।

► उनकी मौलिक मांग यह है कि महिलाओं को किसानों के लिए राष्ट्रीय नीति के अनुसार किसानों के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए; इसमें निम्नलिखित रूप से शामिल होना चाहिए -

► कृषक, खेतिहर मजदूर, पशुपालक, पशुपालक पालनकर्ता, वन कर्मचारी, मछली-श्रमिक, और नमक श्रमिक।

► तत्पश्चात, भूमि पर उनके समान अधिकार और इनपुट्स, क्रेडिट, बाजारों और विस्तार सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित की जानी चाहिए।

► **घर में अवैतनिक कार्य:** महिलाएं घर में उनके अवैतनिक कार्य को बार-बार दोहराती हैं और बिना आय के घर के काम का पुनर्वितरण करती हैं।

► इसके लिए, सरकार को उपयुक्त मापदंडों के साथ जाति-पृथक घरेलू स्तर के डेटा को एकत्र करना होगा।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► भारत की महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) पिछले 13 वर्षों में बहुत गिर गई है। गंभीर रूप से विश्लेषण करें कि महिलाएं भारत के कार्यबल से दूर क्यों हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



जॉनसन एंड जॉनसन में कैंसर पैदा करने वाला पदार्थ पाया गया है



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 2 || शासन और सामाजिक न्याय || मानव विकास || स्वास्थ्य

## शीर्षक

जॉनसन एंड जॉनसन में कैंसर पैदा करने वाला पदार्थ पाया गया है

## सुर्खियों में क्यों ?

- ▶ राजस्थान में जॉनसन एंड जॉनसन बेबी शैम्पू के दो बैचों में से यादृच्छिक रूप से चौबीस बोतलों का चयन कर परीक्षण किया गया।
- ▶ राजस्थान में जॉनसन एंड जॉनसन बेबी शैम्पू के दो बैचों में से कुछ नमूनों के यादृच्छिक परीक्षण किए गए, जिनमें फॉर्मलाडेहाइड नामक एक रसायन, अर्थात् कार्सिनोजेन (carcinogen), कैंसर पैदा करने वाले एक ज्ञात पदार्थ के होने के चिन्ह पाए गए हैं।
- ▶ प्राधिकारियों द्वारा J & J के बेबी पाउडर पर एक जांच शुरू करने के कुछ ही महीनों बाद यह पता चल गया था कि इसमें कैंसर पैदा करने वाला एस्बेस्टस (asbestos) है।

## फॉर्मलडेहाइड

- ▶ फॉर्मलाडेहाइड (नियमित नाम मीथानल) एक प्राकृतिक रूप से बनने वाला यौगिक है जिसका सूत्र formula  $CH_2O$  ( $H-CHO$ ) है। यह एल्डीहाइड्स ( $R-CHO$ ) में सबसे सरल है। इस पदार्थ का यह नाम फॉर्मिक अम्ल (formic acid) से इसकी समानता और संबंध के कारण पड़ा है।
- ▶ फॉर्मलडेहाइड से अन्य कई महत्वपूर्ण सामग्रियां और रसायन यौगिक बन सकते हैं। 1996 में, फॉर्मलडेहाइड के उत्पादन की अनुमानित क्षमता प्रति वर्ष 8.7 मिलियन टन थी। मुख्य रूप से इसका प्रयोग औद्योगिक रेज़िन (resins) (पेड़ों से निकलने वाला चिपचिपा पदार्थ) के उत्पादन में, उदाहरण के लिए, पार्टिकल बोर्ड (कणों को चिपकाकर बनाया गया बोर्ड) और कोटिंग (परत चढ़ाने) के लिए किया जाता है।

## यह खतरनाक है?

इस रसायन को लेकर अधिकांश भय तब उत्पन्न हुआ जब इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (IARC) नामक संस्था ने फॉर्मलडेहाइड का वर्गीकरण एक कार्सिनोजेन के रूप में किया। यह वर्गीकरण ऑटोमोटिव और कपड़ा

उद्योगों में श्रमिकों के अध्ययन पर आधारित है।

## फॉर्मलडेहाइड, क्या हम इसके संपर्क में हैं

फॉर्मलडेहाइड हमारे आस-पास सभी जगह मौजूद है, जो भोजन हम खाते हैं, जैसे कि फल और मछली, उन सभी में शामिल हैं। यह घरेलू उत्पादों में जैसे साज-सज्जा के सामान (furniture) की पॉलिश में भी होता है।

## बेबी शैम्पू का खतरा

- ▶ केवल शैम्पू में ही नहीं, बल्कि कई व्यक्तिगत-देखभाल के उत्पादों में भी ऐसे रसायन होते हैं जो फॉर्मलडेहाइड छोड़ते हैं, उदाहरण के लिए क्वाटरनियम-15 और मिथेनमाइन। उत्पादों में इनको डाला जाता है, क्योंकि फॉर्मलडेहाइड कीटाणुओं और कवक (fungi) को मारता है, जो सौंदर्य प्रसाधन उपयोगकर्ताओं के लिए खतरा भी है।
- ▶ हाँ, शैम्पू में फॉर्मलडेहाइड और क्वाटरनियम-15 दोनों का मौजूद स्तर त्वचा की एलर्जी को सक्रिय कर सकता है।

## J&J द्वारा फॉर्मलडेहाइड का उपयोग

- ▶ J & J ने राजस्थान ड्रग नियंत्रक के दावे पर सवाल उठाया है और दृढ़ता से कहा कि अपने बेबी शैम्पू में वह कोई फॉर्मलडेहाइड पैदा करने वाला कोई रसायन नहीं डालता है। 2014 से, जब कंपनी को पर्यावरणीय कार्य समूह के एनजीओ के विरोध का सामना करना पड़ा था, तब उसने सोडियम बेंज़ोएट को बदलकर अपने सूत्रीकरण में क्वाटरनियम-15 रख दिया था।
- ▶ हम दिए गए अंतरिम परिणामों को स्वीकार नहीं करते हैं... सरकार ने परीक्षण के तरीकों, विवरणों या किसी मात्रात्मक निष्कर्षों का खुलासा नहीं किया।"
- ▶ "यह चिंता का विषय है, विशेष रूप से तब जब निर्धारित मानकों के तहत शैम्पू में फॉर्मलडेहाइड के परीक्षण के लिए कोई निर्धारित परीक्षण विधि या आवश्यकता नहीं है। हमने भारतीय अधिकारियों को पुष्टि की है कि हम अपने शैम्पू में एक घटक के रूप में फॉर्मलडेहाइड नहीं डालते हैं और न ही जॉनसन बेबी के शैम्पू में कोई ऐसा घटक होता है जो समय के साथ फॉर्मलडेहाइड छोड़ सकता है।"

## मुख्य परीक्षा का प्रश्न

जॉनसन एंड जॉनसन में कैंसर पैदा करने वाला पदार्थ पाया गया है, इस पर अपने विचार व्यक्त करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

अंडर -5 मृत्यु दर और कम जन्म वजन लांसेट वैश्विक स्वास्थ्य



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 2 || शासन और सामाजिक न्याय || मानव विकास || स्वास्थ्य

## शीर्षक

5 वर्ष की आयु से कम की मृत्यु दर और कम जन्मभार के तहत, लैंसेट ग्लोबल हेल्थ जर्नल का विश्लेषण

## सुखियों में क्यों ?

► द लैंसेट ग्लोबल हेल्थ में छापे गए एक नए अध्ययन के अनुसार, भारत में पांच साल से कम उम्र के बच्चों की मौत को चिह्नित किया गया है, जो 2015 में किसी भी अन्य देश की तुलना में अधिक था।

► जॉन्स हॉपकिंस ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ के शोधकर्ताओं ने भी अमीर और गरीब राज्यों के बीच बाल मृत्यु दर में बड़ी असमानता पाई।

पांच वर्ष से कम आयु में मृत्यु दर

► **वार्षिक मृत्यु दर में कमी:** जबकि भारत ने पांच वर्ष से कम आयु में वार्षिक मृत्यु दर को 2000 (प्रति 1,000 जीवित जन्मों में 90.5) में 2.5 मिलियन से कम करके 2015 में 1.2 मिलियन तक घटा दिया था ( प्रति 1,000 बच्चों में 47.8 जीवित जन्म), लेकिन यह अभी भी दुनिया में सबसे अधिक था ।

► **असम में सबसे उच्च दर:** राज्यों में, प्रति 1,000 पर 73.1 के साथ मृत्यु दर असम में सबसे अधिक थी, जो असम की, गोवा की 9.7 से सात गुना अधिक थी।

► **असमानताएँ:** हालाँकि, पूरे भारत में पाँच वर्ष से कम आयु की, मृत्यु दर को कम करने में प्रगति हुई है, लेकिन 2000 से 2015 की अवधि में अमीर और गरीब राज्यों के बीच असमानता देखी गई है - गोवा के प्रति 1000 जीवित जन्मों में 9.7 से असम में 73.1 तक दर्ज की गयी थी।

o अन्य क्षेत्रों के बीच, मृत्यु दर 29.7 प्रति 1,000 (दक्षिण) से 63.8 (पूर्वोत्तर) तक थी।

## जन्म के समय कम वज़न का परिदृश्य

► **अपर्याप्त डेटा:** भारत उन 47 देशों (40 कम और मध्यम-आय वाले देशों में शामिल है जहां दुनिया भर के लगभग सभी जन्मों का एक चौथाई हिस्सा है) में से है जिनके पास अपर्याप्त डेटा है।

► हालांकि, दक्षिण एशिया में जन्म के समय पाया जाने वाला कम वज़न 2000 में 32.3% से घटकर 2015 में 26.4% हो गया है।

► भारत ने पिछले एक दशक में **834 नवजात शिशु देखभाल इकाइयों** का निर्माण करके नवजात शिशु की देखभाल में सुधार किया है।

► 2011 में, **भारतीय सांख्यिकी संस्थान** ने बताया था कि लगभग भारत में 20% नवजात शिशुओं का जन्म भार भारत में कम है।

► **केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय** के अनुसार जन्म के समय कम वजन का प्रचलन 15% से 20% के बीच था।

## वैश्विक कम जन्मभार

► विश्लेषण के अनुसार, उच्च आय वाले देशों जैसे यूरोप, उत्तरी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में कम जन्मभार दर को कम करने में लगभग कोई प्रगति नहीं हुई है। हालाँकि, इन देशों में यह प्रचलन भी कम है।

► 2015 में कम जन्मभार सबसे कम दरों में से एक का अनुमान स्वीडन (2.4%) के लिये लगाया गया था। यह संयुक्त राज्य अमेरिका (8%), UK (7%), ऑस्ट्रेलिया (6.5%), और न्यूजीलैंड (5.7%) सहित कुछ उच्च आय वाले देशों में लगभग 7% की तुलना में है।

► दक्षिणी एशिया और उप-सहारा अफ्रीका, सबसे तेजी से प्रगति करने वाले क्षेत्र हैं, जिनमें कम जन्मभार वाले शिशुओं की संख्या सबसे अधिक है, जो कम जन्मभार में वार्षिक गिरावट के साथ 2000 और 2015 के बीच 1.4% और 1.1% क्रमशः थी।

## समाधान

► **5 वर्ष की आयु से कम की मृत्यु दर:** वर्ष 2000 में स्थापित संयुक्त राष्ट्र मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स (MDG) को 2015 में 5 वर्ष की आयु से कम की मृत्यु दर को न्यून करके 1990 के आंकड़े के एक तिहाई तक पहुंचाना था।

- o भारत के लिए, जिसका अर्थ होता है प्रति 1,000 जीवित जन्मों में मृत्यु दर को कम करके 39 करना।

o यद्यपि पांच वर्ष की आयु से कम बच्चों की अधिकतम मृत्यु, प्राथमिक जटिलाताओं के कारण हुई थीं। वहीं उच्च-मृत्यु दर वाले राज्यों में मृत्यु के कारणों के रूप में रोकथाम योग्य संक्रामक रोगों को प्रमुखता से दिखाया गया था।

- भारत, टीकाकरण दर और नवजात शिशु देखभाल में सुधार कर विशेष रूप से उन राज्यों में **टीकाकरण कवरेज** और स्केलिंग में सुधार ला सकता है जहां पांच वर्ष से कम आय के बच्चों की मृत्यु दर ज्यादा है।

► **कम जन्म का वजन:** अनुमान बताते हैं कि राष्ट्रीय सरकारें कम जन्मभार को न्यून करने के लिए बहुत कम काम कर रही हैं।

o पिछले 15 वर्षों में बहुत कम परिवर्तन देखा गया है, यहां तक कि उच्च आय व्यवस्था में भी जहां, कम जन्म का वजन अक्सर, उच्च मातृत्व उम्र, धूम्रपान, सीजेरियन सेक्शन जिसके चिकित्सकीय रूप से संकेत नहीं दिए जाते हैं और प्रजनन उपचार जिससे अधिक जन्मों का जोखिम बढ़ता है, के परिणामस्वरूप होता है।

- o अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि 2012 से 2025 के बीच 30% की कमी के वैश्विक लक्ष्य को पूरा करने के लिए वार्षिक गिरावट को दोगुना करने की आवश्यकता होगी। और ऐसा उच्च आय वाले देशों में भी करना होगा।
- o लेखकों ने छोटे बच्चों के लिए नैदानिक देखभाल सुनिश्चित करने और जन्म के समय बच्चों के कम भार के कारणों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई का आह्वान किया है।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- भारत में बाल मृत्यु दर और जन्म के कमभार की उच्च घटनाओं को कम करने में विफल रहे कारणों की जांच करें। संभव समाधान भी सुझाएं।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## ओबीसी में उप-वर्गीकरण



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

**GS 2 || शासन और सामाजिक न्याय || कमजोर धारा || ओबीसी**

### शीर्षक

ओबीसी में उप-वर्गीकरण

### सुर्खियों में क्यों ?

► केंद्र सरकार ने, अक्टूबर 2017 में, रोहिणी आयोग की स्थापना उन उप-जातियों, जो अन्य पिछड़ा वर्ग के मानदंडों के अंतर्गत आते हैं, के लाभों के वितरण की जांच करने के लिए की थी। आयोग की अध्यक्षता पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस जी रोहिणी द्वारा की गई।

### जी रोहिणी आयोग की सिफारिशें

- ओबीसी के उप-वर्गीकरण की जांच करने के लिए आयोग एक निश्चित कोटा की सिफारिश करने के लिए तैयार है।
- यह संभवतः 27 प्रतिशत ओबीसी कोटा के 8 से 10 प्रतिशत के बीच है, जो केंद्रीय सूची में आने वाली 2,633 जातियों में से लगभग 1,900 है।
- विभिन्न ओबीसी समुदायों के बीच लाभों के विषम प्रवाह को कम करने और असंतुलन को ठीक करने के लिए कदम उठाने का सुझाव देने वाला यह पहला सरकारी-अनिवार्य अभ्यास है।

### उप-वर्गीकरण की आवश्यकता है?

- वर्तमान में, इन 1,900 में से आधी जातियों ने नौकरियों और शिक्षा में तीन प्रतिशत से कम आरक्षण प्राप्त किया है, और बाकी ने पिछले पांच वर्षों के दौरान शून्य लाभ प्राप्त किया है।
- केंद्र सरकार, ने अक्टूबर, 2017 में, जी रोहिणी न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त), के तहत आयोग की नियुक्ति की थी।
- केंद्रीय नौकरियों और उच्च शिक्षण संस्थानों में ओबीसी कोटा लागू करने के पांच साल के आंकड़ों से पता चला है कि एक बहुत छोटे से हिस्से ने बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है।
- आयोग के अनुसार, वर्गीकरण लाभ और सामाजिक पिछड़ेपन के सापेक्ष लाभ पर आधारित है, जिसमें सामाजिक स्थिति, पारंपरिक व्यवसाय, धर्म आदि जैसे पैरामीटर शामिल हैं।

► विभिन्न समुदायों द्वारा प्राप्त लाभ का फायदा उठाकर ओबीसी को उपवर्गीकृत करना अतीत में कई आयोगों की सिफारिशों से एक प्रमुख प्रस्थान है।

### उप वर्गीकरण

- आज तक, कुछ आयोगों द्वारा अनुशंसित ओबीसी के उप-वर्गीकरण और कुछ राज्यों द्वारा लागू किए गए सभी मानदंडों के रूप में सामाजिक पिछड़ेपन के संकेतक का उपयोग किया है।
- 1955 की फर्स्ट बैकवर्ड क्लास कमीशन रिपोर्ट, जिसे कालेकर रिपोर्ट के नाम से भी जाना जाता है, ने पिछड़े और अत्यंत पिछड़े समुदायों में ओबीसी के उप-वर्गीकरण का प्रस्ताव दिया था।
- 1979 के मंडल आयोग की रिपोर्ट में, सदस्य एल आर नाइक द्वारा एक असंतुष्ट नोट ने मध्यवर्ती और दबे पिछड़े वर्गों में उप-वर्गीकरण का प्रस्ताव दिया।
- 2015 में, राष्ट्रीय ओबीसी आयोग के पूर्व अध्यक्ष न्यायाधिश (सेवानिवृत्त) ईश्वरैया के तहत ओबीसी को अति पिछड़ा वर्ग (समूह ए), अधिक पिछड़ा वर्ग (समूह बी) और पिछड़ा वर्ग (समूह सी) में उप-वर्गीकरण के लिए कहा।

### प्रतिनिधित्व और पिछड़ापन

- वर्तमान में, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, हरियाणा, झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और जम्मू सहित दस राज्यों ने ओबीसी को उप-वर्गीकृत किया है।
- उन्होंने अलग-अलग मापदंड का इस्तेमाल किया, जिसमें निर्दिष्ट स्थिति शामिल हैं जैसे कि ईसाई धर्म या इस्लाम में धर्मांतरण से पहले नामांकित, घुमंतू या अर्ध-घुमंतू जनजातियों, एक समुदाय का धर्म, जाति की स्थिति और कथित रूप से सामाजिक या पारंपरिक व्यवसाय।
- न्यायमूर्ति रोहिणी आयोग ने हालांकि यह माना था कि कई समुदाय जो इस स्थिति में अत्यंत पिछड़े हैं, वे नौकरियों और उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं।
- डीएनटी समुदायों के अंतर्गत भी, जिन्हें ओबीसी के तहत वर्गीकृत किया गया है, जो कि उनकी छोटी संख्या या बिखरी हुई आबादी के संदर्भ में अधिक पृथक हैं, आरक्षण का लाभ पाने में असमर्थ हैं।
- आयोग ने आरक्षित सीटों में वर्तमान प्रतिनिधित्व के आधार पर ओबीसी कोटा तय करने पर अपना रुख स्पष्ट किया था, न कि सामाजिक पदानुक्रम पर।

### निष्कर्ष

- ओबीसी के उप-वर्गीकरण को, समुदायों के भीतर, उन समुदायों के अंतर्गत जो केंद्रीय सूची में निम्नता के आधार पर या अन्यथा उनके द्वारा निर्दिष्ट सामाजिक स्थिति या पारंपरिक व्यवसाय में शामिल हैं एक सामाजिक पदानुक्रम में स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है, |



► ओबीसी की केंद्रीय सूची में शामिल सभी समुदाय सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े हैं - जो इस तरह के समावेश के लिए एक पूर्व शर्त है - और इस प्रकार शिक्षा और भर्ती में आरक्षण के योग्य हैं।

### अतिरिक्त जानकारी - क्रीमी लेयर की अवधारणा

- यह शब्द 1971 में सत्तनाथन आयोग द्वारा पेश किया गया था, जिसने निर्देश दिया था कि "क्रीमी लेयर" को नागरिक पदों के आरक्षण (कोटा) से बाहर रखा जाना चाहिए।
- क्रीमी लेयर, अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के अपेक्षाकृत आगे और बेहतर शिक्षित सदस्यों को संदर्भित करने के लिए प्रयोग किया जाने वाला एक शब्द है, जो सरकार द्वारा प्रायोजित शैक्षिक और व्यावसायिक लाभ कार्यक्रमों के लिए पात्र नहीं हैं।

### अतिरिक्त संदर्भ

<https://indianexpress.com/article/india/commission-on-obc-sub-categorisation-recommendations-on-quota-within-quota-based-on-1931-census-5720157/>

### मुख्य प्रश्न

ओबीसी का उप-वर्गीकरण क्या है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## अंतर्राष्ट्रीय संबंध

बीआरआई परियोजना  
2019

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

आईआर || भारत और उसके पड़ोसी || चीन

## शीर्षक

बेल्ट एंड रोड फोरम, 2019

## सुर्खियों में क्यों ?

► 27-29 अप्रैल 2019 को बीजिंग में द्वितीय बी.आर.आई. शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ।

## बी.आर.आई. क्या है?

- यह राष्ट्रपति शी पिंग का एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है जिसे वर्ष 2013 में शुरू किया गया, जो एशिया को अफ्रीका तथा यूरोप के साथ भू-मार्ग ("पट्टी") और समुद्री नेटवर्क ("रोड") के माध्यम से जोड़ता है।
- इस "सिल्क रोड (21वीं सदी)" को सामान्यतः "चीन की मार्शल योजना" के रूप में जाना जाता है।
- यह अंतर-महाद्वीपीय स्तर पर क्षेत्रीय सहयोग एवं संयोजकता में सुधार करने का प्रयास है।
- विश्व बैंक के अनुसार यह पहल उन देशों को शामिल करेगी जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 30 प्रतिशत, जनसंख्या में 62 प्रतिशत और ज्ञात ऊर्जा भंडार में 75 प्रतिशत का सामूहिक रूप से योग प्रदान करते हैं।

## बी.आर.आई. पर वैश्विक चिंताएँ:

- परियोजना का चयन: यह चीनी प्राथमिकताओं पर आधारित है।
- गैर-पारदर्शी: शासन शक्ति के साथ शर्तों की द्विपक्षीय और गैर-पारदर्शी रूप से सहमति ली जाती है।
- लाभ जनसंख्या को कम नहीं करते हैं: अनुबंध चीनी कंपनियों के अधीन जाते हैं और चीनी मजदूरों की सहायता से कार्यान्वित किए जाते हैं।
- आर्थिक रूप से अविभाज्य: चूंकि, अधिकांश परियोजनाएँ अधिमूल्यांकित हैं।
- ऋण-जाल-कूटनीति: ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अधिकांश चीनी ऋणों द्वारा वित्तपोषण अवास्तविक शर्तों पर होता है।

उदाहरण: श्रीलंका को अपने हंबनटोटा बंदरगाह को चीन को 99 वर्षों के लिए पट्टे पर देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

► भूस्थैतिक परियोजना: बी.आर.आई. आर्थिक प्रभुत्व और राजनीतिक आधिपत्य के लिए चीन की भूस्थैतिक महत्वाकांक्षा को प्रदर्शित करता है।

## बेल्ट एंड रोड फोरम (बी.आर.एफ.)

- यह फोरम बी.आर.आई. पहल के कार्यान्वयन हेतु कार्य योजनाओं पर कार्य करने तथा सहयोग समझौतों पर हस्ताक्षर करने के लिए एक मंच है।
- वर्ष 2017: पहली फोरम की बैठक आयोजित हुई।
- वर्ष 2019: दूसरी फोरम की बैठक आयोजित हुई।
- भारत का रुख: दिल्ली देश की संप्रभुता को कम करने वाली सी.पी.ई.सी. की अपनी सुस्पष्ट आलोचना के अनुरूप, मंच की दोनों बैठकों से दूर रहा।

## बी.आर.एफ., 2019 के निष्कर्ष

- चीन के बदलते स्वर:
  - इस बार बी.आर.आई. की व्यापक अंतरराष्ट्रीय आलोचना का जवाब देने हेतु चीन के प्रति उत्सुकता को रेखांकित करते हुए मैत्रीपूर्ण स्वर में शी ने सहमति व्यक्त की।
  - शिखर सम्मेलन के बाद जारी एक संयुक्त विज्ञप्ति ने एक नई सर्वसम्मति पर बातचीत करने के चीन के प्रयास को दर्शाया।
  - विज्ञप्ति में उच्च-मानक, जन-केंद्रित तथा सतत विकास को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया।
  - विज्ञप्ति ने परियोजनाओं के लिए "विविध व स्थायी वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों के मध्य समन्वय के लिए समर्थन को विस्तारित किया।"
  - इसने स्थानीय लोगों के "आजीविका में सुधार" के महत्व को भी रेखांकित किया।
- विश्व की बदलती प्रतिक्रिया:
  - शिखर सम्मेलन में 37 राष्ट्राध्यक्षों या सरकार ने भाग लिया।
  - रूस और मध्य व दक्षिण पूर्व एशिया के लगभग सभी प्रतिनिधि सम्मेलन में उपस्थित थे।
  - भारत और भूटान को छोड़कर, सभी दक्षिण एशियाई देशों ने अपने प्रतिनिधियों को भेजा।
  - बी.आर.आई. की "हानिकारक आर्थिक-नीति" के विरुद्ध और अमेरिका के कड़ी निंदा के बावजूद, नौ यूरोपीय नेताओं ने भाग लिया, जिसमें यूरोपीय संघ के सात राष्ट्र शामिल थे।
  - बी.आर.आई. "महान क्षमता वाली एक भव्य दृष्टि है" जिसे व्यक्त करने हेतु जापान ने एक विशेष दूत भेजा।
  - अफ्रीका के पूर्वी तट ने पाँच नेताओं को भेजा।
  - संयुक्त राष्ट्र महासचिव तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के प्रबंध निदेशक वहाँ उपस्थित थे, जिन्होंने बाद में "बुनियादी ढांचे में निवेश को प्रोत्साहित करने से लेकर नई वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को विकसित करने तक" की बी.आर.आई. की उपलब्धियों की व्याख्या की।

## क्यों भारत को बी.आर.आई. में शामिल नहीं होना चाहिए?

### ► सामरिक:

• सी.पी.ई.सी. पाकिस्तान द्वारा अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरता है। भारत सरकार ने कहा कि "कोई भी देश एक ऐसी परियोजना को स्वीकार नहीं कर सकता है जो संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता पर उसकी मुख्य चिंताओं की अनदेखी करता हो।"

• चीन ने बी.आर.आई. वेबसाइट से एक मानचित्र को हटा दिया है जो जम्मू-कश्मीर तथा अरुणाचल प्रदेश को भारत के हिस्से के रूप में दर्शाता है।

### ► आर्थिक:

• कई सरकारें (मलेशिया, मालदीव, इथियोपिया) बी.आर.आई. परियोजनाओं की लागतों पर पुनर्विचार और पुनर्वार्ता कर रही हैं।

• चीनी विचार-मंच की एक हालिया रिपोर्ट में कहा गया है, निवेश परियोजनाओं के वाणिज्यिक मूल्यांकन में "अपरिपक्व मानसिकता" थी।

## भारत को बी.आर.आई. में क्यों शामिल होना चाहिए?

### ► रणनीतिक:

• सभी पड़ोसी देश (भूटान को छोड़कर) इस परियोजना में सक्रिय रूप से शामिल हैं, इसलिए भारत को अलगाव में खड़े होने के बजाय बी.आर.आई. का सदस्य बनना विवेकपूर्ण होगा।

### ► आर्थिक:

• आई.एम.एफ. ने इसे वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए "बहुत महत्वपूर्ण योगदान" के रूप में वर्णित किया है।

• चीन अब सिल्क रोड बॉन्ड के लिए बहुपक्षीय संस्थानों के साथ-साथ निजी पूंजी के साथ सह-वित्तपोषण की भी मांग कर रहा है।

## आगे की राह:

► भारत को तीन संबंधित परन्तु पृथक राजनयिक पहलों के माध्यम से बी.आर.आई. से जनित रणनीतिक जटिलता का जवाब देना चाहिए।

► भारत को गिलगित-बाल्टिस्तान में भारतीय संप्रभुता को पहचानने हेतु उपयुक्त कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

► दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) क्षेत्रों में संयोजन हेतु योजनाओं को शामिल करने के लिए भारत के पश्चिमी तथा पूर्वी हिस्सों में बी.आर.आई. को अपने दक्षिणी एशियाई पद्धति के दो गलियारों को दिया जाना चाहिए।

► भारत को आवश्यकता है कि वह बी.आर.आई. को नियमों की श्रृंखला के साथ अधिक बहुपक्षीय बनाए।

## अतिरिक्त जानकारी - सिल्क मार्ग क्या है?

► सिल्क मार्ग प्राचीन व्यापार नेटवर्क की एक श्रृंखला थी जो चीन तथा सुदूर पूर्व को यूरोप एवं मध्य पूर्व के देशों से जोड़ती थी। इसे औपचारिक रूप से चीन के हान राजवंश के दौरान स्थापित किया गया था। इस मार्ग ने 130 ई.पू.-1453 ईस्वी के बीच वाणिज्य में प्राचीन विश्व के क्षेत्रों को जोड़ा।

## मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

► बी.आर.एफ.- 2019 ने बी.आर.आई. की वैश्विक आलोचना की चिंताओं को दूर करने हेतु चीन की उत्सुकता पर प्रकाश डाला। इस संदर्भ में, क्या आप वैश्विक मंच पर उसकी उपस्थिति महसूस करने के अवसर को हड़पने की पद्धति के बजाय दूर रहने के भारत के कदम का समर्थन करते हैं? अपने विचार व्यक्त करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## ईरान, जॉइंट कॉम्प्रिहेंसिव प्लान ऑफ एक्शन के बारे में 2015



हिंदी में

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || भारत और शेष विश्व || पश्चिम एशिया

### शीर्षक

जानें जॉइंट कॉम्प्रिहेंसिव प्लान ऑफ एक्शन 2015 के बारे में, ईरान ने अपने सौदे प्रतिबद्धताओं को कम करने का फैसला किया है।

### सुर्खियों में क्यों ?

► ईरान ने 2015 के जॉइंट कॉम्प्रिहेंसिव प्लान ऑफ एक्शन (JCPOA) परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर करने वालों को सूचित किया है कि वह प्रमुख शक्तियों के साथ अपने 2015 के परमाणु समझौते के कुछ प्रमुख प्रावधानों को लागू करना बंद कर देगा।

### JCPOA

► JCPOA, संयुक्त कार्य योजना है, एक समझौता जिसपर ईरान और पी 5 + 1 (संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य - संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन - और जर्मनी) ने 14 जुलाई 2015 को हस्ताक्षर किये थे।

► यह ईरान परमाणु समझौते या ईरान सौदे का आधिकारिक नाम है।

► ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर अंकुश: JCPOA के तहत, ईरान ने मध्यम-समृद्ध यूरेनियम के अपने भण्डार को नष्ट करने, कम-समृद्ध यूरेनियम के भण्डार में 98% की कटौती करने, और 13 वर्षों के बाद गैस सेंट्रीफ्यूजिस की संख्या को दो-तिहाई घटाने के लिये सहमति व्यक्त की है।

► इसने यूरेनियम को केवल 3.67% तक समृद्ध करने और अगले 15 वर्षों तक किसी भी नई भारी-पानी (हेवी-वॉटर) की सुविधा का निर्माण नहीं करने के लिये सहमति दी है।

► ईरान इसके लिये भी सहमत हुआ कि वह 10 साल तक पहली पीढ़ी के सेंट्रीफ्यूज का उपयोग करके केवल एक ही सुविधा में यूरेनियम संवर्धन करेगा।

► और इसके लिये भी स्वीकृति दी कि दुनिया की परमाणु निगरानी संस्था इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी (IAEA) सभी ईरानी परमाणु सुविधाओं का उपयोग कर सकती है।

► ईरान द्वारा इन प्रतिबद्धताओं का सख्ती से पालन करने के बदले में, उस पर अमेरिका, यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के परमाणु संबंधी प्रतिबंध हटा दिए गए थे।

### ईरान का फैसला

- 2015 की संयुक्त व्यापक योजना के तहत अपनी प्रतिबद्धताओं को कम करने के ईरान के फैसले, परमाणु समझौते को तोड़ने से अधिक एक चेतावनी का रूप है।
- ईरान तुरंत अतिरिक्त समृद्ध यूरेनियम और भारी पानी की शिपिंग को रोक देगा।
- ईरान के बैंकिंग और तेल क्षेत्रों को अमेरिकी प्रतिबंधों से बचाने के लिए ईरान ने अन्य हस्ताक्षरकर्ताओं को 60 दिनों का समय दिया है।

### कारण

- समझौते से अमेरिका की वापसी: राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा एक साल पहले अमेरिका को सौदे से बाहर करने के बाद से ईरान आर्थिक और राजनीतिक दबाव में है।
- अमेरिका ने तब से ईरान विरोधी बयानबाजी और प्रतिबंधों को फिर से लागू किया है।
- इसने अन्य चीजों के अलावा, एक विमान वाहक और एक बमवर्षक दल को खाड़ी में तैनात किया है।
- प्रतिबंध-माफी: अमेरिका द्वारा भारत सहित कुछ देशों के प्रतिबंधों को समाप्त करने के साथ, मई 2019 के पहले सप्ताह से ईरानी तेल खरीदने पर, ईरानी अर्थव्यवस्था और अधिक दबाव में आ गई है।
- यह इस संदर्भ में है कि रूहानी ने सौदे में कुछ प्रतिबंधों को हटाने की घोषणा की।
- ईरान की अर्थव्यवस्था से राहत: राष्ट्रपति हसन रूहानी ने कट्टरपंथियों के विरोध के बावजूद 2015 में समझौते के लिये स्वीकृति दी थी, उनका वादा था कि यह ईरान की अर्थव्यवस्था को राहत देते हुए प्रतिबंधों को हटाने में मदद करेगा।
- लेकिन इसके आर्थिक लाभ तीन साल भी नहीं टिके फलस्वरूप ईरान की जटिल शक्ति गतिशीलताओं के कारण श्रीमान रूहानी की स्थिति को कमजोर हो गयी।

### कारण

- समझौते से अमेरिका की वापसी: राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा एक साल पहले अमेरिका को सौदे से बाहर करने के बाद से ईरान आर्थिक और राजनीतिक दबाव में है।
- अमेरिका ने तब से ईरान विरोधी बयानबाजी और प्रतिबंधों को फिर से लागू किया है।
- इसने अन्य चीजों के अलावा, एक विमान वाहक और एक बमवर्षक दल को खाड़ी में तैनात किया है।
- प्रतिबंध-माफी: अमेरिका द्वारा भारत सहित कुछ देशों के प्रतिबंधों को समाप्त करने के साथ, मई 2019 के पहले सप्ताह से ईरानी तेल खरीदने पर, ईरानी अर्थव्यवस्था और अधिक दबाव में आ गई है।
- यह इस संदर्भ में है कि रूहानी ने सौदे में कुछ प्रतिबंधों को हटाने की घोषणा की।





(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

► **ईरान की अर्थव्यवस्था से राहत:** राष्ट्रपति हसन रूहानी ने कट्टरपंथियों के विरोध के बावजूद 2015 में समझौते के लिये स्वीकृति दी थी, उनका वादा था कि यह ईरान की अर्थव्यवस्था को राहत देते हुए प्रतिबंधों को हटाने में मदद करेगा।

► लेकिन इसके आर्थिक लाभ तीन साल भी नहीं टिके फलस्वरूप ईरान की जटिल शक्ति गतिशीलताओं के कारण श्रीमान रूहानी की स्थिति को कमज़ोर हो गयी।

### प्रभाव

► ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम का विस्तार कर सकता है: सैद्धांतिक रूप से, अधिक समृद्ध यूरेनियम और भारी पानी, ईरान को अपने परमाणु कार्यक्रम का विस्तार करने की अनुमति देता है, लेकिन उसने ऐसी किसी भी योजना की घोषणा नहीं की है।

► बड़ा खतरा यह है कि यह हथियारों के निर्माण के उच्च स्तर को फिर से शुरू करेगा यदि 60 दिनों में इसकी शिकायतों का समाधान नहीं किया जाता है।

► ईरान की प्रतिक्रिया को जांच की जा सकती है। ईरान ने सौदा नहीं छोड़ा है जैसा कि अमेरिका ने किया था।

► और इसके सरोकार वास्तविक हैं क्योंकि इसे दंडित किया जा रहा है लेकिन फिर भी यह समझौते की शर्तों के अनुरूप है।

► लेकिन ईरान का शेष हस्ताक्षरकर्ताओं को नोटिस पर रखने का कदम समझौते के औपचारिक निराकरण की शुरुआत हो सकती है।

### समाधान

► **वस्तु विनिमय प्रणाली:** यूरोपीय देश एक तंत्र पर काम कर रहे हैं, जो अभी भी प्रारंभिक चरण में है, जो यूरोप को ईरान के साथ एक वस्तु विनिमय प्रणाली के माध्यम से डॉलर से बचने और प्रतिबंधों को दरकिनार करने की अनुमति देता है।

► लेकिन इसमें ईरान की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार तेल व्यापार शामिल नहीं है।

► **सौदे का पतन:** यदि यूरोप 60 दिनों में पर्याप्त कार्य नहीं करता है और ईरान अपनी धमकी पर अड़ा रहता है, तो सौदा खत्म हो जाएगा, जिससे अमेरिका को शत्रुता बढ़ाने के अधिक कारण मिलेंगे।

► इस सौदे के टूटने से न केवल ईरान परमाणु संकट बढ़ेगा बल्कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में एक बुरी मिसाल कायम होगी।

► **व्यावहारिक विकल्प:** ईरान के लिए इस भंगुरता को समाप्त करने और सौदे को तोड़ने के बजाय अन्य हस्ताक्षरकर्ताओं के साथ सहयोग को गहरा करने के लिए एक व्यावहारिक विकल्प ही कारगर होगा।

► यूरोप को अपनी ओर से, US के एकतरफा खतरों और दबाव के खिलाफ मजबूती से खड़े रहना चाहिए, और ईरान की मदद करने के तरीकों के साथ सामने आना चाहिए।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► ईरान परमाणु समझौते से अमेरिका के पीछे हटने से नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था को दुर्बल माना गया है। विश्लेषण करें।

नोट्स

## क्यों आर्कटिक काउंसिल भारत के लिए महत्वपूर्ण है



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || आईआर || अंतर्राष्ट्रीय संगठन || विविध

### शीर्षक

भारत को आर्कटिक परिषद में पर्यवेक्षक के रूप में फिर से चुना गया

### सुर्खियों में क्यों ?

► अप्रैल 2019 में, भारत को आर्कटिक परिषद के लिए पर्यवेक्षक के रूप में एक बार फिर चुना गया।

### बैठक कहाँ आयोजित की गई थी?

► फिनलैंड के रोवनेमी में।

### आर्कटिक परिषद

#### ► स्थापना:

• परिषद की स्थापना 1996 के ओट्टावा घोषणा के माध्यम से की गई थी।

#### ► उद्देश्य:

- प्राचीन पर्यावरण व जैव विविधता का संरक्षण।
- स्थानीय आबादी के हितों की रक्षा करना।

### सदस्य

► आठ आर्कटिक राज्य - कनाडा, डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे, रूस, स्वीडन और संयुक्त राज्य अमेरिका - आर्कटिक परिषद के एकमात्र सदस्य हैं।

► आर्कटिक क्षेत्र के स्वदेशी लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले छह संगठनों को स्थायी प्रतिभागियों का दर्जा दिया गया है।

### परिषद की प्रकृति

► यह परिषद, संयुक्त राष्ट्र के निकाय या व्यापार जैसी या WTO, NATO या ASEAN के क्षेत्रीय समूहों जैसी संधि आधारित अंतरराष्ट्रीय कानूनी इकाई नहीं है।

► यह आर्कटिक क्षेत्र में गतिविधियों को विनियमित करने में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए केवल एक अंतर सरकारी फोरम (एक अनौपचारिक समूह) है।

► आर्कटिक परिषद, वैज्ञानिक अनुसंधान और संसाधनों के शांतिपूर्ण और स्थायी उपयोग सहित आर्कटिक क्षेत्र के मुद्दों को संबोधित करने के लिए खुद को "अग्रणी अंतर सरकारी फोरम" घोषित करती है।

### निर्णय व्यवस्था

► सभी निर्णय आठ सदस्यों के बीच सहमति से और स्थायी प्रतिभागियों के परामर्श से होते हैं।

### परिषद की कार्य प्रणाली क्या है?

► इसमें 6 कार्य समूह हैं उनमें से प्रत्येक विशिष्ट विषय से संबंधित है।

► ये कार्य समूह समग्र उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आर्कटिक क्षेत्र में की जाने वाली गतिविधियों पर अपने संबंधित विषय में एक आम सहमति बनाने का प्रयास करते हैं।

### पर्यवेक्षक

► भारत को पाँच अन्य देशों - चीन, इटली, जापान, दक्षिण कोरिया और सिंगापुर के साथ 2013 में पर्यवेक्षक का दर्जा दिया गया था।

► इस समूह से पहले, केवल फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, पोलैंड, स्पेन और यूनाइटेड किंगडम को पर्यवेक्षक का दर्जा दिया गया था।

► 2017 में, स्विट्जरलैंड भी एक पर्यवेक्षक बन गया।

► 13 अंतर-सरकारी और अंतर-संसदीय संगठन (जैसे UNEP, UNDP); और 12 अन्य NGO.

#### ► यह उपाधि किसे दी जाती है?

• यह उन संस्थाओं को दिया जाता है जो आर्कटिक परिषद के उद्देश्यों का समर्थन करते हैं और इस संबंध में क्षमताओं का प्रदर्शन करते हैं, जिसमें वित्तीय योगदान करने की क्षमता भी शामिल है।

► पर्यवेक्षक की स्थिति का नवीकरण एक औपचारिकता है।

#### ► कब पर्यवेक्षक की स्थिति समाप्त हो जाती है?

► एक बार उत्पन्न हुई स्थिति तब तक बनी रहती है जब तक सदस्यों में इस बात पर सहमति नहीं बन जाती है कि पर्यवेक्षक, आर्कटिक परिषद के उद्देश्यों के विपरीत चलने वाली गतिविधियों में शामिल था।

#### ► भूमिका

- पर्यवेक्षक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं का हिस्सा नहीं हैं।
- हालांकि, उन्हें परिषद की बैठकों में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है, विशेष रूप से कार्य समूहों के स्तर पर।

### एक पर्यवेक्षक के रूप में भारत

#### ► हिमाद्री

• भारत, वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रयोजनों के लिए आर्कटिक में एक स्थायी स्टेशन स्थापित करने वाले बहुत कम देशों में से एक है।

- ध्रुवीय क्षेत्र, वायुमंडलीय और जलवायु विज्ञान से संबंधित अनुसंधान करने के लिए कुछ अद्वितीय अवसर प्रदान करते हैं जो कहीं और नहीं किए जा सकते हैं।
- उत्तरी ध्रुव से लगभग 1200 किमी दक्षिण में नॉर्वे में स्वालबार्ड के नाय अलसुंद में स्थित हिमाद्री अनुसंधान स्टेशन जुलाई 2008 में शुरू किया गया था।
- गोवा स्थित नेशनल सेंटर फॉर अंटार्कटिक एंड ओशियन रिसर्च (NCOAR) इस स्टेशन पर अनुसंधान गतिविधियों का समन्वय करने वाला मूल संगठन है।
- स्टेशन का उपयोग, पिछले एक दशक में विभिन्न प्रकार के जैविक, हिमनदी व वायुमंडलीय और जलवायु विज्ञान अनुसंधान परियोजनाओं को पूरा करने के लिए किया गया है।
- कई संस्थानों, विश्वविद्यालयों और प्रयोगशालाओं के 200 से अधिक वैज्ञानिक स्टेशन पर सुविधाओं का उपयोग कर रहे हैं।
- अंटार्कटिका के ध्रुवीय क्षेत्रों में भारत द्वारा 1981 में शुरू हुए वैज्ञानिक अनुसंधान के तीन दशकों के अनुभव के बाद हिमाद्री की स्थापना हुई।
- अंटार्कटिका में भारत का पहला स्थायी स्टेशन 1983 में स्थापित किया गया था।
- 2010 में, भारतीय वैज्ञानिकों ने दक्षिणी ध्रुव पर एक वैज्ञानिक अभियान चलाया।
- भारत अब उन बहुत कम देशों में से है जिनके पास अंटार्कटिक में कई अनुसंधान स्टेशन हैं।
- वाणिज्यिक और रणनीतिक हित
- आर्कटिक क्षेत्र कुछ खनिजों और तेल और गैस में बहुत समृद्ध है।
- ग्लोबल वार्मिंग के कारण आर्कटिक के कुछ हिस्सों के पिघलने के साथ, क्षेत्र में नए शिपिंग मार्गों (शिपिंग क्रांति) की संभावना पैदा हुई है जो मौजूदा दूरी को कम कर सकते हैं।
- आर्कटिक में जिन देशों की गतिविधियाँ पहले से ही चल रही हैं, वे इस क्षेत्र में मौजूदा प्राकृतिक संसाधनों के वाणिज्यिक दोहन में हिस्सेदारी चाहते हैं।
- आर्कटिक परिषद आर्कटिक में संसाधनों के व्यावसायिक शोषण पर रोक नहीं लगाती है।
- आर्कटिक परिषद यह सुनिश्चित करना चाहती है कि स्थानीय आबादी के हितों को नुकसान पहुंचाए बिना और स्थानीय पर्यावरण के अनुरूप संसाधन का वाणिज्यिक दोहन स्थायी रूप से किया जाए।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## संयुक्त राष्ट्र के पैनल के साथ भारत कटौती संचार हिंदी में



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || अंतर्राष्ट्रीय संगठन || UN

### शीर्षक

भारत ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार के साथ संचार में कटौती की

### सुर्खियों में क्यों ?

भारत ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (UNHRC) को सूचित किया है कि उसने UNHRC के साथ सभी प्रकार के संचार को रद्द करने का निर्णय लिया है।

### पृष्ठभूमि

- 2018
  - OHCHR (मानव अधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त के कार्यालय) ने कश्मीर में मानवाधिकारों की स्थिति पर रिपोर्ट प्रकाशित की थी।
  - भारत ने यह कहते हुए रिपोर्ट को खारिज कर दिया कि रिपोर्ट मानवाधिकार के आयुक्त जैद राद अल हुसैन के व्यक्तिगत पक्षपात को दिखाती है।
- जनवरी 2018 - मार्च 2019
  - UN का कहना है कि इसके विशेष दूतों ने जम्मू-कश्मीर सहित अन्य स्थान में दौरो के लिये 34 संचार और 20 लंबित अनुरोध भेजे थे।
  - संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, भारत ने इस तरह के अनुरोध का जवाब नहीं दिया और विशेष रूप से दौरा करने से इनकार कर दिया।

### भारत को उकसाने वाली UNHRC की कार्रवाई

- 18 मार्च 2019 को, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (UNHRC) के तीन विशेष प्रतिनिधियों ने भारत को एक पत्र लिखा था जिसमें जून 2018 की रिपोर्ट के आधार पर यातना और मनमाने ढंग से हत्या के 76 मामलों में प्रदान किए गए न्याय पर अपडेट के लिए अनुरोध किया गया था।
- UNHRC की रिपोर्ट में आरोप लगाया गया है कि 76 में से 42 नागरिक, सुरक्षा बलों द्वारा मारे गए थे।
- अकेले 2018 में, UNHRC द्वारा सूचीबद्ध 13 मामलों में से, 4 बच्चे सुरक्षा बलों द्वारा मारे गए।
- कई मामलों में यह भी स्पष्ट नहीं है कि स्थानीय पुलिस ने FIR दर्ज की है या नहीं और क्या अदालती पृष्ठताछ की गई है।

### भारत का जवाब

जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र कार्यालयों के लिए भारत के स्थायी मिशन ने, 13 अप्रैल 2019 को UNHRC की रिपोर्ट का जवाब दिया:

जून 2018 में कश्मीर में मानवाधिकारों की स्थिति पर OHCHR (संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त के मानवाधिकार के कार्यालय) द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में किसी भी मानवाधिकार तंत्र या निकायों द्वारा की गई टिप्पणी को भारत स्पष्ट रूप से खारिज करता है।

➤ "भारत अब इन जनादेश धारकों या इस मुद्दे पर किसी अन्य जनादेश धारकों के साथ नहीं जुड़ने का निश्चय करता है," जिस पर भारत ने "व्यक्तिगत पक्षपात" का आरोप लगाया था।

➤ भारत इस रिपोर्ट को खारिज करता है और इसकी विश्वसनीयता और निष्पक्षता पर संदेह ज़ाहिर करता है।

➤ भारत ने "कश्मीर में मानवाधिकारों की स्थिति" पर OHCHR की रिपोर्ट को भी खारिज कर दिया था (जून 2018 में जम्मू-कश्मीर पर पहली बार ऐसी कोई रिपोर्ट आई है)।

➤ भारत ने मानवाधिकार के उच्चायुक्त जैद राद अल हुसैन पर "स्पष्ट पक्षपात" करने का भी आरोप लगाया था।

### अन्य NGOs द्वारा रिपोर्ट

- HRC की रिपोर्ट ऐसे समय में आई जब राज्य के दो गैर सरकारी संगठनों, टुडे एसोसिएशन ऑफ पेरेंट्स ऑफ डिसअपियर्ड पर्सन्स (APDP) और जम्मू कश्मीर कोएलिशन ऑफ सिविल सोसाइटी (JKCCS) ने 20 मई, 2019 को जम्मू और कश्मीर में यातना पर अपनी पहली व्यापक रिपोर्ट जारी की।
- "टॉर्चर" नामक रिपोर्ट: "इंडियन स्टेट्स इंस्ट्रूमेंट ऑफ कंट्रोल इन इंडियन एडमिनिस्ट्रिटिव जम्मू एंड कश्मीर" शीर्षक से आई रिपोर्ट में 1990 के बाद से घाटी में सुरक्षा बलों द्वारा कथित अत्याचार के 432 मामले दर्ज किए गए हैं।
- ADDP और JKCCS की रिपोर्ट में कहा गया है कि सैन्य बलों द्वारा मारे गए 432 में से 301 में महिलाएं, छात्र, किशोर, कार्यकर्ता और पत्रकार शामिल हैं।
- रिपोर्ट में दावा किया गया है कि जम्मू और कश्मीर में अत्याचार पीड़ितों में से लगभग 70% नागरिक (आतंकवादी नहीं) थे और लगभग 11% लोग यातना के परिणामस्वरूप मारे गये।
- मामलों में बिजली द्वारा मृत्यु और यौन उत्पीड़न की घटनाएं शामिल थीं, जिन्हें सरकार बार-बार नकारती रही है।

### भारत सरकार और UNHRC के बीच यह टकराव क्यों है?

- संयुक्त राष्ट्र के पैनल में वामपंथी समर्थक हैं जो पत्थरबाजों का समर्थन करते हैं।
- मानवाधिकार प्रमुख के लिए, लश्कर और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे संगठन आतंकवादी समूह नहीं हैं।



## मानवाधिकार परिषद

- मानवाधिकार परिषद ने संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व मानवाधिकार अधिकारों की जगह ली है।
- यह परिषद 15 मार्च 2006 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव द्वारा बनाया गया था।
- यह परिषद 47 संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों से बना है जो संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा चुने जाते हैं।
- मानवाधिकार परिषद संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के अधीन एक अंतर-सरकारी निकाय है।
- यह संयुक्त राष्ट्र कार्यालय जिनेवा में मिलता है।
- यह दुनिया भर में मानवाधिकारों के संवर्धन और संरक्षण को मजबूत करने और मानवाधिकारों के उल्लंघन की स्थितियों को दूर करने और उन पर सिफारिशें करने के लिए जिम्मेदार है।
- इसमें सभी विषयगत मानव अधिकारों के मुद्दों और स्थितियों पर चर्चा करने की क्षमता है, इन मुद्दों को पूरे वर्ष इसके ध्यान की आवश्यकता है।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## चीन के दुर्लभ पृथ्वी खनिज



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || आईआर || भारत और उसके पड़ोसी || चीन

### शीर्षक

चीन के दुर्लभ पृथ्वी खनिज

### सुर्खियों में क्यों ?

► चीनी राज्य मीडिया ने चेतावनी दी कि बीजिंग, अमेरिका को दुर्लभ पृथ्वी खनिजों से दूर कर सकता है, जो इलेक्ट्रिक कारों और मोबाइल फोन में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं।

### दुर्लभ पृथ्वी खनिज क्या हैं?

► दुर्लभ पृथ्वी धातुओं में 17 तत्व शामिल हैं, जिसमें यट्रियम, स्कैंडियम और आवर्त सारणी में लैंथेनाइड श्रृंखला के सदस्य शामिल हैं।  
► ये धातुएँ मुक्त अवस्था में नहीं बल्कि खनिज ऑक्साइड अयस्क में होती हैं।

### ये खनिज कितने दुर्लभ हैं

► हालांकि, उनका नाम कुछ अशुद्ध है, जबकि उन्हें निकालना मुश्किल है, वे पृथ्वी की पपड़ी में काफी प्रचुर मात्रा में हैं। वास्तव में, पृथ्वी की पपड़ी में सेरियम 25 वीं सबसे प्रचुर धातु है।

### अमेरिकी चीन व्यापार तनाव

► महीनों के लिए, दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं को इस आरोप में बंद कर दिया गया है कि चीन व्यापार रहस्यों को चुराने के साथ लूट की नीति अपनाता है और अमेरिकी तकनीकी प्रभुत्व को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए वह विदेशी कंपनियों को अपनी तकनीक को एक ड्राइव में देने के लिए भी मजबूर करता है।  
► ट्रम्प प्रशासन ने चीनी आयात में \$ 250 बिलियन पर 25% टैरिफ लगाया है और अब तक बचे हुए आयातों में \$ 300 बिलियन का कर लगाने की योजना बना रहा है।  
► और इसने इस महीने (मई, 2019) में चीनी टेलिकॉम दिग्गज हुआवेई (Huawei) को एक ब्लैकलिस्ट में डाल दिया जो प्रभावी रूप से अमेरिकी कंपनियों

कंपनियों को चीनी सरकार की मंजूरी के बिना कंप्यूटर चिप्स, सॉफ्टवेयर और अन्य घटकों की आपूर्ति करने से रोकती है।

► यू.एस. का दावा है कि हुआवेई चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी की आभारी है, जो कानूनी रूप से उसे अपनी ओर से जासूसी करने का आदेश दे सकता है।  
► वाशिंगटन ने कोई सबूत नहीं दिया है कि हुआवेई (Huawei) ने ऐसा किया है या नहीं।

### दुर्लभ पृथ्वी क्या हैं?

► दुर्लभ पृथ्वी धातु 17 तत्वों का एक समूह है जो जमीन में कम सांद्रता में दिखाई देते हैं।  
► ये तत्व हैं: लैंथेनम, सेरियम, प्रेजोडिम, नियोडिमियम, प्रोमैथियम, समैरियम, यूरोपियम, गडोलिनियम, टेरियम, डिस्प्रोसियम, होलमियम, एर्बियम, थुलियम, युटेरियम, लुटेटियम, स्कैंडियम, येट्रियम  
► इनका खनन करना बहुत मुश्किल और महंगा है और इनकी सफाई की प्रक्रिया भी

### दुर्लभ पृथ्वी धातु की आपूर्ति में चीन की भूमिका

► भंडार  
• चीन, जो वैश्विक दुर्लभ पृथ्वी भंडार का 37% हिस्सा है।  
► प्रसंस्करण  
• चीन दुनिया की अधिकांश प्रसंस्करण क्षमता की मेजबानी करता है।  
• इसने 2014 से 2017 तक संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा आयातित दुर्लभ पृथ्वी के 80% की आपूर्ति की।

### चीन ने कभी इसका सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता होने का अनुचित लाभ उठाया था?

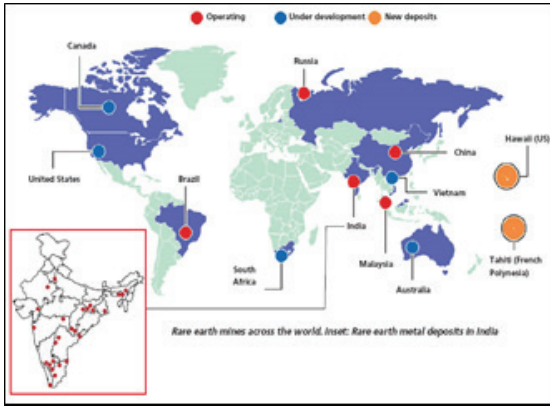
► जापान ने चीन पर राजनीतिक कारणों से दुर्लभ पृथ्वी आपूर्ति रोकने का आरोप लगाया।

### चीन के लाभ के लिए क्या काम किया?

► उनके महान उपयोग के बावजूद, अधिकांश देशों ने अतीत में दुर्लभ पृथ्वी खनन से खुद को दूर कर लिया है क्योंकि यह प्रक्रिया पर्यावरण की दृष्टि से हानिकारक है।

### वैकल्पिक आपूर्तिकर्ता जो चीन के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं

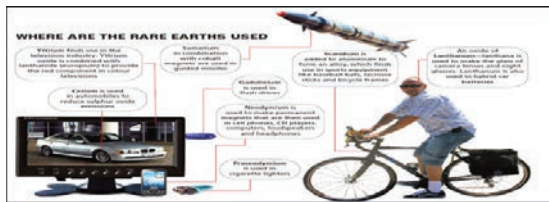
► संयुक्त राज्य अमेरिका  
► कैलिफोर्निया की माउंटेन पास की खान (Mountain Pass mine) यू.एस. में पृथ्वी की दुर्लभ सुविधाओं की केवल एकमात्र संचालक है।  
► लेकिन इन खनिजों को चीन प्रसंस्करण के लिए भेजा जाना था।  
व्यापार युद्ध के दौरान उन आयातों पर 25% टैरिफ लगाया।



### ► ऑस्ट्रेलिया

- ऑस्ट्रेलिया के लिनास कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने एक दुर्लभ पृथ्वी प्रसंस्करण का संयुक्त राज्य अमेरिका में निर्माण करने की सुविधा के लिए टेक्सास स्थित ब्लू लाइन कॉर्पोरेशन के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।
- दुर्लभ पृथ्वी का खनन भारत, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, एस्टोनिया, मलेशिया और ब्राजील में भी किया जाता है।

### दुर्लभ पृथ्वी का उपयोग कहाँ किया जाता है?



### चीनी आयात पर निर्भरता कैसे कम करें?

- अमेरिकी सैनेटरो ने घरेलू आपूर्ति के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए मई में कानून पेश किया।
- पुनरावर्तन भी दुर्लभ पृथ्वी खनिजों के लिए एक संभावित स्रोत के रूप में उभरा है।
- उदाहरण: नेब्रास्का आधारित रेयर अर्थ साल्ट्स पुरानी फ्लोरोसेंट ट्यूब लाइट ले रहा है और उनके दुर्लभ पृथ्वी तत्वों के लिए उनका पुनरावर्तन कर रहा है।

### अमेरिकी चीन व्यापार युद्ध दुर्लभ पृथ्वी धातु की आपूर्ति को कैसे प्रभावित करने वाला है?

- चीन, अमेरिका के आयात में 80 प्रतिशत तक की हिस्सेदारी रखता है, जिसमें उन 17 खनिजों का समूह है, जिनका प्रयोग सैन्य उपकरणों और उच्च तकनीक वाले उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए किया जाता है।
- अमेरिकी कंपनियां घरेलू प्रसंस्करण सुविधाओं की कमी के कारण दुर्लभ पृथ्वी खनिजों के चीनी प्रभुत्व को चुनौती देने से बहुत दूर हैं,
- इसलिए, चीन व्यापार वार्ता में परिष्कृत और शक्तिशाली उत्तोलन पर अपने निकट-एकाधिकार को बनाए रखेगा।

दोनों देशों के बीच व्यापार संघर्ष की वृद्धि में, चीन के राज्य ने आरोप लगाया कि चीन संयुक्त राज्य अमेरिका पर दुर्लभ पृथ्वी की बिक्री को प्रतिबंधित कर सकता है, जिसने बीजिंग की भूमिका के बारे में आपूर्तिकर्ता के रूप में आशंकाओं को हवा दी है।

### संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रसंस्करण इकाई

- संयुक्त राज्य में दुर्लभ पृथ्वी प्रसंस्करण संयंत्रों के निर्माण के प्रयास अभी भी शुरुआती चरण में हैं और कांग्रेस और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के प्रशासन में एकीकृत समर्थन की कमी है।

### आगे की ओर

- चीन के बाहर, एक ऐसा स्थान, जहाँ पर इन खनिजों को संसाधित किया जाए, अमेरिका और दुनिया के लिए यह महत्वपूर्ण होगा।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## US ने भारत को करेंसी मॉनीटरिंग लिस्ट से बाहर निकाला

By Prashant Dhawan

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || आईआर || भारत और बाकी दुनिया || अमेरीका

### शीर्षक

यूएस ने करेंसी मॉनीटरिंग लिस्ट से भारत को हटाया

### सुर्खियों में क्यों ?

► अमेरिकी सरकार ने मुद्रा हेरफेर के लिए भारत को अपनी निगरानी सूची से हटा दिया है।

### सूची किस विषय पर है?

- यह सूची अमेरिकी ट्रेजरी विभाग द्वारा प्रकाशित की गई है।
- यह एक अर्ध-वार्षिक रिपोर्ट है जिसमें वे अंतराष्ट्रीय आर्थिक और विनिमय दर नीतियों की समीक्षा करते हैं।
- यूएस ट्रेजरी ने एक मुद्रा मैनिपुलेटर की पहचान करने और इसे जांचने के लिए निम्नानुसार तीन शर्तें निर्धारित की हैं:
- अमेरिका के साथ **20 बिलियन डॉलर से अधिक का व्यापार अधिशेष**
- जीडीपी के **3% का चालू खाता** घाटा अधिशेष (हाल ही में मई 2019 में **2 प्रतिशत तक संशोधित**)
- 12 महीने की अवधि में **जीडीपी के 2% से अधिक की लगातार विदेशी मुद्रा खरीद**
- यदि कोई देश जो सूची में है, वह अमेरिका द्वारा **निर्दिष्ट सभी थ्रेसहोल्ड (सीमा रेखा) को तोड़ता है**, तो इसे उस देश के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है जो **अपनी मुद्रा में हेरफेर करता है**।

### इस अभ्यास का उद्देश्य

- व्यापार में **अनुचित बाधाओं को दूर करना**।
- प्रमुख अमेरिकी व्यापारिक भागीदारों के साथ **निष्पक्ष और अधिक पारस्परिक व्यापार को प्राप्त** करने के लिए।
- **अनुचित मुद्रा प्रथाओं** का मुकाबला करने के लिए, जो प्रतिस्पर्धात्मक लाभ की सुविधा प्रदान करते हैं, जैसे कि मुद्रा बाजारों में अनुचित हस्तक्षेप।

### भारत को मुद्रा मैनिपुलेटर सूची में कब रखा गया था?

- **मई 2018 में, भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा विदेशी विनिमय में पाँच अन्य देशों - चीन, जर्मनी, जापान, दक्षिण कोरिया और स्विट्जरलैंड के साथ-साथ विदेशी विनिमय में**

हस्तक्षेप के बाद पहली बार भारत को अमेरिकी मुद्रा निगरानी सूची में रखा गया था।

### मुद्रा मैनिपुलेटर के लिए भारत क्यों जांच के दायरे में था?

- भारत में अमेरिका के साथ **24.2 बिलियन डॉलर का महत्वपूर्ण व्यापार अधिशेष** था।
- इसका चालू खाता घाटा (**CAD**) जून 2018 में **GDP का 1.9% था**।

### किन अन्य देशों को मुद्रा जोड़तोड़ के रूप में वर्गीकृत किया गया है?

- इस रिपोर्ट में **किसी भी देश** को मुद्रा जोड़तोड़ के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है।
- हालाँकि, **9 अर्थव्यवस्थाओं - चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, जर्मनी, इटली, आयरलैंड, सिंगापुर, मलेशिया और वियतनाम को निगरानी सूची में रखा गया है**।

### भारत को निगरानी सूची से क्यों हटाया गया?

- यह इस बात को पुष्ट करता है कि भारत एक मुद्रा को कृत्रिम रूप से स्थानांतरित करने के लिए मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप न करने के लिए प्रतिबद्ध है।
- यह भारत के **मुद्रा मैनिपुलेटर (जोड़तोड़) का नाम होने की संभावना** को काफी कम कर देता है, और **भारतीय रिज़र्व बैंक को अस्थिरता** की जांच करने के लिए मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप करने के लिए अधिक स्थान देता है।
- यह ऐसे समय में **अमेरिका की चिंताओं** को खत्म करेगा जब यह चीन के साथ व्यापार युद्ध में सक्रिय रूप से जुड़ा होगा।
- इस निष्कासन से **चीन को लाभ मिलेगा और अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने में मदद मिलेगी**।

### निष्कर्ष

- यद्यपि भारत अमेरिकी ट्रेजरी द्वारा आवश्यक तीन मानदंडों में से एक से मिला, लेकिन भारत को अमेरिका, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, जर्मनी, इटली, आयरलैंड, सिंगापुर, मलेशिया और वियतनाम जैसे अन्य प्रमुख निर्यातकों पर बढ़त रखने की संभावना है।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



## श्रीलंका ने भारत और जापान के साथ पोर्ट डील की



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || IR || भारत और उसके पड़ोसी || श्री लंका

### शीर्षक

श्रीलंका ने भारत और जापान के साथ पोर्ट डील (बंदरगाह समझौता) पर हस्ताक्षर किए

### सुर्खियों में क्यों ?

- **श्रीलंका, जापान और भारत** ने संयुक्त रूप से कोलंबो बंदरगाह पर ईस्ट कंटेनर टर्मिनल (ईटीसी) विकसित करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- संयुक्त पहल की लागत \$ 500 मिलियन और \$ 700 मिलियन के बीच अनुमानित है।

### समझौता किस बारे में है?

- **श्रीलंका**
  - समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने के अनुसार, **श्रीलंका पोर्ट्स अथॉरिटी (SLPA) ईस्ट कंटेनर टर्मिनल (ECT) के 100% स्वामित्व को बरकरार रखेगी**, जबकि टर्मिनल ऑपरेशंस कंपनी, इसका संचालन संयुक्त रूप से करेगी।
  - **श्रीलंका परियोजना में 51% हिस्सा रखेगा** और संयुक्त उद्यम के साझेदारों को 49% बनाए रखेंगे।
  - **ईसीटी (ईस्ट कंटेनर टर्मिनल) चीन-समर्थित अंतरराष्ट्रीय वित्तीय शहर से लगभग 3 किमी दूर स्थित है**, जिसे "पोर्ट सिटी" के रूप में जाना जाता है, जो कोलंबो के समुद्री मोर्चे पर पुनर्निर्मित भूमि पर बनाया जा रहा है।
- **जापान**
  - "जापान द्वारा 0.1% ब्याज दर के साथ 40 साल का सॉफ्ट लोन देने की संभावना है।"
  - एसएलपीए (श्रीलंका पोर्ट्स अथॉरिटी) ने "परिकल्पित जापानी ऋण "को" श्रीलंका द्वारा प्राप्त सर्वश्रेष्ठ ऋण शर्तों में से एक " के रूप में वर्णित किया।
- **भारत**

पहल के लिए भारत के योगदान का विवरण प्रतीक्षित है, लेकिन इस परियोजना के संचालन में नई दिल्ली की दिलचस्पी जगजाहिर है।

### श्रीलंका में चीनी निवेश के कारण समस्याएँ:

- **श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह परियोजना में चीन का राजनीतिक रूप से विवादास्पद निवेश 2015 में एक चुनावी मुद्दा बन गया और राजधानी में राजनेताओं के बीच झगड़े का कारण भी बन गया है।**

► दक्षिणी श्रीलंका में 9 साल पुराने हंबनटोटा बंदरगाह पर लगभग कोई कंटेनर ट्रैफिक नहीं था और बाड़ को आसानी से उखाड़कर हाथी यहां से आसानी से गुजर सकते थे जो इस बात का प्रमुख उदाहरण है कि बेल्ट एंड रोड में शामिल देशों के लिए क्या गलत हो सकता है।

► **श्रीलंका ने बंदरगाह बनाने के लिए भारी कर्ज लिया**, जो कर्ज वह चुका नहीं सका और फिर चीन को कर्ज से राहत के लिए उसने 99 साल की लीज दे दी।

► **चीन ने दक्षिण-पूर्व श्रीलंका के हंबनटोटा में एक नया 1.5 बिलियन डॉलर का बंदरगाह शहर भी ले लिया है**, जो कि पूर्वी-पश्चिमी वैश्विक शिपिंग मार्ग पर पड़ता है - श्रीलंका कर्ज का भुगतान करने में असमर्थ था।

### समझौते का महत्व

► **समझौते का महत्व:**

- **हिंद महासागर के एक केंद्र के रूप में श्रीलंका का विकास** और इसके बंदरगाहों का खुलापन महत्वपूर्ण है।
- **कोलंबो बंदरगाह क्षेत्र में अग्रणी बंदरगाह है।**
- यह **संयुक्त परियोजना तीन देशों के बीच लंबे समय से चली आ रही सद्भावना और सहयोग को दर्शाती है**
- भारत और जापान की भागीदारी की इस परियोजना को, **चीन के बढ़ते हुए प्रभाव को बेअसर करने के उद्देश्य से एक बड़े विकास के रूप में देखा जा रहा है।**

### सौदे का राजनीतिक दृष्टिकोण

- पिछले साल, टर्मिनल विकसित करने में **भारत की संभावित भूमिका सरकार के साथ एक प्रमुख विवाद का बिंदु बन गई थी।**
- राष्ट्रपति **मैत्रीपाला सिरिसेना ने परियोजना में किसी भी भारतीय भागीदारी का विरोध किया था**, क्योंकि "राष्ट्रीय संपत्ति" विकसित करने के लिए विदेशी अभिकर्ताओं के बीच होने वाली रस्साकशी, द्वीप में विशेष रूप से राष्ट्रवादी ट्रेड यूनियनों के बीच राजनीतिक रूप से एक संवेदनशील मुद्दा बनी हुई है।
- पीएम रानिल विक्रमसिंघे स्पष्ट रूप से भारतीय भागीदारी को अनुमति देने के लिए अधिक इच्छुक थे।

### भारत-प्रशांत में चीन के प्रभाव को बेअसर करने के लिए भारत-जापान के कदम

- **जापान**
  - जापान ने स्वतंत्र और खुले भारत-प्रशांत क्षेत्र के महत्व को मान्यता देने के लिए 1980 के दशक के बाद से पोर्ट ऑफ कोलंबो के विकास का समर्थन किया है।
  - जापान ने अपनी "मुक्त और खुली भारत-प्रशांत क्षेत्र रणनीति" के तहत इस क्षेत्र में एक बड़ा खिलाड़ी बनने की योजना को भी आगे बढ़ाया है।
- **भारत**
  - कोलंबो बंदरगाह में भारत का लगभग 70% ट्रांसशिपमेंट कारोबार है।

- भारत ,श्रीलंका में चीन के बढ़ते प्रभाव का प्रतिकार करने की कोशिश कर रहा है, जिसे नई दिल्ली ने लंबे समय से कोई महत्त्व नहीं दिया है।
- हाल की निवेश पहल इस दिशा में एक कदम आगे है।

### निष्कर्ष

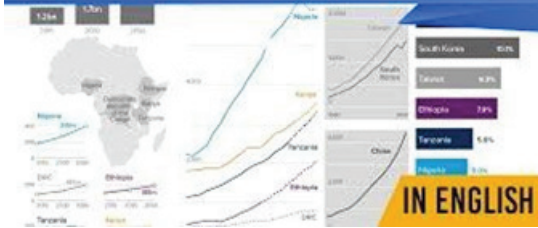
- यह कदम जापान, अमेरिका और अन्य इंडो-पैसिफिक शक्तियों के साथ उसके निकट पड़ोस में सहयोग करने के लिए भारत के नए खुलेपन को दर्शाता है।" दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव ने बीजिंग के बढ़ते आर्थिक दबदबे के विकल्प के रूप में " दिल्ली को विश्वसनीय पेशकश करने में अधिक सक्रिय होने के लिए मजबूर किया है।
- भारत और जापान सक्रिय रूप से चीनी प्रभाव को हिंद महासागर में बेअसर करने में शामिल हैं और एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (एएजीसी) ऐसा ही एक उदाहरण है। श्रीलंका में नई निवेश परियोजना इस दिशा में एक मील का पत्थर है।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## अफ्रीका की बढ़ती जनसंख्या



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || भारत और बाकी दुनिया || अफ्रीका

### शीर्षक

अफ्रीका की बढ़ती जनसंख्या, क्या अफ्रीका जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठा सकता है?

### सुर्खियों में क्यों ?

► बढ़ती जनसंख्या कैसे अफ्रीका को चुनौती दे रही है। यह स्पष्ट नहीं है कि सरकारें इस तरह के उछाल का प्रबंधन कैसे करेंगी और क्या अफ्रीका के लिये अन्य विकासशील क्षेत्रों द्वारा अपनायी गयी समृद्धि की राह अभी भी उपलब्ध है।

### अफ्रीका

► पिछले तीन दशकों में उप-सहारा अफ्रीका में, आबादी दोगुनी से अधिक हो गई है और इस सदी के अंत तक फिर से तीन गुना होने की उम्मीद है।

► दूसरी ओर, दुनिया की विकसित अर्थव्यवस्थाओं को प्रजनन क्षमता में गिरावट का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए स्पष्ट है कि कुछ देशों को अपनी आबादी - और अर्थव्यवस्था - आगे के वर्षों में सिकुड़ती दिखाई देगी।

► हालांकि, युवा व कामकाजी उम्र के लोगों की बढ़ती संख्या, आर्थिक अवसरों का निर्माण करती है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि सरकारें किस तरह से इस उछाल का प्रबंधन करेंगी और क्या अन्य विकासशील क्षेत्रों द्वारा अपनायी गयी समृद्धि की राह अफ्रीका के लिये अभी भी उपलब्ध है। निर्माण क्षेत्र में स्थानांतरण की राह अभी भी उपलब्ध है।

### रुख

► बेहतर चिकित्सा देखभाल: उप-सहारा अफ्रीका में जनसंख्या वृद्धि मुख्य रूप से बेहतर चिकित्सा देखभाल के कारण है, जिसमें निम्नलिखित शामिल है -

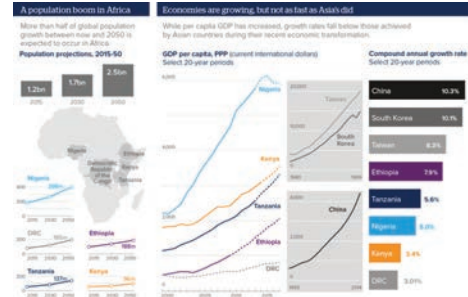
- शिशु और बाल मृत्यु दर का कम होना और
- 2000 के बाद से औसत जीवन प्रत्याशा का 50 से 61 तक बढ़ना।

○ संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि जनसंख्या लगभग 1.1 बिलियन हो गई है और यह 2100 तक 4 बिलियन तक पहुंच सकती है।

○ अकेले नाइजीरिया के सदी के मध्य तक 400 मिलियन आबादी के साथ दोगुना होने का अनुमान है, जिससे यह चीन और भारत के बाद दुनिया का तीसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है।

► प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद: उप-सहारा अफ्रीका का प्रति-व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद, भारत में 1,987 डॉलर के विपरीत, सदी की शुरुआत से \$ 1,652 तक 40% बढ़ गया है।

असमानता: हालांकि, तेल और खनिज धन का मतलब है कि मुठ्ठी भर राष्ट्र उन राष्ट्रों की तुलना में 10 गुना अमीर हैं, जो बेहद गरीब हैं।



### अफ्रीका को कैसे हो सकता है फायदा?

► युवा आबादी: अमेरिका में एक तिहाई की तुलना में उप-सहारा अफ्रीका के लगभग 60% लोग 25 वर्ष की आयु से कम हैं। यह "युवा उभार" एक पर्याप्त और ऊर्जावान कार्यबल में बदल सकता है। लेकिन लाभ तभी मिलता है जब अधिक समृद्धि प्रजनन दर को कम करती है।

► यदि अगली पीढ़ी के अपने माता-पिता की तुलना में कम बच्चे होते हैं, तो काम करने वाले लोगों का अनुपात उनके आश्रितों की संख्या के सापेक्ष में बढ़ जाएगा - मुख्य रूप से बच्चे और बुजुर्ग - जो एक तथाकथित "जनसांख्यिकीय लाभांश" बनाएंगे।

► छोटे परिवार महिलाओं को भुगतान किए गए काम को, सुरक्षित करने की अधिक अनुमति देते हैं और माता-पिता और सरकार प्रत्येक बच्चे के लिए अधिक से अधिक संसाधनों का निवेश करने में सक्षम हैं।

► एशिया और लैटिन अमेरिका ने ऐसा विकसित किया, लेकिन अफ्रीका में प्रजनन क्षमता का कम होना वह अनुमान है, जो कि गहरे बैठे सांस्कृतिक दृष्टिकोण और व्यापक गरीबी के कारण अधिक समय लेगा।

### चुनौतियां

► नौकरियां: अफ्रीकी विकास बैंक का अनुमान है कि कार्यबल में प्रवेश करने वाले युवाओं की संख्या को अवशोषित करने के लिए हर साल 10 मिलियन से अधिक नई नौकरियों का सृजन किया जाना चाहिए।

► विनिर्माण में बढ़े हुए स्वचालन, रोजगार के विकास के एक पारंपरिक स्रोत को निचोड़ सकता है, इसलिए कुछ देश सेवाओं के बजाय अपनी आशाओं को कम कर रहे हैं।

► दक्षिण अफ्रीका और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के शहरों जैसे लागोस, नाइजीरिया और किशासा, में कॉल सेंटर और अन्य प्रकार के आउटसोर्सिंग ऑपरेशन खुल गए हैं।

► पर्यटन ने रवांडा में शीर्ष विदेशी मुद्रा अर्जक के रूप में कॉफी और चाय निर्यात को पछाड़ दिया है।

## अपेक्षित बदलाव

- **शिक्षा:** उप-सहारा अफ्रीका में लगभग एक तिहाई बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं, और औसतन केवल 4% लोग ही विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करते हैं।
- यह क्षेत्र संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्गीकृत है जहां प्रत्येक चार में से एक बच्चा कुपोषित है। यह क्षेत्र अपनी आबादी को खिलाने के लिए भी संघर्ष करता है।
- **कृषि:** सिर्फ निर्वाह भर की कृषि से आगे बढ़ने के लिए, राजनेताओं को तेजी से शहरीकरण करने वाली नागरिकता की सेवा के लिए सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे जैसे पानी और बिजली में अरबों का निवेश करना चाहिए।
- **बुनियादी ढांचा:** माली और युगांडा ने आम और मछली के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सड़कों और परिवहन में सुधार किया है, जबकि इथियोपिया नील (Blue Nile) पर अफ्रीका के सबसे बड़े जलविद्युत संयंत्र का निर्माण कर रहा है, ताकि बाढ़ को नियंत्रित किया जा सके और बिजली पैदा की जा सके।
- **पर्यावरण:** सरकारों को भी प्रदूषण और वनों की कटाई सहित पर्यावरण क्षरण से निपटना चाहिए।

## क्या जनसंख्या वृद्धि को धीमा किया जा सकता है?

- हां, हालांकि अन्य क्षेत्रों की तुलना में प्रगति धीमी रही है। 1970 के दशक के अंत तक 6.8 से कम, औसतन महिलाओं के 4.8 जीवित बच्चे हैं, जो अभी भी यूरोप और उत्तरी अमेरिका की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक है।
- **परिवार नियोजन:** रवांडा ने परिवार नियोजन को प्रोत्साहित किया और क्लीनिकों में गर्भ निरोधकों को उपलब्ध कराया है, जिससे पिछले 20 वर्षों में इसकी प्रजनन दर आधे से अधिक घटकर 3.8 रह गई है।
- लेकिन कई अन्य देश अभी भी कम हैं: औसतन, उप-सहारा अफ्रीकी महिलाओं के उनकी इच्छा से अधिक दो बच्चे हैं और 14 देशों में, वे औसतन पांच या अधिक हैं।

## जनसंख्या का अवशोषण

- फिलीपींस, भारत, बांग्लादेश और इंडोनेशिया जैसे भीड़भाड़ वाले देशों ने अधिक विकसित स्थानों में नौकरियों को भरने और कमाई को घर भेजने के लिए श्रमिकों के बहिर्वाह को विदेशों में देखा है।
- हालांकि अफ्रीकी भी इसका पालन करना शुरू कर रहे हैं, बहिर्वाह ऐसे समय में आ रहे हैं जब उनके प्रवेश के अवसर बंद हो रहे हैं।
- इटली में, लोकलुभावन नेता, अवैध रूप से भूमध्यसागरीय क्षेत्र से अफ्रीकियों की नावों को हटाकर यूरोप तक पहुंचने की कोशिश कर रहे, इस प्रकार वे अप्रवासन-विरोधी भावना का जवाब दे रहे हैं।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- क्या बढ़ती जनसंख्या वाले अफ्रीका के लाभ उसकी कमियों को दूर करेंगे, या इसकी समस्याएं बहुत गंभीर और इसका शासन बहुत कमजोर है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## हिंद प्रशांत-इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में विकास



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || भारत और उसके पड़ोसी ||  
हिंद महासागर भूराजनीति

### शीर्षक

हिंद प्रशांत(इंडो-पैसिफिक) क्षेत्र में विकास, विदेश मंत्रालय ने नया हिंद प्रशांत (इंडो-पैसिफिक) विभाजन बनाया

### सुर्खियों में क्यों ?

► एक मजबूत रणनीतिक बयान देते हुए, भारत ने विदेशी कार्यालय में एक हिंद प्रशांत विभाजन की स्थापना की है। नए विभाजन का उद्देश्य भारत की पूर्व की ओर देखो नीति के लिए एक सुसंगत ढांचा देना है।



### हिंद प्रशांत (इंडो-पैसिफिक)

► हालांकि हिंद प्रशांत (इंडो-पैसिफिक) शब्द पिछले कुछ समय से भारतीय नीति हलकों में कर्षण प्राप्त कर रहा है, लेकिन प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जून 2018 में शांगरी-ला संवाद में अपने मुख्य भाषण में भारतीय दृष्टि को प्रस्तुत करने के बाद इसके परिचालन ने स्पष्टता हासिल की।

► उनके भाषण ने रेखांकित किया कि भारत के लिए इंडो-पैसिफिक का भूगोल अफ्रीका के पूर्वी तट से ओशिनिया (अफ्रीका के तट से लेकर अमेरिका तक) तक फैला हुआ है, जिसमें प्रशांत द्वीप के देशों का भी समावेश है।

### भारत की वचनबद्धता

► **अधिनियम पूर्व नीति:** भारत की अधिनियम पूर्व नीति राष्ट्रीय हिंद प्रशांत (इंडो-पैसिफिक) दृष्टि का आधार बनी हुई है और आसियान की केंद्रीयता भारतीय वर्णन में अंतर्निहित है।

► **सक्रिय भागीदार:** कुछ तंत्रों में जैसे हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए), आसियान की अगुवाई करने वाले तंत्र जैसे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन, आसियान के रक्षा मंत्रियों की बैठक (Meeting Plus), आसियान क्षेत्रीय मंच के साथ-साथ बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल पहल और मेकांग-गंगा आर्थिक गलियारा में भारत सक्रिय रूप से भागीदार रहा है।

► **हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी:** भारत ने हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी भी आयोजित की है, जिसमें हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) की नौसेनाएँ भाग लेती हैं।

► भारत ने **ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड** के साथ अपनी भागीदारी को बढ़ाया है और कोरिया गणराज्य के साथ अपने सहयोग को गहरा किया है।

► **फोरम फॉर इंडिया-पैसिफिक आइलैंड्स कोऑपरेशन** के माध्यम से, भारत प्रशांत द्वीप देशों के साथ अपनी बातचीत को आगे बढ़ा रहा है।

► **अफ्रीका के साथ बढ़ती साझेदारी:** अफ्रीका के साथ भारत की बढ़ती साझेदारी को भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन जैसे तंत्र के आयोजन के माध्यम से देखा जा सकता है।

► **चीन के साथ भारत की बहुस्तरीय साझेदारी** के साथ-साथ रूस के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी एक स्थिर, खुली, सुरक्षित, समावेशी और समृद्ध प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है, जिसमें भारत-प्रशांत के समृद्ध रिश्ते भी समावेशित हैं।

### प्राथमिकताएं

► **भौगोलिक और सामरिक विस्तार:** भारत इंडो-पैसिफिक को एक भौगोलिक और रणनीतिक विस्तार के रूप में मानता है, जिसमें 10 आसियान देश दो महान महासागरों को जोड़ते हैं।

► **जिसमें अतुल्यता, खुलापन, और आसियान केंद्रीयता और एकता है,** इसलिए, इंडो-पैसिफिक भारतीय धारणा के दिल में स्थित है।  
o सुरक्षा: क्षेत्र में सुरक्षा को बातचीत के माध्यम से एक सामान्य नियम-आधारित आदेश, नेविगेशन की स्वतंत्रता, बिना लाइसेंस के वाणिज्य और अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार विवादों का निपटारा किए जाने का प्रबंधन करना होगा।  
o संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता, परामर्श, सुशासन, पारदर्शिता, व्यवहार्यता और स्थिरता के संबंध में और अधिक कनेक्टिविटी (संयोजकता) पहल को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

## विदेश मंत्रालय का नया विभाजन

- ▶ अप्रैल 2019 में विदेश मंत्रालय (MEA) में इंडो-पैसिफिक विंग की स्थापना इस दृष्टि से एक प्राकृतिक सहस्राब्दी है।
- ▶ **प्रमुख क्षेत्रीय अभिकर्ता:** यह देखते हुए कि इंडो-पैसिफिक शब्द किस प्रकार मुद्रा प्राप्त कर रहा है और अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे प्रमुख क्षेत्रीय अभिकर्ता अपने क्षेत्रीय दृष्टिकोण को कैसे चित्रित कर रहे हैं - इस पद को अपने आधिकारिक नीतिगत बयानों में शामिल करने से - भारत के लिए हिंद-प्रशांत नीति का संचालन करना अनिवार्य हो रहा था।
  - दिसंबर, 2018 में अमेरिकी प्रशांत कमान का नाम बदलकर अमेरिकी इंडो-पैसिफिक कमान के साथ-साथ एशिया रीअसुरेंस इनिशिएटिव अधिनियम, वाशिंगटन का इंडो-पैसिफिक के साथ अधिक गंभीर जुड़ाव दिखाता है।
  - फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक अवधारणा का अनावरण जापानी प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने 2016 में किया था।
  - ऑस्ट्रेलिया ने 2017 में अपने विदेश नीति श्वेत पत्र जारी किये, जिसमें ऑस्ट्रेलिया की इंडो-पैसिफिक दृष्टि उसकी सुरक्षा, खुलापन और समृद्धि केंद्रित है।

## महत्व

- ▶ **LEP के साथ तालमेल:** इंडो-पैसिफिक कवर की भारतीय परिभाषा को शामिल करने वाले विशाल भूगोल को देखते हुए, एक विभाजन के लिए एक नौकरशाही संरेखण की आवश्यकता थी जो MEA में विभिन्न क्षेत्रीय विभाजनों को तय कर सकते हैं और उन देशों की नीतियों का भी ध्यान रखते हैं, जो इंडो-पैसिफिक प्रवचन का हिस्सा हैं।
- ▶ **एकीकरण:** यह विंग प्रधान मंत्री के इंडो-पैसिफिक विजन के लिए एक रणनीतिक सामंजस्य प्रदान करता है, आईओआरए, आसियान क्षेत्र और क्राड से इंडो-पैसिफिक गतिशील को एकीकृत करता है।
- ▶ **IORA:** IORA के एकीकरण का अर्थ है कि ध्यान IOR पर केंद्रित रहेगा।
  - यह हिंद महासागर में बढ़ते चीनी पदचिह्न और उस क्षेत्र में चीनी कूटनीति का परिणाम हो सकता है।
  - रक्षा मंत्रालय और भारतीय नौसेना भी इस क्षेत्र के विकास पर ध्यान दे रहे हैं और यह विंग इन दोनों अंगों के साथ समन्वय में भी काम कर सकता है।
  - नई दिल्ली को उसके आस-पास के साथ कदम उठाने के लिए, उसे और अधिक केंद्रित और एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है।
- ▶ **आसियान:** इसके अतिरिक्त, आसियान भारत की अधिनियम पूर्व नीति और भारत-प्रशांत दृष्टि की आधारशिला है।
  - जैसा कि आसियान अब अपनी खुद की इंडो-पैसिफिक नीति को आगे बढ़ाने के लिए विचार-विमर्श में शामिल होता है, यह इंडो-पैसिफिक अवधारणा के प्रति उप-क्षेत्रीय संगठन में उसके बदलाव को रेखांकित करता है।
  - शुरू में समूह के भीतर एक भयावह भय था कि इंडो-पैसिफिक अवधारणा सिर्फ आसियान की केंद्रीयता और महत्व को देख सकती है।
  - आसियान क्षेत्र को व्यापक इंडो-पैसिफिक के एक हिस्से के रूप में देखने से इस क्षेत्र की सोच में विकास हो रहा है, जो इस समूह के साथ भारत की संलग्नता की नई संभावनाओं को दिशा दे रहा है।

## अतिरिक्त जानकारी

### शांगरी-ला डायलॉग (SLD)

- ▶ शांगरी-ला डायलॉग (SLD) एक "ट्रैक वन" अंतर-सरकारी सुरक्षा मंच है, जो एक स्वतंत्र थिंक टैंक द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रेटेजिक स्टडीज (IISS) जिसमें 28 एशिया-प्रशांत राज्यों के प्रमुख रक्षा मंत्री, मंत्रालय और सेना के स्थायी प्रमुख होते हैं।
- ▶ मंच को सिंगापुर में शांगरी-ला होटल से नाम मिला है जहां यह 2002 से आयोजित किया गया है।
- ▶ शिखर सम्मेलन क्षेत्र में रक्षा और सुरक्षा समुदाय में सबसे महत्वपूर्ण नीति निर्माताओं के बीच समुदाय की भावना पैदा करने का काम करता है।
- ▶ सरकारी प्रतिनिधि सम्मेलन में अन्य प्रतिनिधिमंडलों के साथ द्विपक्षीय बैठकें करके सर्वश्रेष्ठ निष्कर्ष पर पहुंचते हैं।

## मुख्य प्रश्न

- ▶ इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के महत्व का विश्लेषण करें और भारत को इस क्षेत्र के लिए अपनी विदेश नीति के दृष्टिकोण को क्यों बदलना चाहिए



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## रूस का सोवरेन इंटरनेट क़म



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || भारत और शेष विश्व || रूस

### शीर्षक

रूस का संप्रभु इंटरनेट कानून

### सुर्खियों में क्यों ?

- ▶ हाल ही में, रूसी राजनेताओं ने एक विवादास्पद बिल को मंजूरी दी है जो मॉस्को को विदेशी सर्वर से देश के इंटरनेट ट्रैफ़िक को काटने की अनुमति देगा।
- ▶ प्रस्तावित उपायों से इंटरनेट रूटिंग की निगरानी करने के लिए प्रौद्योगिकी का निर्माण होगा और रूसी इंटरनेट ट्रैफ़िक को विदेशी सर्वरों से दूर रखा जाएगा, जो ज़ाहिर तौर पर कि किसी अन्य देश को इसे बंद करने से रोकेगा।

### इंटरनेट कानून क्या है?

- ▶ इंटरनेट कानून से तात्पर्य है कि कैसे कानूनी सिद्धांत और कानून अपने सभी रूपों में इंटरनेट के उपयोग को नियंत्रित करते हैं। इंटरनेट कानून के लिए एक और शब्द प्रयोग किया जाता है - साइबर लॉ।
- ▶ कानून के अन्य क्षेत्रों के विपरीत, इंटरनेट कानून को एक ठोस, स्थिर और अभ्यास के विशिष्ट क्षेत्र के रूप में पहचाना नहीं जा सकता है।
- ▶ बल्कि, यह कई पारंपरिक क्षेत्रों से सिद्धांतों को शामिल करता है और लागू करता है, जैसे कि गोपनीयता कानून या अनुबंध कानून, जो कि इंटरनेट से पहले बने हैं।

### कुल मिलाकर क्या मतलब है

- ▶ रूस के नए इंटरनेट कानून ने रूस की टेलीकॉम एजेंसी रोसकोमनाडज़र द्वारा संचालित "निगरानी और प्रबंधन केंद्र" के निर्माण की बात कही है।
- ▶ असाधारण स्थितियों में रूस में संचार सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए राज्य एजेंसी को ज़िम्मेदारी दी जाएगी।
- ▶ ऐसी स्थितियों के दौरान, बाहरी यातायात विनिमय में कटौती करने का भी उसे अधिकार होगा, जिससे एक रूसी वेब का निर्माण होगा।
- ▶ जबकि रूस के इंटरनेट ने अतीत में प्रतिबंधों का सामना किया है, लेकिन रूस ने हाल के वर्षों में अधिक से अधिक घरेलू सेंसरशिप की दिशा में कड़ी मेहनत की है।

- ▶ कार्यकर्ताओं को डर है कि एक स्वतंत्र रूसी इंटरनेट के तहत देश के अंदर और बाहर से गुज़रने वाली सामग्री की निगरानी और सेंसर करने के लिए एक चीनी-शैली के राष्ट्रीय फ़ायरवॉल का निर्माण भी शामिल होगा।

### संभावित नतीजे

#### रूसी सरकार का रुख: [सकारात्मक]

- ▶ सुरक्षा और गोपनीयता उपाय के रूप में यह कानून, अमेरिका द्वारा तेज होते आक्रामक साइबर सुरक्षा रुख का मुकाबला करने और आमतौर पर जोखिम भरे खतरे के परिदृश्य को सुरक्षित करने के लिए है।
- ▶ कानून का दूसरा कार्य रोसकोमनाडज़र को रूसी इंटरनेट पर प्रबंधन को केंद्रीकृत करने का अधिकार प्रदान करना है, ताकि उन मामलों को वह प्रबंधित कर सके जिनमें रूसी इंटरनेट की "अखंडता, स्थिरता और सुरक्षा" को खतरा है।
- ▶ रोसकोमनाडज़र को इंटरनेट के केंद्रीकृत प्रबंधन के रूप में कार्य नहीं करने पर भी इसी तकनीक का उपयोग करके अवैध सूचना संसाधनों को अवरुद्ध करने का अधिकार दिया जाएगा।

### आलोचना

- ▶ पश्चिम के साथ संबंध इस हद तक बिगड़ सकते हैं कि रूस को इंटरनेट से दूर करने के लिए कदम उठाने पड़ सकते हैं क्योंकि कानून संभवतः रूस में नेटवर्क संचालित करने वाली किसी भी अमेरिकी कंपनी पर उपकरण बदलने के लिए दायित्वों को डाल देगा।
- ▶ यह इंटरनेट के व्यापक हिस्सों पर सेंसरशिप कर सकता है।
- ▶ नए उपाय के लिए इंटरनेट प्रदाताओं को देश में सर्वर के माध्यम से रूसी वेब ट्रैफ़िक को रूट करने के लिए उपकरण स्थापित करने की आवश्यकता होती है।
- ▶ यह रूसी खुफिया एजेंसियों द्वारा अधिक निगरानी की अनुमति देगा और सूचना को नियंत्रित करने के लिए राज्य अधिकारियों की क्षमता भी बढ़ाएगा।

### यह चीन की गोल्डन शील्ड परियोजना से कैसे मिलता-जुलता है लेकिन फिर भी अलग है

- ▶ द ग्रेट फ़ायरवॉल ऑफ़ चाइना, जिसे औपचारिक रूप से गोल्डन शील्ड परियोजना के रूप में भी जाना जाता है, चीनी सरकार की इंटरनेट सेंसरशिप और निगरानी परियोजना है।
- ▶ सार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय (MPS) द्वारा शुरू, विकसित और संचालित की गयी यह परियोजना दुनिया के सबसे विवादास्पद विषयों में से एक है।
- ▶ जबकि पश्चिमी दुनिया के कई लोग इस परियोजना को एक मानवीय अधिकार का उल्लंघन मानते हैं, कुछ देश वास्तव में चीन के मॉडल को अपना रहे हैं।
- ▶ कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि यह मुद्दा दिलचस्प है क्योंकि चीनी अर्थव्यवस्था को इंटरनेट से काफी फायदा होता है, लेकिन इंटरनेट, बदले में, अपनी राजनीतिक स्थिरता के साथ हस्तक्षेप कर रहा है।

- ▶ लेकिन नया रूसी कानून "द ग्रेट फायरवाल ऑफ चाइना" जैसा प्रतिबंधात्मक नहीं है, जो बीजिंग को संचार की निगरानी करने और अमेरिका और वैश्विक वेबसाइटों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच को प्रतिबंधित करता है।
- ▶ चीन की प्रणाली बीजिंग में कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार को इंटरनेट ट्रैफिक का प्रत्यक्ष नियंत्रण प्रदान करती है, जबकि रूसी प्रस्ताव कई निकायों को अप्रत्यक्ष नियंत्रण देता है - जिसमें रोसकोमनाडज़र, संघीय सुरक्षा सेवा और केंद्रीय रूसी सरकार शामिल हैं।

### निष्कर्ष

- ▶ रूस के खुफिया संगठनों पर नियमित रूप से अन्य देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया गया है। यह आरोपण, गतिविधि की उत्पत्ति का पता लगाने की क्षमता पर निर्भर करता है। लेकिन अगर रूस अपना खुद का इंटरनेट विकसित करता है, तो इस संभावना से इनकार किया जाता है। स्वाभाविक रूप से, कुछ चिंताएं हैं कि रूस तेजी से हिंसक साइबर संघर्ष की दुनिया के लिए तैयारी कर रहा है।
- ▶ इंटरनेट की सबसे आकर्षक विशेषताओं में से एक जैसा कि हम जानते हैं वह यह है कि आज हर देश व्यापक विघटन और बुनियादी ढांचे के ढहने की चपेट में है, इससे अप्रत्याशित परिणामों के साथ हमले शुरू करना संभव नहीं है। लेकिन अगर रूस खुद को वैश्विक इंटरनेट से अलग करने में सक्षम होता है, तो वह इस पर ध्यान नहीं देगा।

### अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.cnbc.com/2019/04/18/russia-stable-runet-law-will-further-separate-country-from-internet.html>

<http://www.newindianexpress.com/world/2019/apr/11/a-monopoly-on-information-russia-closes-grip-on-internet-1963119.html>

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

<https://www.cnbc.com/2019/04/18/russia-stable-runet-law-will-further-separate-country-from-internet.html>

<http://www.newindianexpress.com/world/2019/apr/11/a-monopoly-on-information-russia-closes-grip-on-internet-1963119.html>



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



पाकिस्तान ने आईएमएफ से \$ 6 बिलियन बेलआउट स्वीकार किया

पाकिस्तान का IMF के साथ समझौता



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || भारत और यह पड़ोसी || पाकिस्तान

### शीर्षक

पाकिस्तान ने आईएमएफ से \$ 6 बिलियन बेलआउट स्वीकार किया

### सुर्खियों में क्यों ?

► **पाकिस्तान और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ)** ने घोषणा की कि वे देश की क्षीण, ऋण-ग्रस्त अर्थव्यवस्था के लिए \$ 6 बिलियन के बेलआउट पर प्रारंभिक समझौते कर रहे हैं।

### पृष्ठभूमि

► **पाकिस्तान एक चुनौतीपूर्ण आर्थिक वातावरण** का सामना कर रहा है, जिसमें धीमी वृद्धि, उच्च मुद्रास्फीति, उच्च ऋणग्रस्तता और एक कमजोर बाहरी स्थिति है।

► **विकास:** पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था का आकार \$ 313 बिलियन है, और इसने पिछले 12 वर्षों में सालाना लगभग 3.5% की वृद्धि दर्ज की है।

○ **वित्त वर्ष 2018 (1 जुलाई, 2017 से 30 जून, 2018) में कुल 5.2% की वृद्धि के बाद,** विश्व बैंक के अनुसार, वित्त वर्ष 2019 में पाकिस्तान की वास्तविक जीडीपी वृद्धि 3.4% तक कम रहने का अनुमान है।

○ **2019-20 में, बैंक** को उम्मीद है कि अर्थव्यवस्था 2.7% तक और धीमी हो जाएगी।

**मुद्रास्फीति:** पिछले वर्ष की तुलना में मुद्रास्फीति दोगुनी से अधिक हो गई है; इस वर्ष यह से पहले के महीने अप्रैल में इसने 8.8% का आंकड़ा छूएगी। पिछले वित्तीय वर्ष में, औसत उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति 3.9% थी।

**दोहरे घाटे की समस्या:** देश में एक दोहरे घाटे की समस्या भी है, इसके वित्तीय और चालू खाते के घाटे दोनों के वित्त वर्ष 2019 में ज्यादा खराब होने की स्थिति में है।

○ **राजकोषीय घाटा:** वित्त वर्ष 2018 में जीडीपी के 6.6% से, राजकोषीय घाटा, या इसके राजस्व पर सरकारी व्यय की अधिकता, वित्त वर्ष 2019 में जीडीपी के 7% अंक को भंग कर सकता है।

○ **CAD: चालू खाते का घाटा, या निर्यात** से ज्यादा आयात पर खर्च की अधिकता, के इस वित्त वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद के 5.5% तक उच्च बने रहने की उम्मीद है, बावजूद इसके कि यह वित्त वर्ष 2018 में सकल घरेलू उत्पाद के 6.1% से यह थोड़ा कम है।

► **पाकिस्तानी रुपया:** पाकिस्तानी रुपए का दिसंबर 2017 में कई बार अवमूल्यन किया गया है और पिछले 18 महीनों में लगभग 35% हिस्सा खो दिया है।

○ **विदेशी मुद्रा भंडार:** 3 मई, 2019 को समाप्त सप्ताह के लिए, पाकिस्तानी स्टेट बैंक, देश के केंद्रीय बैंक के साथ शुद्ध विदेशी मुद्रा भंडार, जो 2018 में खान के पीएम बनने से एक दिन पहले 17 अगस्त को \$ 10.23 बिलियन था जो अब एक बिलियन डॉलर से भी अधिक कम की राशि में \$ 8.98 बिलियन डॉलर है।

○ ये विदेशी मुद्रा भंडार आयात के केवल दो महीनों के लिए पर्याप्त हैं। वित्त वर्ष 2018 में पाकिस्तान का आयात \$ 56 बिलियन था।

○ **कम विदेशी मुद्रा भंडार (Low forex reserves)** का अर्थ है कि बाहरी विश्व को यह विश्वास है कि एक देश के पास अपने बाहरी दायित्वों को पूरा करने की क्षमता कम है।

### आईएमएफ बेलआउट पैकेज

► **संरचनात्मक जीर्णोद्धार:** बेलआउट शर्तें जिन्हें फंड लगाता है, कठिन संरचनात्मक सुधारों का हिस्सा हैं, इन्हें अर्थव्यवस्था को निरंतर विकास पथ पर रखने की आवश्यकता है।

► **बाजार-निर्धारित विनिमय दर:** बेलआउट पैकेज के तहत, पाकिस्तान में बाजार-निर्धारित विनिमय दर होगी, जिसका अर्थ है कि पाकिस्तानी रुपये के आगे अवमूल्यन से गुजरने की संभावना है। ब्याज दर में भी बढ़ोतरी की जाएगी।

► **बजट घाटा:** आगामी बजट के प्राथमिक घाटे के लिए लक्ष्य होगा, जीडीपी का 0.6%।

► **अर्ध-राजकोषीय घाटा: ऊर्जा क्षेत्रों और राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों में लागत-वसूली के लिए एक योजना** सरकारी संसाधनों को कम करने वाले अर्ध-राजकोषीय घाटे को कम करने में मदद करेगी।

► **कर नीति:** पाकिस्तान बार-बार कर राजस्व उत्पन्न करने से जूझ रहा है।

○ बेलआउट पैकेज सार्वजनिक वित्त को बेहतर बनाने और कर नीति और प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से सार्वजनिक ऋण को कम करने की कोशिश करेगा, और कर के बोझ के अधिक समान और पारदर्शी वितरण को सुनिश्चित करेगा।

○ IMF को उम्मीद है कि सरकार कर आधार का विस्तार करेगी, जो उसे छूट सहित दूर करेगी और विशेष उपचारों को कम करेगी, यह देखते हुए कि पाकिस्तान में 208 मिलियन में से लगभग एक मिलियन लोग करों का भुगतान करते हैं।

○ यह ऊर्जा क्षेत्र में कटौती और उपयोगकर्ता शुल्क लगाने और सब्सिडी को कम करने के लिए अपनी बात रखेगा।

○ **सब्सिडी:** अन्य कमर कसने वाली कार्यवाही के बीच, बेलआउट पैकेज से ईंधन सब्सिडी में कटौती की उम्मीद है, जिससे एक संघर्षशील आबादी पर अधिक बोझ पड़ता है।

○ सरकार ने पहले ही कुछ सब्सिडी में कटौती की है और अन्य उपाय किए हैं, आईएमएफ की मांग की उम्मीद थी, जैसे मुद्रा की कीमत कम करना और राजकोषीय और मौद्रिक नीति को मजबूत करना। इस तरह की कीर्यविधियों के बढ़ने पर आगे बढ़ने की संभावना है।

## पाकिस्तान और IMF

- ▶ **अक्टूबर 2018** से एक बेल आउट पैकेज पर आईएमएफ के साथ बातचीत चल रही थी।
- ▶ पाकिस्तान का उधार देने वाली संस्था के साथ एक असहज संबंध रहा है, और राष्ट्रवादी राजनेता अक्सर इसे अमेरिकी प्रभुत्व के उपकरण के रूप में चित्रित करते हैं।
- ▶ पाकिस्तान पर पहले से ही पिछले बेलआउट का \$ 5.8 बिलियन बकाया है और केवल एक बार अपने पिछली योजना को पूरा किया है।
- ▶ **राजनीतिक संदर्भ:** खान ने, जिन्होंने पिछले साल अगस्त में पदभार संभाला था, एक विपक्षी राजनेता के रूप में IMF के मुखर आलोचक थे, और पिछले साल के चुनाव अभियान के दौरान उन्होंने कसम खाई थी कि वे इससे सहायता नहीं लेंगे।
  - लेकिन उन्हें उस प्रतिज्ञा को तोड़ने के लिए मजबूर किया गया – यहाँ तक कि सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के व्यापक विस्तार का अतिरंजन करते हुए, यह कठोरता के आग्रह पर वैश्विक निकाय का विरोधाभास करेगा।
- ▶ **पाकिस्तान का रिकॉर्ड:** आईएमएफ के साथ समझौतों के लिए पाकिस्तान का रिकॉर्ड उत्साहजनक नहीं है। यह अक्सर राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों में सरकारी हिस्सेदारी खरीदने और बेचने जैसी स्थितियों को पूरा करने में विफल रहा है।

## भारत और पड़ोस

- ▶ भारत की तरह पाकिस्तान भी अपने खुद के दोतरफा घाटे की समस्या से घिर गया है - सरकार राजस्व से अधिक खर्च कर रही है और निर्यात की अपेक्षा आयात पर ज्यादा खर्च हो रहा है।
  - हालांकि, इसकी अर्थव्यवस्था इस क्षेत्र में अन्य की तुलना में बहुत खराब स्थिति में है और इसलिए, इसने आईएमएफ को एक बेलआउट के लिए संपर्क करने का फैसला किया है।
- ▶ **13 वां:** हाल के वर्षों में यह पहली बार नहीं है जब पाकिस्तान ने मदद के लिए फंड की ओर रुख किया है। यह पिछले तीन दशकों में पाकिस्तान के लिए IMF का 13 वाँ बेलआउट पैकेज है।
  - दूसरी ओर, भारत ने 1991 के भुगतान संकट के दौरान, केवल इसी अवधि में दो आईएमएफ पैकेजों का लाभ उठाया है।
  - बांग्लादेश और श्रीलंका ने भी पाकिस्तान की तुलना में IMF से कम सहायता ली है।
- ▶ **विदेशी निधियों पर निर्भरता:** विदेशी निधियों पर पाकिस्तान की निर्भरता का अर्थ है कि वह अपनी अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए बाहरी दानदाताओं पर निर्भर है।
  - अमेरिका और अमेरिका द्वारा संरक्षित बहुपक्षीय संस्थानों द्वारा वर्षों की आर्थिक सहायता ने पाकिस्तान में संरचनात्मक सुधारों की शुरुआत करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं छोड़ा है।
- ▶ **चीन:** चीन ने पहले ही पाकिस्तान के लिए बाहरी धन के मुख्य स्रोत के रूप में अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है, और आने वाले वर्षों में चीन पर पाकिस्तान की निर्भरता और बढ़ सकती है।

## अतिरिक्त जानकारी

### अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)

- ▶ आईएमएफ वाशिंगटन डी. सी. में स्थित एक अंतराष्ट्रीय संगठन है, जिसमें 189 देश शामिल हैं, जो निम्नलिखित के लिए कार्य करता है -
  - वैश्विक मौद्रिक सहयोग को बढ़ावा देना
  - सुरक्षित वित्तीय स्थिरता,
  - अंतरराष्ट्रीय व्यापार की सुविधा,
  - उच्च रोजगार और स्थायी आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, और
  - दुनिया भर में गरीबी को कम करना।
- ▶ ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में 1944 में गठित, यह 1945 में 29 सदस्य देशों के साथ औपचारिक रूप से अस्तित्व में आया और अंतराष्ट्रीय भुगतान प्रणाली को फिर से संगठित करना इसका लक्ष्य था।
- ▶ यह अब भुगतान कठिनाइयों और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संकटों के संतुलन के प्रबंधन में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है।
- ▶ **आईएमएफ फंड:** देश एक कोटा प्रणाली के माध्यम से एक पूल में धन का योगदान करते हैं, जहां से भुगतान समस्याओं के संतुलन का अनुभव करने वाले देश धन उधार ले सकते हैं। 2016 तक, फंड में SDR477 बिलियन (लगभग \$ 667 बिलियन) था।

### आईएमएफ फंड दो प्रमुख स्रोतों से आते हैं: कोटा और ऋण।

- कोटा, जो सदस्य देशों के जमा धन का पूल है, अधिकांश आईएमएफ फंड देता है।
  - किसी सदस्य के कोटे का आकार दुनिया में उसके आर्थिक और वित्तीय महत्व पर निर्भर करता है।
  - बड़े आर्थिक महत्व वाले राष्ट्रों के पास बड़ा कोटा है।
  - आईएमएफ के संसाधनों को बढ़ाने के साधन के रूप में कोटा समय-समय पर बढ़ाया जाता है।

### मुख्या परीक्षा के लिए प्रश्न

IMF कैसे पाकिस्तान को बेल आउट पैकेज देगा भारत के लिए कैसे महत्व रखता है। स्पष्ट करे



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## अमेरिका में राष्ट्रपति पर महाभियोग



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || भारत और बाकी दुनिया  
|| अमेरिका

### शीर्षक

अमेरिका में राष्ट्रपति पर महाभियोग, क्या अमेरिका को डोनाल्ड ट्रम्प पर महाभियोग लगाना चाहिए?

### खबरों में क्यों?

► 2016 के चुनाव में रूसी हस्तक्षेप की जांच में विशेष वकील रॉबर्ट मुलर की रिपोर्ट के नए संस्करण ने सुझाव दिया है कि पर्याप्त सबूत हैं कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने महाभियोग की सुनवाई के लिए न्याय में बाधा डाली है।

### धरातल

► **देशद्रोह, रिश्वतखोरी या उच्च अपराध: अमेरिकी संविधान** कहता है कि राष्ट्रपति को कांग्रेस द्वारा "राजद्रोह, रिश्वत, या अन्य उच्च अपराध और दुष्कर्म" के लिए पद से हटाया जा सकता है।

► वास्तव में इसका मतलब स्पष्ट नहीं है। टिप्पणियों के अनुसार, विभिन्न सुझाव दिए गए हैं -

- प्रतिनिधि सभा के बहुमत का एक अभेद्य अपराध इसे इतिहास में एक निश्चित समय पर माना जाता है।
- आगे, **कांग्रेस** आपराधिक कानूनों से परे भी फैसले ले सकती है, "उच्च अपराधों और दुष्कर्मों" को परिभाषित करने में हो सकती है।
- ऐतिहासिक रूप से, यह भ्रष्टाचार और अन्य दुर्व्यवहारों को शामिल कर सकता है, जिसमें न्यायिक कार्यवाही में बाधा डालने की कोशिश भी शामिल होती है।

### प्रक्रिया

► महाभियोग शब्द की व्याख्या अक्सर राष्ट्रपति को कार्यालय से हटाने के लिए की जाती है, लेकिन यह बिल्कुल सटीक नहीं है।

- प्रतिनिधि सभा: तकनीकी रूप से, महाभियोग, राष्ट्रपति के खिलाफ लगाया जाता है, औपचारिक आरोपों को मंजूरी देने के लिए प्रतिनिधि सभा के 435 सदस्यों को शामिल है।

- हाउस प्रभावी रूप से अभियोजक के रूप में कार्य करता है - विशिष्ट दोषारोपण करने के लिए मतदान करता है।
- एक महाभियोग प्रस्ताव, जिसे "महाभियोग के लेख" के रूप में जाना जाता है, एक आपराधिक मामले में अभियोग की तरह है।

○ महाभियोग के लिए सदन में एक साधारण बहुमत मत की आवश्यकता होती है।

► **सीनेट: सीनेट** ने तब एक परीक्षण आयोजित करता है।

○ हाउस के सदस्य अभियोजक के रूप में कार्य करते हैं, सीनेटरों के साथ जूरी सदस्यों के रूप में।

○ अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश मुकदमे की अध्यक्षता करते हैं।

○ राष्ट्रपति को राष्ट्रपति पद से हटाने और दोषी ठहराने के लिए 100 सदस्यीय सीनेट में दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता होती है।

► कांग्रेस द्वारा महाभियोग और सजा के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में किसी भी राष्ट्रपति को पद से हटाया नहीं गया।

○ **निक्सन** ने महाभियोग का सामना करने के बजाय 1974 में पद छोड़ दिया।

○ 1868 में राष्ट्रपति एंड्रयू जॉनसन और 1998 में बिल क्लिंटन पर सदन द्वारा महाभियोग लगाया गया था, लेकिन सीनेट द्वारा बरी किए जाने के बाद दोनों कार्यालय में रहे।

► न्याय में बाधा के लिये क्लिंटन के खिलाफ एक आरोप था, जिन्हें शपथ लेने के दौरान व्हाइट हाउस की प्रशिक्षु मोनिका लेविंस्की के साथ अपने रिश्ते के बारे में, झूठ बोलने के आरोपों का सामना करना पड़ा था।

► निक्सन के खिलाफ लगाये गए महाभियोग में उनके द्वारा महाभियोगों के लेखों में बाधा उत्पन्न करना शामिल था।

### अन्याय का प्रमाण

► एक सामान्य आपराधिक अदालत के मामले में, जूरी को केवल तभी दोषी ठहराने के लिए कहा जाता है, जब "उचित संदेह से परे कोई सबूत है," यह काफी कड़ा मानक है।

महाभियोग की कार्यवाही अलग है।

○ सदन और सीनेट ये निर्णय लेते हैं कि कितना बड़ा सबूत वे चाहते हैं।

○ इस बात को लेकर सभी के बीच में, कि एकमत विचार नहीं होता है कि, सबूत का दबाव कितना होना चाहिए।

### क्या सर्वोच्च न्यायालय मुकर सकता है?

► **कोई अपील नहीं:** अमेरिका के संस्थापकों ने स्पष्ट रूप से संघीय न्यायपालिका में अपील किए जाने योग्य एक सीनेट की अपराध सिद्धि को अस्वीकार कर दिया।

► **मुकर नहीं सकता:** अमेरिकी राष्ट्रपति का महाभियोग एक राजनीतिक प्रक्रिया है और यह अंततः एक राजनीतिक निर्णय है।

## कांग्रेस पार्टी में विभाजन

- **प्रतिनिधि सभा:** अभी सदन में 235 डेमोक्रेट, 197 रिपब्लिकन और तीन रिक्तियां हैं।
  - नतीजतन, डेमोक्रेटिक बहुमत बिना किसी रिपब्लिकन वोट के ट्रम्प को महाभियोग लगाने के लिए वोट कर सकता था।
- **1998 में,** जब रिपब्लिकन के पास सदन बहुमत था, तो चैम्बर ने क्लिंटन, एक लोकतन्त्रवादी पर, महाभियोग लगाने के लिए बड़े पैमाने पर वोट दिया था।
- **सीनेट:** सीनेट में अब 53 रिपब्लिकन, 45 डेमोक्रेट और दो निर्दलीय हैं जो आमतौर पर डेमोक्रेट के साथ वोट करते हैं।
  - एक राष्ट्रपति को समझाने और हटाने के लिए 67 मतों की आवश्यकता होगी।
  - इसलिए इसका मतलब है कि ट्रम्प पर महाभियोग लगाने के लिए, कम से कम 20 रिपब्लिकन और सभी डेमोक्रेट और निर्दलीय उम्मीदवारों को एक साथ मतदान करना होगा।

## ट्रम्प को हटा दिया जाए तो राष्ट्रपति कौन बनेगा?

- ट्रम्प को पद से हटाने की सीनेट के द्वारा की गई दोषसिद्धि, के बाद, ट्रम्प का कार्यकाल भरने के लिए, उपराष्ट्रपति माइक पेंस को राष्ट्रपति पद के लिए पदोन्नत कर दिया जाएगा, जो 20 जनवरी, 2021 को समाप्त होगा।

## मुख्य प्रश्न

- अमेरिकी राष्ट्रपति के महाभियोग की प्रक्रिया का वर्णन करें। क्या राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पर महाभियोग चलाया जाना चाहिए? जांच करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || अंतर्राष्ट्रीय संगठन || बिस्मटेक

## शीर्षक

नरेंद्र मोदी शपथ ग्रहण, विदेश नीति में बिस्मटेक का महत्व

## खबरों में क्यों?

► नरेंद्र मोदी ने बिस्मटेक की उपस्थिति में भारत के 16 वें प्रधान मंत्री के पद के रूप में शपथ ली (बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी की पहल), जिसमें मॉरीशस और किर्गिस्तान के नेता और राज्य के प्रमुख भी शामिल हुए।

## पीएम मोदी के शपथ ग्रहण के लिए किसे आमंत्रित किया गया और क्यों?

► बिस्मटेक (बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी की पहल): 30 मई को अपने शपथ ग्रहण समारोह में BIMSTEC देशों, किर्गिज़ गणराज्य और मॉरीशस के नेताओं को आमंत्रित करके, प्रधान मंत्री मोदी ने सावधानीपूर्वक एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक कदम उठाया है जो बंगाल की खाड़ी से लेकर मध्य एशिया तक भारत के पड़ोस में उसकी एक प्रमुख पहुँच की ओर संकेत करता है, साथ ही दुनिया भर में भारतीय प्रवास की ओर भी संकेत करते हैं।

○ पिछली बार, मोदी ने सार्क नेताओं को आमंत्रित किया था, और तब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की उपस्थिति ने द्विपक्षीय संबंधों में एक नई शुरुआत की उम्मीद जताई थी।

○ इस बार, SAARC के बहिष्करण का उद्देश्य स्पष्ट रूप से पाकिस्तान को, उसके पड़ोसियों सहित नई दिल्ली की पहुँच से बाहर रखना है।

○ किर्गिस्तान: किर्गिज़ गणराज्य के नेता को आमंत्रित करके, भारत शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) तक अपनी पहुँच का प्रदर्शन कर रहा है, जिसकी अध्यक्षता किर्गिज़ नेता करते हैं, और जिसके सदस्य चीन, रूस, उज्बेकिस्तान, कजाकिस्तान, ताजिकिस्तान और पाकिस्तान हैं।

○ भारत, जो 2017 में पाकिस्तान के साथ एक सदस्य बन गया, वह अपने सामरिक उद्देश्यों में आगे बढ़ने के लिए अपनी सदस्यता का लाभ उठाना चाहता है – आतंकवाद का मुकाबला और कनेक्टिविटी।

► मॉरीशस: और मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण जुगनूथ, जो इस साल जनवरी में प्रवासी भारतीय दिवस में मुख्य अतिथि थे, दुनिया में सबसे लोकप्रिय लोगों में से एक हैं।

○ 2014 से, जब से मोदी ने भारतीय प्रवासियों के लिए राजनयिक पूंजी का निवेश किया है, इस निमंत्रण को एक स्वाभाविक चुनाव के रूप में देखा जाता है।

► हालांकि, प्रमुख संदेश, BIMSTEC तक पहुँचना है, जिसमें भारत के अलावा बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका, थाईलैंड, नेपाल और भूटान शामिल हैं।

► यह पड़ोसियों, प्रवासी और मध्य एशियाई देशों के चीन-रूस के नेतृत्व वाले क्षेत्रीय समूह तक पहुँचने का एक और राजनयिक प्रयास है। जबकि पिछली बार प्रधानमंत्री का सार्क देशों के साथ का प्रयास विफल रहा, पाकिस्तान के तनावपूर्ण संबंधों के कारण, लेकिन इन समूहों के साथ दिल्ली द्वारा की जाने वाली प्रगति पर बहुत कुछ निर्भर करेगा।

## महत्व

► बिस्मटेक का उदय: सार्क के टुकड़ों से ही बिस्मटेक के साथ नई दिल्ली का जुड़ाव बढ़ा।

○ उरी हमला: अक्टूबर 2016 में, उरी हमले के बाद, भारत ने उस समूहीकरण, जो लगभग दो दशकों से मौजूद था, के लिए नए सिरे से शुरुआत की, लेकिन बड़े पैमाने पर इसे नजर अंदाज कर दिया गया था।

○ गोवा में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के साथ, मोदी ने बिस्मटेक नेताओं के साथ बाहरी पहुँच बढ़ाने के लिए एक शिखर सम्मेलन की मेजबानी की।

• उस सितंबर में, इनमें से कुछ बिस्मटेक देशों ने नवंबर 2016 में इस्लामाबाद में होने वाले सार्क सम्मेलन के बहिष्कार के लिए नई दिल्ली का समर्थन किया था।

• जैसा कि शिखर सम्मेलन स्थगित कर दिया गया था, भारत ने उरी हमले को अंजाम देने का आरोप लगाते हुए पाकिस्तान को अलग करने में जीत का दावा किया था।

○ अचानक, बिस्मटेक एक क्षेत्रीय मंच के रूप में उभरा था, जहाँ पांच सार्क देश उप-क्षेत्रीय सहयोग पर चर्चा कर सकते थे।

► पाकिस्तान से रुकावटवादी रुख: भारत ने लंबे समय से महसूस किया था कि सार्क की विशाल क्षमता का उपयोग कम किया जा रहा है और पाकिस्तान से एक रुकावटवादी दृष्टिकोण के कारण या प्रतिक्रिया की कमी के कारण अवसर खोए जा रहे हैं।

○ वास्तव में, एक विकल्प के लिए खोज करते हुए, काठमांडू में 2014 के सार्क सम्मेलन में यह स्पष्ट हो गया था, जहाँ मोदी ने कहा था कि अवसरों को "सार्क के माध्यम से या इसके बाहर" और "हम सभी या हम में से कुछ के बीच" पहचाना जाना चाहिए।

○ यह पाकिस्तान के साथ-साथ सार्क सदस्यों के लिए एक महत्वपूर्ण संकेत था।

- **BRICS-BIMSTEC आउटरीच समिट** और BIMSTEC नेताओं की वापसी के दो साल बाद, चौथा BIMSTEC शिखर सम्मेलन सितंबर 2018 में काठमांडू में आयोजित किया गया था।
  - नतीजा काफी व्यापक माना जाता था, जो कि ब्लू अर्थव्यवस्था (blue economy) (अर्थव्यवस्था को जल स्रोतों से होने वाला फायदा) से लेकर आतंकवाद-रोधी मुद्दों तक फैला हुआ था, हालाँकि यह 21 वर्षों में केवल चौथा शिखर सम्मेलन था।

## क्षेत्रीय महत्त्व

- **बंगाल की खाड़ी** दुनिया की सबसे बड़ी खाड़ी है।
- दुनिया की आबादी का एक-पाँचवें हिस्से (22%) से भी अधिक इसके आसपास के सात देशों में रहता है, और उनके पास संयुक्त जीडीपी \$ 2.7 ट्रिलियन के करीब है।
- आर्थिक चुनौतियों के बावजूद, ये सभी सात देश 2012 से 2016 तक 3.4% और 7.5% के बीच आर्थिक विकास की औसत वार्षिक दरों को बनाए रखने में सक्षम हैं।
- खाड़ी में **विशाल अप्रयुक्त प्राकृतिक संसाधन** भी हैं। दुनिया के व्यापार का एक-चौथाई माल हर साल खाड़ी को पार करता है।
- क्षेत्र को एकीकृत करने के प्रयास में, समूह का गठन 1997 में किया गया था, मूल रूप से बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड के साथ, और बाद में म्यांमार, नेपाल और भूटान शामिल हुए थे।
  - बिस्मटेक, जिसमें अब दक्षिण एशिया के पांच देश और आसियान के दो देश शामिल हैं, दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच एक सेतु बनाते हैं।
  - इसमें मालदीव, अफगानिस्तान और पाकिस्तान को छोड़कर दक्षिण एशिया के सभी प्रमुख देश शामिल हैं।

## भारत के लिए लाभ

- **विदेश नीति की प्राथमिकताएं:** क्षेत्र की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में, भारत का बहुत कुछ दांव पर है। 2017 में 20 वीं वर्षगांठ के भाषण में, मोदी ने कहा कि बिस्मटेक न केवल दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया को जोड़ता है, बल्कि महान हिमालय और बंगाल की खाड़ी की पारिस्थितिकी को भी जोड़ता है।
  - भारत के लिए, यह 'नेबरहुड फर्स्ट' और 'एक्ट ईस्ट' की हमारी प्रमुख विदेश नीति प्राथमिकताओं को पूरा करने के लिए एक प्राकृतिक प्लैटफॉर्म है।
- **कनेक्टिविटी:** नई दिल्ली के लिए, जुड़े रहने का एक प्रमुख कारण उसकी विशाल क्षमता है जो मजबूत कनेक्टिविटी के साथ अनलॉक किया जा सकता है।
- **तटीय राज्य:** लगभग 300 मिलियन लोग, या भारत की लगभग एक-चौथाई आबादी, बंगाल की खाड़ी (आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल) से सटे चार तटीय राज्यों में रहती है।
- **पूर्वोत्तर राज्य:** और, लगभग 45 मिलियन लोग, जो पूर्वोत्तर राज्यों में रहते हैं, के पास बंगाल की खाड़ी के माध्यम से बांग्लादेश, म्यांमार और थाईलैंड के माध्यम से जुड़ने का अवसर है, जो विकास के मामले में संभावनाओं को खोल देगा।

- चीन का विरोध: बीजिंग ने, भूटान और भारत को छोड़कर, लगभग सभी बिस्मटेक देशों में बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के माध्यम से दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में बुनियादी ढांचे को वित्त पोषित करने और विकसित करने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाया है।
- हिंद महासागर में पनडुब्बी आवाजाहि और जहाज के दौरे के माध्यम से, जैसे कि चीन बंगाल महासागर की खाड़ी में ज़बरदस्ती गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है, तो यह भारत के हित में होगा कि वह बिस्मटेक देशों के साथ अपने आंतरिक जुड़ाव को मजबूत करे।

## मुख्य अभ्यास प्रश्न

- भारत की विदेश नीति में बिस्मटेक के महत्व का विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## नोट्स

## अमेरिकी कार्यकारी विशेषाधिकार क्या है



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || भारत और बाकी दुनिया || यूएसए

### शीर्षक

अमेरिकी कार्यकारी विशेषाधिकार क्या है? रॉबर्ट म्यूलर की रिपोर्ट का गहराई से विश्लेषण

### खबरों में क्यों?

► व्हाइट हाउस ने विशेष वकील **रॉबर्ट म्यूलर** की **अविश्वसनीय रूस रिपोर्ट** को जारी करने से रोकने के लिए कार्यकारी विशेषाधिकार का आह्वान किया।

### कार्यकारी विशेषाधिकार

- **कानूनी सिद्धांत:** कार्यकारी विशेषाधिकार एक कानूनी सिद्धांत है जो राष्ट्रपति को कांग्रेस के उपस्थिति-पत्र जैसी सूचनाओं की मांगों के अनुपालन से इनकार करने की अनुमति देता है।
- राष्ट्रपति के सलाहकार या कार्यकारी शाखा के अधिकारियों के बीच आंतरिक रूप से जो चर्चा होती है, इस सिद्धांत का उपयोग आम तौर पर उस बातचीत की प्रकृति को निजी रखने के लिए किया जाता है।
- विचार यह है, राष्ट्रपति और उनके सहयोगी सार्वजनिक जांच के बारे में चिंता किए बिना निजी, स्पष्ट बातचीत कर सकते हैं, इस प्रकार का विशेषाधिकार व्हाइट हाउस में प्रभावी होता है।
- **कार्यकारी विशेषाधिकार का स्पष्ट रूप से संविधान में कहीं भी उल्लेख नहीं** किया गया है, जो अमेरिकी कानून का आधार है।
- लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि यह सरकार के संचालन के लिए मौलिक है और संविधान के तहत शक्तियों के पृथक्करण में निहित है।

### प्रभावशीलता

- **कार्यकारी विशेषाधिकार** का दावा विशेष रूप से कमजोर है जब कांग्रेस ने महाभियोग के माध्यम से राष्ट्रपति को पद से हटाने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग किया है।
- महाभियोग के संदर्भ में, वास्तव में राष्ट्रपति के कर्तव्यों या व्यवहार का कोई भी हिस्सा जांच से नहीं छूटता।
- **कार्यकारी विशेषाधिकारों को अदालत का आदेश से रद्द किया जा सकता है:** यदि दस्तावेजों को प्रस्तुत नहीं किया जाता है, तो कांग्रेस "कांग्रेस की अवमानना" करने के लिए प्रशासन के अधिकारियों को रोकने के लिए मतदान कर सकती है और कांग्रेस अदालत का भी रुख कर सकती है और कुछ सूचनाओं के अनुपालन के लिए एक न्यायाधीश को आदेश जारी करने के लिए कह सकती है।
- **न्यायाधीश इसके बाद एक कार्यकारी विशेषाधिकार के दावे का गुणदोष तय करेगा।**

### वर्तमान विवाद

- अमेरिकी पैनल ने अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग कर दस्तावेजों को रोकने के अपराध में, मिलकर वोट दिया और अमेरिकी अटॉर्नी जनरल को, कांग्रेस की अवमानना करने का फैसला लेने का अधिकार दिया है।
- व्हाइट हाउस के कदम ने डेमोक्रेटिक-नियंत्रित हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स और रिपब्लिकन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बीच उनकी शक्तियों, उनके प्रशासन, उनके परिवार और उनके व्यावसायिक हितों की जांच करने के लिए संवैधानिक टकराव को बढ़ाया।

### ट्रम्प का रुख

- **राष्ट्रपति का उत्पीड़न:** ट्रम्प कई जांचों पर कांग्रेस के प्रति विरोध जाता चुके हैं, जांच को "प्रेजिडेंट हराशमेंट" के रूप में रोक रहे हैं।
- एक असामान्य कदम के रूप में, वह उन कुछ सामग्रियों को जो कानूनी निर्माता चाहते हैं प्रकाशित करने से विरोध कर रहे हैं।
- **कार्यकारी विशेषाधिकार** पर अदालत के इतने कम फैसले हैं कि ट्रम्प अप्रमाणित रिपोर्ट और अंतर्निहित साक्ष्य को रोक सकते हैं, तो यह निश्चित होना कठिन है।
- लेकिन अदालत में पेश होने के लिए व्हाइट हाउस को अंततः अधिक विशिष्ट होने की आवश्यकता होगी कि कौन-से दस्तावेज कार्यकारी विशेषाधिकार द्वारा संरक्षित हैं और क्यों।

### मुख्य प्रश्न

कार्यकारी विशेषाधिकार क्या है? वर्तमान संदर्भ में विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 2 || अंतर्राष्ट्रीय संबंध || भारत और बाकी दुनिया || पश्चिम एशिया

## शीर्षक

अमेरिका ने ईरान तेल पर भारत के लिए छूट समाप्त कर दी, भारतीय अर्थव्यवस्था और भारत ईरान संबंधों पर इसका प्रभाव का विवरण

## खबरों में क्यों?

► अमेरिका, ईरान से तेल आयात करने के लिए अपने प्रतिबंधों से छूट का नवीकरण नहीं करेगा। भारत और सात अन्य देशों के लिए 180 दिनों की अवधि के लिए छूट पिछले नवंबर में दी गई थी, जो 2 मई, 2019 को समाप्त होने वाली थी।

## छूट

- ईरान परमाणु समझौता: ईरान पर, अमेरिकी प्रतिबंध, ईरान परमाणु समझौते से अमेरिका के हटने के संबंध में थे।
  - प्रतिबंधों ने, ईरान से तेल और पेट्रोकेमिकल उत्पादों की बिक्री प्रतिबंधित है और ईरान के ऊर्जा क्षेत्र के साथ अपने समझौते को समाप्त करने के लिए संस्थाओं का नेतृत्व किया।
- महत्वपूर्ण कटौती अपवाद (SRE): उस समय, अमेरिका ने 2 मई, 2019 तक आठ देशों - भारत, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान, तुर्की, इटली और ग्रीस को छह महीने के लिए छूट दी थी, जिसे सिग्रेचर रिडक्शन एक्सेप्शन (एसआरई) के रूप में जाना जाता था।

## भारत की आयात निर्भरता

- तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता: भारत, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है, जो अपनी कच्चे तेल की आवश्यकताओं का 80% से अधिक और आयात के माध्यम से अपनी प्राकृतिक गैस की लगभग 40% जरूरतों को पूरा करता है।
- घरेलू तेल और प्राकृतिक गैस का उत्पादन पिछले कुछ वर्षों से घट रहा है, जबकि अर्थव्यवस्था की ऊर्जा आवश्यकतों में भी वृद्धि हुई है।

## ईरानी तेल निर्भरता

- शीर्ष तेल खरीदार: चीन के बाद भारत ईरान का शीर्ष तेल खरीदार है।
  - 2018-19 में, भारत ने, ईरान से **23.5 मिलियन टन का आयात किया**; पिछले वर्ष में, कुल 220.4 मिलियन टन कच्चे आयात का लगभग 10% हिस्सा ईरान से आया था।
  - ईरान, 2018-19 में, **भारत के लिए तेल का चौथा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता था**, और अन्य आपूर्तिकर्ता मूल्य और ऋण सुविधाओं के रूप में समान लाभ प्रदान नहीं कर सकते हैं।

## निहितार्थ

- **माध्यमिक प्रतिबंध:** अमेरिका ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ईरान से तेल का आयात जारी रखने वाली भारतीय कंपनियों को गंभीर माध्यमिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ेगा, जिनमें शामिल हैं -
  - **SWIFT** को अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग प्रणाली से बाहर ले जाया जा रहा है और
  - **डॉलर के लेनदेन और अमेरिकी परिसंपत्तियों पर एक फ्रीज किया जा रहा है।**
- **वर्तमान परिस्थितियों से प्रभावित हो सकने वाली मुख्य माप:**
  - **चालू खाता घाटा:** कच्चे तेल की अधिक कीमतें व्यापार घाटे और चालू खाते के घाटे को विस्तृत करेंगी, यह देखते हुए कि आयात का मूल्य कच्चे तेल के साथ बढ़ता है, और आयात की गई मात्रा सामान्य रूप से अस्थिर हो जाती है।
  - **रुपया:** यदि व्यापार और चालू खाते का घाटा व्यापक होगा, तो मुद्रा प्रभावित हो सकती है।
    - आयात बिल में वृद्धि से रुपये पर दबाव पड़ेगा।
    - डाटा दिखा रहा है कि, विनिमय दर और ब्रेंट के निरपेक्ष मूल्य के बीच सहसंबंध का गुणांक, 1 अप्रैल, 2019 और 22 अप्रैल, 2019 के बीच 0.62 पर अधिकतम था।
  - **मुद्रास्फीति:** मुद्रास्फीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है, यह देखते हुए कि कच्चे तेल की कीमतों में कैसे बदलाव होता है और कैसे सरकार उपभोक्ता को उससे बाहर निकालने की अनुमति देती है।
  - **राजकोषीय प्रभाव:** सरकार के वित्त पर दो अनुमानित प्रभाव हो सकते हैं - राजस्व पक्ष और व्यय पक्ष दोनों पर।
- **राजस्व:** राजस्व पक्ष पर, उच्च तेल की कीमतों का मतलब है -
  - मूल्यों के अनुसार, कर के रूप में राज्यों के लिए अधिक राजस्व;
  - केंद्र के लिए, हालांकि, यह भौतिक रूप से राजकोषीय गणित को प्रभावित नहीं कर सकता है क्योंकि शुल्क दरें निर्धारित हैं।
- **व्यय:** मुख्य रूप से ईंधन सब्सिडी के खर्च के कारण व्यय प्रभावित होगा।



## भारत की तैयारी

- अमेरिका का यह कदम ऐसे समय में आया है जब भारतीय कूड बास्केट की कीमत - दुबई, ओमान और ब्रेंट के कच्चे तेल के बेंचमार्क का औसत - बढ़ रहा है।
- **पर्याप्त रूप से तैयार:** भारत ने कहा है कि, देश, अमेरिकी निर्णय के प्रभाव से निपटने के लिए, ईरानी तेल की खरीद पर प्रतिबंधों से, अस्थायी छूट को कम करने या हटाने के लिए, "पर्याप्त रूप से तैयार" है और रिफाइनरियों को कच्चे तेल की पर्याप्त आपूर्ति के लिए "एक मजबूत योजना" रखी गई है।
  - **अपने ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाएं:** पिछले कई महीनों में भारत ने इस स्थिति की तैयारी में, अपने ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने के लिए कड़ी मेहनत की है। लेकिन ईरान के साथ भारत के संबंध महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक हैं और नई दिल्ली इन संबंधों को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करेगी।
  - **अपने ईरानी तेल की खरीद को आधा कर दिया:** प्रतिबंधों के प्रभाव में आने के बाद से, भारतीय रिफाइनरों ने नवंबर से अपनी ईरानी तेल खरीद को लगभग आधा कर दिया है।
  - **ओपेक, मैक्सिको और अमेरिका:** बाजार के खिलाड़ियों के अनुसार, भारतीय रिफाइनर, पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक), मैक्सिको और यहां तक कि अमेरिका से ईरानी तेल के नुकसान के लिए, अपनी नियोजित खरीद बढ़ा रहे हैं, ।
  - विविधीकरण के हिस्से के रूप में, भारत ने दो साल पहले पहली बार अमेरिका से कच्चे तेल का आयात किया था।
  - अक्टूबर 2017 से, चार सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने 11.85 मिलियन बैरल के लिए ऑर्डर दिया है, जिसकी कीमत मौजूदा बाजार मूल्य पर लगभग 730 मिलियन डॉलर है।

पहली अमेरिकी कच्चे तेल की खेप 2 अक्टूबर, 2017 को पारादीप पहुंची।

## चुनौतियाँ

- **आकर्षक विकल्प की पेशकश न करें:** बड़ी चिंता यह है कि कच्चे तेल आपूर्तिकर्ताओं के विकल्प - सऊदी अरब, कुवैत, इराक, नाइजीरिया और अमेरिका - आकर्षक विकल्प प्रदान नहीं करते हैं, जो ईरान करता है, जिसमें 60-दिवसीय क्रेडिट और मुफ्त बीमा और शिपिंग शामिल है।
  - पहले से ही कड़ी वैश्विक स्थिति में प्रतिस्पर्धी रूप से एक वैकल्पिक आपूर्तिकर्ता को सुरक्षित करना, चुनौतीपूर्ण है।
- **आपूर्ति को घटाना:** ईरानी निर्यात में पहले से ही अनुमानित गिरावट कड़े बाज़ार में, आपूर्ति में गिरावट ला सकती है - जैसा कि दिया गया है -
  - अमेरिका ने **वेनेजुएला** को भी मंजूरी दे दी है और
  - ओपेक और रूस सहित संबद्ध उत्पादकों ने स्वेच्छा से उत्पादन में कटौती की है, जिसने इस साल तेल की कीमतों को 35% से अधिक बढ़ा दिया है।
  - वैश्विक तेल बेंचमार्क, ब्रेंट कूड की कीमत 3.3% बढ़कर 74.31 डॉलर प्रति बैरल हो गई, जो लगभग छह महीने में उच्चतम अंतःदिवसीय स्तर था, यह कीमत उसके तुरंत बाद तब बढ़ी जब, अमेरिका के ईरान तेल छूट को समाप्त करने के अपने फैसले की घोषणा की।

- जब ट्रम्प ने पहली बार ईरान को परमाणु समझौते से बाहर निकाला, तो तेल 85 डॉलर प्रति बैरल से अधिक था और अमेरिका द्वारा अप्रत्याशित रूप से छूट देने के बाद यह 50 डॉलर के करीब गिर गया।

## अतिरिक्त जानकारी

### ओपेक (OPEC)

- **पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन** (ओपेक) 14 देशों का एक अंतर-सरकारी संगठन है, जिसकी स्थापना 1960 में बगदाद में पहले पांच सदस्यों (ईरान, इराक, कुवैत, सऊदी अरब और वेनेजुएला) द्वारा की गई थी, और इसका मुख्यालय 1965 में वियना, ऑस्ट्रिया में था। ।
- सितंबर 2018 तक, तत्कालीन 14 सदस्य देश, जो वैश्विक तेल उत्पादन के अनुमानित 44% और दुनिया के "प्रूवन" ("proven") तेल भंडार के 81.5% हिस्सा के लिए उत्तरदायी थे, उन्होंने ओपेक को वैश्विक तेल की कीमतों के लिए वृहद रूप से प्रभावित किया, जो पहले तथाकथित बहुराष्ट्रीय तेल कंपनियों "सात बहनों" ("Seven Sisters") के समूह द्वारा निर्धारित की गई थीं।
- **वर्तमान में ओपेक के सदस्य निम्नलिखित हैं:** अल्जीरिया, अंगोला, इक्वाडोर, इक्वेटोरियल गिनी, गैबॉन, ईरान, इराक, कुवैत, लीबिया, नाइजीरिया, कांगो गणराज्य, सऊदी अरब (डी फ़ैक्टो नेता), संयुक्त अरब अमीरात और वेनेजुएला। इंडोनेशिया और कतर पहले से ही सदस्य हैं।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- अमेरिका ने ईरान तेल पर भारत के लिए छूट समाप्त कर दी है। जांच करें कि यह भारत की अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित करेगा। भारत-ईरान संबंधों पर इसके प्रभाव का भी विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## अमेरिका और ईरान के बीच तनाव बढ़ गया है।



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS II || IR || भारत और शेष विश्व || USA

### शीर्षक

अमेरिका ईरान तनाव

### सुर्खियों में क्यों ?

► ईरान के तटीय क्षेत्र के पास अमेरिका द्वारा विमानवाहक पोत "अब्राहम लिंकन" को तैनात करने के बाद अमेरिका और ईरान के बीच तनाव बढ़ गया है।

### पृष्ठभूमि

- 1960s
- ईरान पर उदार शाह पहलवी का शासन था, जिसे अमेरिका का समर्थन प्राप्त था।
- 1964
- 1964 में विशेष रूप से अप्राकृतिक भाषण के बाद, शाह के धार्मिक विरोध के एक मुखर नेता, खोमैनी को इराक में निर्वासन में भेज दिया गया था।
- 1978
- शाह मोहम्मद रेजा पहलवी के सत्तावादी शासन ने प्रदर्शन और दंगे भड़काए।
- शाह ईरान से अमेरिका चले गये और अयातुल्ला रूहुल्लाह खोमैनी देश का नेतृत्व करने के लिए ईरान लौटे।
- ईरानी छात्रों ने तेहरान में 90 लोगों को अमेरिकी दूतावास में बंधक बना लिया।
- उन्होंने बंधकों की रिहाई के एवज में अमेरिका से शाह के प्रत्यर्पण की मांग की।
- प्रधान मेहदी बजरगन और उनकी सरकार ने इस्तीफा दे दिया, जिससे अयातुल्ला खोमैनी और क्रांतिकारी परिषद सत्ता में आ गई।
- अयातुल्ला खोमैनी ने बंधकों की रिहाई के लिए बातचीत करने से इनकार किया।
- अमेरिका ने अमेरिकी बैंकों में ईरानी संपत्ति ज़ब्त कर ली।
- UNSC ने ईरान को बंधकों को रिहा करने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया।
- 1980:
- राष्ट्रपति कार्टर ने ईरान के साथ राजनयिक संबंधों में कटौती की, और प्रतिबंधों की घोषणा की और सभी ईरानी राजनयिकों को संयुक्त राज्य छोड़ने का आदेश दिया।

- मिस्र में कैसर से शाह की मृत्यु हो गयी।
- बंधकों की रिहाई के लिए अयातुल्ला खोमैनी ने शाह के धन की वापसी और ईरानी संपत्तियों को मुक्त करने की मांग की।
- 1981:

► संयुक्त राज्य अमेरिका और ईरान ने बंधकों को रिहा करने और ईरानी संपत्तियों को मुक्त करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किये।

### ► ईरान का परमाणु कार्यक्रम:

► ईरान के परमाणु कार्यक्रम के इरादे के बारे में वैश्विक समुदाय को संदेह था।

► यह आरोप लगाया गया कि ईरान परमाणु हथियार विकसित कर रहा है।

► हालाँकि, ईरान ने हमेशा जोर देकर कहा कि उसका परमाणु कार्यक्रम पूरी तरह से शांतिपूर्ण था, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ऐसा नहीं मानता था।

### ► ज्वाइंट कॉम्पिहेंसिव प्लैन ऑफ़ एक्शन, 2015:

► ईरान ने P5 + 1 - अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन, रूस और जर्मनी के साथ अपने परमाणु कार्यक्रम पर एक दीर्घकालिक समझौते पर सहमति व्यक्त की।

### ► ईरान की प्रतिबद्धता:

► ईरान ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा पांच साल तक हथियारों पर प्रतिबंध जारी रखने पर भी सहमति व्यक्त की, हालांकि यह पहले समाप्त हो सकता है यदि IAEA इस बात से संतुष्ट होता है कि उसका परमाणु कार्यक्रम पूरी तरह से शांतिपूर्ण है।

► ईरान ने अपनी संवेदनशील परमाणु गतिविधियों को सीमित करने और अंतरराष्ट्रीय निरीक्षण में अनुमति देने पर भी सहमति व्यक्त की।

### ► समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए ईरान को लाभ:

► संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा पहले लगाए गए प्रतिबंधों ने 2012 से 2016 तक ईरान की अर्थव्यवस्था (तेल राजस्व में \$ 160bn से अधिक की हानि) को अपंग कर दिया था।

► ईरान को विदेशों में ज़ब्त \$ 100bn से अधिक संपत्ति प्राप्त हुई।

► ईरान अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में तेल बेच सकता है और व्यापार के लिए वैश्विक वित्तीय प्रणाली का उपयोग फिर से शुरू कर सकता है।

### सौदे से अमेरिका की वापसी

► 2018:

► ट्रम्प ने सौदा छोड़ दिया और प्रतिबंधों को फिर से लागू किया। इसके ज़रिए ईरान के साथ-साथ उन देशों को भी लक्षित किया गया जो ईरान के साथ व्यापार करना चाहते हैं।

► संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधों पर प्रभाव:

► संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंध हटाये गए।

► अन्य सदस्यों की प्रतिक्रिया:

► ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस, सभी ने प्रतिबंधों का विरोध किया।

► उन्होंने अमेरिका के दंड का सामना किए बिना ईरान के साथ अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के व्यापार में मदद करने के

उद्देश्य से एक वैकल्पिक भुगतान तंत्र स्थापित किया है।

## प्रतिबंधों का भारत पर असर

- चाबहार बंदरगाह
- इसे एक अपवाद के रूप में माना जा रहा है और यह US के प्रतिबंधों से प्रभावित नहीं होगा।
- तेल का आयात
- कुल आयात में ईरान का लगभग 10% हिस्सा है।
- ईरानी तेल सस्ता था और लंबी ऋण अवधि के साथ आया था।
- भारत ने यूरो में सबसे अधिक कीमत का भुगतान किया, और बाकी रुपये में, जिसने अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम कर दी।
- रुपये के भुगतान का एक हिस्सा चावल, दवा और अन्य वस्तुओं की आपूर्ति में भी था।
- फारज़ाड B
- भारत ने फरज़ाड B गैस क्षेत्रों में अधिकार प्राप्त करने का मौका खो दिया जैसे उसने पिछले दशक में, अमेरिका को खुश करने के प्रयासों में, ईरान से भूमि पाइपलाइन बनाने का अवसर खो दिया था ताकि गैस की आपूर्ति की जा सके।

## प्रतिबंधों पर भारत की प्रतिक्रिया

- भारत ने इस तरह के प्रतिबंधों के खिलाफ कोई रुख नहीं अपनाया है।
- भारतीय कंपनियों ने पहले ही ईरानी तेल खरीदना बंद कर दिया है और वैकल्पिक आपूर्तिकर्ताओं की तलाश कर रही हैं।

## भारत को प्रतिबंधों का विरोध क्यों करना चाहिए?

- अमेरिकी प्रतिबंध एकतरफा हैं, और किसी भी स्थापित अंतरराष्ट्रीय कानूनी शासन की अवहेलना करते हैं।
- ये प्रतिबंध इज़राइल, सऊदी अरब और अमेरिका की तिकड़ी के राजनयिक और सैन्य गणना के परिणाम हैं।
- भारत के पास इससे हासिल करने के लिए कुछ नहीं है।

## निष्कर्ष

- अमेरिका किसी भी समय "यू टर्न" ले सकता है जैसा उसने उत्तर कोरिया के साथ किया था। यदि ऐसा होता है तो भारत के ईरान के साथ संबंध बहुत खराब हो जाएंगे। इसलिए, भारत को अपने रणनीतिक हितों पर विचार करते हुए फैसले लेने चाहिए और अपनी रणनीतिक स्वायत्तता की रक्षा करनी चाहिए।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## अर्थव्यवस्था



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र || RBI

## शीर्षक

आरबीआई का डॉलर-रुपये स्वेप उपकरण, दूसरी नीलामी में इसकी 18.65 बिलियन डॉलर की बोली लगी

## सुर्खियों में क्यों ?

► डॉलर-रुपये के स्वेप के लिए RBI की दो उल्लेखनीय रूप से सफल नीलामी से संकेत मिलता है कि इस उपकरण को इस तरह से अभिकल्पित किया गया है कि यह सभी हितधारकों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

## क्या है यह?

► **मौद्रिक उपकरण:** RBI के पास अलग-अलग उपकरण होते हैं जिसके माध्यम से यह वित्तीय बाजारों में तरलता का प्रवेश करता है।

○ खुले बाजार परिचालन (OMO) का संचालन करके रेपो दरों और खरीद बॉन्ड को समायोजित करना कुछ ऐसे उपकरण हैं जिनका उपयोग आरबीआई नियमित रूप से या तो बाजार में मुद्रा की आपूर्ति बढ़ाने या घटाने के लिए करता रहा है।

○ 'स्वेप नीलामी' ऐसा ही एक उपकरण है।

► **तरलता बढ़ाना:** बाजार में रुपये की आपूर्ति बढ़ाने के लिए ऐसा किया जा रहा है। तकनीकी रूप से, इस गतिविधि को USD / INR की खरीदने/ बेचने वाली स्वेप नीलामी कहा जाता है।

○ आरबीआई, इस नीलामी के माध्यम से, बैंकों से कुल \$ 5 बिलियन तक के अमेरिकी डॉलर खरीदेगा।

○ बदले में आरबीआई मौजूदा हाजिर दर पर भाग लेने वाले बैंकों को रुपये का भुगतान करेगा।

○ 70 रुपये प्रति डॉलर की औसत स्पॉट दर पर, आरबीआई इस नीलामी प्रक्रिया के माध्यम से प्रणाली में 35,000 करोड़ रुपये की जानकारी देने में सक्षम होगा।

○ इसके साथ ही, बैंक इस नीलामी के कार्यकाल के बाद, RBI से डॉलर के बराबर राशि खरीदने के लिए सहमत होगा।

► भाग लेने वाले बैंकों को नीलामी में आगे के प्रीमियम को उद्गत करके बोली लगानी होगी यानी कि वे डॉलर वापस खरीदने के लिए भुगतान करेंगे।

○ उदाहरण के लिए, यदि हाजिर विनिमय दर एक डॉलर के लिए 70 है, तो बैंक A का कहना है कि 150 पैसे का प्रीमियम होगा और \$ 25 मिलियन की बोली लगेगी।

○ तो, बैंक को 175 करोड़ रुपये (70 डॉलर की विनिमय दर से \$ 25 मिलियन गुणा) मिलेंगे।

○ तीन साल के बाद, बैंक को \$ 25 मिलियन वापस खरीदने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक को 179 करोड़ रुपये (71.5 की विनिमय दर से \$ 25 मिलियन गुणा) वापस करने होंगे।



## उद्देश्य

स्वेप व्यवस्था का उद्देश्य विदेशी मुद्रा या बॉन्ड बाजारों को बाधित किए बिना, सिस्टम में टिकाऊ तरलता को लाना था।

► **तरलता:** पिछले साल आईएल एंड एफएस संकट के बाद से भारतीय वित्तीय बाजारों में तरलता की समस्या चल रही है।

○ बाजार में अग्रिम कर का भुगतान करने के लिए भीड़ की ओर से अधिक तरलता देखने की संभावना है क्योंकि वित्तीय वर्ष का अंत होने में एक सप्ताह से भी कम समय है।

○ इसके अलावा, आगामी महीनों में होने वाले आम चुनावों के लिए भारी खर्च के परिणामस्वरूप आने वाले हफ्तों में रुपये की मांग बढ़ने की भी उम्मीद है।

► **विदेशी मुद्रा:** आरबीआई के लिए, नीलामी अपने विदेशी मुद्रा भंडार को 5 बिलियन डॉलर तक बढ़ाने में मदद करेगी। 15 मार्च को भंडार, \$ 405.6 बिलियन था।

○ विदेशी मुद्रा भण्डार एक उपकरण है जिसका उपयोग RBI, अस्थिरता के समय मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप करने के लिए करता है।

► **नीलामी ने न केवल RBI को विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण समय पर सिस्टम में तरलता का प्रवेश कराने के अपने उद्देश्य को पूरा करने और बोल्ट विदेशी मुद्रा भण्डार में मदद ही की है, बल्कि इसने बैंकों और कॉर्पोरेट्स को भी अपने डॉलर की संपत्तियों को अच्छे उपयोग में लाने में भी मदद की है।**



## प्रक्रिया

- **स्टेज I:** नीलामी की तारीख में बैंकों को शुरू में रेफरेंस दर पर आरबीआई को अमेरिकी डॉलर बेचने और बदले में रुपये प्राप्त करने थे, जिनका इस्तेमाल क्रेडिट की मांग को पूरा करने के लिए किया जाना था।
- **स्टेज II:** लेनदेन के दूसरे चरण में, राशि को, प्रीमियम के साथ, जो बोली लगाई गई थी, तीन साल के अंत में RBI को वापस करना था और RBI को बैंकों को डॉलर वापस करने थे।

## बैंक

- **व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य:** दो नीलामी में बोली लगाने के लिए बैंकों द्वारा प्रदर्शित उत्साह का तात्पर्य स्वेप है, जो उनके लिए व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य था।
- मार्च के उत्तरार्ध में आयोजित **पहली नीलामी** में, आरबीआई द्वारा 16.31 बिलियन डॉलर की बोली प्राप्त हुई, जिसमें से 5.02 बिलियन डॉलर स्वीकार किए गए। पहली नीलामी में भारत औसत प्रीमियम 7.92 रुपये था।
- 5 बिलियन डॉलर की पेशकश के लिए 18.65 बिलियन डॉलर की बोली मूल्य के साथ दूसरी नीलामी भी एक बड़ी सफलता थी, और इन बोलियों का भारत औसत प्रीमियम 8.43 रुपये था।

## लाभ

- **अतिरिक्त राजस्व:** यह स्पष्ट है कि नीलामी ने एक माध्यम प्रदान किया है जिसके माध्यम से विदेशी ऋणों के ज़रिए डॉलर के कब्जे वाली इकाइयां अतिरिक्त राजस्व कमा सकती हैं।
- **उधारकर्ता** जो अपने भविष्य के नकदी-प्रवाह को रोकना चाहते थे, उन्हें भी स्वेप उपयोगी लगा होगा।
  - नीलामियों में वार्षिक प्रीमियम बोली की तुलना में अंतरराष्ट्रीय बाजार में कम उधार दरों के साथ, केंद्रीय बैंक को देने के लिए, विदेशों से डॉलर उधार लेना भी संभव होगा।
- **तरलता:** पहली नीलामी में 34,561 करोड़ रुपये और दूसरे में 34,874 करोड़ रुपये के आगमन के साथ, केंद्रीय बैंक ने सुनिश्चित किया है कि आम चुनावों के आसपास तरलता की स्थिति सौम्य बनी रहे।
  - मई में 25,000 करोड़ रुपये की अतिरिक्त राशि के साथ खुले बाजार परिचालन की जो योजना है, उससे निकट अवधि में अर्थव्यवस्था की तरलता में बाधा आने की संभावना नहीं है।
- **नीतिगत दर में कटौती का बेहतर प्रसारण:** उच्च तरलता के कारण नीति दर में कटौती के बेहतर प्रसारण की उम्मीद है।
  - चूंकि फॉरेक्स, स्वेप रुपये के हाजिर बाजार को प्रभावित नहीं करता है, हाजिर मुद्रा बाजार में कोई भी प्रभाव अल्पकालिक होने की संभावना है।
- **विदेशी मुद्रा भंडार:** विदेशी मुद्रा बाजार को स्वेप व्यवस्थाओं के माध्यम से लाभ मिलेगा क्योंकि यह कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के कारण ऐसे समय में विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ाने में मदद करता है।
  - चूंकि नीलामी के माध्यम से खरीदा गया डॉलर तीन साल के लिए विदेशी मुद्रा भंडार का एक हिस्सा होगा, इसका उपयोग जरूरत पड़ने पर आरबीआई द्वारा बाजार के हस्तक्षेप में किया जा सकता है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- RBI की डॉलर-रुपए की स्वेप नीलामी क्या है? इसके उद्देश्य क्या है? आरबीआई के नीति के लिए यह एक अतिरिक्त उपयोगी टूलकिट के रूप में सामने आया है, निरीक्षण करें।



(बीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा लिए गए कदमों की व्याख्या



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || सेवाएँ || पर्यटन

### शीर्षक

भारत में पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा, सकल घरेलू उत्पाद पर पर्यटन क्षेत्र का प्रभाव, पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा लिए गए कदमों की व्याख्या

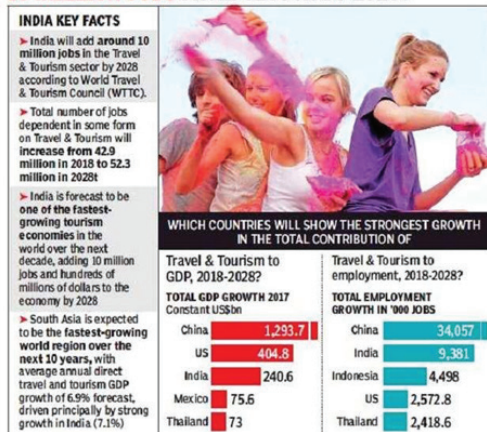
### सुर्खियों में क्यों ?

► भारत सरकार को कई उपायों द्वारा यात्रा तथा पर्यटन क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता मिली है।

### पृष्ठभूमि

- वर्ष 2018 में यात्रा तथा पर्यटन उद्योग ने भारत के **सकल घरेलू उत्पाद का दसवां भाग** योगदान किया और देश में **42 मिलियन रोजगार** सृजन किया।
- भारत में, एकमात्र इस क्षेत्र द्वारा **16 ट्रिलियन रुपये** से अधिक अर्जित किया गया।
- वर्ष 2029 तक यह योगदान दोगुना होने की उम्मीद है, जो तब 35 ट्रिलियन रुपये तक पहुँच जाएगा।

#### 10 MILLION JOBS FROM SECTOR BY 2028?



► इस उद्योग ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक बड़ा मंच तथा साथ ही वैश्विक जी.डी.पी. में 10 फीसदी से अधिक का योगदान प्रदान किया है।

### ई-वीजा सुविधा का शुभारंभ

- सितंबर, 2014 में ई-वीजा सुविधा के शुरू होने के बाद से विदेशी पर्यटक आगमन में तीव्र वृद्धि देखी गई है।
- 166 से अधिक देशों के मूल निवासियों को लाभान्वित करते हुए, इस योजना ने पिछले वर्ष के अपेक्षाकृत वर्ष 2018 में पर्यटकों में लगभग 40 फीसदी की वृद्धि की और एक स्वस्थ विकास में मदद की है।
- वर्ष 2018 में, 2.37 मिलियन विदेशी पर्यटकों ने ई-वीजा सुविधा का लाभ लिया।
- इसने विश्व आर्थिक मंच द्वारा **यात्रा और पर्यटन प्रतिस्पर्धा सूचकांक** में भारत के स्थान में सुधार हेतु सहायता प्रदान की।
- ई-वीजा पहल ने अंतर्राष्ट्रीय खुलेपन मापदंड में भारत को 14 स्थान ऊपर उठाकर उसे 55वें स्थान पर आने में मदद की है।

### स्वदेश दर्शन एवं प्रसाद योजना

- स्वदेश दर्शन एवं प्रसाद योजना ने भी भारत के पर्यटन व यात्रा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

### उड़ें देश का आम नागरिक (उड़ान) योजना

- क्षेत्रीय एयरलाइंस को जोड़ने वाली उड़ें देश का आम नागरिक (उड़ान) योजना भी इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए एक अन्य सरकारी पहल है।

### अन्य योजनाएं

- अतुल्य भारत 2.0, साहसिक पर्यटन के लिए दिशानिर्देश, भारत पर्यटन मार्ट, स्वच्छ पर्यटन मोबाइल एप्लीकेशन यात्रा और पर्यटन की दिशा में अन्य सरकारी प्रयास हैं।

### घरेलू पर्यटन

- केवल विदेशी पर्यटकों ने ही भारत के पर्यटन उद्योग में बढ़ावा नहीं किया है। वास्तव में, घरेलू पर्यटक भी इस क्षेत्र की शक्ति रहे हैं, जिनके साथ अन्य देशों में घरेलू सीमा वाले पर्यटकों सबसे ऊपर हैं।

### गति प्रदान करने वाले मुद्दे (मुहिम)

- प्रयोज्य आय की उपलब्धता, विभिन्न आयु समूहों में यात्रा व पर्यटन हेतु बढ़ती रुचि तथा नए यात्रा स्थलों में वृद्धि भविष्य में इस क्षेत्र की वृद्धि को गति प्रदान करेगी।

### अतिरिक्त जानकारी

## पर्यटन मंत्रालय द्वारा स्वदेश दर्शन एवं प्रसाद योजना

- **स्वदेश दर्शन योजना:** इस योजना का उद्देश्य देश में विषयवस्तु-आधारित पर्यटन सर्किट विकसित करना है।
- स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत, तेरह विषयवस्तु-आधारित पर्यटन सर्किट का चयन किया गया है जिसमें पूर्वोत्तर भारत सर्किट, बौद्ध सर्किट, हिमालयन सर्किट, तटीय सर्किट, कृष्णा सर्किट, मरुस्थल सर्किट आदिवासी सर्किट, इको सर्किट, वन्यजीव सर्किट, ग्रामीण सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट, रामायण सर्किट और विरासत सर्किट शामिल हैं।
- स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत चिन्हित 'आध्यात्मिक सर्किट' में, राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों में विभिन्न धार्मिक/आध्यात्मिक स्थलों से युक्त विशेष विषयगत सर्किट के विकास पर जोर दिया गया है।
- **प्रसाद योजना:** यह योजना पर्यटन मंत्रालय के अंतर्गत 'तीर्थयात्रा कायाकल्प एवं आध्यात्मिक संवर्धन मुहिम (प्रसाद)' नामक राष्ट्रीय स्तर की योजना है।
- प्रसाद योजना के अंतर्गत, विकास हेतु तेरह स्थलों की पहचान की गई है, जिनके नाम हैं: अमृतसर, अजमेर, द्वारका, मथुरा, वाराणसी, गया, पुरी, अमरावती, कांचीपुरम, वेल्लनकनी, केदारनाथ, कामाख्या और पटना।
- प्रसाद योजना के अंतर्गत चिह्नित तीर्थ स्थलों के विकास एवं सौंदर्यीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

## मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- भारत में पर्यटन क्षेत्र द्वारा प्रदर्शन का विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || सार्वजनिक वित्त || कर

## शीर्षक

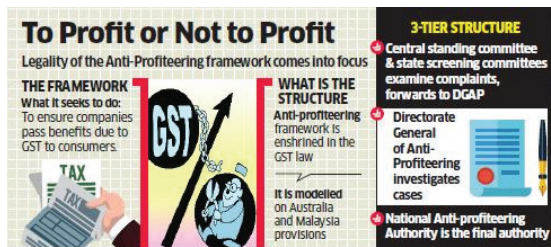
राष्ट्रीय मुनाफाखोरी निरोधक प्राधिकरण, यह कैसे काम करता है? NAA के मुद्दे और समाधान, करंट अफेयर्स 2019

## सुर्खियों में क्यों ?

- GST के तहत गठित **राष्ट्रीय मुनाफाखोरी निरोधक प्राधिकरण (NAA)** के उद्देश्य और शक्तियों पर सवाल उठाया गया है।
- NAA की स्थापना केंद्रीय **GST अधिनियम, 2017 की धारा 171 के तहत** की गई थी ताकि माल और सेवा (GST) कर के तहत व्यापार और उद्योग दरों में कमी पर जाँच की जा सके।

## हाल का मामला

- **टाटा स्टारबक्स:** हाल ही में, NAA ने माना कि नवंबर 2017 में रेस्तरां पर लगी दरों में कटौती के बाद स्टारबक्स ने एक कॉफी संस्करण का आधार मूल्य इस तरह से बढ़ा दिया था कि उपभोक्ताओं ने पहले और बाद में समान राशि का भुगतान किया; प्राधिकरण ने निर्धारित किया कि टाटा स्टारबक्स ने इसके परिणामस्वरूप अनुचित लाभ कमाया।



- यह जांच कम से कम तीन अत्यंत तेजी से चलने वाली उपभोक्ता वस्तुओं की कंपनियों के खिलाफ भी चलाई गयी है, और अन्य कंपनियों की जांच के लिए इसके दायरे को और चौड़ा करने की उम्मीद है।
- **रियल एस्टेट:** एक अन्य क्षेत्र जो **महानिदेशक मुनाफाखोरी निरोधक प्राधिकरण (DGAP)** के दायरे में आ रहा है, वह रियल एस्टेट है।
- DGAP, 50 बड़े प्रॉपर्टी डेवलपर्स की जांच कर सकता है कि क्या वे इनपुट टैक्स क्रेडिट के लाभ को साझा करने में विफल रहे हैं।

## हाल ही का प्रस्ताव

- **दो साल का सूर्यास्त क्षितिज:** यह भी बताया गया है कि सरकार ने DGAP के कार्यकाल का विस्तार करने पर विचार किया है, जिसे दो साल का सूर्यास्त बताया जा रहा है।
- सरकार का दावा है कि क्योंकि GST परिषद ने कर दरों को कम करना जारी रखा है और इसलिए **मुनाफाखोरी निरोधक प्राधिकरण की आवश्यकता है।**
- इस बीच, DGAP ने भी अपने संचालन की प्रकृति का विस्तार किया है।
- **सुओ मोटो जांच:** यह पहले उपभोक्ताओं की शिकायतों पर निर्भर कर रहा था कि एक जांच शुरू की जा जाए या नहीं।
- ऐसा प्रतीत होता है कि अब यह चालान खरीदने और रद्द करने की कोशिश करेगा, अगर उस आधार पर प्रत्यक्ष: सवाल पूछे जा सकते हैं, और इस आधार पर वह स्वयं जांच भी शुरू कर देगा।

## अधिसूचियां

- **कार्यान्वयन:** इसे सही तरीके से लागू नहीं किया गया था क्योंकि **सरकार ने इस बारे में कोई विवरण नहीं दिया था** कि वह कैसे निर्धारित करेगा कि मुनाफाखोरी हुई थी।
- अन्य न्यायालयों में जो एक GST के लिए परिवर्तन से गुजरे हैं, जैसे कि **ऑस्ट्रेलिया**, में यह निर्दिष्ट किया जाता है कि समकक्ष प्राधिकरण को किसी विशेष सामान पर शुद्ध मार्जिन की जांच कैसे करनी चाहिए।
- लेकिन **भारत** में, इस प्रक्रिया के अलावा कुछ भी निर्दिष्ट नहीं है।
- **उद्देश्य:** कंपनियों को कर परिवर्तनों का जवाब देने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए, विशेष रूप से जटिल मामलों में जैसे कि GST से उनकी लागत पर कई परस्पर विरोधी प्रभाव आते हैं, जो कि एक तरह से प्रतिस्पर्धी गतिशीलता और वाणिज्यिक विचारों द्वारा निर्धारित किया गया है।
- यदि प्रतिस्पर्धी गतिशीलता कमजोर है और कर कटौती के उचित प्रसारण की अनुमति नहीं देती है, तो यह **प्रतिस्पर्धा आयोग** का व्यवसाय है।
- **अवधि:** एक स्थायी प्राधिकरण का कोई महत्व नहीं है। जब तक एक अस्थायी प्राधिकरण की आवश्यकता है क्योंकि GST लागू करने का उद्देश्य उपभोक्ता पर प्रभाव को कम करना था।
- लेकिन भविष्य के सभी कर परिवर्तनों को जीएसटी के प्रारंभिक परिचय के रूप में एक ही पैमाने पर नहीं आंका जा सकता है।
- वे सभी उपभोक्ताओं के लिए कम कीमतों के नहीं हो सकते हैं – उनमें अन्य आर्थिक लक्ष्य भी शामिल हो सकते हैं।
- इस प्रकार, प्राधिकरण के कार्यकाल का विस्तार करने का कथित कारण बहुत बड़ा नहीं है। यह निर्धारित तिथि तक पूरा हो जाना चाहिए।
- **हस्तक्षेप:** राज्य हस्तक्षेप के एक नए रूप का निर्माण खतरनाक है, क्योंकि एक बार नौकरशाह बनने के बाद यह अपने स्वयं के जीवन का विस्तार करने और सामान्य वाणिज्यिक गतिविधि में अपने हस्तक्षेप को बढ़ाने के लिए प्रशंसनीय कारणों की तलाश करता है। यह ठीक वैसा ही है जैसी चीज़ें निकलकर आई हैं।





## अतिरिक्त जानकारी

### राष्ट्रीय मुनाफाखोरी निरोधक प्राधिकरण (NAA)

- ▶ राष्ट्रीय मुनाफाखोरी निरोधक प्राधिकरण (NAA) की स्थापना केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम, 2017 की धारा 171 के तहत की गई थी।
- ▶ **उद्देश्य:** NAA, इस निगरानी के लिए स्थापित किया गया था कि क्या **इनपुट टैक्स क्रेडिट की कमी या लाभ**, प्राप्तकर्ता को, कीमतों में उचित कमी के माध्यम से पहुंच रहा है या नहीं।
- ▶ राष्ट्रीय मुनाफाखोरी-रोधी प्राधिकरण (NAA) का गठन मुख्य रूप से केंद्र सरकार द्वारा किया जाता है ताकि यह विश्लेषण किया जा सके कि किसी पंजीकृत व्यक्ति द्वारा प्राप्त इनपुट टैक्स क्रेडिट या कर में कमी का लाभ, उपभोक्ता को दिया गया है या नहीं और क्या वह स्वयं के लिए जीएसटी के नाम पर निवेश के लिये यादृच्छिक मूल्य वृद्धि से सुरक्षित है।

## संस्थागत ढांचा

- ▶ राष्ट्रीय मुनाफाखोरी निरोधक प्राधिकरण में पाँच सदस्यीय समिति शामिल है, जिसमें निम्नलिखित हैं:
- ▶ एक **अध्यक्ष** (सरकार में सचिव के पद के बराबर),
- ▶ चार तकनीकी सदस्य (राज्य कर या केंद्रीय कर विभागों के वर्तमान / पूर्व कमिश्नर)।
- ▶ केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क (CBEC) के तहत सुरक्षा उपायों के अतिरिक्त महानिदेशक NAA के सचिव होंगे।

## कार्यकाल

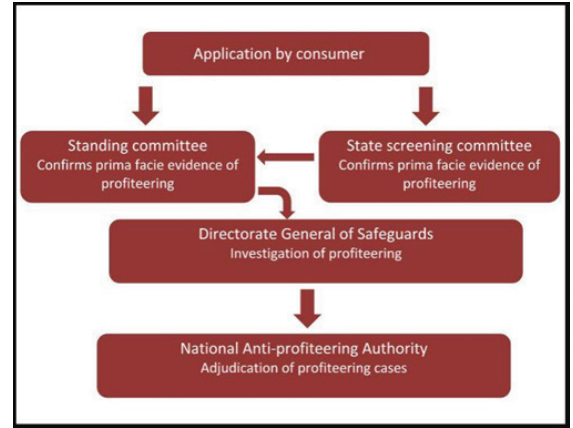
- ▶ राष्ट्रीय मुनाफाखोरी रोधी प्राधिकरण समिति के पास शुरू में दो साल का कार्यकाल होगा जिसे GST परिषद द्वारा बढ़ाया जा सकता है, यदि उन्हें भविष्य में इसके अस्तित्व की आवश्यकता दिखाई देती है।

## NAA की विशेष शक्तियाँ

- ▶ यदि यह ग्राहक को GST के तहत कम करों के लाभ प्रदान करने में विफल रहता है, तो NAA के पास किसी इकाई या व्यवसाय को निष्क्रिय करने का अधिकार है।
- ▶ किसी नियम का उल्लंघन करना किसी भी उल्लंघनकर्ता के खिलाफ उसके व्यवसाय को अपंजीकृत करना एक अंतिम चरम होगा।
- ▶ NAA अनुचित लाभ की वापसी की सिफारिश करेगा, जो कि 18 प्रतिशत ब्याज के साथ उपभोक्ताओं को कर में कमी और कर के लाभ प्रदान नहीं करने से व्यवसाय ने अर्जित किया है। आवश्यकता पड़ने पर यह जुर्माना भी लगा सकता है।

## GST शासन के तहत मुनाफाखोरी-रोधी तंत्र

- ▶ शिकायतें क्षेत्राधिकार पर आधारित होती हैं, जो शिकायतें स्थानीय होती हैं, उन्हें पहले स्क्रीनिंग के लिए एक **राज्य-स्तरीय समिति** को भेजा जाएगा।
- ▶ राष्ट्रीय स्तर पर शिकायतों को **स्थायी समिति** को सीधे चिह्नित किया जाएगा।



- ▶ यदि मुनाफाखोरी की घटना "अखिल भारतीय उन्मूलन" के साथ बड़े पैमाने पर उपभोग की वस्तु से संबंधित है, तो आवेदन सीधे स्थायी समिति के पास किया जा सकता है।
- ▶ यदि शिकायतों में महत्व है, तो संबंधित समितियाँ आगे की जाँच के लिए मामलों को **महानिदेशालय के रक्षोपायों** में संदर्भित करेंगी।
- ▶ DG सुरक्षा उपायों को आम तौर पर जांच पूरी करने और रिपोर्ट को NAA को भेजने में लगभग 3 महीने लगेंगे।
- ▶ यदि NAA पाता है कि कंपनी ने GST लाभों को साझा नहीं किया है, तो यह इकाई उपभोक्ताओं को लाभ देने के लिए या तो निर्देश देगी, या लाभार्थी की पहचान नहीं की जा सकती है, तो यह कंपनी को एक निर्दिष्ट समयसीमा में **"उपभोक्ता कल्याण निधि"** में राशि हस्तांतरित करने के लिए कहेगी।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- ▶ GST ढांचे के तहत राष्ट्रीय मुनाफाखोरी निरोधक प्राधिकरण (NAA) कैसे काम करता है? इसके कामकाज को लेकर क्या मुद्दे हैं? संभव समाधान सुझाएं।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## PSU टेलीकॉम और उनके मुद्दे क्या हैं ?



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था|| बाहरी क्षेत्र || अंतर्राष्ट्रीय कर मुद्दे

### शीर्षक

PSU टेलीकॉम और उनके मुद्दे क्या हैं? क्या सरकार को BSNL और MTNL को बंद करना चाहिए

### सुर्खियों में क्यों?

► यदि अधिकांश निजी क्षेत्र की दूरसंचार कंपनियां घायल हैं, तो राज्य के स्वामित्व वाली MTNL और BSNL गंभीर रूप से मौत के करीब हैं।

### मामले

► **वेतन में देरी:** BSNL ने फरवरी के वेतन में देरी की है, और हालत यह है कि DoT को वेतन देने के लिए MTNL को धन देना पड़ा है।

► **विरासत के मुद्दे:** विरासत के मुद्दे, 3G सेवा में जल्दी प्रस्ताव के बावजूद, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और न्यूनतम टैरिफ, दो टेलकोस के भाग्य में तेज़ गिरावट का कारण बने हैं।

► **स्पेक्ट्रम:** भले ही कंपनियों ने नुकसान सहा हो लेकिन 3G स्पेक्ट्रम के लिए किया गया बड़ा भुगतान, एक घातक झटका था।

### MTNL और BSNL

► **MTNL का शुद्ध मूल्य** पूरी तरह से समाप्त हो गया है, जबकि **BSNL का संचित परिचालन घाटा** कथित रूप से **90,000 करोड़ रुपये** को पार कर गया है।

► दोनों एक साथ **1,98,000 लोगों को रोजगार देते हैं**, जिनका वेतन MTNL में **90% का राजस्व और BSNL के मामले में लगभग 60-70% है**।

► उनके निजी क्षेत्र के **प्रतिद्वंद्वियों में संगत आंकड़ा 4-5% है**।

► BSNL और MTNL की VRS योजना की लागत लगभग **8,500 करोड़ रुपये** है। सरकार को इसके बिल की भरपाई करनी चाहिए, क्योंकि कोई भी कंपनी ऐसा नहीं कर सकती।

### क्या उन्हें जारी रखना चाहिए

► **MTNL केवल दिल्ली और मुंबई में ही संचालित होता है**, दोनों ही निजी टेलीकॉम कंपनियों द्वारा भी अच्छी तरह से संचालित होते हैं।

► यदि MTNL का अस्तित्व खत्म हो जाता है, तो केवल कुछ ही लोगों को इसके बारे में पता चलेगा।

► इसका लैंडलाइन नेटवर्क, एक मूल्यवान संपत्ति है, हालांकि, हालांकि इसे ठीक से लागू नहीं किया गया था जब **फाइबर-टू-होम**, उच्च राजस्व अर्जित करने का एक बेहतर तरीका था।

► दूरसंचार बाजार में समेकन को देखते हुए, अच्छी तरह से चलने वाला MTNL जानता है कि अपना कार्य उसे कैसे करना है, और कैसे वह उपभोक्ता के लिए फायदेमंद साबित होगा।

► **इसके विपरीत**, BSNL ग्रामीण क्षेत्रों और टियर -2 और टियर -3 शहरों में वायर रहित और वायर सहित कनेक्टिविटी के लिए महत्वपूर्ण है।

### समाधान

कंपनी को निम्नलिखित चाहिए -

- स्वतंत्र, गतिशील प्रबंधन,
- प्रतियोगी बनाना जो सुरक्षित हो,
- तकनीकी रूप से चुस्त और
- अखंडता के एक मानक की पेशकश करेगा जो पूरे क्षेत्र में इसके कार्यान्वयन को उंचा करेगा।
- कंपनियों को अपनी ओर मोड़ने के लिए राजनीति अपनानी होगी।

► उन्हें सीधे 5G पर जाने की ज़रूरत है, मानव बल को बढ़ाने की ज़रूरत है, अपने जमीन का लाभ उठाएँ, फाइबर और टावर के माध्यम से लाभ उठाने के लिए धन जुटाएँ।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► राजकोषीय घाटे को कम करने और विकासात्मक कार्यों के लिए संसाधन जुटाने में सरकार की मदद करने में PSU की भूमिका की जांच करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## भारत अमेरिकी व्यापार विवाद



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बाहरी क्षेत्र || विदेशी व्यापार

### शीर्षक

भारत अमेरिकी व्यापार विवाद, क्या भारत एक टैरिफ किंग है? सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली कितनी महत्वपूर्ण है?

### सुर्खियों में क्यों ?

- ▶ अमेरिकी वाणिज्य सचिव विल्बर रॉस ने कहा कि भारत अपनी "अत्यधिक प्रतिबंधात्मक बाजार पहुंच बाधाओं" के कारण अमेरिकी निर्यात बाजारों की सूची में 13 वें स्थान पर था।
- ▶ भारत के औसत लागू टैरिफ दर, के संबंध में उन्होंने कहा, "किसी भी प्रमुख विश्व अर्थव्यवस्था में उच्चतम" है।

### टिप्पणियां

- ▶ **प्रतिबंधात्मक बाजार पहुंच अवरोधक:** रॉस ने वाशिंगटन और नई दिल्ली के बीच चल रहे व्यापार विवाद में एक नवीन उपलक्ष्य निकाला है, जिसमें व्यापारिक नेताओं को बताया गया कि अमेरिकी प्रौद्योगिकियां और विशेषज्ञता, भारत की अर्थव्यवस्था को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, लेकिन उन्हें कठिन व्यापार बाधाओं और नियमों से जूझना पड़ा है।
- ▶ **व्यापार घाटा:** रॉस ने यह भी कहा कि यह "विशेष रूप से असामान्य" था कि सेवा क्षेत्र में अमेरिका का व्यापार घाटा भारत के साथ था।
- ▶ सामान्य तौर पर अमेरिका की सेवाओं का अधिशेष अधिकांश देशों के साथ हैं। लेकिन भारत के मामले में, यह कमी मोटे तौर पर आईटी सेवाओं के कारण है।
- ▶ रॉस की आलोचना राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के दोहराये गये दावों के अनुरूप थी कि भारत एक "टैरिफ किंग" है और अमेरिकी उत्पादों पर "अत्यधिक उच्च" टैरिफ लगाता है।
- ▶ पिछले साल ट्रम्प ने भारत सरकार के हार्ले-डेविडसन मोटरसाइकिल पर आयात शुल्क को 100% से 50% तक कम करने के फैसले को अपर्याप्त बताते हुए खारिज कर दिया था, और यह सुनिश्चित किया था कि अमेरिकी प्रशासन, अमेरिकी श्रमिकों की सुरक्षा के लिए "टूटे हुए व्यापार सौदों को ठीक कर रहा है"।

### भारत की टैरिफ संरचना

▶ **प्रति 1990:** जबकि 1990 के दशक के अंत तक भारत में टैरिफ अधिक हुआ करता था, शिखर सीमा शुल्क जो कि सामान्य दरों में उच्चतम था, गैर-कृषि उत्पादों में लगातार नीचे आया है: जो कि 1991-92 में 150% से 1997-98 में 40% तक, 2004-05 में 20% और आखिरकार 2007-08 में 10% हो गया।

▶ **औसत टैरिफ 13.5%:** विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के आंकड़ों के अनुसार, भारत का औसत लागू टैरिफ अब लगभग 13.5% है - इसके अलावा ASEAN की टैरिफ दरों (औसतन लगभग 5%) को उत्तरोत्तर बढ़ाने की योजना है।

▶ हालांकि, पिछले पांच वर्षों में, सरकार द्वारा कई मदों पर शुल्क को बढ़ाने के लिए कई कदम उठाये गये हैं।

### सकारात्मक टिप्पणी

▶ हालांकि, "अन्यायपूर्ण" व्यापार बाधाओं में कठोर बातचीत के साथ, कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर अमेरिका के रुख में नरमी के संकेत भी थे।

▶ अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल ने अप्रैल 2019 में घोषणा कर भारतीय पक्ष को संभावना व्यक्त करते हुए यह संकेत दिया था कि **सामान्यीकृत प्रणाली (GSP) के अंतर्गत नई केंद्र सरकार के गठन के बाद, वह भारतीय निर्यातकों को प्रोत्साहन न देने (withdrawal of incentives) के अपने अंतिम निर्णय को वापस ले लेगा।**

▶ GSP कार्यक्रम पर अमेरिका की नरमी को प्रदर्शित करने की संभावना भारत के लिए सकारात्मक है।

### GSP का महत्व

▶ GSP निर्दिष्ट लाभार्थी देशों के **3,000 से अधिक उत्पादों के लिए शुल्क-मुक्त प्रविष्टि** की अनुमति देता है।

▶ **भारत जीएसपी शासन का सबसे बड़ा लाभार्थी रहा है,** और 2017 में अमेरिका में शुल्क-मुक्त प्रवेश पाने वाले सामानों का एक चौथाई हिस्सा निर्यात करता था।

▶ GSP के तहत भारत से अमेरिका का निर्यात \$ 5.58 बिलियन था - जो उस वर्ष अमेरिका को भारत के द्वारा किए गए कुल 45.2 बिलियन डॉलर के निर्यात माल का 12% से अधिक था।

▶ 2017 में भारत के साथ अमेरिकी वस्तुओं का व्यापार घाटा \$ 22.9 बिलियन था।

▶ अमेरिका ने अप्रैल 2018 में GSP बाजार पहुंच मापदंड के साथ भारत के अनुपालन की पात्रता समीक्षा शुरू की थी।

▶ इस साल मार्च में, अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कार्यालय ने कहा कि GSP कार्यक्रम से भारत को हटाना, **कांग्रेस और भारत सरकार तक सूचनाएं पहुंचने के कम से कम 60 दिनों बाद तक प्रभावी नहीं होगा,** और यह एक राष्ट्रपति घोषणा द्वारा अधिनियमित किया जाएगा।

► हालांकि भारत ने कहा है कि GSP के तहत इन शुल्क लाभों को वापस लेने से अमेरिका को किया जाने वाला निर्यात प्रभावित नहीं होगा, लेकिन छोटे निर्यातकों ने कार्यक्रम जारी रखने के लिए कहा है।

## विवाद

► **भारत और अमेरिका के बीच सात विवाद** WTO के तहत विवाद निपटान तंत्र के विभिन्न चरणों में हैं। ये निम्नलिखित से संबंधित हैं:

- (i) पशुपालन और अमेरिका से पशुपालन उत्पाद,
- (ii) भारत के इस्पात उत्पादों के निर्यात के खिलाफ कर्तव्यों का पालन करना,
- भारत के इस्पात उत्पादों के निर्यात के विरुद्ध प्रतिकारी शुल्क लगाना
- (iii) राष्ट्रीय सौर मिशन के तहत सौर कोशिकाओं और मॉड्यूल के आयात के खिलाफ उपाय,
- (iv) अमेरिका के उप-संघीय नवीकरणीय ऊर्जा कार्यक्रम,
- (v) गैर-आप्रवासी वीजा से संबंधित अमेरिकी उपाय,
- (vi) भारत की निर्यात प्रोत्साहन योजनाएँ और,
- (vii) स्टील और एल्यूमीनियम उत्पादों पर अमेरिकी टैरिफ वृद्धि।

## समाधान

► **संतुलित पैकेज:** भारत सरकार के "संतुलित" पैकेज पर पहुंचने के प्रयास, जो भारतीय जनता के हितों की रक्षा करते हुए अमेरिकी चिंताओं को दूर करेंगे, काफी हद तक असफल रहे हैं।

► अमेरिका में चिकित्सा उपकरणों और डेयरी उद्योगों द्वारा चिंताओं को घेरे में लाने के बाद GSP बाजार मानदंड पहुंच के साथ **भारत के अनुपालन की पात्रता समीक्षा** शुरू हो गई थी।

► 2017 में, भारत ने **कार्डियक स्टेंट (cardiac stents)** और **घुटना प्रत्यारोपण की कीमतों में कमी की, कीमतों में क्रमशः 70% और 60% से अधिक की कमी आई।** इस कदम से एबॉट, मेडट्रॉनिक और बोस्टन साइंटिफिक जैसे अमेरिकी दिग्गज कंपनियां प्रभावित हुईं।

► भारत ने यह भी कहा कि **डेयरी उत्पादों के लिए जानवरों को कभी भी पशु-व्युत्पन्न रक्त भोजन नहीं खिलाया जाना चाहिए**, यह सांस्कृतिक दृष्टिकोण से "अ-परक्राम्य" है - और यह इसकी प्रमाणन प्रक्रिया में इस आवश्यकता को नहीं हटा सकता है।

► जून 2018 में, **भारत ने अमेरिका से आयातित 29 वस्तुओं पर उच्च टैरिफ** लगाने का निश्चय किया था, ताकि आयातित स्टील और एल्यूमीनियम उत्पादों पर भारी शुल्क लगाने के उस देश के निर्णय का प्रतिउत्तर दिया जा सके।

► यह कदम, जो अखरोट, बादाम और छोले जैसे उत्पादों को संभावित रूप से प्रभावित कर सकता है, को कई बार स्थगित किया गया है।

► अमेरिका के पक्ष ने जिन दो मुद्दों को विशेष रूप से बातचीत के नवीनतम दौर के दौरान उठाया है वे हैं "फ्लिपकार्ड के अधिग्रहण के बाद **वॉलमार्ट**", और डेटा स्थानीयकरण संबंधी समस्याएं जिनका सामना मास्टरकार्ड और वीज़ा जैसी कंपनियों को करना पड़ रहा है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► क्या भारत एक "टैरिफ किंग" है? सामान्यीकृत प्रणाली वरीयताएँ (GSP) कितनी महत्वपूर्ण है? वर्तमान में चल रहे भारत-अमेरिका व्यापार विवादों के संदर्भ में विश्लेषण करें।



(कौटुंबी देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा कर चोरी की जाँच करने के लिए भारत-अमेरिका समझौता



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || उद्योग || कुटीर उद्योग

### शीर्षक

► बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा कर चोरी की जाँच करने के लिए भारत-अमेरिका समझौता, देश रिपोर्ट के अनुसार देश क्या है?

### सुर्खियों में क्यों?

► भारत ने सीमा पार से कर चोरी रोकने में मदद करने के लिए आय आवंटन और करों के भुगतान के बारे में **बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर देश-दर-देश (CbC) रिपोर्टों** के आदान-प्रदान के लिए **अमेरिका के साथ अंतर-सरकारी समझौते** की अधिसूचना दी है

### विवरण

► **सीमा-पार में कर चोरी की जाँच करें:** अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की सहायक कंपनियों को राहत प्रदान करने और सीमा-पार में कर चोरी की जाँच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, भारत ने अंतर-सरकारी समझौते में देश-दर-देश (CbC) विनिमय के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ बहुराष्ट्रीय उद्यमों (MNEs) द्वारा दर्ज की गई रिपोर्ट जो आय आवंटन और करों के भुगतान से संबंधित है, के बारे में अधिसूचित किया है।

► इसके तहत मार्च 2019 में दोनों देशों में स्थित **अंतिम मूल निगमों द्वारा CbC रिपोर्ट** साझा करने के लिए एक समझौते पर दो राष्ट्रों द्वारा हस्ताक्षर किए गए हैं।

► समझौते के अनुसार, यह एक कुशल और मजबूत **हस्तांतरण मूल्य निर्धारण जोखिम मूल्यांकन विश्लेषण** करने के लिए प्रासंगिक और विश्वसनीय जानकारी प्रदान करेगा।

► इस समझौते पर मार्च 2019 में **केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (CBDT) के अध्यक्ष पी. सी. मोदी और भारत में अमेरिकी राजदूत केनेथ जस्टर** ने हस्ताक्षर किए थे, जिसे 25 अप्रैल, 2019 को राजस्व विभाग द्वारा अधिसूचित किया गया था।

► **CbC रिपोर्टों का आदान-प्रदान:** CbC रिपोर्टों के आदान-प्रदान के लिए यह समझौता, **द्विपक्षीय सक्षम प्राधिकारी व्यवस्था** के साथ, संबंधित क्षेत्राधिकारों में MNEs की अंतिम मूल संस्थाओं द्वारा दायर की गई CbC रिपोर्ट को **स्वचालित रूप से सक्षम करेगा**, जो 1 जनवरी 2016 से या उसके बाद से शुरू हुए हैं।

### अन्य जनादेश

► यह अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भारतीय सहायक कंपनियों को **CbC रिपोर्ट की स्थानीय फाइलिंग** करने की आवश्यकता को भी पूरा करेगा, जिससे **अनुपालन बोझ कम होगा**।

### CbC रिपोर्ट

► **देश-दर-देश की जानकारी:** एक CbC रिपोर्ट आय के वैश्विक आवंटन, करों का भुगतान और MNC के कुछ अन्य संकेतकों से संबंधित जानकारी को एकत्र करती है।

► **सभी समूह कंपनियों की सूची:** इसमें एक विशेष क्षेत्राधिकार में संचालित सभी समूह कंपनियों की सूची और उनके प्रत्येक संबद्ध घटक की मुख्य व्यावसायिक गतिविधि की सूची भी इनमें शामिल है।

### शर्तें

► **750 मिलियन यूरो का वैश्विक समेकित राजस्व:** एक वर्ष में 750 मिलियन यूरो या अधिक (या एक स्थानीय मुद्रा के बराबर) के वैश्विक समेकित राजस्व वाले MNE को अपनी मूल इकाई के अधिकार क्षेत्र में **CbC रिपोर्ट दर्ज करने की आवश्यकता होती है**।

► भारतीय नियमों में **750 मिलियन यूरो के बराबर 5,500 करोड़ रुपये निर्धारित किये गये हैं**।

### लाभ

► **कर जोखिम के मूल्यांकन का उन्नत स्तर:** यह जानकारी दोनों देशों के कर प्रशासनों द्वारा कर जोखिम के मूल्यांकन के स्तर को बढ़ाएगी।

► **OECD / G20 BEPS परियोजना की एक्शन 13 रिपोर्ट:** अपने निवासी क्षेत्राधिकार में एक बहुराष्ट्रीय समूह की अंतिम मूल संस्था द्वारा देश-दर-देश (CbC) रिपोर्ट दाखिल करना और अन्य अधिकार क्षेत्रों के अधिकारियों के साथ ऐसी CbC रिपोर्ट का आदान-प्रदान करना, जिसमें समूह की एक या एक से अधिक घटक इकाइयां हैं, OECD / G20 BEPS प्रोजेक्ट की एक्शन 13 रिपोर्ट के तहत आवश्यक न्यूनतम मानक हैं।

► CbC रिपोर्ट का आदान-प्रदान करने के लिए अमेरिका के साथ समझौते पर हस्ताक्षर, इस दिशा में एक कदम है, जो विश्वसनीय जानकारी प्रदान करेगा, मजबूत जोखिम मूल्यांकन विश्लेषण सुनिश्चित करेगा और कर चोरी पर नजर रखने में मदद करेगा।

► भारत ने पहले से ही CbC रिपोर्टों के आदान-प्रदान के लिए **बहुपक्षीय सक्षम प्राधिकारी समझौते (MCAA)** पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसने 62 न्यायालयों के साथ CbC रिपोर्टों के आदान-प्रदान को सक्षम किया है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► बहुराष्ट्रीय कर चोरी दुनिया भर में सामाजिक खर्च पर रोक लगाती है। चर्चा करें। सरकारों द्वारा MNCs द्वारा कर चोरी की जाँच करने के लिए उठाए गए कदमों की भी जाँच करें। इस संदर्भ में और क्या करने की आवश्यकता है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम क्या है ?



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || उद्योग || प्रमुख उद्योग

### शीर्षक

चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम क्या है? वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण मूल्य श्रृंखला और भारत

### सुर्खियों में क्यों?

- **चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम (PMP)** ने हैंडसेट के आयात को कम करने में योगदान दिया है, जबकि सर्किट और माइक्रो असेंबलियों के आयात में लगातार वृद्धि हुई है।
- व्यवस्थित सरकार और उद्योग हस्तक्षेप इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र के विकास को सक्षम करने के लिए एक प्रभावी क्षेत्र तैयार कर सकते हैं।

### व्यापार परिदृश्य

- **बढ़ते व्यापार घाटे:** भारत के विस्तार करते आय स्तर ने एक प्रमुख घटक के रूप में इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के आयात के साथ **बढ़ते व्यापार घाटे** में स्थानांतरण किया है।
- 2017-18 में इलेक्ट्रॉनिक्स आयात बढ़कर 48.3 बिलियन डॉलर (कुल आयात का 10%) हो गया था, जो पिछले वर्ष की तुलना में 10 बिलियन डॉलर से अधिक था। इसी के साथ तेल और जवाहरात व आभूषणों के बाद **कुल आयात में यह तीसरी रैंक** पर पहुंच गया है।
- भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार 2020 तक 400 बिलियन डॉलर तक बढ़ने का अनुमान है। इसी के साथ यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि यह इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए वैश्विक मांग के साथ मिलकर, फर्मों को निर्यात के लिए एक हब के रूप में, भारत में निवेश करने के लिए विशाल अवसर पैदा कर सकता है।
- इलेक्ट्रॉनिक्स में घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करना इस समय की जरूरत है।

### चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम (PMP)

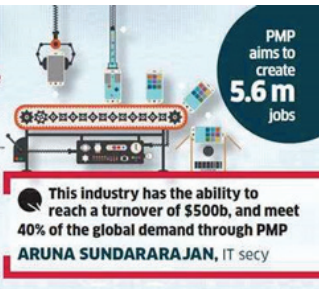
- सरकार ने मई 2017 में सेलुलर मोबाइल हैंडसेट के घरेलू उत्पादन को बढ़ाने के लिए PMP की शुरुआत की थी।
- यह कार्यक्रम इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MieTY) के तहत है।
- इसका समग्र उद्देश्य कर्तव्यों को लागू करना (अंतर ऊद्युती शासन) है और सेलुलर हैंडसेट के घरेलू विनिर्माण में शामिल चुनिंदा उत्पादों पर कर राहत और प्रोत्साहन देना है।

## Going Local

Phased manufacturing programme (PMP) sets a time-bound policy to make India a mobile & component manufacturing hub

The first phase of PMP was started in 2015 by making local assembly of mobiles cheaper than imports

The policy was then extended to chargers, batteries & headsets last year



► इसे चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम कहा जाता है क्योंकि यह विभिन्न हैंडसेटों में सेलुलर हैंडसेट के विभिन्न घटकों के **घरेलू विनिर्माण को वित्तीय लाभ** देगा।

► अब जब 2017 में पेश किए गए चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम (PMP) ने, 2018-19 में इस श्रेणी के तहत आयात पर अंकुश लगाया गया है, तो भारत को अपने इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात का निर्माण करना चाहिए।

### वियतनाम से लेने योग्य

- ऐसा करने का एक तरीका वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVC) में प्रभावी रूप से भाग लेना है, जहां एशिया एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभरा है। वियतनाम से ग्रहण करने योग्य महत्वपूर्ण बातें हैं, **जिन्होंने 2010 और 2016 के बीच अपने इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात में 700% से अधिक का विस्तार किया है।**
- वियतनाम की सफलता का एक कारण, **इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में अग्रणी बहुराष्ट्रीय कंपनियों** द्वारा दिया गया **FDI** है।
- पिछले कुछ दशकों में, वियतनाम ने अपनी **अर्थव्यवस्था को उदार बनाया और निवेशों की रक्षा के लिए कानूनों की स्थापना की।**
- तटीय क्षेत्रों के विशाल इलाकों को **आर्थिक क्षेत्रों और औद्योगिक पार्कों के निर्माण के लिए आवंटित** किया गया है।
- **अतिरिक्त वित्तीय और कर प्रोत्साहन** के साथ कॉर्पोरेट आयकर को 20% तक घटा दिया गया है, जिसने **ध्वनि बंदरगाहों और रसद बुनियादी ढांचे** के साथ, प्रमुख बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आकर्षित किया है।
- इन कंपनियों ने सहायक उद्यमों के विकास को और बढ़ावा दिया है, जिससे एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण हुआ है जिन्हें अब चीन से बाहर होने वाले विनिर्माण से गति प्राप्त हो रही है।

### भारत की शक्ति

- भारत की ताकतों में **इंजीनियरों का एक विशाल जत्था**, प्रतिस्पर्धी श्रम बल, अंग्रेजी से परिचय और अन्य ताकतें शामिल हैं।
- कई MNCs ने देश में डिजाइन और R & D केंद्र स्थापित किए हैं, जो विनिर्माण क्षेत्रों से जुड़े हैं।
- **सही नीति के माहौल के साथ**, एक संपन्न इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र जो क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखला को स्थानांतरित करने के साथ अच्छी तरह से एकीकृत है, निर्यात को बढ़ावा देने और नई नौकरियां पैदा करने में मदद कर सकता है।

## समाधान

- **रणनीतिक आयात:** सबसे पहले, अंतिम और मध्यवर्ती वस्तुओं के संदर्भ में इलेक्ट्रॉनिक्स का रणनीतिक आयात महत्वपूर्ण है, क्योंकि कुछ उत्पादों का आयात आवश्यक है।
- 2016 में **इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में वियतनाम का आयात बिल \$ 47.7 बिलियन** था।
- जबकि भारत ने 2018-19 के बजट में कुछ इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों पर आयात शुल्क बढ़ाया था, हाल ही में स्थानीय हैंडसेट उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी सीमा शुल्क से मोबाइल फोन घटकों के निर्माण के लिए उपयोग किए जाने वाले **35 मशीनी हिस्सों** को छूट दी गई है।
- ऐसे उत्पादों के आयात शुल्क ढांचे पर एक संतुलन बनाए रखना होगा।
- **व्यापार करने में आसानी:** दूसरा, भारत को व्यापार करने के तरीके को आसान बनाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। विशेष रूप से निर्यात और आयात दोनों के लिये सीमा और अनुपालन, दस्तावेजी अनुपालन, आदि जैसे क्षेत्रों में व्यापार के संदर्भ ध्यान केंद्रित करना होगा।
- भारत में आयातों की सीमा के अनुपालन के लिए लगने वाला समय वियतनाम की तुलना में **पाँच गुना अधिक** है और विश्व बैंक के अनुसार लागत लगभग 25% अधिक है।
- **समर्पित औद्योगिक पार्क** एक सहायक व्यापार प्रणाली विकसित करने में मदद कर सकते हैं।
- **ग्लोबल वैल्यू चेन (GVC):** तीसरा, GVC उच्च गुणवत्ता और समय पर डिलीवरी की मांग करते हैं, जिसके पीछे औद्योगिक पार्कों और बंदरगाहों की उच्च गति और विश्वसनीय संपर्क के साथ सीमावर्ती रसद समर्थन की आवश्यकता होती है।
- समान रूप से, अनुबंध प्रवर्तन, उल्लंघन के मामले में फर्मों के लिए उपलब्ध राहत, निपटान की अवधि, कानूनी प्रक्रियाओं, आदि पर विचार करने की आवश्यकता है।
- **पिछड़े संबंध:** चौथा, GVC के भीतर उन्नयन के लिए, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और घरेलू उद्योग के बीच पिछड़े संबंध महत्वपूर्ण हैं। भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स SMEs को सरकार और MNCs दोनों के ही द्वारा संभाला जाना आवश्यक है।
- निम्न स्तरों पर आपूर्तिकर्ताओं सहित बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा कार्यशालाएं गुणवत्ता के निर्माण और अपेक्षित मानकों को पूरा करने में सहायता कर सकती हैं।
- सरकार प्रमुख विनिर्माण समूहों में **SMEs के लिए प्रशिक्षण केंद्र** भी स्थापित कर सकती है।

## समाधान

- जबकि MNCs को आकर्षित करने का वियतनाम का अनुभव एक मॉडल है, वहीं GVC में इसकी घरेलू फर्मों का एकीकरण निम्न स्तर पर रहता है, मुख्यतः एसेंबली, पैकेजिंग आदि में।
- भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि वह गहरी स्थानीय आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ बेहतर मूल्यवर्धन पर पहुंचेगा।
- भारत के लिए एक लाभ यह है कि भले ही शुरू में यह निचले स्तर पर GVC में एकीकृत करने के लिए था, लेकिन इसने मजबूत निजी क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र, प्रतिभा और उद्यमशीलता की भावना के बड़े जल्ले के साथ मिलकर, देश को GVC की सीमा में रहते हुए बढ़ने में मदद की है। हालांकि, प्रारंभिक एकीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- भारत अपने इलेक्ट्रॉनिक्स फर्मों को वैश्विक मूल्य श्रृंखला में कैसे एकीकृत कर सकता है? इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र के विकास को सक्षम करने के लिए सुझाव दें।



(कौटिल्य देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## रिकॉर्ड जीएसटी संग्रह, 1.13 ट्रिलियन रुपये अप्रैल में एकत्र किये गए



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बाहरी क्षेत्र || अंतर्राष्ट्रीय कर मामले

### शीर्षक

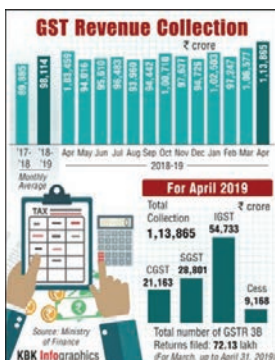
शीर्षक: रिकॉर्ड जीएसटी संग्रह, 1.13 ट्रिलियन रुपये अप्रैल में एकत्र किये गए, उच्च संग्रह का क्या कारण है?

### सुर्खियों में क्यों?

- माल और सेवा कर (GST) से राजस्व में वर्ष-पूर्व की अवधि में 10% की वृद्धि देखी गई, जो अप्रैल 2019 में 1.13 लाख करोड़ रुपये पहुंच गयी। 1 जुलाई 2017 को अप्रत्यक्ष कर प्रणाली के कार्यान्वयन के बाद से यह सबसे अधिक है।
- अप्रैल में दर्ज की गयी GST संख्या कई विशेषज्ञों के लिए एक आश्चर्य की बात है, विशेषकर तब जब हाल के महीनों में कई क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों की कमी को देखा गया है जिन्हें वास्तविक रूप में इन्हें संग्रह पर प्रतिकूल प्रभाव डालना चाहिए था।

### प्रमुख बातें

- आयकर: पहली बार आयकर रिटर्न के इतिहास में, वित्त वर्ष 19 में 6.68 करोड़ रिटर्न दाखिल किये गये जो कि वित्त वर्ष 18 में 6.74 करोड़ थे, यह विमुद्रीकरण के घटते प्रभाव को दर्शाता है।
- अनुपालन: पिछले कुछ वर्षों की तुलना में वित्त वर्ष 19 में अनुपालन कम रहा है क्योंकि वित्त वर्ष 18 में यह 91.6% के उच्च स्तर से पंजीकृत दाखिलकर्ता का वास्तविक दाखिलों से अनुपात वित्त वर्ष 19 में 79.1% तक गिर गया है।
- प्रत्यक्ष कर संग्रह: संशोधित अनुमानों के विरुद्ध, वित्त वर्ष 19 में प्रत्यक्ष कर संग्रह 50,000 करोड़ रुपये से कम हो गया है। वहीं चालू वित्त वर्ष में प्रत्यक्ष कर के लिए बजट का अनुमान 13.8 लाख करोड़ रुपये है, जिसमें वित्त वर्ष 19 के संशोधित अनुमान से 15% की वृद्धि की हुई है।



- GST: दिलचस्प बात यह है कि अप्रत्यक्ष करों में, माल और सेवा कर संग्रह ने इस साल मार्च में 1.13 लाख करोड़ रुपये के सबसे उच्च स्तर को छू लिया है।
- पिछले दो महीनों में मजबूत संग्रह अप्रत्यक्ष कर कानूनों के साथ बढ़ते अनुपालन को दर्शाता है।
- वे एक साल पहले इसी महीने की तुलना में 10% से अधिक की वृद्धि का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहीं 2018-19 में 98,114 करोड़ रुपये के औसत मासिक GST संग्रह पर 15% से अधिक का उछाल देखा गया है।
- केंद्र ने कुल GST संग्रह 7.6 लाख करोड़ रुपये दर्ज किये हैं और राज्यों ने 6.1 लाख करोड़ रुपये। राज्यों ने इसका मासिक रन रेट 1.15 लाख करोड़ रुपये लगाया है।

### कारण

- अनुपालन में वृद्धि: इस बढ़ती प्रवृत्ति का अनुपालन बढ़ाने के लिए व्यवसायों में, कर के आधार को व्यापक बनाने के लिए कर अधिकारियों द्वारा आक्रामक रुख को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।
- उदाहरण के लिये, GST फाइलिंग इस साल मार्च में सबसे ज्यादा थी। हालांकि, कारोबारियों द्वारा दाखिल GSTR-3B रिटर्न की कुल संख्या में मार्च में 75.95 लाख से अप्रैल में 72.13 लाख तक की कमी के बावजूद, अप्रैल में उछाल आया है।
- जीएसटी काउंसिल द्वारा कर की दर में कटौती: अधिक विघटित आंकड़ों के अभाव में, यह तर्क दिया जा सकता है कि GST परिषद द्वारा दिसंबर 2018 में कर की दर में कटौती के कारण भी कुछ वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में बढ़ोतरी हुई है।
- वित्तीय वर्ष के अंत में बकाया कर भुगतान करने की हड़बड़ी, पिछले महीने के दौरान बेहतर कर संग्रह में योगदान करने वाला एक अन्य मौसमी कारक हो सकता है।
- प्रवर्तन कार्रवाई: इसका अन्य कारण, करदाता द्वारा प्रवर्तन कार्रवाई भी हो सकता है जो कि उन पंजीकृत करदाताओं से अधिक राजस्व इकट्ठा करने के लिए था जिन्होंने रिटर्न दाखिल नहीं किये थे।

### महत्व

- विकास की गति: पहली तिमाही में अर्थव्यवस्था की विकास दर 8.2% से गिर गई, दूसरी में 7.1% और तीसरी में 6.6% रही, इसलिए मई 2019 के अंत में होने वाली अंतिम तिमाही की संख्या में कोई भी सुधार कुछ राहत दे सकता है।
- राजकोषीय घाटा: स्वस्थ GST संग्रह, अगर निरंतर रहता है, तो इसका मतलब होगा कि केंद्र पर अपने राजकोषीय घाटे को कवर करने के लिए कम दबाव भी होगा।

### समाधान

- कर आधार का विस्तार करें: नई सरकार को कर आधार का विस्तार करने के तरीकों पर गौर करना होगा क्योंकि कर दाखिल में होने वाली मौन वृद्धि से पहले ही तनावग्रस्त राजकोषीय क्षेत्र में अधिक दबाव बनेगा।
- GST शासन का सरलीकरण: एक बार जब चुनाव का मौसम समाप्त होता है, तो GST शासन के अधिक सरलीकरण की आवश्यकता पर दृष्टि नहीं खोनी चाहिए। GST के आगमन के बाद से कई महत्वपूर्ण व्यवसायों को पहले ही कर के दायरे में लाया गया है।

► **अधिक अनुपालन को प्रोत्साहित करें:** अधिक से अधिक अनुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए, ऐसे प्रयास किये जाने चाहिए ताकि लघु कंपनियां कर के दायरे में बनी रहें और उसके लिये असंख्य कर रिटर्न भरने में लगने वाले समय और ऊर्जा को कम करने की आवश्यकता है।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► वित्त वर्ष 19 के शुरुआत में किन कारकों ने GST संग्रह में रिकॉर्ड बनाया? GST शासन में सुधार के लिए और क्या कदम उठाए जाने चाहिए?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## SEBI ने NSE को अनुचित दलाली करने पर जुर्माना लगाया



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

**GS 3 || अर्थव्यवस्था || बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र || वित्तीय नियामक**

### शीर्षक

SEBI ने NSE को अनुचित दलाली करने पर जुर्माना लगाया है, SEBI के आदेश से बाजार के कामकाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

### सुर्खियों में क्यों?

- ▶ **भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI)** ने नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE), को **सह-स्थान घोटाले** में तत्परता से कार्य नहीं करने का दोषी ठहराया है। NSE भारत का सबसे बड़ा इक्विटी विदेशी-मुद्रा बाजार है।
- ▶ एक्सचेंज को **625 करोड़ रुपये के साथ-साथ 12 प्रतिशत (पांच साल के लिए) ब्याज का जुर्माना** देने के लिए कहा गया है।

### घोटाला

- ▶ **सह-स्थान:** सह-स्थान, दलालों को अतिरिक्त शुल्क के भुगतान पर अपने सर्वर के करीब संचालित करने की अनुमति देते हैं।
- ▶ यह एक्सचेंज सर्वर से निकटता के कारण दलालों को दूसरों की तुलना में सुरक्षित लाभ प्रदान करता है क्योंकि डेटा के हस्तांतरण में कम समय लगता है।
- ▶ आदेश (ऑर्डर), उन लोगों की तुलना में तेजी से एक्सचेंज सर्वर तक पहुंचते हैं, जिन्होंने सुविधा का लाभ नहीं उठाया है।
- ▶ **2014-15 में एक मुखबिर (व्हिसलब्लोअर)** ने भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI) को शिकायत करते हुए कहा कि कुछ शीर्ष NSE अधिकारियों की मिलीभगत से कुछ दलालों ने सह-स्थान सुविधा का दुरुपयोग किया था।
- ▶ **टिक-बाय-टिक (TBT) सर्वर:** NSE, तब सदस्यों को डेटा प्रसारित करने के लिए तथाकथित टिक-बाय-टिक (TBT) सर्वर प्रोटोकॉल का उपयोग कर रहा था।
- ▶ इस प्रोटोकॉल के बारे में अजीब बात यह है कि यह जानकारी कैसे वितरित करता है।
- ▶ **सामान्य डेटा प्रोटोकॉल** उसी समय नेटवर्क से जुड़े सभी उपयोगकर्ताओं को डेटा भेजते हैं।
- ▶ लेकिन **TBT प्राप्त आदेशों के अनुक्रम में डेटा को प्रसारित करता है।**

## Regulatory Trouble

SEBI ASKS NSE BOARD TO INVESTIGATE UNDUE FAVOURS TO SOME BROKERS, ASKS FOR OUTSIDE FORENSIC AUDIT

### THE CHARGE

Allegation of preferential treatment to some brokers  
This relates to brokerages having 'colocation' arrangement with NSE

Servers of these entities located on NSE premises  
They may have received sensitive information ahead of others

In age of computer trading this could have been hugely profitable

Possible collusion of NSE officials

### BAD TIMING

NSE has to submit report within three months to Sebi

The investigation comes as NSE is preparing for a public offer

- ▶ दूसरे शब्दों में, जो उपयोगकर्ता पहले सिस्टम तक पहुंचता है, उसे बाकी की तुलना में पहले डेटा प्राप्त होता है।
- ▶ NSE अधिकारियों और ओप्रेसिस टेक्नोलॉजीज़ (जिस कंपनी ने एनएसई को तकनीक प्रदान की थी) के साथ मिलकर दलालों के समूह को NSE के सर्वर तक पहली पहुंच मिली, और इसी के साथ उन्हें शुरूआती बढ़त मिली।

### SEBI का आदेश

- ▶ **अनुचित व्यापारिक व्यवहार:** सेबी के आदेश में OPG सिक्योरिटीज़, GKN सिक्योरिटीज़ और वे2वेल्थ के साथ-साथ इंटरनेट सेवा प्रदाता सम्पर्क इन्फोटेनमेंट को अनुचित व्यापार का दोषी पाया गया है।
- ▶ एक्सचेंज ने OPG और अन्यो को बैंक-अप सर्वर तक पहुंचने की अनुमति दी जहां उन्हें पहली पहुंच मिली जिससे उन्हें आदेश तेजी से निष्पादित करने में मदद मिली।
- ▶ **लाइसेंस:** NSE ने इस तथ्य की भी अनदेखी की कि कुछ दलालों को डार्क फाइबर कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए संपर्क इन्फोटेनमेंट के पास वैध दूरसंचार विभाग नहीं था।
- ▶ **NSE के शीर्ष अधिकारी:** दलालों के साथ-साथ SEBI ने NSE के कई शीर्ष अधिकारियों पर दलालों के साथ मिलीभगत के आरोप भी लगाए हैं।
- ▶ अपनी रिपोर्ट में, SEBI ने स्पष्ट रूप से कहा है कि प्रमुख अधिकारियों ने उचित प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया है।
- ▶ इसके अलावा, NSE को 687 करोड़ रुपये का भुगतान करना होगा और इसे छह महीनों के लिए पूंजी बाजार से दूर रखा जाएगा।
- ▶ इसका IPO साल के अंत तक विलंबित हो जाएगा लेकिन इससे NSE या इसके मूल्यांकन के प्रभावित होने की संभावना नहीं है।
- ▶ NSE के पास इस जुर्माना का भुगतान करने और आर्थिक रूप से मज़बूत बने रहने के लिए पर्याप्त भंडार है।

### OPG और अन्यो ने इस जीत को कैसे हासिल किया?

- ▶ OPG को NSE के बैंकअप सर्वर तक पहुंच मिली, जिसकी देखरेख की ज़िम्मेदारी एक्सचेंज की थी ताकि मुख्य सर्वर पर तकनीकी गड़बड़ियों को प्रभावी संचालन से रोका जा सके।
- ▶ इन सर्वरों पर ट्रैफ़िक या तो हल्का या गैर-मौजूद होता है क्योंकि वे केवल बैंकअप के लिए होते हैं। सामान्य दिनों में, यहां तक कि जब मुख्य सर्वर काम कर रहा होता है, तो कोई भी बैंकअप सर्वर के माध्यम से लॉग इन करके तेजी से डेटा भेज और प्राप्त कर सकता है। OPG और अन्यो ने इसका फायदा उठाया।

## क्या NSE ने नियम तोड़े?

- **पर्यवेक्षी की लापरवाही:** SEBI ने फैसला सुनाया कि यह निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं मिले कि NSE ने कोई कपटपूर्ण कृत्य किया है, लेकिन यह निर्णय स्पष्ट था कि एक्सचेंज उचित तत्परता से कार्य करने में विफल रहा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सकता कि यह एक उचित बाजार के रूप में कार्य करता है।
- **बाजार निष्पक्षता:** हालांकि यह अभी तक निर्णायक रूप से साबित नहीं हुआ है कि तरजीही पहुंच वाले फर्मों को एक्सचेंज से मिले डेटा से लाभ प्राप्त हुआ है, लेकिन इस प्रकरण ने बाजार निष्पक्षता के बारे में गंभीर सवाल उठाए हैं।

## महत्व

**निवेशकों का हित:** लाखों निवेशक प्रत्येक वर्ष NSE जैसे बाजार प्लेटफार्मों पर अपना व्यापार करने का चयन करते हैं, इस विश्वास के साथ कि बाजार अपने ट्रेडों को पूरा करने के लिए एक समान वातावरण प्रदान करेगा।

► **नियामक कार्रवाई:** हालांकि जुर्माने के परिमाण पर बहस होना तय है, लेकिन कुल मिलाकर वित्तीय जुर्माना, एक स्वागत योग्य नियामक कार्रवाई है।

► **निवेशकों का विश्वास:** बाजार नियामक के रूप में, SEBI को अपने पर्यवेक्षी उल्लंघनों का अनुकरणीय तरीके से आदान-प्रदान करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छोटे निवेशक, बाजार की अर्थव्यवस्था को सक्षम करने वाले प्रमुख संस्थानों की निष्पक्षता और सुदृढ़ता में विश्वास बनाए रखें।

## अतिरिक्त जानकारी

### भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI)

- SEBI भारत में प्रतिभूति बाजार के लिए एक नियामक है। इसे 1988 में स्थापित किया गया था और 30 जनवरी 1992 को सेबी अधिनियम, 1992 के माध्यम से वैधानिक शक्तियां दी गई थीं।
- **सेबी की संरचना:**
- इसमें भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (SEBI) के अध्यक्ष को छोड़कर 9 सदस्य शामिल होते हैं। इसका प्रबंधन निम्नलिखित तरीके से इसके सदस्यों द्वारा किया जाता है:
- एक अध्यक्ष को केंद्र सरकार द्वारा नामांकित किया जाता है।
- 2 सदस्य केंद्रीय वित्त मंत्रालय के अधिकारी होते हैं।
- 1 सदस्य भारतीय रिजर्व बैंक से होता है।
- 3 पूर्णकालिक सदस्य होते हैं, जिन्हें भारत सरकार द्वारा नामांकित किया जाता है।
- 2 अंशकालिक सदस्य होते हैं, जिन्हें भारत सरकार द्वारा नामांकित भी किया जाता है।
- **कार्य और जिम्मेदारियां:**
- सेबी को तीन समूहों की जरूरतों के लिए उत्तरदायी होना चाहिए, जो बाजार का गठन करते हैं:
- प्रतिभूतियों के जारीकर्ता
- निवेशक
- बाजार मध्यस्थ

- SEBI के तीन कार्य एक निकाय में ही सम्मिलित हैं:
- **अर्ध विधायी:** यह नियमों का मसौदा तैयार करता है
- **अर्ध-न्यायिक:** यह जांच और प्रवर्तन कार्रवाई करता है
- **अर्ध-कार्यकारी:** यह अपनी न्यायिक क्षमता में नियम और आदेश पारित करता है
- यद्यपि यह इसे बहुत शक्तिशाली बनाता है, लेकिन जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए एक अपील प्रक्रिया भी है।
- एक प्रतिभूति अपीलीय न्यायाधिकरण है जो कि **तीन सदस्यीय न्यायाधिकरण** है और वर्तमान में मेघालय उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति तरुण अग्रवाल के नेतृत्व में है।
- दूसरी अपील सीधे सर्वोच्च न्यायालय में की जाती है।
- SEBI ने अंतरराष्ट्रीय मानकों पर प्रकटीकरण आवश्यकताओं को व्यवस्थित करने में बहुत सक्रिय भूमिका निभाई है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- सह-स्थान (co-location) क्या है? NSE सह-स्थान (co-location) घोटाले के संदर्भ में स्पष्ट करें। संबंधित मामले में SEBI के फैसले का विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## SBI ने बड़े बचत खातों की ब्याज दर को रेपो रेट से जोड़ा



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बैंकिंग और वित्त || वाणिज्यिक बैंकिंग

### शीर्षक

SBI ने बड़े बचत खातों की ब्याज दर को रेपो रेट से जोड़ा है, यह छोटे उधारकर्ताओं को कैसे प्रभावित करेगा?

### सुर्खियों में क्यों?

- बैंकिंग व्यवसाय के लगभग एक चौथाई हिस्से वाला देश रिजर्व बैंक (RBI) की रेपो दर पर, बचत बैंक जमा राशियों और अल्पावधि ऋणों पर अपनी ब्याज दरों को जोड़ा है।
- RBI ने अन्य बैंकों के विरोध के बाद, रेपो रेट या ट्रेजरी बिल दर जैसे बाहरी बेंचमार्क की ब्याज दर को जोड़ने की योजना को टाल दिया था लेकिन फिर भी SBI ने यह कदम उठाया है।

### बदलाव

- **बचत बैंक की जमा राशि:** मार्जिनल कॉस्ट ऑफ फंड्स आधारित उधार दर (MCLR) से जोड़े जाने की प्रथा में बदलाव करते हुए, बैंक ने 1 लाख रुपये से अधिक की बचत बैंक जमा राशियों को रेपो दर से जोड़ा है।
- **रेपो रेट -** ब्याज दर जिस पर RBI बैंकों को धनराशि उधार देता है - वर्तमान में 6% है।
- **1 लाख से 1 करोड़ रु:** SBI के फार्मूले के अनुसार, 1 लाख रुपये से अधिक और 1 करोड़ रुपये तक की बचत बैंक जमा राशि की नई दर, मौजूदा रेपो दर से 2.75% कम होगी - जो अब तक पेश की गयी दर यानि प्रति वर्ष 3.5% के विपरीत 3.25% प्रति वर्ष होगी।
- **1 करोड़ रुपये से अधिक:** 1 करोड़ रुपये से अधिक की बचत बैंक जमा राशि के लिये, नई दर 3.75% होगी, जो पहले दी जाने वाली 4% दर से कम है।
- **नकद क्रेडिट खाते और ओवरड्राफ्ट:** 1 लाख रुपये से अधिक की सीमा वाले सभी नकद क्रेडिट खातों और ओवरड्राफ्ट को रेपो दर (6% की वर्तमान रेपो दर + 2.25% के विस्तार) से जोड़ा जाएगा।
- इस फ्लोर दर से अधिक का जोखिम प्रीमियम, उधारकर्ता की जोखिम रूपरेखा पर आधारित होगा, जैसा कि वर्तमान में किया जाता है।

### छोटे जमाकर्ताओं और छोटे उधारकर्ताओं पर प्रभाव

- **कोई परिवर्तन नहीं:** 1 लाख रुपये से कम की राशि के साथ बचत खाता जमा राशि, 3.5% ब्याज अर्जित करना जारी रखेगी - जो इन खातों के लिये निश्चित पुराने दर के समान है।
- यह ब्याज दर RBI के नियमों के अनुसार बैंक द्वारा परिवर्तन के अधीन भी है, लेकिन यह स्वतः निश्चित नहीं होगी क्योंकि रेपो दर परिवर्तनशील होती है।
- यदि बचत बैंक की जमा राशि एक बार भी 1 लाख रुपये का आंकड़ा पार कर लेती है, तो कम ब्याज दर अपने आप लागू हो जाएगी।
- यहां, 1 लाख रुपये तक के नकद ऋण या ओवरड्राफ्ट सीमा वाले छोटे उधारकर्ताओं के लिए राहत है, क्योंकि वे रेपो दर से जुड़े नहीं होंगे।

### औचित्य

- **मौद्रिक नीति की बैठक:** दिसंबर 2018 में मौद्रिक नीति बैठक में RBI ने नये परिवर्तनशील-दर वाले खुदरा ऋणों के साथ-साथ सूक्ष्म व लघु उद्यमों को दिये जाने वाले ऋण की बेंचमार्किंग को रेपो दर या ट्रेजरी बिल दर जैसे बाहरी बेंचमार्क से जोड़ने का प्रस्ताव रखा था, जो 1 अप्रैल 2019 से प्रभावी हो गया है।
- आरबीआई के अनुसार, बेंचमार्क दर - जिसे ऋण की शुरुआत में बैंकों द्वारा निर्धारित किया जाना है - ऋण के पूरे काल में अपरिवर्तित रहना चाहिए, जब तक कि उधारकर्ता के ऋण मूल्यांकन में पर्याप्त परिवर्तन नहीं होता है।
- **पारदर्शिता:** बाहरी बेंचमार्क की नई प्रणाली के माध्यम से ब्याज दरों को तय करने में अधिक पारदर्शिता और दरों में तेज़ हस्तांतरण होने की उम्मीद है।
- बैंक अपनी जमा और उधार दरों का निर्धारण करते समय इन दो महत्वपूर्ण कारकों में पिछड़ रहे थे।

### RBI का रुख अप्रैल नीति में इस योजना के विपरीत क्यों था?

- 4 अप्रैल को, RBI ने घोषणा की कि हितधारकों के साथ हुई चर्चा के दौरान प्राप्त प्रतिक्रिया को ध्यान में रखते हुए, उसने जमा राशि और अल्पकालिक ऋणों पर ब्याज दरों को एक बाहरी बेंचमार्क जैसे कि रेपो दर या ट्रेजरी बिल दर से जोड़ने के प्रस्ताव को स्थगित कर दिया है।
- कई बैंक मार्जिन में गिरावट की आशंका के चलते लोन को बाहरी बेंचमार्क दर से जोड़ने की पैरवी के विरुद्ध थे। रेपो दर में अवधि संरचना का अभाव है और बैंकों के पास रेपो दर पर फंड की पहुंच भी सीमित है। उन्होंने RBI गवर्नर शक्तिकांत दास के साथ बैंकों की बैठक में इस मामले को उठाया था।
- **बैंकर्स के FICCI-IBA सर्वेक्षण** के अनुसार, नए परिवर्तनशील-दर वाले ऋणों के प्रस्तावित बाहरी बेंचमार्किंग दर के तहत बैंकों द्वारा किये जाने वाले विस्तार को वे अधिक कर सकते हैं ताकि वे खुद को बेंचमार्क की उच्च अस्थिरता के मामले में पर्याप्त रूप से बचा सकें।
- सर्वेक्षण में कहा गया है कि **T-बिल और CD (सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट) बाजारों** में कमी इस तरह के बेंचमार्क को हेरफेर के लिए संभावित रूप से अतिसंवेदनशील बना सकती है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- भारत में एक बैंक अपनी उधार दर कैसे तय करता है?  
इस संबंध में केंद्रीय बैंक का प्रस्ताव क्या रहा है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## भारत के विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि, जानें वृद्धि के पीछे के कारण



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र || विदेशी मुद्रा बाजार

### शीर्षक

भारत के विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि, जानें वृद्धि के पीछे के कारण

### सुर्खियों में क्यों ?

► 26 अप्रैल, 2019 को समाप्त हुए सप्ताह में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार, 418.5 बिलियन डॉलर के साथ एक साल के उच्च स्तर पर पहुंच गया है।

### पहले की चुनौतियां

► जबकि 13 अप्रैल, 2018 को समाप्त हुए सप्ताह में विदेशी मुद्रा भण्डार \$ 426 बिलियन के उच्च स्तर पर पहुंच गया था, इसके बाद के महीनों में इसमें लगातार गिरावट देखी गई और 26 अक्टूबर, 2018 को समाप्त हुए सप्ताह में यह भण्डार 392 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया था।

► रुपये के प्रबंधन के लिए **RBI के हस्तक्षेप के कारण** ऐसा हुआ था, रुपया अक्टूबर 2018 में कच्चे तेल की कीमतों में तेज वृद्धि और विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा बहिर्प्रवाह के बाद अपने समय के सबसे निचले स्तर तक गिर गया था।

► **रुपये का मूल्यहास:** अक्टूबर 2018 में, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के कारण रुपया, डॉलर के मुकाबले अपने सभी समय के सबसे निचले स्तर 74.34 तक गिर गया था और RBI को रुपये के गिरते मूल्य को रोकने के लिये हस्तक्षेप करना पड़ा था, जिसके परिणामस्वरूप ऋण और इक्विटी बाजारों से पूंजीगत बहिर्वाह हुआ था।

► अक्टूबर में ब्रेंट क्रूड ऑयल की कीमतें \$ 86 प्रति बैरल के उच्च स्तर पर पहुंच गई थीं जिसके कारण रुपये के मूल्य और भारत के चालू खाते पर अत्यधिक दबाव पड़ा था।

► हालांकि, दिसंबर 2018 के अंत तक कच्चे तेल की कीमतें अगले महीने के मुकाबले लगभग 52 डॉलर प्रति बैरल के स्तर तक तेजी से गिर गईं, इससे रुपये और अर्थव्यवस्था को अति आवश्यक राहत मिली।

► रुपये के लिये राहत की स्थिति तब आयी जब कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आई जो अक्टूबर में लगभग \$ 86 प्रति बैरल से घटकर दिसंबर 2018 में \$ 52 प्रति बैरल तक गिर गयी।

► **पूँजी का बहिर्वाह:** हालाँकि विदेशी मुद्रा निवेशकों द्वारा सितंबर और अक्टूबर में इक्विटी और ऋण बाजारों से लगभग 60,000 करोड़ रुपये का फंड निकाला गया था, जिससे डॉलर के मुकाबले रुपये पर अतिरिक्त दबाव पड़ा, लेकिन FPI फंड के प्रवाह के कारण यह अगले महीनों यानि नवंबर और दिसंबर 2018 के बीच स्थिर हो गया।

### हाल ही में हुए परिवर्तन

► **एफपीआई प्रवाह और डॉलर-रुपये की अदला-बदली:** नवंबर और दिसंबर में, FPI ने इक्विटी और ऋण बाजारों में 17,000 करोड़ रुपये से अधिक का शुद्ध निवेश किया और रुपये को कुछ मजबूती प्रदान की।

► 1 फरवरी, 2019 से FPI ने भारतीय इक्विटी और ऋण बाजारों में 76,259 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया है।

► विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों द्वारा धन की मजबूत आवक को जारी रखने के कारण और भारतीय रिज़र्व बैंक के मार्च और अप्रैल 2019 के बीच **\$ 10 बिलियन डॉलर-रुपये की खरीद-बिक्री अदला-बदली नीलामी** के निर्णय ने विदेशी मुद्रा भंडार को 26 अप्रैल, 2019 को समाप्त हुए सप्ताह में साल का उच्च स्तर \$ 418.5 बिलियन तक बढ़ा दिया है।

► जबकि FPI धन के बढ़ते आवक से रुपये को कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के कारण दबाव का सामना करने में मदद मिली है। इसके अलावा ईरान से आयात के लिए छूट वापस लेने के अमेरिकी फैसले के बाद, इससे देश के **आयात कवर में और सुधार होने की उम्मीद है।**

### लाभ

► **इंपोर्ट कवर:** बढ़ते विदेशी मुद्रा भण्डार से देश के आयात कवर के और अधिक बढ़ने की उम्मीद है, क्योंकि वित्त मंत्रालय ने मार्च 2019 की अपनी मासिक आर्थिक रिपोर्ट में बताया है कि इसके परिणामस्वरूप आयात कवर, अक्टूबर 2018 में 9 महीने से बढ़कर फरवरी 2019 में 11 महीने हुआ है।

► **चालू खाता घाटा:** इसमें आगे कहा गया है कि आयात में गिरावट से चालू खाते के घाटे में 2018-19 की चौथी तिमाही में सुधार होगा क्योंकि विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि जारी है।

### अतिरिक्त जानकारी

### भारत का विदेशी मुद्रा भंडार

► भारत के पास बड़े विदेशी मुद्रा भंडार हैं - **भारत की राष्ट्रीय मुद्रा, भारतीय रुपये के अलावा अन्य मुद्राओं में नकदी, बैंक जमा, बॉन्ड, और अन्य वित्तीय संपत्तियां।**

► **भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा** भारत सरकार के लिए भंडार का प्रबंधन किया जाता है और मुख्य घटक विदेशी मुद्रा संपत्ति है।

► **कार्य:**

► विदेशी मुद्रा भण्डार आर्थिक मंदी के मामले में **भारत के लिए रक्षा की पहली पंक्ति के रूप में कार्य** करता है, लेकिन भण्डार के अधिग्रहण की अपनी लागत होती है।

► विदेशी मुद्रा भंडार बाहरी व्यापार और भुगतान की सुविधा प्रदान करता है और भारत में विदेशी मुद्रा बाजार के क्रमिक विकास और रखरखाव को बढ़ावा देता है।

## संरचना

- भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम और विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, 1999 ने विदेशी मुद्रा भंडार को नियंत्रित करने के लिए कानूनी प्रावधान निर्धारित किए हैं।
- भारतीय रिजर्व बैंक, खुले बाजार का संचालन अधिकृत डीलरों से खरीद कर विदेशी मुद्रा भंडार जमा करता है।
- यदि वैश्विक ब्याज दरें बढ़ने लगती हैं तो भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार रुपये की अस्थिरता के खिलाफ एक ढाल के रूप में कार्य करता है।
- भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में निम्नलिखित चार श्रेणियां हैं -
- विदेशी मुद्रा संपत्ति
- सोना
- विशेष आहरण अधिकार (SDR)
- शेयर के भाग भण्डार की स्थिति

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- भारत के विदेशी भंडारों को बढ़ाने वाले कारकों की जाँच करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## मध्य आय का जाल भारत के लिए खतरनाक क्यों है



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना || राष्ट्रीय आय और इसके उपाय

### शीर्षक

मध्य आय जाल

### समाचारों में क्यों?

► पीएम को सलाह देने वाले एक आर्थिक पैनल के सदस्य रथिन रॉय द्वारा चेतावनी दी गयी कि भारत "संरचनात्मक संकट" में फँस सकता है, इस बात पर बहस छिड़ गई है कि क्या अर्थव्यवस्था के एकल उच्च-अंक की विकास दर अब अतीत के दिनों की बात हो गयी है।

### मध्यम आय जाल क्या है?

► यह एक आर्थिक सिद्धांत है, जो भारत सहित पहले के निम्न-आय वाले देशों को 'मध्यम-आय' श्रेणी के क्रम में रखता है, इसके अनुसार ये देश संस्थागत, मानवीय और तकनीकी पूंजी निर्माण में विफलता के कारण खुद को उच्च स्थान पर पहुँचने में असमर्थ पाएंगे।  
► दूसरी ओर, उन्हें विनिर्माण और अन्य क्षेत्रों में कम लागत वाले प्रतियोगियों से अधिक गहन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा।

### मध्यम आय जाल के निम्न कारण:

जैसा कि, एक देश विकास के आरंभिक विस्फोट के बाद तेजी से विस्तार के नए स्रोतों से बाहर निकलता है, तो वह खुद को उच्च आय वाले देशों के बीच असमर्थ पाता है।

- धन असमानता और आय का पदानुक्रमित वितरण।
- स्तरों के बीच अधिक से अधिक अंतराल निचले स्तर पर रहने वाले परिवारों की ऊपर उठने की क्षमता को धीमा कर देता है।
- इस तरह की अर्थव्यवस्थाओं को आमतौर पर एकतरफा विस्तार का अनुभव होता है, जो कि शीर्ष पर एक आर्थिक उछाल के सकारात्मक पतन के साथ अक्सर नीचे वालों तक पहुँचने में विफल होते हैं।
- उदाहरण: कुछ अन्य की भांति ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका ने तेजी से अपने आर्थिक उत्पादन को कई वर्षों तक बढ़ाया। हालांकि, उनकी आबादी के बड़े वर्गों ने अपने जीवन को बेहतर रूप में नहीं देखा। और इस तरह से वे पीछे छूट गए।

### विश्व अर्थव्यवस्था के संबंध में आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18 द्वारा किए गए अवलोकन

- 1980 के दशक के मध्य से अधिक विकसित अर्थव्यवस्थाओं के साथ "कैच-अप" कर रहे गरीब देशों के बीच आर्थिक 'अभिसरण' व्यापक और यहाँ तक कि त्वरित भी हुआ।
- 1960-1980: केवल 43.7% देश अमेरिका ("सीमांत अर्थव्यवस्था") की तुलना में तेजी से बढ़े और उन्होंने 1.4% से अमेरिका को पीछे छोड़ दिया।
- 1980 -2017: अमेरिका की तुलना में 68.6% देशों की तेजी से वृद्धि हुई जिसने अमेरिका को 1.7 प्रतिशत से पीछे छोड़ दिया।
- इसलिए, 'मध्यम आय जाल' जैसी कोई चीज नहीं हो सकती है।

### भारतीय अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18 द्वारा किए गए अवलोकन

भारत के लिए मध्य आय का जाल एक मात्र धारणा है:

- 1960: भारत एक कम आय वाला देश था, जिसकी प्रति व्यक्ति आय (2011 पीपीपी के संदर्भ में) \$ 1,033 थी, उस समय अमेरिका के प्रति व्यक्ति आय के 6 प्रतिशत के बराबर थी।
  - 2008: भारत ने \$ 6,538 की प्रति व्यक्ति आय के साथ 'निम्न मध्यम-आय की स्थिति' प्राप्त की, जो अमेरिका के 12 प्रतिशत के बराबर है।
- यदि भारत की प्रति व्यक्ति आय प्रति वर्ष 6.5 प्रतिशत की दर से बढ़ती है, तो देश 2020 के मध्य तक ऊपरी-मध्य आय की स्थिति तक पहुँच सकता है।

### भारतीय अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में रथिन रॉय द्वारा किए गए अवलोकन

- 1990 के दशक की शुरुआत में वैश्विक पूंजी के शुरुआत के क्रम ने अर्थव्यवस्था के विस्तार को एक बड़ा बढ़ावा दिया, इसने ऊपरी-परत और मध्य-वर्ग की जीवन शैली को मान्यता से परे बदल दिया।
  - उनकी समृद्धि ने भारत के लिए वस्तुओं और सेवाओं की पर्याप्त मांग पैदा की है, जो थोड़ा बेहतर है और यह स्पष्ट है कि गरीबी के स्तर में गिरावट आई है।
  - यद्यपि विकास के झंडे गाड़े गए और अर्थव्यवस्था का झुकाव चपटा हुआ है।
- भारत में अभी, कारों और अपार्टमेंटों से लेकर सूद और दूधब्रश तक, सभी चीज़ों का अपेक्षाकृत कमजोर व्यापार, उपभोग में मंदी की ओर इशारा करता है।
- मध्यम-आय वाले जाल के व्यापक जोखिम को खारिज नहीं किया जाना चाहिए।

### आगे का रास्ता

- सतत विकास के लिए वित्तीय के साथ-साथ मानव संसाधनों के बड़े पैमाने पर विकास की आवश्यकता होती है।
- एक मध्यम-आय वाले जाल में फिसलने के जोखिम के खिलाफ सबसे अच्छा बीमा, हालांकि, सामाजिक-आर्थिक पिरामिड के निचले स्तरों पर गतिशीलता को संबोधित करना होगा।
- इसका मतलब होगा वंचित जनता के लिए स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और कौशल विकास की गुणवत्ता में तेजी से वृद्धि।

## निष्कर्ष

हेल्थकेयर, शिक्षा और कौशल विकास लंबी अवधि की परियोजनाएं हैं, और नतीजे आने में कई दशक लग सकते हैं। देश को वह सब करना चाहिए जिससे कि वह ऊपर उठा सके। इस स्तर पर असफलता भारत को मध्य-आय वर्ग में स्थिर बना सकती है, यहां तक कि चीन अमेरिका की बराबरी करने और उससे आगे निकलने का प्रयास करता है। यदि यह "एशियाई सदी" होना है, तो भारत को फिर से संगठित होना चाहिए।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## पोल्ट्री में एंटीबायोटिक्स पर ड्राफ्ट नियम



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || कृषि || पशुपालन

### शीर्षक

पोल्ट्री फार्मिंग के लिए ड्राफ्ट नियमों का विश्लेषण

### सुर्खियों में क्यों?

► दिल्ली उच्च न्यायालय के एक आदेश पर कार्रवाई करते हुए, केंद्र ने 'ड्राफ्ट' पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (अंडा देने वाली मुर्गी) नियम, 2019 को अधिसूचित किया है।

### बैटरी पिंजरे

► बैटरी पिंजरे एक आवास प्रणाली है जिसका उपयोग विभिन्न पशु उत्पादन विधियों के लिए किया जाता है, लेकिन मुख्य रूप से अंडे देने वाले मुर्गियों के लिए।

► यह नाम, तोपखाने में रखी बैटरी के एक साथ जुड़ी इकाइयों के समान ही, पिंजरों की पंक्तियों और स्तंभों की व्यवस्था से सामने आया है।

► हालांकि यह शब्द आमतौर पर पोल्ट्री फार्मिंग पर लागू होता है, लेकिन अन्य जानवरों के लिए भी इसी तरह के पिंजरों की व्यवस्था की जाती है। बैटरी पिंजरों ने पशु अधिकारों के लिए अधिवक्ताओं और औद्योगिक उत्पादकों के बीच विवाद उत्पन्न किया है।

### आलोचना

► बैटरी पिंजरे इतने छोटे होते हैं कि जानवर इनमें न तो सीधे खड़े हो सकते हैं, और वे अपने पंख फैलाने में भी असमर्थ होते हैं।

► इससे पक्षियों को पैर में पीड़ा होती है, छोटी और बड़ी खरोंच, टूटी हड्डियां और अन्य शारीरिक चोटें आती हैं। यह झुंड में बीमारियों के खतरे को भी बढ़ाता है।

### कृषि मंत्रालय द्वारा मसौदा नियमों की मुख्य विशेषताएं

► यह मुर्गीपालन उद्योग द्वारा तंग 'बैटरी पिंजरों' में मुर्गियाँ रखने पर प्रतिबंध लगाता है।

► यह मुर्गियों के भोजन में वृद्धि उत्तेजकों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाता है। इसके अलावा भरण के संबंध में प्रतिबंध में मुर्गियों को "मृत चूजों के अवशेष" खिलाने पर पूर्ण प्रतिबंध और पक्षियों में पर्णपतन करने के लिए भरण की प्रथा पर प्रतिबंध शामिल हैं।

► यह केवल उपचारात्मक (रोग उपचार) प्रयोजनों के लिए एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग को प्रतिबंधित करता है।

► प्रति पक्षी न्यूनतम 550 वर्ग सेमी. स्थान रखना अनिवार्य है। प्रत्येक पिंजरे में न्यूनतम 6-8 पक्षियों को भी समायोजित किया जाना चाहिए, जिससे मुर्गियों के लिए उचित स्थान, चारा और पानी तक पहुंच सुनिश्चित हो सके।

### निष्कर्ष

► एएमआर पर भारत की राष्ट्रीय कार्य योजना

एंटीमाइक्रोबियल्स के गैर-चिकित्सीय उपयोग को प्रतिबंधित करने और चरणबद्ध करने के लिए कहती है क्योंकि उनका उपयोग वृद्धि उत्तेजक और पशुओं में रोग की रोकथाम के रूप में होता है। जबकि यह सही दिशा की ओर एक कदम है, फिर भी अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। केंद्र और राज्य सरकारों को सामूहिक रूप से उन सभी खाद्य पशुओं में एंटीबायोटिक के दुरुपयोग को सीमित करने की कार्रवाई करनी चाहिए, जिसमें मुर्गी, अंडा और मांस दोनों शामिल हैं।

### समाधान

► हितधारक, यदि कोई हो, 30 दिनों के भीतर ड्राफ्ट पर आपत्ति उठा सकते हैं, ताकि क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत ऐसी क्रूर प्रथाओं को समाप्त करने के लिए कानूनी रूप से वैध दिशानिर्देशों को अंतिम रूप दिया जा सके।

► जैसे ही अंतिम नियम अधिसूचित हो जाते हैं तो, यह 1 जनवरी, 2020 से लागू होगा और सभी पोल्ट्री फार्मों को 1 जनवरी 2025 से पहले नए दिशानिर्देशों के तहत बदलाव करना होगा।

### अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.thehindubusinessline.com/economy/agri-business/centre-scripts-draft-rules-for-better-poultry-farming-practices/article27014908.ece>

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

मुर्गी पालन के लिए कृषि मंत्रालय द्वारा ड्राफ्ट नियमों की मुख्य विशेषताएं क्या हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## भारत में चीनी दूध उत्पादों पर प्रतिबंध हिंदी में

BY PRASHANT DHAWAN



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बाहरी क्षेत्र || विश्व व्यापार संगठन

### शीर्षक

भारत में चीनी दूध उत्पादों पर प्रतिबंध

### खबरों में क्यों?

► सरकार ने अप्रैल 2019 में चीन से चॉकलेट सहित दूध और उसके उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध बढ़ा दिया।

### कब तक प्रतिबंध जारी रहेगा?

► खाद्य नियामक FSSAI ने प्रतिबंध का विस्तार करने की सिफारिश की थी जब तक कि बंदरगाहों पर सभी प्रयोगशालाओं को रासायनिक मेलेनिन का परीक्षण करने के लिए आधुनिक नहीं किया जाता।  
► हालाँकि, सभी प्रयोगशालाओं की उस क्षमता के उन्नयन के लिए किसी समयरेखा का उल्लेख नहीं है।

### प्रतिबंध कब लगाया गया था?

► प्रतिबंध पहली बार सितंबर 2008 में लगाया गया था और बाद में समय-समय पर बढ़ाया भी गया था।

### प्रतिबंध क्यों लगाया गया?

► चीन से दूध की कुछ खेप में मेलामाइन की मौजूदगी की आशंका पर यह प्रतिबंध लगाया गया था।  
► मेलामाइन एक विषाक्त रसायन है जिसका उपयोग प्लास्टिक और उर्वरक बनाने के लिए किया जाता है।

### द्विपक्षीय व्यापार पर इस तरह के प्रतिबंध का प्रभाव

► इसका दोनों देशों के द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा भारत चीन से दूध, दूध उत्पादों का आयात नहीं करता है, इस पर निवारक निरोध के रूप में प्रतिबंध लगाया गया है।

### चीन और भारत के बीच व्यापार संबंध (2017-18)

- कुल व्यापार: \$ 85 बिलियन
- चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा: \$ 52 बिलियन
- भारत आईटी और दवा क्षेत्र खोलने के लिए चीन पर दबाव बना रहा है।
- भारत, चीन के उत्पाद के लिए 7 वें सबसे बड़े निर्यात स्थान के रूप में उभरा है।
- भारत चीन का 24 वां सबसे बड़ा निर्यातक है।

### भारत में दूध का उत्पादन

- भारत दूध का विश्व का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता है। यह सालाना लगभग 150 मिलियन टन दूध का उत्पादन करता है।
- राजस्थान और गुजरात के बाद उत्तर प्रदेश दूध उत्पादन में अग्रणी राज्य है।

### लेखक: रश्मि रे



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## पेप्सिको बनाम आलू किसानों का विवाद



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || कृषि || प्राथमिक इनपुट (बीज, सिंचाई, उर्वरक, कीटनाशक)

### शीर्षक

पेप्सिको बनाम आलू किसानों का विवाद, PPV&FR अधिनियम 2001 का गहराई से विश्लेषण

### सुर्खियों में क्यों ?

▶ पेप्सिको इंडिया होल्डिंग्स (पीआईएच) ने उत्तर गुजरात में किसानों के खिलाफ अपने मुकदमों को वापस लेने की घोषणा की, जिसमें 11 किसानों पर मुकदमा दायर किया गया था क्योंकि उन पर कंपनी के नाम पर पंजीकृत एक आलू की किस्म को "अवैध रूप से" बढ़ाने और बेचने का आरोप था।

### मामला

- ▶ **पेटेंट:** यह पेटेंट आलू पौधे की किस्म FL-2027 (वाणिज्यिक नाम FC-5) के लिए है।
- ▶ पेप्सी की उत्तरी अमेरिका की सहायक कंपनी फ्रिटो-ले का **अक्टूबर 2023 तक यह पेटेंट है।**
- ▶ **भारत के लिए,** PIH ने पौध किस्मों और किसानों के अधिकारों (PPV & FR) अधिनियम, 2001 के तहत जनवरी 2031 तक FC-5 का पेटेंट कराया है।
- ▶ **आरोप:** PIH, का गुजरात के किसानों के साथ एक **वापसी खरीद समझौता है।** PIH ने 11 किसानों पर आरोप लगाया था कि उन्होंने "PIH की अनुमति के बिना" अवैध रूप से विशिष्ट आलू की किस्म का उत्पादन किया और बेचा। इन किसानों में से तीन का पहले कंपनी के साथ अनुबंध था।

### किसान

- ▶ **आकार:** किसानों का तर्क है कि समझौता यह था कि **PIH 45 मिमी. से अधिक व्यास के आलू** इकट्ठा करेगा, जबकि किसान अगले साल बुवाई के लिए छोटे आलू का भंडारण कर रहे थे।
- ▶ **अन्य पंजीकृत बीज:** अन्य किसानों ने कहा कि उन्हें ज्ञात समूहों और किसान समुदायों से पंजीकृत बीज मिले थे और पिछले चार वर्षों से वे ये बुवाई कर रहे थे, और किसी के साथ कोई अनुबंध नहीं किया था।
- ▶ उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात का पता ही तब चला कि वे एक पंजीकृत किस्म का उत्पादन कर रहे थे, जब उन्हें 11 अप्रैल को अदालत का नोटिस मिला।

### PIH का दावा

- ▶ पेटेंट बीज पर दिया जाने वाला अधिकार **एक देश से दूसरे देश में भिन्न होता है।**
- ▶ **अमेरिका में,** अगर किसी ने एक बीज का पेटेंट कराया है, तो कोई भी अन्य किसान उसका उत्पादन नहीं कर सकता है।
- ▶ अगर पेप्सीको भारत में समान अधिकारों का आनंद लेने की सोच रहा है, तो यह यहां संभव नहीं है।
- ▶ **PPVFRA के अनुभाग 39 और 42** स्पष्ट रूप से इस संबंध में किसानों के अधिकारों का उल्लेख करते हैं।
- ▶ **PPVFR अधिनियम की धारा 39 (1) (iv):** अनुभाग में कहा गया है:
- ▶ "इस अधिनियम में शामिल होने के बावजूद - एक किसान को अपने खेत की उपज को बचाने, उपयोग करने, बोने, फिर से शुरू करने, आदान-प्रदान करने, साझा करने या बेचने का हकदार माना जाएगा, जिसमें इस अधिनियम के तहत संरक्षित एक किस्म का बीज भी शामिल है, ठीक वैसे ही जैसे इस अधिनियम के लागू होने से पहले वह खेत की उपज के लिये स्वतंत्र था, बशर्ते कि किसान इस अधिनियम के तहत संरक्षित किस्म का ब्रांडेड बीज बेचने का हकदार नहीं होगा। "

### PPV&FR अधिनियम

- ▶ यह अधिनियम **UPOV (पौधों की नई किस्मों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ) 1991** से एक जागरूक प्रस्थान करता है।
- ▶ **यूपीओवी 1991:** जहां एक तरफ UPOV 1991, **प्रजनकों को एक किसान की गतिविधि के सभी पहलुओं की निगरानी करने का अधिकार देता है,** किसानों के लिये उनकी अनुमति के बिना बीजों का फिर से उपयोग करने की गुंजाइश भी नहीं रखता है, **वहीं PPVRA में ऐसी कोई शर्त नहीं है।**
- ▶ यह उन कई हितधारकों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए है जिन्हें **भारत ने UPOV 1991 से मुक्त रहने के लिए चुना था।**
- ▶ ऐसा करने वालों में भारत अकेला नहीं है, अन्य विकासशील देशों के अलावा, जापान और कनाडा ने भी अपने आरक्षण के लिए आवाज़ उठाई है।
- ▶ यह तर्क कि **भोजन को कठोर पेटेंट-जैसे ढांचे से बाहर रखा जाना चाहिए,** बिना आधार का तर्क नहीं है।
- ▶ यह स्पष्ट नहीं है कि UPOV के तहत उन्नत प्रजनक के अधिकारों ने अपेक्षित नियमों के साथ अनुसंधान और लोक कल्याण को बढ़ाया है या नहीं।
- ▶ **एकाधिकार की चिंता** के साथ-साथ स्वास्थ्य और पर्यावरण से संबंधित विषयों ने समय के साथ गंभीर रूप ले लिया है।

### समाधान

- ▶ **पौधों की विविधता:** बढ़ते कीटों के हमलों, बढ़ते तापमान और जलवायु परिवर्तन के समय में पौधों की विविधता महत्वपूर्ण है। UPOV इन वास्तविकताओं के साथ तालमेल नहीं बिठाता है।

► **ब्रीडर अनुसंधान:** हालांकि, ब्रीडर अनुसंधान को बाजरा और दालों की सूखा प्रतिरोधी किस्मों में बढ़ावा दिया जाना चाहिए। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि इन क्षेत्रों में निजी भागीदारी को देखते हुए भारत का कानूनी ढांचा इस स्थान की अनुमति नहीं देता है।

### अतिरिक्त जानकारी

► **पौधों की विविधता और किसानों के संरक्षण का अधिकार अधिनियम, 2001 (PPVFR अधिनियम)** को पौधों की किस्मों की सुरक्षा, किसानों और पौधों के प्रजनकों के अधिकारों के लिए एक प्रभावी प्रणाली की स्थापना और नई किस्मों पौधों के विकास और खेती को प्रोत्साहित करने के लिए लागू किया गया था।

► PPVFR अधिनियम, 2001 को प्लांट ब्रीडर, शोधकर्ताओं और किसानों को **बौद्धिक संपदा अधिकार देने के लिए** अधिनियमित किया गया था, जिन्होंने किसी भी नई या मौजूदा पौधों की किस्मों को विकसित किया है।

► PPVFR एक्ट, 2001 के तहत दिया गया बौद्धिक संपदा अधिकार **एक दोहरा अधिकार है** - पहला किस्म के लिए है और दूसरा प्रजनक द्वारा सौंपे गए संप्रदाय के लिए है।

► इस अधिनियम के तहत दिए गए अधिकार **न्यायसंगत और व्यावहारिक** हैं और केवल पौधे की विविधता के पंजीकरण का ही अधिकार है।

► **अधिनियम के तहत अधिकार**

► **प्रजनक के अधिकार:** प्रजनक के पास संरक्षित किस्म के उत्पादन, बिक्री, बाजार, वितरण, आयात या निर्यात के विशेष अधिकार होंगे। प्रजनक एजेंट / लाइसेंसधारी को नियुक्त कर सकता है और अधिकारों के उल्लंघन के मामले में नागरिक उपचार के तरीके अपना सकता है।

► **शोधकर्ताओं के अधिकार:** शोधकर्ता प्रयोग या अनुसंधान के लिए अधिनियम के तहत पंजीकृत किसी भी किस्म का उपयोग कर सकते हैं। इसमें पहली किस्म के प्रारंभिक स्रोत के रूप में अन्य किस्म विकसित करने के उद्देश्य से उस किस्म का उपयोग शामिल है लेकिन बार-बार उपयोग के लिए पंजीकृत प्रजनक की पूर्व अनुमति की आवश्यकता होती है।

► **किसानों के अधिकार:**

► एक किसान जिसने एक नई किस्म विकसित की है, वह उस किस्म के प्रजनक के रूप में पंजीकरण और संरक्षण के लिए हकदार है;

► किसानों की विविधता को एक विलुप्त किस्म के रूप में भी पंजीकृत किया जा सकता है;

► एक किसान PPVFR अधिनियम, 2001 के तहत संरक्षित किस्म के बीज सहित अपने खेत की उपज को बचा सकता है, उपयोग कर सकता है, पुनः बो सकता है, उसका उपयोग कर सकता है, उसी तरह जिस तरह वह इस अधिनियम के लागू होने से पहले करता था। PPVFR अधिनियम, 2001 के तहत किसान को संरक्षित किस्म के ब्रांडेड बीज बेचने का अधिकार नहीं होगा;

► किसान, भूमि के पौधों के आनुवांशिक संसाधनों और आर्थिक पौधों के जंगली प्रजातियों के संरक्षण के लिए मान्यता और पुरस्कार के पात्र हैं;

► किसानों को अधिनियम, 2001 की धारा 39 (2) के तहत विभिन्न प्रकार के गैर-प्रदर्शन के लिए मुआवजा देने का भी प्रावधान है, और

► अधिनियम के तहत प्राधिकरण या रजिस्ट्रार या ट्रिब्यूनल या उच्च न्यायालय के समक्ष किसी भी कार्यवाही में किसी भी शुल्क का भुगतान करने के लिए किसान उत्तरदायी नहीं होगा।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► "हमें IPR के फायदे और मनचाही खेती के लिये छोटे किसानों की स्वतंत्रता के आधार पर खेती के अनुबंधों को निश्चित करना चाहिए।"



(कृपया देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## भारत में शहरी विकास योजनाएँ, उनकी सफलता और असफलता की गहराई से विश्लेषण



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || अवसंरचना || सामान्य

### शीर्षक

► भारत में शहरी विकास योजनाएँ, उनकी सफलता और असफलता की गहराई से विश्लेषण?

### सुर्खियों में क्यों?

- गहरी असमानताओं ने परियोजना के कार्यान्वयन तथा उसके परिणाम में बाधा उत्पन्न की है।
- इस मुद्दे को हल करने की कुंजी **स्थानीय प्रशासन** की दक्षता के अधीन है। आवश्यक **प्रभावी निगरानी** के तहत **विकेंद्रीकरण** को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

### पृष्ठभूमि

► **बढ़ती शहरी जनसंख्या**: देश की शहरी जनसंख्या के बढ़ने और शहरों को **आर्थिक विकास के इंजन** के रूप में देखे जाने के साथ, शहरी नीति राजनीतिक इच्छाशक्ति के चिह्नक के रूप में लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। हालाँकि, हमारे **शहरी कार्यक्रमों के गुण तथा दोषों** को समझना महत्वपूर्ण है।

### अटल नवीकरण और शहरी परिवर्तन मिशन (अमृत)

- अमृत मिशन को **जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीकरण मिशन (जे.एन.एन.यू.आर.एम.)** की निरंतरता के रूप में शुरू किया गया था।
- परंतु अमृत मिशन जे.एन.एन.यू.आर.एम. के विपरीत **बड़े शहरों पर ही केंद्रित है**, जो छोटे शहरों को भी शामिल करता था।
- अमृत मिशन सड़क, परिवहन, जल और सीवरेज को शामिल करता है, परंतु अपशिष्ट प्रबंधन को वृहद् स्वच्छता कार्यक्रम - **स्वच्छ भारत मिशन (एस.बी.एम.)** के अंतर्गत स्थानांतरित कर दिया गया।
- हालाँकि, **जे.एन.एन.यू.आर.एम.** द्वारा छोटे शहरों के बजाए बड़े शहरों को समर्थन देने हेतु आलोचना की गई, परंतु इसने सड़कों व परिवहन से लेकर जल और स्वच्छता तक कई क्षेत्रों को शामिल किया।
- जे.एन.एन.यू.आर.एम. ने परियोजनाओं को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे छोटे एवं मध्यम शहरों के साथ-साथ स्थानीय सरकारों की क्षमता की कमियों को भी उजागर किया।

► यह अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भारतीय सहायक कंपनियों को **CbC रिपोर्ट की स्थानीय फाइलिंग** करने की आवश्यकता को भी पूरा करेगा, जिससे **अनुपालन बोझ कम होगा**।

### प्रधानमंत्री आवास योजना (पी.एम. ए.वाई.)

- शहरी गरीबों के लिए एक करोड़ घर बनाने के लिए पी.एम. ए.वाई. को लॉन्च किया गया था।
- इस योजना में ऐसे घटक शामिल हैं जो **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (किफायती आवास साझेदारी, ए.एच.पी.)** के माध्यम से घरों के निर्माण को सक्षम करते हैं और लाभार्थियों को उनके घरों (लाभार्थी के नेतृत्व में निर्माण) को बनाने तथा उन्नत करने का अधिकार प्रदान करती है।
- पी.एम. ए.वाई. का ए.एच.पी. घटक पूर्व के शहरी गरीबों के लिए बुनियादी सेवाओं (बी.एस.यू.पी.) के समान है, जो मुख्य रूप से शहरी परिधि में मकान बनाने पर केंद्रित है।
- इस प्रकार, ए.एच.पी. गैर-अधिकारियों व अयोग्य लाभार्थियों के समान मुद्दों पर प्रकाश डालेगा।
- विद्यमान व्यवस्था में सुधार एक अधिक स्थायी विकल्प है जो लोगों के रोजगार अवसरों की सुरक्षा के साथ-साथ उनके जीवन स्थितियों में वास्तविक सुधार पर विचार करता है।

### स्मार्ट सिटी मिशन (एस.सी.एम.)

- स्मार्ट सिटी मिशन (एस.सी.एम.) को शहरी मध्यम वर्ग की महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए एक "साहसिक, नई" पहल के रूप में शुरू किया गया था, जो देश के डिजिटल परिवर्तन बदलाव को आगे बढ़ाता है तथा आधुनिकता की शाश्वत आकांक्षा के लिए वर्तमान सरकार की प्रतिबद्धता को सही ठहराता है।
- परंतु, यह मिशन काफी हद तक **पारंपरिक बुनियादी ढांचा** परियोजनाओं को शामिल करता है जो पहले से ही अमृत मिशन के अंतर्गत शामिल हैं, **केवल कुछ ही परियोजनाएं नई सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों पर निर्भर हैं**।
- इस मिशन के कार्यान्वयन हेतु एक **विशेष प्रयोजन वाहन** का गठन स्थानीय सरकारों को सशक्त बनाने की लागत पर किया गया, जिसे बुनियादी सेवाओं के वितरण में भी अक्षम के रूप में देखा जाता है।

### स्वच्छ भारत मिशन (एस.बी.एम.)

- स्वच्छ भारत मिशन को व्यापक स्तर पर प्रचारित किया गया था क्योंकि स्वच्छता की स्थिति में सुधार करना सरकार के प्रमुख विचारों में शामिल थे।
- यह समाज के हर वर्ग को शामिल करने के लिए था क्योंकि स्वच्छता एक मूल मानव अधिकार है। इसका ध्यान मुख्य रूप से शौचालय निर्माण पर केंद्रित था।
- अमृत मिशन के अंतर्गत स्वच्छता सेवाओं का बड़ा दायरा शामिल किया गया था। यह समझते हुए कि स्वच्छता चक्र में कुछ तत्वों का समुचित रूप से संलग्न होना आवश्यक है, वे इन कार्यक्रमों में अनुपस्थित थे।

## मुद्दे

- **असमानताएं:** गहरी असमानताओं ने परियोजना के कार्यान्वयन तथा उसके परिणाम में बाधा उत्पन्न की है।
- **विकेंद्रीकरण:** इस मुद्दे को हल करने की कुंजी स्थानीय प्रशासन की दक्षता के अधीन है। आवश्यक प्रभावी निगरानी के तहत विकेंद्रीकरण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- **निगरानी:** अपनी योजनाओं के समुचित कार्य को सुनिश्चित करने के लिए केंद्र को समय पर डाटा रिपोर्टिंग प्रोटोकॉल शुरू करना होगा।
- **सभी के लिए उपयुक्त एक दृष्टिकोण:** इसके अतिरिक्त, एक दृष्टिकोण विभिन्न आकारों के शहरी क्षेत्रों के लिए कार्यशील नहीं हो सकती है।
- **एक वर्गीकृत शहरी नीति** जो छोटी शहरी बस्तियों की आवश्यकताओं को पूरा करने का परिचय देती है, वह समाज के प्रत्येक वर्ग के प्रबंधन के लिए सबसे अधिक प्रभावी होगी।

## मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- शहरी विकास कार्यक्रमों की सफलताओं और विफलताओं का विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बाहरी क्षेत्र || विश्व व्यापार संगठन

## शीर्षक

वैश्विक व्यापार प्रणाली को झुकाता हुआ अमेरिकी व्यापार आदेश, यह किस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगा?

## सुर्खियों में क्यों?

► अमेरिका द्वारा वैश्विक व्यापार प्रणाली को अपने पक्ष में करने से रोकने हेतु भारत को अन्य देशों के साथ हाथ मिलाना होगा।

## बाधाएं

► **निर्यातक:** राष्ट्रपति ट्रम्प ने अन्य देशों से निर्यात के लिए बाधाओं को खड़ा करने की अमेरिका की पूर्व-निर्धारित रणनीति का सहारा लिया है।

► **समझौता वार्ता:** इन बाधाओं का प्रयोग विभिन्न देशों को वार्ता मंच पर आने और अमेरिकी व्यापार एवं उद्योग की सबसे अनुचित मांगों को स्वीकार करने के लिए भी किया जाता है।

► अमेरिका द्वारा अवैध इस्पात एवं एल्यूमीनियम शुल्क, साथ ही भारत को जी.एस.पी. लाभ की वापसी की धमकी को इस कार्रवाई के अभिन्न अंग के रूप में देखा जाना चाहिए।

► अमेरिका ने वर्ष 1986-1993 के दौरान इस रणनीति को अपनाया था तथा ब्राजील, भारत और थाईलैंड को बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार-संबंधित पहलुओं पर समझौते के लिए सहमत किया।

► परवर्ती चिंताओं को दूर करने के लिए चीन तथा अमेरिका के मध्य चल रही द्विपक्षीय वार्ता इस रणनीति की सफलता का एक अन्य प्रमाण है।

## शर्तें

► **निर्यात कोटा:** अमेरिका को स्टील निर्यात करने की शर्त के रूप में कुछ देशों को निर्यात कोटा स्वीकार करने हेतु मजबूर करके ट्रम्प ने अमेरिका के लिए अप्रासंगिक होने के कारण ऐसे कोटा पर डब्ल्यू.टी.ओ. द्वारा निषेध का प्रतिपादन किया है।

► **प्रबंधित व्यापार:** इस रणनीति के माध्यम से ट्रम्प ने विभिन्न देशों को प्रबंधित व्यापार के युग में वापस धकेल दिया है।

► इस रुपरेखा में, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की पद्धति एकपक्षीय रूप से अमेरिका के वाणिज्यिक हितों द्वारा निर्धारित की जाएगा और बहुपक्षीय नियमों द्वारा नहीं।

► विश्व के अन्य देशों को दिया जाने वाला संदेश तीव्र व स्पष्ट है कि - एक देश के द्वारा अमेरिका को निर्यात करने हेतु विशेष रूप से उसके द्वारा तय किए गए नियमों एवं शर्तों पर ही अनुमति मिलेगी।

► इस प्रकार की अनुकूल स्थिति, जो 1960 के दशक के दौरान तथा 21वीं सदी के शुरुआती वर्षों तक वस्तु क्षेत्र में व्याप्त था, ने अमेरिका के आर्थिक हितों की सेवा हेतु अधिक बल के साथ वापसी की है।

## विश्व व्यापार संगठन की विवाद निपटान प्रणाली

► डब्ल्यू.टी.ओ. के विवाद निपटान प्रणाली के अंतर्गत राष्ट्रपति ट्रम्प की अवैध कार्रवाइयों को सार्थक रूप से चुनौती देने वाले देशों को रोकने के लिए अमेरिका ने पूर्व-निवारक कार्रवाई का सहारा लिया है।

► व्यापार विवादों के समाधान के लिए विश्व व्यापार संगठन की सर्वोच्च न्यायिक निकाय, अपीलीय निकाय में नए सदस्यों को नामित करने से इंकार करके अमेरिका दिसंबर 2019 तक विश्व व्यापार संगठन के विवाद निपटान प्रणाली को निष्क्रिय कर देगा।

► इसने हाल ही में विवाद निपटान निकाय (डी.एस.बी.) की बैठकों को इस बहाने आगे बढ़ने से बहुपक्षीय विवाद हल करने के लिए गहरा झटका दिया और घोषणा किया कि अमेरिका वेनेजुएला के निकोलस मादुरो द्वारा नियुक्त किये गए विश्व व्यापार संगठन में राजनयिकों को स्वीकार नहीं करता है।

► डी.एस.बी. को निरस्त करके, अमेरिका ने यह सुनिश्चित किया है कि अन्य देशों के अधीन इसके द्वारा किये जा रहे संदिग्ध अथवा अवैध कार्यों के निवारण के लिए कोई राजस्व उपलब्ध न हो।

► यह अमेरिका को अपनी गैर-कानूनी कार्रवाइयों के माध्यम से देशों पर धौंस जमाने के लिए एक स्वतंत्र स्थिति प्रदान करता है और अन्य देशों पर अपनी बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए दबाव डालता है।

## विशेष और विभेदक उपचार (S&DT)

► अमेरिका व्यापार वार्ता के दौरान विशेष और विभेदक उपचार (S&DT) की अवधारणा को क्षीण कर रहा है।

► गैट और डब्ल्यू.टी.ओ. दोनों के मूल स्तंभ S&DT की अवधारणा को दरकिनार करके अमेरिका चाहता है कि विकसित देशों और कुछ बड़े विकासशील देशों पर समान नियम लागू हों।

► यह अमेरिका के व्यापार-काबिज करने वाले डिजाइनों से कमजोर वर्गों - विशेषकर मछुआरों एवम किसानों - की रक्षा करने के लिए भारत तथा सामान्य अन्य देशों की क्षमता को गंभीर रूप से नष्ट कर देगा।

► भारत इस मुद्दे पर अमेरिका के विरोध में दृढ़ता से खड़ा हुआ है और S&DT के क्षीण का विरोध करने हेतु लगभग एक दर्जन विकासशील देशों को जुटाने में भी सफल रहा है।

► हालाँकि, भविष्य में अमेरिका भारत जैसे अन्य देशों में S&DT के प्रावधानों के लिए किसी भी दावे को 'स्वेच्छा से' त्यागने के लिए पुनः बड़ी शर्त आरोपित करने में संकोच नहीं करेगा है।

## डिजिटल व्यापार, ई-कॉमर्स

► इस विशाल रणनीति में अंतिम तत्व डब्ल्यू.टी.ओ. में अपने हित के प्रमुख मुद्दे - डिजिटल व्यापार और इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स पर **वार्ता को बुलंद** करना है।

► विकासशील देशों को डिजिटल कंपनियों को अपने देश में **सृजित डाटा** को विकसित देशों को निःशुल्क देने के लिए मजबूर किया जाएगा।

► यह विकासशील देशों को लाभान्वित किए बिना ही डिजिटल कंपनियों के व्यवसाय को बढ़ावा देगा।

► इसके अतिरिक्त, मजबूत संकेतक पहले से ही विद्यमान हैं कि जून में आयोजित होने वाले जी-20 नेताओं के आगामी शिखर सम्मेलन में, जापान के राष्ट्रपति शिंजो अबे डिजिटल व्यापार पर आयोजित वार्ता पर लाभ में शामिल होने के लिए भारत, दक्षिण अफ्रीका और इंडोनेशिया को आगे बढ़ाने में अमेरिका की सहायता करेंगे।

► इन वार्ताओं का परिणाम पूरी तरह से असंयमित अथवा विषम होगा।

## निष्कर्ष

► निष्कर्ष में, अलग-अलग देखने पर, पिछले एक वर्ष में अमेरिका द्वारा की गई अवैध कार्रवाइयाँ एक अंतर्निहित सुसंगत रणनीति का कोई संकेत नहीं देती हैं।

► हालाँकि, इन सभी बिंदुओं को मिलाने पर यह और स्पष्ट हो जाता है कि **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणाली** को अपने पक्ष में करने के लिए तथा **व्यापार नियमों को संशोधित करने के लिए अमेरिका सभी चालों का चाहे वे बेईमानी की या ईमानदारी की हों का सहारा** ले रहा है।

► अब तक, भारत ने अमेरिकी दबाव का दृढ़ता से विरोध किया है। अपने पक्ष को और सुदृढ़ करने के लिए, भारत को **अन्य विकासशील देशों के साथ अमेरिकी रणनीति के खतरों को समझाने और उन्हें अपने पक्ष में करने की आवश्यकता** है।

► यह अमेरिका को उसके व्यावसायिक हित के साथ आगे बढ़ने से रोकने के लिए एकमात्र प्रभावी तरीका है, जबकि यह भारत सहित अन्य देशों की विकास चिंताओं की पूरी तरह से अनदेखी करता है।

## अतिरिक्त जानकारी

### सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली (जी.एस.पी.)

► यह अर्थ में एक **अधिमान्य व्यवस्था प्रणाली** है कि जो विकासशील देशों को विकसित देशों (वरीयता प्राप्त देशों या लाभार्थी देशों के रूप में भी जाना जाता है) द्वारा **रियायती निम्न/शून्य शुल्क आयात की अनुमति देता है।**

► **अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कार्यालय** की वेबसाइट के अनुसार, जी.एस.पी. इन देशों को संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ अपने व्यापार को बढ़ाने तथा विविधता लाने में सहायता प्रदान करके लाभार्थी देशों में सतत विकास को बढ़ावा देता है।

► UNCTAD के तत्वावधान में **वर्ष 1971** में स्थापित जी.एस.पी. ने विकासशील देशों के लिए सक्षम व्यापारिक वातावरण बनाने में वर्षों से योगदान दिया है।

► वर्ष 2005 में UNCTAD के **विश्व व्यापार संगठन हांगकांग मंत्रिस्तरीय** निर्णय का अनुसरण कर सदस्यों देशों ने सहमति व्यक्त की कि विकसित देश तथा विकासशील देश ऐसा करने के लिए शुल्क मुक्त देशों और अल्प विकसित देशों के निर्यात के लिए शुल्क मुक्त और कोटा मुक्त बाजार पहुंच प्रदान करेंगे।

► वर्ष 2013 में **संयुक्त राष्ट्र अल्प विकसित देश (LDC) IV** में अपनाई गयी व्यापार प्राथमिकताओं का प्रावधान एवं प्रयोग इस्तांबुल कार्यक्रम का एक प्रमुख लक्ष्य है, जैसा कि SDGs लक्ष्य 17 में इसकी पुनःपुष्टि की गई।

► जी.एस.पी. के अंतर्गत शामिल लाभार्थी

► जी.एस.पी. के **लाभार्थी लगभग 120 विकासशील देश** हैं।

► वर्ष 2017 तक, जी.एस.पी. के अंतर्गत निर्यात की गई मात्रा के दृष्टि से भारत और ब्राजील प्रमुख लाभार्थी थे।

► **चीन तथा कुछ अन्य विकासशील देशों के आयात जी.एस.पी. लाभों के लिए अयोग्य** हैं। इस योजना के अंतर्गत शामिल लाभार्थियों एवं उत्पादों को प्रति वर्ष संशोधित किया जाता है।

► **जी.एस.पी. के अंतर्गत शामिल उत्पाद समूह**

► जी.एस.पी. के अंतर्गत आने वाले उत्पाद मुख्य रूप से कृषि उत्पाद हैं जिनमें पशुपालन, मांस और मत्स्य पालन तथा हस्तशिल्प उत्पाद शामिल हैं।

► ये उत्पाद सामान्यतः विकासशील देशों के विशेष उत्पाद हैं।

## विशेष और विभेदक उपचार (S&DT)

► **डब्ल्यू.टी.ओ. में S&DT सामान्यतः विद्यमान डब्ल्यू.टी.ओ. समझौतों में कानूनी प्रावधानों की एक श्रेणी को संदर्भित** करता है जो विकासशील देशों को नीतिगत साधनों तथा नीति-प्रयोग के संबंध में अधिक लचीलापन प्रदान करता है और विकसित देशों को विकासशील देशों के साथ अधिक अनुकूल व्यवहार करने का अधिकार देता है।

► इन प्रावधानों का उद्देश्य विकासशील देशों में गरीब किसानों को अनुदान के माध्यम से सहायता प्रदान करना है।

► S&DT के साथ, डब्ल्यू.टी.ओ. के सदस्य इसके समझौतों के दायित्वों को लागू करने में विकासशील देशों की विभिन्न आर्थिक स्थितियों और उनकी आवश्यकताओं को पहचानते हैं।

► **S&DT प्रावधान:** S&DT प्रावधान सामान्यतः **चार श्रेणियों** में विभाजित हैं -

► समझौतों एवं प्रतिबद्धताओं को लागू करने के लिए **दीर्घकालिक अवधि**,

► इन देशों के लिए व्यापार के अवसरों को बढ़ाने के साधन,

► सभी डब्ल्यू.टी.ओ. सदस्यों को विकासशील देशों के **व्यापार हितों की सुरक्षा** के लिए आवश्यक प्रावधान,

► विकासशील देशों को विश्व व्यापार संगठन के कार्य के लिए बुनियादी ढांचे के निर्माण, विवादों को संभालने तथा तकनीकी मानकों को लागू करने में सहायता करने के लिए समर्थन।

► **अल्प विकसित देशों (एल.डी.सी.):** सभी विकासशील देशों के लिए S&DT के अतिरिक्त, कुछ WTO समझौतों में एल.डी.सी. के लिए विशेष प्रावधान भी हैं।

► एलडीसी के लिए इन विशेष शर्तों में प्रतिबद्धताओं के लिए **अधिक समय सीमा या छूट** (पूर्ण या आंशिक) शामिल है।

### मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- समीक्षा करें कि किस प्रकार अमेरिका वैश्विक व्यापार प्रणाली को अपने पक्ष में झुका रहा है। भारत पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## सामाजिक प्रभाव बांड क्या है?



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

**GS 3 || अर्थव्यवस्था || भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना  
|| मानव विकास और असमानता**

## शीर्षक

सामाजिक प्रभाव बांड क्या है? एस.डी.जी. लक्ष्य -2030 को प्राप्त करने हेतु वित्तीय अंतर कम करना

## सुखियों में क्यों?

► भारत वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाए गए **सतत विकास लक्ष्यों (एस.डी.जी.)** को प्राप्त करने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास कर रहा है। एस.डी.जी. को प्राप्त करने के किसी भी प्रयास हेतु मजबूत एवं स्थायी धन की आवश्यकता होती है।

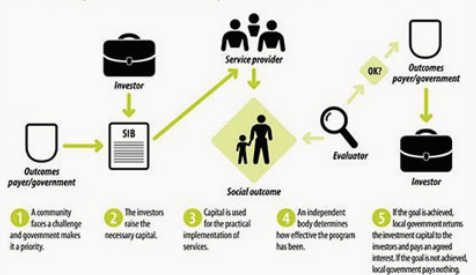
## निजी क्षेत्रक का योगदान

► **TARA (ग्रामीण उन्नति के लिए प्रौद्योगिकी एवं कार्यवाही)** के एक अध्ययन के अनुसार, आज्ञापित 15 वर्ष की अवधि के लिए एस.डी.जी. को प्राप्त करने हेतु **अनुमानित वित्तपोषण अंतर** एक आश्चर्यजनक राशि 533 टिलियन रुपए है।

► एक तरफ सरकार, **निजी क्षेत्र** जैसे प्रमुख कंपनियां संभवतः एस.डी.जी. को प्राप्त करने तथा वित्तपोषण अंतर को समाप्त करने में सहायता कर रही हैं।

### Impact investing: SIB model

One of the impact investing instruments is the *Social Impact Bond (SIB)*. In SIB, the investor bears all the financial risks and the public sector pays only for the proven outcomes. The investment capital raised is used to promote the achievement of specific outcomes.



► **भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (फिक्की)** द्वारा अपनी सदस्य कंपनियों के मध्य आयोजित किए गए एक हालिया सर्वेक्षण में **85 फीसदी उनके प्रतिवादियों** ने कहा कि वे एस.डी.जी. की ओर कार्य कर रहे थे जो प्रत्यक्षतः उनके व्यवसायों से संबंधित हैं।

► **सीएसआर:** कई कंपनियाँ स्वच्छ जल, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य सेवा के लिए भी अग्रणी प्रयास कर रही हैं, इसके लिए निगमित सामाजिक अधिनियम 2013 के अंतर्गत व्यय की गई **निगमित सामाजिक दायित्व (सीएसआर)** की आवश्यकताओं हेतु उन्हें धन्यवाद देना चाहिए।

► वित्तीय वर्ष **2015-16** में, सीएसआर के अंतर्गत कुल 9,822 करोड़ रुपये व्यय किए गए।

► हालाँकि, ये प्रयास **छोटे स्तर** पर काबिज हैं और **सामान्यतः खंडों** में विभाजित रहते हैं क्योंकि सरकारी एजेंसियाँ इन नवीन व नई परियोजनाओं को पोषित करने में अनिश्चित रहती हैं।

## सीमाएं

► इन परियोजनाओं को लागू करने में बाधाएं जनित करने के तीन प्रमुख कारण हैं।

► **सरकार द्वारा अप्राथमिकता:** पहला, विफलता का संभावित जोखिम है और इसमें भारी राजनीतिक एवं वित्तीय जोखिम शामिल हैं।

► सरकारें ऐसी परियोजनाओं को प्राथमिकता नहीं देती हैं तथा करदाताओं के राशियों को व्यय करने में संकोच करती हैं क्योंकि विफलता के वित्तीय अथवा राजनीतिक प्रभाव विनाशकारी हो सकते हैं।

► **नियंत्रण और संतुलन की कमी:** दूसरी बात यह है कि जिन कई सफल परियोजनाओं को आगे बढ़ाया गया है, उनमें अक्सर नियंत्रण और संतुलन की एक उचित प्रणाली का अभाव होता है।

► यद्यपि निकट निरीक्षण के माध्यम से लघु-स्तरीय परियोजनाओं की प्रभावशीलता व दक्षता सुनिश्चित करना सरल है, परंतु ऐसी निगरानी राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय परियोजनाओं के लिए संभव नहीं है।

► **क्षरण:** यह सामान्यतः क्षरण अथवा निर्गत की गुणवत्ता को समग्र गिरावट की ओर ले जाता है।

► इसे हल करने के लिए, कई कोष-दाता (सरकारी व विदेशी एजेंसियों) ने बोर्ड भर में समरूप एवं कठोर प्रथाओं को लागू किया है, जिससे तीसरी समस्या अत्यधिक कठोर प्रतीत हुई है।

► स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर एक परियोजना में परिवर्तन एवं समायोजन करने हेतु स्थानीय परियोजना कार्यान्वयनकर्ताओं की कमी के परिणामस्वरूप सामान्यतः समग्र दक्षता अथवा प्रभावशीलता में कमी आती है।

## प्रभाव बांड (आई.बी.)

► आई.बी. इन सभी मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक उन्नत समाधान प्रदान करता है और भारतीय संदर्भ में प्रभावी होने की क्षमता रखता है।

► **गैर-विपणन योग्य बॉन्ड:** सामान्य शब्दों में कहें, तो आई.बी. गैर-विपणन योग्य बॉन्ड होते हैं, जहां पुनर्भुगतान वित्तीय सहायता प्रदान किये गए परियोजना के परिणामों पर अनिश्चित होता है।

► यह समझने के लिए कि यह कैसे कार्य करता है, आइए हम शिक्षा क्षेत्र में प्रभाव बांड के एक उदाहरण पर विचार करें।

► एक एनजीओ को ध्यान में रखा जा सकता है जिसने ग्रामीण बच्चों के पठन तथा गणित विद्या में सुधार करने हेतु एक मध्यवर्ती कार्य को पूरा किया है।

► सरकारों के लिए प्रभाव बांड एक आसान उपकरण के रूप में उपलब्ध है, जो बिना बड़े जोखिमों के इन जोखिमों को सनिश्चित करने हेतु पंजी जटाता है।

► सरकार एनजीओ को अपनी परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए निजी पूंजीगत निवेशकों को प्रभाव बांड जारी कर सकती है।



- **पूर्व निर्धारित लक्ष्य:** सामान्य बांड के विपरीत, सरकार द्वारा प्रभाव बांड का पुनर्भुगतान केवल तभी शुरू होता है जब कुछ पूर्व निर्धारित लक्ष्य हासिल किए जाते हैं।
- यह लक्ष्य आम तौर पर मात्रात्मक मैट्रिक्स (जैसे मानकीकृत परीक्षणों में औसतन पाठन का स्कोर) द्वारा औसत दर्जे का होगा जिसका मूल्यांकन एक स्वतंत्र मूल्यांकन एजेंसी द्वारा किया जाता है।
- यदि लक्ष्य हासिल हो जाता है, तो सरकार निजी निवेशकों को प्रतिलाभ के साथ मूलधन का भुगतान करती है।

### बेहतर विकल्प?

- **सामाजिक वस्तु:** सरकार निजी निवेशकों पर विफलता का जोखिम स्थानांतरित करती है और केवल सफल परियोजनाओं के लिए भुगतान करती है, इससे गैर-सरकारी संगठनों को पूंजी उपलब्ध होती है जो उन्हें अपने उन्नत समाधानों को लागू करने के लिए आवश्यक है और साथ ही निजी निवेशकों को सामाजिक परियोजनाओं से लाभ कमाने का अवसर मिलता है। यह निश्चित ही सभी के लिए लाभ की स्थिति है।
- **जोखिम का हस्तांतरण:** हालाँकि किसी भी प्रतिफल-आधारित वित्तपोषण प्रणाली से विफलता का जोखिम दूर हो जाता है, परंतु ऐसी कई प्रणालियाँ लक्ष्यों को प्राप्त करने के बाद ही भुगतान करती हैं।
- इसका अर्थ यह है कि सेवा प्रदाताओं के अधीन बहुत कम या नहीं कार्यशील पूंजी नहीं होती है और उन्हें अपनी कार्यशील पूंजी की आवश्यकताओं के लिए वित्तीय सहायता को प्रेरित करने हेतु बहुत समय तथा प्रयास समर्पित करना होगा।
- अग्रिम पूंजी प्रदान करके, आई.बी. सेवा प्रदाताओं के लिए एक प्रमुख समस्या को दूर करते हैं।
- **प्रोत्साहन:** प्रभाव बांड प्रोत्साहन की समस्या का भी समाधान करते हैं।
- यह देखते हुए कि परियोजना के विफल होने से निवेशक अपने सभी निवेश खो देते हैं, वे लगातार अद्यतन प्राप्त करना चाहते हैं जिससे वे प्रगति को सावधानीपूर्वक जांचने में सक्षम हो सकें।
- यह दोनों पारदर्शिता में सुधार करनेग करेगें तथा सफलता सुनिश्चित करने के लिए जांच की एक परत जोड़ेंगे।
- **नवप्रवर्तन को बढ़ावा:** प्रभाव बांड्स परिणाम केंद्रित होते हैं और इस प्रकार सेवा प्रदाता को पर्याप्त स्वतंत्रता देकर नवप्रवर्तन को बढ़ावा देते हैं।
- कोई अन्य विद्यमान वित्त पोषण अनुबंध इस प्रकार का लाभ प्रदान नहीं करता है, जो ज्यादातर बड़े मुद्दों को संबोधित करता है जो बड़े पैमाने पर उन्नत सामाजिक परियोजनाओं के लिए वित्त पोषण को बाधित करते हैं।

### आगे की राह

- **परिपक्व साझेदारी:** आई.बी. को सफलतापूर्वक लागू करने हेतु हमें सरकार तथा निजी निवेशकों दोनों से परिपक्व साझेदारी की आवश्यकता है।
- निस्सन्देह, किसी को तर्कहीन रूप से अतिउत्साहित नहीं होना चाहिए तथा उनके द्वारा प्रभाव बांड को सामाजिक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के वित्तपोषण के संबंधित सभी मुद्दों के लिए सर्वोत्कृष्ट उपाय होने का दावा करना चाहिए।

- **पारदर्शिता एवं सहयोग:** एक सफल बांड को पारदर्शी बनाने की आवश्यकता होती है और इसमें शामिल जोखिमों व उनकी गंभीरता को समझने के लिए हितधारकों के लिए सभी प्रासंगिक विवरणों को सूचीबद्ध करने की आवश्यकता होती है।
- अतः शामिल जोखिमों की उचित समझ की कमी से विपत्तिपूर्ण विफलता हो सकती है, जिससे उनकी प्रभावकारिता के बारे में समग्र छवि में दाग लग सकता है।
- **सक्षम एवं तैयार:** भारतीय निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्रक कंपनियां पारदर्शिता एवं सहयोग की उच्च आवश्यकताओं के लिए तैयार हैं, इससे किसी को भी आश्चर्य हो सकता है।
- **पी.पी.पी.:** भारतीय सरकारी एजेंसियां तथा निजी क्षेत्रक कंपनियां विवादास्पद रूप से सक्षम हैं और प्रभाव बांड के लिए तैयार हैं, जिन्होंने सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पी.पी.पी.) के साथ अपना लंबा अनुभव साझा किया है।
- **पी.पी.पी. प्रभाव बांड के समान हैं,** जिसमें वे निजी खिलाड़ियों को परियोजना के कार्यान्वयन तथा प्रतिलाभ से संबंधित जोखिम उठाने में सक्षम बनाते हैं।
- किसी भी स्थिति में, यह आवश्यक है कि **निजी क्षेत्रक खिलाड़ी** (निवेशक या सेवा प्रदाता) संबंधित जोखिमों को समझते हों तथा **सरकार** पूरी प्रक्रिया के दौरान पारदर्शी रहे।
- भारत में पी.पी.पी. की सफलता को देखते हुए, प्रभाव बांड के माध्यम से सरकार तथा निवेशकों के बीच परिपक्व साझेदारी की उम्मीद करना अवास्तविक नहीं होगी।
- प्रभाव बांड स्थानीय, राज्य तथा केंद्र सरकार की एजेंसियों को एस.डी.जी. लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए उन्नत समाधानों के कार्यान्वयन हेतु भारतीय निजी क्षेत्रक कंपनियों को स्रोत वित्त पोषण उपलब्ध कराने के लिए एक अतुलनीय अवसर प्रदान करते हैं।

### मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- सामाजिक प्रभाव बांड (एस.आई.बी.) क्या हैं? वर्ष 2030 तक एस.डी.जी. लक्ष्यों को हासिल करने में वित्तीय अंतर को कैसे समाप्त करेगा।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || उद्योग || उद्योग नीतियां

## शीर्षक

भारत को एक समर्पित औद्योगिक नीति की आवश्यकता क्यों है? आर्थिक विकास को बढ़ाने में विनिर्माण की भूमिका

## सुर्खियों में क्यों?

► भारत में विनिर्माण, दूसरी और तीसरी योजना अवधि के अलावा अर्थव्यवस्था में अग्रणी क्षेत्र कभी नहीं रहा है।

## विनिर्माण का महत्व

- **सतत विकास:** कोई भी प्रमुख देश आर्थिक विकास के बिना गरीबी को कम करने या विकास को बढ़ावा देने में कामयाब नहीं हुआ है।
- **उत्पादकता स्तर:** इसका कारण यह है कि उद्योग (और विनिर्माण) में उत्पादकता स्तर, कृषि या अन्य सेवाओं की तुलना में बहुत अधिक है।
- **आर्थिक विकास का इंजन:** विनिर्माण आर्थिक विकास का एक इंजन है क्योंकि यह पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं की पेशकश करता है, तकनीकी प्रगति का प्रतीक है और ऐसे संबंध बनाता है जो अर्थव्यवस्था में सकारात्मक प्रभाव पैदा करते हैं।

## वैश्विक परिदृश्य

- **वित्तीय संकट के बाद:** अमेरिका और यूरोप में, 2008 के संकट के बाद, नव-उदारवादी नीतियों के पूर्ववर्ती समर्थकों ने अपने औद्योगिक क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के लिए रणनीतिक सरकारी प्रयासों को शुरू किया, मुक्त बाजारों और व्यापार के लिए अपने स्वयं के नुस्खे की उपेक्षा की।
- **विशिष्ट-क्षेत्र पहल:** यूरोपीय संघ ने मोटर वाहनों, परिवहन उपकरण उद्योगों, ऊर्जा आपूर्ति उद्योगों, रसायनों और कृषि-खाद्य उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में की जाने वाली पहलों की पहचान की है।
- **UNCTAD:** व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCTAD) के अनुसार, पिछले एक दशक के अंदर 100 से अधिक देशों ने औद्योगिक नीतियों को व्यक्त किया है।

## भारत

- **समर्पित विनिर्माण नीति की अनुपस्थिति:** भारत में अभी भी कोई विनिर्माण नीति नहीं है।
- **मेक इन इंडिया:** "मेक इन इंडिया" का जो मूल है ध्यान की एकाग्रता, इस समय प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ाने और व्यापार को आसान बनाने के लिए महत्वपूर्ण है, हालांकि यह किसी औद्योगिक नीति का गठन नहीं करते हैं।
- **GDP योगदान:** 2017 में GDP में विनिर्माण का योगदान केवल 16% था, यह वह ठहराव है जो 1991 में आर्थिक सुधारों के बाद से बना हुआ है।
- **प्रमुख एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के साथ विषमता** भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए,
- **मलेशिया** ने सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण के अपने हिस्से को 24% तक बढ़ा दिया,
- जबकि **थाईलैंड** का हिस्सा 13% से बढ़कर 33% (1960-2014) हो गया।

## उद्योग नीतियां

- **सरकारी हस्तक्षेप:** यहां तक कि नव-शास्त्रीय (neo-classical) अर्थशास्त्री भी बाजार की विफलताओं के मामले में सरकारी हस्तक्षेप को स्वीकार करते हैं। मुख्यधारा के अर्थशास्त्री बाजार की विफलता के विशिष्ट उदाहरणों की ओर संकेत करते हैं जिनके लिए सरकार द्वारा संचालित औद्योगिक नीति की आवश्यकता होती है:
- आमतौर पर सूचना विषमताओं के परिणामस्वरूप, **पूंजी बाजारों में घाटे;**
- पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं के शोषण को रोकने के लिए **पर्याप्त निवेश** की कमी;
- सीखने और प्रशिक्षण में फर्म-स्तर के निवेश के संबंध में अपूर्ण जानकारी; तथा
- तकनीकी रूप से अन्योन्याश्रित निवेशों के बीच **जानकारी और समन्वय** की कमी।
- ये वे कारण हैं जो कहते हैं कि भारत में एक व्यापक-अर्थव्यवस्था योजना तंत्र की आवश्यकता है।
- हालांकि, भारत को "1991 के पूर्व के दिनों में वापस ले जाने के लिये" "आदेश और नियंत्रण" दृष्टिकोण के बारे में स्पष्ट रूप से सोचना चाहिए।

## औद्योगिक नीति

- **निवेश: पैमाने की महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं और पूंजी बाजार की खामियों** (उदाहरण के लिए, एक विशाखापत्तनम-चेन्नई औद्योगिक गलियारे में परिकल्पना के रूप में) के कारण पूरक निवेशों को समन्वित करने की आवश्यकता है।
- **मानव पूंजी:** औद्योगिक नीतियों को औद्योगिक प्रशिक्षण (जिनमें हमने खराब प्रदर्शन किया है) के लिए **सब्सिडी** जैसी बाहरी नीतियों को संबोधित करने की आवश्यकता है।
- जबकि, अधिकांश पूर्वी एशियाई देशों में वास्तव में, मानव पूंजी में राज्य के निवेश से औद्योगिक नीति को सुदृढ़ किया गया था, विशेष रूप से, सामान्य शैक्षणिक और व्यावसायिक शिक्षा / प्रशिक्षण को औद्योगिक नीति के साथ जोड़कर।
- हालांकि, मानव पूंजी की कमी, भारत में ऐतिहासिक रूप से विदेशी निवेश को आकर्षित करने में एक बड़ी बाधा रही है। (जिन्हें दक्षिण पूर्व एशियाई अर्थव्यवस्थाएं आकर्षित करने में सफल रही हैं)

► **आयोजक:** राज्य, विदेशी कंपनियों या सरकारों के साथ अपनी बातचीत के बीच उत्पादक संघ में घरेलू फर्मों के आयोजक की भूमिका निभा सकते हैं - वह भूमिका जो 1990 के दशक की बड़ी व्यावसायिक क्रांति के बाद 21 वीं सदी में विशेष रूप से प्रासंगिक थी, (ट्रांसनेशनल कॉरपोरेशनों के बीच विलय और अधिग्रहण के साथ)।

► वास्तव में, **चीन की औद्योगिक नीतियों** का एक उद्देश्य 1990 के दशक के बाद से ऐसी कंपनियों के विकास का ही समर्थन करना है (उदाहरण के लिए लेनोवो कम्प्यूटर, हायर (Haier) घरेलू उपकरण और मोबाइल फोन बनाने वाली बड़ी-फर्म)।

► **प्रतिस्पर्धात्मक निवेश से बचें:** औद्योगिक नीति की भूमिका न केवल समन्वय विफलताओं को रोकने के लिए है (यानी पूरक निवेश सुनिश्चित करना) बल्कि पूंजी-दुर्लभ वातावरण में प्रतिस्पर्धात्मक निवेश से बचने के लिये भी है।

► अतिरिक्त क्षमता की वजह से मूल्य में प्रतिस्पर्धा होती है, जिससे कंपनियों के मुनाफे पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है - जो कि अंततः फर्मों को दिवालिया कर देता है या निवेश को धीमा करता है, और दोनों भारत में अक्सर हो रहे हैं (गवाह विमानन क्षेत्र)।

► इससे भी बदतर, भारत में दूरसंचार क्षेत्र में मूल्य प्रतिस्पर्धा ने मुनाफे को धीमा कर दिया है (यहां तक कि नुकसान भी पहुंचाया है), जो ग्रामीण भारत में मोबाइल / इंटरनेट कवरेज के निवेश को बाधित करता है जहां मोबाइल फोन और ब्रॉडबैंड इंटरनेट में तेजी से विस्तार की जरूरत है।

► पूर्वी एशियाई राज्य ने औद्योगिक नीति की इस भूमिका को सफलतापूर्वक प्रबंधित किया है।

► **उत्पादन क्षमता:** एक औद्योगिक नीति यह सुनिश्चित करेगी कि स्थापित औद्योगिक क्षमता, यथासंभव न्यूनतम कुशल पैमाने के करीब रहे।

► क्षमता के बहुत छोटे पैमाने को चुनने का मतलब उत्पादन क्षमता में 30-50% की कमी हो सकती है।

► भारतीय उद्यमों के बीच आया रिक्त स्थान औद्योगिक रणनीति की विफलता से कम नहीं है।

► भारत के 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के बाद से लघु और कुटीर उद्योगों (SSI) (बड़ी कंपनियों के साथ) में उत्पादन के लिए विशेष रूप से उत्पादों का आरक्षण किया जाना ही बीच में आए रिक्त स्थान के लिये ज़िम्मेदार था।

► 1980 के दशक के अंत तक, केवल 836 उत्पाद समूह SSI (जो अनौपचारिक उद्यमों को प्रोत्साहित करते हैं) द्वारा उत्पादित "आरक्षित" श्रेणी में थे।

► आश्चर्यजनक रूप से, 2005 में, आर्थिक सुधार शुरू होने के 15 साल बाद भी इस श्रेणी में 500 उत्पाद थे।

► इसके बाद छोटी कंपनियों के उत्पादों के आरक्षण में 16 उत्पादों की कटौती की गई। तब तक, छोटे पैमाने के उद्योग, भारतीय विनिर्माण में उलझ गए थे।

► लागत में छोटे पैमाने पर बने रहने के लिए प्रोत्साहन आवश्यक है।

► **संरचनात्मक परिवर्तन:** जब संरचनात्मक परिवर्तन की आवश्यकता होती है, तो औद्योगिक नीति उस प्रक्रिया को सुविधाजनक बना सकती है। तेजी से बदलते बाजार में, कमज़ोर होती फर्में, संरचनात्मक परिवर्तनों को रोक देंगी जो उनकी अपनी संपत्ति को बेकार करती ही है लेकिन सामाजिक रूप से लाभकारी होती हैं।

► पूर्वी एशियाई सरकारों ने इस तरह की कंपनियों को संरचनात्मक परिवर्तन को कम करने से रोक दिया, उन्होंने प्रतिस्पर्धी फर्मों और पुनर्प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बीच क्रमबद्ध क्षमता-परिमार्जन जैसे कदम के माध्यम से ऐसे प्रतिरोध को सीमित किया है।

► **नौकरियां:** अंततः विनिर्माण रोजगार पैदा करेगा; कुल रोजगार में इसकी हिस्सेदारी 2012 से 2016 तक 12.8% से गिरकर 11.5% हो गई।

► दुर्भाग्यवश, 1980 के दशक के शुरुआत में पूर्वी एशिया का पारंपरिक रूप से बढ़ता प्रभुत्व भारत, लैटिन अमेरिका और उप-सहारा अफ्रीका जैसे देशों के जो परिणाम सामने लेकर आया, उनसे विकासशील देशों में औद्योगिक नीति की संभावित भूमिका लगातार कम होती गई है

## पूर्वी एशिया के औद्योगिक अनुभव

► **निर्यात उन्मुख विनिर्माण:** पूर्वी एशियाई चमत्कार बहुत कुछ निर्यात आधारित विनिर्माण पर आधारित था, जहां **कृषि द्वारा जारी अधिशेष श्रम से रोज़गार दिया गया, जिससे मज़दूरी बढ़ी और तेजी से गरीबी कम हुई।** ऐसा परिणाम एक सचेत, लक्षित नियोजित रणनीति (पंचवर्षीय योजनाओं के साथ) से प्राप्त हुआ है।

► **वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएं (GVCs):** वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (जीवीसी) में पूर्वी एशियाई देशों की बढ़ती भागीदारी, जो सरल से परे थी, ने अधिक प्रौद्योगिकी और गहन कौशल से निर्मित उपभोक्ता वस्तुओं का निर्यात किया, जिसके लिए औद्योगिक नीति का स्वाभाविक परिणाम था, को अपनाया गया था। जिसने भारत को व्यावहारिक रूप से GVC से बाहर रखा।

## IT की सफलता: सरकार की भूमिका

► भारत के IT उद्योग की सफलता की कहानी में राज्य की भूमिका को भी याद रखना चाहिए।

► **निवेश:** सरकार ने IT सॉफ्टवेयर पार्कों के लिए उच्च गति की इंटरनेट कनेक्टिविटी तैयार करने के लिये निवेश किया है, जिससे भारतीय IT उद्योग का अमेरिकी बाजार में एकीकरण हो सके।

► **शुल्क मुक्त आयात:** सरकार ने IT उद्योग को हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर दोनों के लिए शुल्क मुक्त आयात की अनुमति दी है।

► **दुकान और स्थापना अधिनियम:** IT उद्योग, दुकान और स्थापना अधिनियम के तहत कार्य करने में सक्षम था; इसलिए यह श्रम से संबंधित 45 कानूनों और इन पर लगाए गए नियामक के अधीन नहीं हैं।

► **मानव पूंजी:** इसी प्रकार, IT क्षेत्र को तकनीकी शिक्षा में सार्वजनिक निवेश द्वारा कम लागत और उच्च मूल्य वाली मानव पूंजी का लाभ है।

► इनके बिना, IT की सफलता की कहानी प्रकट नहीं की जा सकती है। इसलिए जब नई सरकार काम करती है तो इससे औद्योगिक नीति की संभावनाओं की क्षमता का पता चलता है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- क्या भारत को एक समर्पित औद्योगिक नीति की आवश्यकता है? आर्थिक विकास को बढ़ाने में विनिर्माण की क्या भूमिका है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र || एनबीएफसी

## शीर्षक

NBFC के लिए RBI ड्राफ्ट लिक्विडिटी रिस्क मैनेजमेंट फ्रेमवर्क, यह साख की वृद्धि (credit growth) को कैसे प्रभावित करेगा?

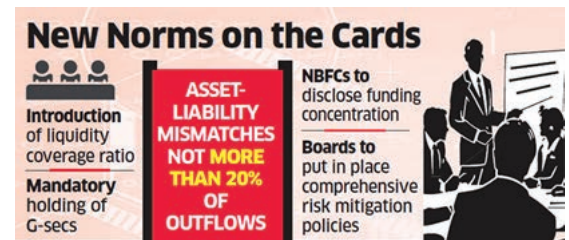
## सुर्खियों में क्यों ?

► गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों द्वारा सामना कर रही तरलता के मुद्दों की पृष्ठभूमि में, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने तरलता जोखिम प्रबंधन फ्रेमवर्क पर एक मसौदा परिपत्र जारी किया।

## नये नियम

- **तरलता कवरेज अनुपात (LCR):** RBI के प्रस्तावों में कुल नकद बहिर्वाह जो LCR के 30 दिनों के बराबर है को, बनाए रखना शामिल है -
- एनबीएफसी द्वारा ली जाने वाली सभी जमा राशि; तथा
- एनबीएफसी द्वारा ली जाने वाली गैर-जमा राशि जो 5,000 करोड़ और उससे अधिक है।
- LCR के क्षेत्र में एक सुचारु परिवर्तन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, प्रस्ताव यह है कि इसे एक ठीक रास्ते से धीरे-धीरे अप्रैल 2020 से शुरू होने वाले चार वर्षों की अवधि से लेकर अप्रैल 2024 तक ठीक तरीके से लागू किया जाए।
- हालांकि, सभी एनबीएफसी के लिए तरलता नियम प्रस्तावित किए गए थे, 5,000 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति के लिए एनबीएफसी और जमा करने वाले एनबीएफसी के लिए, एलसीआर अनिवार्य था।
- **उच्च गुणवत्ता वाली तरल संपत्ति:** उच्च गुणवत्ता वाली तरल संपत्ति में बनाए रखा जाने वाला LCR यह सुनिश्चित करता है कि वित्तीय संस्थानों में एक महत्वपूर्ण तरलता तनाव के मामले में 30 दिनों के लिए पर्याप्त तरलता वापस आ जाए।
- **HQLAs** आम तौर पर नकदी या सरकारी प्रतिभूतियां होती हैं जिन्हें नकदी जुटाने के लिए बाजार में जल्दी बेचा जा सकता है।
- यदि इसे लागू किया जाता है, तो यह प्रक्रिया 2020 से LCR के साथ 60% से शुरू होगी, और 2024 में 100% पर समाप्त होगी।
- **संपार्श्व :** एनबीएफसी को अपने संपार्श्विक पदों को सक्रिय रूप से प्रबंधित करना चाहिए, जो कि अनिर्धारित और अभारित की गई संपत्तियों के बीच और अंतर करता और ऐसी परिसंपत्तियों की निगरानी करता है, ताकि उन्हें समयबद्ध तरीके से जुटाया जा सके।

- सभी एनबीएफसी के पास गंभीर व्यवधानों का जवाब देने के लिए आकस्मिक धन योजना होनी चाहिए और निवेशकों के लिए तरलता की स्थिति जनता के सामने प्रकट होनी चाहिए।
- **तरलता की स्थिति:** केंद्रीय बैंक ने भी एक से 30-दिन की परिपक्वता अवधि को तीन अवधियों में बांटा है - एक से सात दिन, आठ को 14 दिन और 15-30 दिनों की अवधियों में।
- इस अधिकतम ALM को एक वर्ष तक चलने वाली अवधियों में 10-20% पर बाधित किया गया है - यह एक राहत ही है कि ALM के दिशानिर्देशों के वर्तमान 5% से 15% तक और अधिक कठोर होने की उम्मीद थी।
- **संरचनात्मक और गतिशील तरलता** की माप के साथ, NBFC को भी तरलता के लिए "स्टॉक" दृष्टिकोण के आधार पर तरलता जोखिम की निगरानी के लिए अनिवार्य किया गया है।
- निगरानी, जोखिमों से संबंधित विभिन्न आंतरिक अनुपातों के लिए बोर्ड द्वारा तय की गई आंतरिक सीमाओं के अनुसार होगी।
- **औचित्य**
- **तरलता बफ़र:** भारतीय रिजर्व बैंक की गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFC) के लिए लिक्विडिटी बफ़र्स को पेश करने का प्रस्ताव, उनकी ऋण देने की क्षमता को प्रतिबंधित कर सकता है, लेकिन इस क्षेत्र को जिम्मेदार बनाने के लिए यह अल्पकालिक कष्ट आवश्यक है।



- क्षमता को प्रतिबंधित कर सकता है, लेकिन इस क्षेत्र को जिम्मेदार बनाने के लिए यह अल्पकालिक कष्ट आवश्यक है।
- **महत्वपूर्ण भूमिका:** सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSB) में संकट से उत्पन्न निर्वात को आंशिक रूप से भरने और नई तकनीकों को तेजी से अपनाने के माध्यम से अपनी भौगोलिक पहुंच बढ़ाने के लिए एनबीएफसी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **परिणामस्वरूप, कुल ऋणों में NBFC की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 12 से वित्त वर्ष 19 में महज 13% से बढ़कर 23% हो गई - एक ऐसी अवधि जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के ऋणों में तेज गिरावट देखी गई।**
- हालांकि, अल्पकालिक उधार और लंबी अवधि के लिए उधार देने से, अल्पकालिक उधार देने की प्रथाओं और व्यापक परिसंपत्ति-देयता बेमेल (एएलएम) में एक बड़ी तरलता की कमी हुई है।
- **आवश्यक दिशा-निर्देश:** कड़े दिशा-निर्देश, जो एनबीएफसी में चलनिधि प्रबंधन में सुधार लाने और परिसंपत्ति-देयता बेमेल से उत्पन्न होने वाले संकटों के खिलाफ उन्हें छूट देने की अपेक्षा रखते हैं, आवश्यक हैं क्योंकि IL & FS संकट अत्यधिक परेशानी का कारण बना, विशेषकर बैंकों और म्यूचुअल फंडों के बीच।
- ऋण म्यूचुअल फंडों के लिए, पुनर्भुगतान में चूक के कारण शुद्ध संपत्ति मूल्यों का क्षरण हुआ है।
- **अन्य 1.3 ट्रिलियन के साथ** अगले कुछ महीनों में एनबीएफसी कागजात परिपक्व होने के लिए तैयार हो जाएंगे, उम्मीद की जाती है कि म्यूचुअल फंड अपने ऋण जोखिम को विशेष रूप से इस क्षेत्र पर कम कर देंगे।

► इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, खराब निवेश को खत्म करने के लिए कदम उठाये गए जो बैंक के अत्यधिक जोखिम को उजागर करते हैं, जिससे संस्था की स्थिरता को खतरा उत्पन्न होता है और परिसंपत्ति-देयता की स्थिति उधारदाताओं को अधिक स्पष्ट विचार और आत्मविश्वास देगा और लंबे समय में क्षेत्र को गुणवान बना देगा।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► गैर-बैंकिंग वित्त कंपनियों द्वारा सामना की जा रही तरलता के मुद्दों की पृष्ठभूमि में, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने तरलता जोखिम प्रबंधन फ्रेमवर्क 'पर एक मसौदा परिपत्र जारी किया। जांच करें कि यह साख विकास को कैसे प्रभावित करेगा।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## नियामक सैंडबॉक्स क्या है?

हिंदी में



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र || भारतीय रिजर्व बैंक

### शीर्षक

नियामक सैंडबॉक्स क्या है? RBI SEBI IRDAI फिनटेक इनोवेशन के लिए रेगुलेटरी सैंडबॉक्स की अनुमति देता है

### समाचारों में क्यों?

► भारतीय रिजर्व बैंक वित्तीय क्षेत्र के लिए दिशानिर्देशों का मसौदा लेकर आया है "नियामक सैंडबॉक्स के फ्रेमवर्क को सक्षम करने के लिए"।

### नियामक सैंडबॉक्स

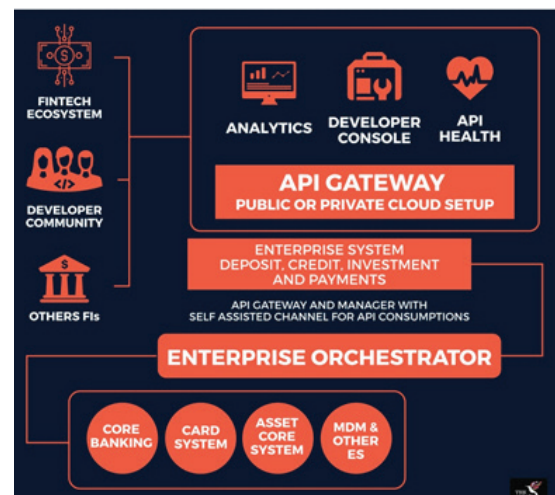
- विनियामक सैंडबॉक्स **फिनटेक प्लेयर्स को अनुमति देता है** -
- एक नियंत्रित नियामक वातावरण में नए उत्पादों का परीक्षण करता है (जहां कुछ नियमों की व्यवहारिकता में ढील दी जा सकती है);
- एक संकीर्ण ग्राहक समूह का सीमित परीक्षण करके लागत को कम करना;
- नियामकों के साथ संलग्न।
- इसके अलावा, **यह नियामक को भी अनुमति देता है** -
- रियल टाइम उत्पाद परीक्षण और ग्राहक अनुभव से सबूत के आधार पर नियामक निर्णय लेते हैं;
- तकनीकी नवाचार के साथ तालमेल रखता है।
- भारत में फिनटेक क्षेत्र ने **प्रौद्योगिकी और उत्पादों में तेजी से नवाचार** देखा है।
- **कई नियम** हैं जो संभावित रूप से एकल फिनटेक उत्पाद पर लागू हो सकते हैं - और यह हमेशा स्पष्ट नहीं होता है कि एक नए उत्पाद को कैसे विनियमित किया जाएगा।
- तर्क के अनुसार, यह इस बात पर **नवाचार को रोकता है** कि यह उद्योग अत्यधिक व्यस्त हो जाता है और किसी उत्पाद को उसके सबसे प्रभावी प्रारूप (गैर-आज्ञाकारी होने के जोखिम से बचने के लिए) में बाहर नहीं कर सकता है।
- उसी समय, **एक नियामक को नई तकनीकों के जोखिमों को समझने में सक्षम होना चाहिए**, इससे पहले कि वह एक ऐसा ढांचा तैयार कर सके जो उपभोक्ताओं की रक्षा करे और "ओवर-रेग्युलेटिंग" के बिना प्रणालीगत जोखिम को नियंत्रित करे।
- इस संदर्भ में, एक फिनटेक नियामक सैंडबॉक्स भारत में विशेष रूप से उपयोगी हो जाता है, यह देखते हुए कि फिनटेक उत्पाद संभावित रूप से कई नियामकों से विनियमन का सामना कर सकते हैं।

► एक बार डिजिटल ग्राहक वितरण चैनल स्थापित हो जाने के बाद, इसका उपयोग प्रभावी रूप से न केवल भुगतान या उधार उत्पादों को वितरित करने के लिए किया जा सकता है, बल्कि निवेश, धन प्रबंधन, बीमा और अन्य वित्तीय उत्पादों की एक पूरी श्रृंखला के लिए किया जा सकता है, जिनमें से प्रत्येक को विभिन्न नियामक - RBI, SEBI और IRDA द्वारा विनियमित किया जा सकता है।

### SEBI, IRDAI

- भारतीय रिजर्व बैंक ने काउंटर में फिनटेक खिलाड़ियों के लिए एक नियामक सैंडबॉक्स (आरएस) स्थापित करने के लिए एक मसौदा रूपरेखा जारी किया, बाजार और बीमा नियामकों ने भी इसी तरह की पहल शुरू की है।
- **सेबी:** सेबी एक 'इनोवेशन सैंडबॉक्स' का प्रस्ताव रख रहा है, जो एक परीक्षण का माहौल बनाएगा, जहां फिनटेक फर्म और संस्थाएं, जिनमें सेबी शामिल नहीं हैं, व्यक्तियों सहित, अपने प्रस्तावित समाधानों का लाइव बाजार से अलग, पूर्ति के अधीन ऑफलाइन परीक्षण कर सकते हैं। स्टॉक एक्सचेंज, डिपॉजिटरी और योग्य रजिस्ट्रार और शेयर ट्रांसफर एजेंट (क्यूआरटीए) द्वारा उपलब्ध कराए गए बाजार से संबंधित आंकड़ों के आधार पर पात्रता मानदंड।
- **IRDAI:** IRDAI ने इस साल (2019) फरवरी में नए डिजिटल और तकनीक आधारित नवाचारों का परीक्षण करने के लिए उन्हें बाजार में लॉन्च करने से पहले एक नियामक सैंडबॉक्स स्थापित करने की सिफारिश की।
- IRDAI सैंडबॉक्स के लिए, एक आवेदक की कुल आय 10 लाख रुपये और कम से कम एक वर्ष का वित्तीय रिकॉर्ड होना चाहिए।

### AN IDEAL FINTECH SANDBOX



### प्रत्येक हितधारक के लिए नियामक सैंडबॉक्स का क्या मतलब है?

- नियामक सैंडबॉक्स (कम से कम शुरुआत में) के तीन प्रमुख हितधारक स्टार्ट-अप फिनटेक खिलाड़ी, ग्राहक और आरबीआई हैं।
- **फिनटेक खिलाड़ी:** सैंडबॉक्स किसी भी कम ग्राहक देयता की पेशकश नहीं करेगा और उत्पादों को उपभोक्ताओं के लिए जोखिम, सुविधाओं और लागतों का पर्याप्त रूप से खुलासा करना होगा।

- **ग्राहक:** ग्राहक सुरक्षा उपायों पर रूपरेखा आश्चर्यजनक रूप से मूक है।
- अन्य न्यायालयों ने सैंडबॉक्स परीक्षण की अवधि में ग्राहकों की सुरक्षा के लिए लेनदेन मूल्य कैप, जोखिम प्रकटीकरण आवश्यकताओं और विवाद समाधान प्रक्रियाओं के संयोजन का उपयोग किया है।
- अंतिम रूपरेखा में, यह निश्चित रूप से RBI के लिए उपयोगी होगा।
- **नियामक:** आरबीआई के लिए यह महत्वपूर्ण है कि आवेदकों का चयन करने के लिए एक पारदर्शी प्रक्रिया विकसित की जाए, सैंडबॉक्स की अवधि के दौरान सक्रिय रूप से लगे रहें और फिनटेक रेगुलेशन में अध्ययन प्रभावी रूप से लागू करें।
- कई फिनटेक उत्पादों के नियामक अंतर को देखते हुए, आरबीआई इस प्रक्रिया के दौरान अन्य नियामकों के साथ काम करने पर भी विचार कर सकता है।

### अतिरिक्त जानकारी

### भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI)

- IRDAI एक **स्वायत्त, वैधानिक निकाय** है जो भारत में **बीमा और पुनः बीमा उद्योगों को विनियमित करता है और बढ़ावा** देता है।
- यह **बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम**, 1999 द्वारा गठित किया गया था, जो भारत सरकार द्वारा पारित संसद का एक अधिनियम है।
- एजेंसी का मुख्यालय **हैदराबाद, तेलंगाना** में है, जो 2001 में दिल्ली में स्थापित कर दिया गया है।
- IRDAI एक **10-सदस्यीय निकाय** है -
- सभापति जी,
- पांच पूर्णकालिक सदस्य और
- चार अंशकालिक सदस्य (सभी भारत सरकार द्वारा नियुक्त)।

### मुख्य प्रश्न

- नियामक सैंडबॉक्स का क्या मतलब है? इस पर मसौदा दिशानिर्देश क्या हैं? जांच करें कि प्रत्येक हितधारक के लिए नियामक सैंडबॉक्स का क्या मतलब है।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## SEBI पैनल ने एफपीआई नियमों को आसान बनाने के लिए समर्थन दिया



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बाहरी क्षेत्र || विश्व व्यापार संगठन

### शीर्षक

SEBI पैनल ने एफपीआई नियमों को आसान बनाने के लिए समर्थन दिया, आइए इसके बारे में जानते हैं।

### खबरों में क्यों?

► भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI) –गठित समिति ने विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) शासन में व्यापक बदलाव का प्रस्ताव किया है, जिसका उद्देश्य देश में पूंजी प्रवाह को बढ़ावा देना है, जिससे व्यापार करने में सुधार होगा, विशेष रूप से बड़े और बेहतर-अग्रसित वैश्विक संस्थाओं के लिए।

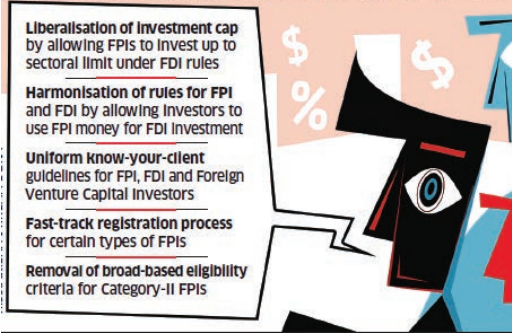
### पृष्ठभूमि

- **कार्यकारी समूह:** SEBI ने 26 मार्च, 2018 को एच.आर. खान, उप राज्यपाल (सेवानिवृत्त), भारतीय रिज़र्व बैंक की अध्यक्षता में एक कार्य समूह का गठन किया था, जिसके संदर्भ में निम्नलिखित शर्तें हैं -
- सरलीकरण के लिए, SEBI (विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक) विनियम, 2014 के पुनर्विकास पर SEBI को सलाह देना।
- परिपत्रों में निहित प्रावधानों को शामिल करने के लिए सेबी को सलाह देते हुए, अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (एफएक्यू) और परिचालन संबंधी दिशानिर्देश जिसे सेबी विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) के संबंध में जारी करता है, वे स्वयं नियमों में रहते हैं, जहां तक संभव हो सकता है।
- FPI से संबंधित किसी अन्य मुद्दे पर सलाह देना।
- कार्यदल ने अब 'एफपीआई विनियम' पर अपनी रिपोर्ट SEBI को सौंप दी है।

### रिपोर्ट

- कार्यदल द्वारा प्रस्तावित कुछ मुख्य सिफारिशें इस प्रकार हैं -
- **उपयोग में आसानी:** चयनित श्रेणी II FPI के लिए फास्ट ट्रैक ऑन-बोर्डिंग प्रक्रिया, उचित रूप से विनियमित संस्थाओं के लिए व्यापक रूप से आधारित स्थिति की समीक्षा, पेंशन फंड को। FPI श्रेणी को पंजीकरण हेतु समझा जाना चाहिए, बीमा/पुनः बीमा संस्थाओं के लिए व्यापक आधार पर आधारित अवस्था, कई निवेश प्रबंधक (एमआईएम) संरचनाओं के लिए सरलीकृत पंजीकरण, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (IFSC) में स्थापित संस्थाओं को एफपीआई के अधिकार क्षेत्र के मानदंडों को पूरा करने के योग्य माना जाता है, आदि।

## What HR Khan Panel May Propose



► **प्रलेखन का सरलीकरण:** अपारदर्शी संरचना "को हटाना, श्रेणी III FPI के लिए सरलीकृत केवाईसी प्रलेखन, गैर-पैन दस्तावेजों के लिए कस्टोडियन की एक ही समूह विनियमित इकाई पर केवाईसी निर्भरता आदि।

► **निवेश प्रतिबंध की समीक्षा:** उदारीकृत निवेश केप, FPI विनियमों और FEMA 20 (R) में निवेश प्रतिबंधों के बीच सामंजस्य, FPI से FDI में निवेश का पुनर्वर्गीकरण, ऑफ-मार्केट लेनदेन के लिए FPI की अनुमति, निवेश के लिए कॉर्पोरेट ऋण प्रतिभूतियां आदि में संप्रभु धन कोष पर प्रतिबंध की समीक्षा।

► **अन्य पहलू:** समाहित प्रतिबंधों को मजबूत करना, एफपीआई और वैकल्पिक निवेश कोष (एआईएफ) मार्गों के बीच संरेखण, अपतटीय व्युत्पन्न उपकरण (ओडीआई) ढांचे को मजबूत करना, आदि।

► रिपोर्ट की सिफारिशों को एफपीआई विनियमों और परिचालन दिशानिर्देशों के मसौदे में शामिल किया गया है जो रिपोर्ट में संलग्न हैं। इसके अलावा, एफपीआई नियमों की बड़े पैमाने पर समीक्षा की गई है।

### महत्व

- एफपीआई और विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) मार्गों के माध्यम से विदेशी फंडों की प्रवाह हाल के वर्षों में भारत में पूंजी बाजार में रिकॉर्ड प्रवाह के साथ महत्वपूर्ण रही है।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में पूंजी के प्रमुख स्रोत के रूप में, अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों के लिए एक सामंजस्यपूर्ण और परेशानी मुक्त निवेश अनुभव सुनिश्चित करना और पारदर्शिता में सुधार करना महत्वपूर्ण है क्योंकि आर्थिक नियम विकसित होते हैं।
- इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, समूह के प्राथमिक उद्देश्य समेकन, सरलीकरण, युक्तिकरण और उदारीकरण थे।
- आगे, सीमा पार निवेशकों की अखंडता और पहचान पर उभरती वैश्विक चिंताओं को ध्यान में रखते हुए, इसे महत्वपूर्ण माना जाता है -
- मजबूत ध्वनि-धन शोधन नियमों के साथ, ध्वनि और स्थिर बाजार नीतियों पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखते हैं,
- एक ही समय में दीर्घकालिक पूंजी को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए निवेशक-अनुकूल उपायों को सुनिश्चित करना।

## मुख्य प्रश्न

► एच. आर. खान पैनल ने भारत में FPI शासन के नियमों को मानने के लिए कौन से बदलाव प्रस्तावित किए हैं? इन प्रस्तावों के उद्देश्य और महत्व की जांच करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## क्या भारत का GDP डेटा सही है?

BY PRASHANT DHAWAN

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना  
|| राष्ट्रीय आय और इसके उपाय

### शीर्षक

क्या भारत का GDP डेटा सही है?

### सुर्खियों में क्यों ?

► गीता गोपीनाथ ने भारत की जीडीपी की गणना के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विधियों के बारे में चिंता व्यक्त की।

### क्या हुआ?

- 2015 में, सरकार ने जीडीपी गणना पद्धति को बदल दिया था।
- गणना पद्धति में परिवर्तन:
- सरकार ने संयुक्त राष्ट्र प्रणाली राष्ट्रीय लेखा (UNSNA) की सिफारिशों को अपनाया।
- यूएनएसएनए पद्धति में सकल मूल्य वर्धित माप, शुद्ध मूल्य वर्धित (एनवीए) और जहां भी उपलब्ध हो नए डेटा स्रोतों का उपयोग शामिल है।

### आधार वर्ष में परिवर्तन

► गणना के लिए उपयोग किया गया आधार वर्ष 2011-12 से पूर्व 2004-05 के लिए लाया गया था।

### नई और पुरानी श्रृंखला के बीच मुख्य अंतर

- पुरानी पद्धति ने परिमाण को मापा - विनिर्माण क्षेत्र में वास्तविक भौतिक उत्पादन, फसल उत्पादन और सेवा क्षेत्र के लिए रोजगार।
- नई विधि (MCA-21 डेटाबेस) अधिक उपयुक्त दृष्टिकोण की अनुमति देती है, प्रत्येक कंपनी की बैलेंस शीट डेटा को देखा जा रहा है और मुद्रास्फीति के समायोजन के बाद उस क्षेत्र के प्रदर्शन को एकत्र किया जा रहा।
- अधिकांश क्षेत्रों के लिए, 2004-05 से 2011-12 का आधार मूल्य संचालन में बदलाव करने के लिए पर्याप्त था, लेकिन प्रासंगिक अनुपात के निकटतम अनुमान तक पहुँचने के लिए कुछ लोगों को नए और पुराने डेटा के सिरों को जोड़ने की आवश्यकता थी।

### नई पद्धति के सकारात्मक पहलू क्या हैं?

- यह सांख्यिकीय रूप से अधिक मजबूत है क्योंकि यह उपभोग, रोजगार और उद्यमों के प्रदर्शन जैसे अधिक संकेतकों के अनुमानों से संबंधित है।
- इसमें उन कारकों को भी शामिल किया गया है जो मौजूदा परिवर्तनों के प्रति अधिक उत्तरदायी हैं, पुरानी श्रृंखला के विपरीत जो आमतौर पर एक अंतर्निहित परिवर्तन को पंजीकृत करने में 2-3 साल लगते हैं।

### नई कार्यप्रणाली के नकारात्मक पहलू क्या हैं?

- जीडीपी अपस्फीति:
- आईएमएफ की मुख्य आर्थिक काउंसलर गीता गोपीनाथ ने वास्तविक जीडीपी की गणना के लिए उपयोग किए जाने वाले "डिफ्लेटर" पर चिंताओं को चिह्नित किया।
- MCA का कॉर्पोरेट डेटाबेस (MCA 21):
- NSSO द्वारा गैर-वित्तीय सेवा क्षेत्र के हाल ही में जारी किए गए परिणामों में पाया गया कि 45% तक नमूना कंपनियाँ-मुख्य रूप से MCA डेटाबेस से तैयार की गई हैं-जो NSSO को सांख्यिकी अधिनियम, 2008 के तहत डेटा की आपूर्ति करने में विफल नहीं होगा।
- जीडीपी में अचानक वृद्धि अन्य व्यापक आर्थिक संकेतकों के साथ तालमेल में नहीं है:
- जनवरी 2019 में, बिजनेस स्टैंडर्ड ने एनएसएसओ के पीएलएफएस (पीरियोडिक लेबर फ्रैक्शन सर्वे) के आंकड़ों को लीक किया, जिसके प्रकाशन को रोक दिया गया, जिससे पता चला कि देश में बेरोजगारी 2017-18 में 45 साल के उच्च स्तर 6.1 प्रतिशत पर थी।
- जैसा कि रोजगार दर गिर गया है, कोई भी उत्पादन में वृद्धि कम होने की उम्मीद करेगा, जब तक कि प्रति कार्यकर्ता उत्पादकता में भारी वृद्धि न हो, जिसके लिए कोई सबूत नहीं है।
- नई पद्धति के कारण समस्याएँ:
- नई पद्धति की स्वीकृति के कारण 2011-12 से पहले के वर्षों के साथ हाल के आंकड़ों की तुलना नहीं कर पाने की समस्या पैदा हो गई थी।
- नई गणनाओं का उपयोग करके पहले के वर्षों के डेटा को प्रदान करने के लिए पुरानी श्रृंखला का देता जारी किया जाना था।
- नवंबर 2018:
- NITI Aayog ने वर्ष 2004-05 से 2011-12 के लिए जीडीपी विकास दर के लिए पिछला आधार डेटा जारी किया, जो 2011-12 के नए आधार पर आधारित है।

### नई पद्धति के कारण समस्याएँ

- नई पद्धति की स्वीकृति के कारण 2011-12 से पहले के वर्षों के साथ हाल के आंकड़ों की तुलना नहीं कर पाने की समस्या पैदा हो गई थी।

► नई गणनाओं का उपयोग करके पहले के वर्षों के डेटा को प्रदान करने के लिए पुरानी श्रृंखला का देता जारी किया जाना था।

► नवंबर 2018:

► NITI Aayog ने वर्ष 2004-05 से 2011-12 के लिए जीडीपी विकास दर के लिए पिछला आधार डेटा जारी किया, जो 2011-12 के नए आधार पर आधारित है।

### नया डेटा क्या कहता है?

► नई पद्धति के अनुसार UPA-I और UPA-II दोनों UPA वर्षों के दौरान GDP की वृद्धि केवल 6.7% थी, जबकि पुरानी पद्धति के अनुसार विकास दर क्रमशः 8.1% और 7.46% थी।

► इसकी तुलना में, वर्तमान सरकार ने अपने कार्यकाल के पहले चार वर्षों के दौरान नई पद्धति के आधार पर औसत जीडीपी वृद्धि दर 7.35% देखी है।

► नया डेटा दिखाता है कि, पहले की धारणा के विपरीत, भारतीय अर्थव्यवस्था ने पिछले दशक में 9% से अधिक के 'उच्च विकास' चरण का क्रम कभी प्राप्त नहीं किया है।

► नए डेटा, विशेष रूप से खनन और विनिर्माण क्षेत्रों के लिए, यह दर्शाता है कि जितना जल्दी सोचा गया था, उतना भारत वैश्विक वित्तीय संकट से उबर नहीं पाया।

### नए डेटा में क्या समस्याएं हैं?

► बैंक सीरीज़ डेटा की गणना पर संदेह:

► पीछे श्रृंखला डेटा की गणना करने के कई तरीके हैं।

► जबकि इसे सीएसओ द्वारा विशेष रूप से संभाला जा रहा था, इसके विषय में यह माना जा रहा था कि सांख्यिकीय रूप से सबसे मजबूत तरीका चुना जाएगा।

► भारत के पूर्व मुख्य सांख्यिकीविद् प्रोनाब प्रणव सेन ने कहा कि तथ्य यह है कि डेटा को निति अयोग द्वारा जारी किया गया था, जिससे चुने गए तरीके की विश्वसनीयता पर सवाल उठने लगे (क्योंकि इससे राजनीतिक विचार सामने आए)।

### क्या ये संख्या (पहले की श्रृंखला के आंकड़े) पिछले अनुमानों से अलग हैं?

► 2018 में जारी एनएससी की मसौदा रिपोर्ट से पता चला है कि यूपीए के वर्षों के दौरान विकास कम से कम चार अवसरों पर 9% को पार कर गया और 2010-11 में 10.78% तक पहुंच गया।

► इस रिपोर्ट ने UPA-I के दौरान औसत जीडीपी विकास दर 8.4% और UPA-II के दौरान 7.7% आंकी।

► सरकार, हालांकि, यह स्पष्ट करने के लिए त्वरित थी कि यह केवल एक मसौदा रिपोर्ट थी जो कि पिछली श्रृंखला का अनुमान लगाने के लिए प्रस्ताव पर कई तरीकों में से केवल एक का उपयोग करती थी, और यह अंतिम संख्या नहीं थी।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► "हमें IPR के फायदे और मनचाही खेती के लिये छोटे किसानों की स्वतंत्रता के आधार पर खेती के अनुबंधों को निश्चित करना चाहिए।"



(कौटिल्य देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बाहरी क्षेत्र || विश्व व्यापार संगठन

### शीर्षक

► विश्व व्यापार संगठन अपीलीय निकाय विवाद, इसके बारे में जाने

### सुर्खियों में क्यों?

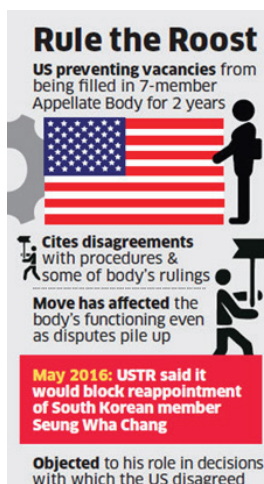
► डब्ल्यूटीओ की विवाद समाधान प्रणाली को ढहने से रोकने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए हाल ही में 20 से अधिक विकासशील देशों ने नई दिल्ली में मुलाकात की। विश्व व्यापार संगठन की अपीलीय निकाय

► 1995 में स्थापित: अपीलीय निकाय, 1995 में स्थापित, सात सदस्यों की एक स्थायी समिति है जो डब्ल्यूटीओ के सदस्यों द्वारा लाए गए व्यापार-संबंधी विवादों में पारित निर्णयों के खिलाफ अपील की अध्यक्षता करती है।

► विश्व व्यापार संगठन में 500 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय विवादों और 1995 के बाद से जारी 350 से अधिक आदेशों के साथ, संगठन का विवाद निपटान तंत्र दुनिया में सबसे अधिक सक्रिय है, और अपीलीय निकाय इन मामलों में सर्वोच्च प्राधिकरण है।

### कार्य

► देश अपीलीय निकाय से संपर्क कर सकते हैं: डब्ल्यूटीओ समझौते या दायित्व को तोड़ने के उद्देश्य से किए गए उपायों पर विवाद में शामिल देश, अपीलीय निकाय से संपर्क कर सकते हैं, यदि उन्हें यह महसूस हो कि पैनल द्वारा गठित रिपोर्ट की कानून के मुद्दों पर समीक्षा की जाने की आवश्यकता है।



► कानूनी निष्कर्षों का समर्थन, संशोधन या उलट देना: अपीलीय निकाय विवाद को सुनने वाले पैनल के कानूनी निष्कर्षों को बरकरार, संशोधित या रद्द कर सकता है। एक या विवाद के दोनों ओर के देश अपील कर सकते हैं।

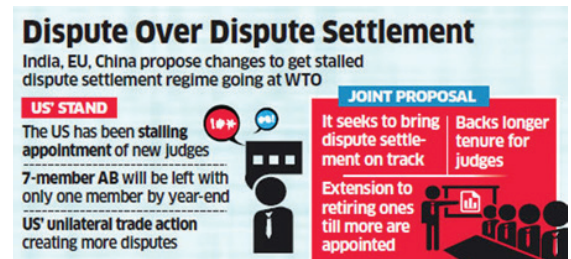
► 152 रिपोर्ट: 1995 और 2014 के बीच, 201 पैनल की रिपोर्ट में से लगभग 68% की अपील को स्वीकृत किया गया था। अपीलीय निकाय ने अब तक 152 रिपोर्ट जारी की हैं।

► अंतिम और बाध्यकारी: डब्ल्यूटीओ के विवाद निपटान निकाय द्वारा एक बार अपनायी गयी रिपोर्ट, अंतिम और पक्षों के लिए बाध्यकारी होती हैं।

► डब्ल्यूटीओ की विवाद निपटान प्रक्रिया को सहज अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

### चल रहा संकट

► 3 व्यक्ति: पिछले दो वर्षों में, निकाय की सदस्यता आवश्यक सात के बजाय केवल तीन व्यक्तियों तक घट गई है।



► यूएस नियुक्तियों को रोक रहा है: ऐसा इसलिए है क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका, जो मानता है कि डब्ल्यूटीओ इसके विरुद्ध है, नए सदस्यों की नियुक्तियों और कुछ सदस्यों की पुनर्नियुक्ति जो अपने चार साल के कार्यकाल को पूरा कर चुके हैं को रोक रहा है

► दो सदस्य इस वर्ष दिसंबर 2019 में अपने कार्यकाल को पूरा कर लेंगे, केवल एक सदस्य को निकाय में छोड़ देंगे।

► एक अपील की अध्यक्षता के लिए कम से कम तीन लोगों की आवश्यकता होती है और यदि दो सेवानिवृत्त लोगों को बदलने के लिए नए सदस्यों की नियुक्ति नहीं की जाती है, तो निकाय की प्रासंगिकता नहीं रहेगी।

### निहितार्थ

► मामलों का संचय : निर्धारित से कम कर्मचारियों वाला निकाय, पिछले कुछ वर्षों में दायर की गई अपीलों पर कार्य करने के लिए अपनी 2-3 महीने की समयसीमा पर टिक नहीं पाया है और ऐसे मामलों के संचय ने उन अपीलों की कार्यवाही को शुरू करने से रोक दिया है जो पिछले साल दायर की गई थीं।

► जब तक समस्या का समाधान नहीं किया जाता है, तब तक निकाय निष्क्रिय है और अंतरराष्ट्रीय व्यापार विवादों में फंसे देशों को सहारा देने के लिए कोई मंच साथ नहीं होगा।

► तीनों सदस्य 1 अक्टूबर, 2018 से दायर सभी अपीलों पर कार्यवाही कर रहे हैं।

► जबकि अमेरिका सीधे डब्ल्यूटीओ के अन्य सदस्य देशों की तुलना में अधिक विवादों में शामिल है, भारत सहित कई देश-विवादों को तीसरे पक्ष के रूप में दर्ज करते हैं।

## भारत

- ▶ भारत अब तक 54 विवादों में प्रत्यक्ष भागीदार रहा है और 158 में तीसरे पक्ष के रूप में शामिल रहा है।
- ▶ फरवरी 2019 में, निकाय ने कहा कि यह जापान और भारत के बीच एक विवाद को लेकर सुरक्षा के उपायों पर अमल करने में असमर्थ होगा, जो भारत ने लोहे और इस्पात उत्पादों के आयात पर लगाया था।
- ▶ पैनल ने पाया था कि भारत ने कुछ डब्ल्यूटीओ समझौतों के साथ "असंगत" काम किया था और भारत ने दिसंबर 2018 में कानून और कानूनी व्याख्याओं के कुछ मुद्दों पर अपील करने के अपने फैसले के विवाद निपटान निकाय को अधिसूचित किया था।
- ▶ निकाय अभी तक जुलाई 2018 से दायर की गई कम से कम 10 अपीलों की समीक्षा करने में असमर्थ रहा है।



## बड़ी चिंताएँ

- ▶ **अनिश्चितता:** नए आवेदनों की समीक्षा करने में असमर्थ अपीलीय निकाय के साथ, विश्व व्यापार संगठन की विवाद निपटान प्रक्रिया पर पहले से ही बहुत अनिश्चितता है।
- ▶ यदि दिसंबर 2019 में निकाय को गैर-कार्यात्मक घोषित किया जाता है, तो देशों को पैनल द्वारा नियमों को लागू करने के लिए मजबूर किया जा सकता है, भले ही उन्हें लगता हो कि सकल त्रुटियाँ हुई हैं।
- ▶ **मध्यस्थता:** क्या ऐसे देश को इस आधार पर पैनल के आदेश का पालन करने से इंकार करना चाहिए कि उसके पास अपील के लिए कोई मार्ग नहीं है, यह विवाद में दूसरे पक्ष द्वारा शुरू की गई मध्यस्थता की कार्यवाही का सामना करने का जोखिम रखेगा।
- ▶ यह भारत के लिए अच्छा नहीं है, जो विवाद के मामलों की बढ़ती संख्या का सामना कर रहा है, खासकर कृषि उत्पादों पर।
- ▶ पिछले चार महीनों में, भारत में चीनी और गन्ना उत्पादकों के लिए कथित समर्थन उपायों के खिलाफ चार मामलों को डब्ल्यूटीओ में लाया गया है।
- ▶ **विश्व व्यापार संगठन ढांचे की कमजोर पड़ती स्थिति:** इसके अलावा, विश्व व्यापार संगठन के ढांचे के कमजोर पड़ने से वैश्विक व्यापार में संरक्षणवाद पर ध्यान न देने से उसके दो दशकों के प्रयासों पर प्रभाव पड़ सकता है।
- ▶ **व्यापार तनाव:** वर्तमान में, व्यापार तनाव के रूप में अमेरिका और चीन और अमेरिका और भारत के बीच, व्यापार तनाव एक प्रमुख चिंता का विषय है।

## यहाँ से आगे का रास्ता क्या है?

- ▶ **मतदान:** जबकि अपीलीय निकाय की नई नियुक्तियाँ आमतौर पर डब्ल्यूटीओ के सदस्यों की आम सहमति से होती हैं, वहाँ मतदान के लिए एक प्रावधान है जहाँ सर्वसम्मति संभव नहीं है।

- ▶ भारत सहित 17 सबसे कम विकसित और विकासशील देशों के समूह, जिन्होंने अपीलीय निकाय में गतिरोध को समाप्त करने के लिए मिलकर काम किया है, इस आशय का प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकते हैं या का समर्थन कर सकते हैं और अपीलीय निकाय बहुमत द्वारा नए सदस्यों को प्राप्त करने का प्रयास कर सकते हैं।
- ▶ यह, हालांकि, अंतिम उपाय का एक विकल्प हो सकता है, क्योंकि सभी देश अमेरिका द्वारा सीधे वीटो के विरोध के परिणामस्वरूप होने वाले एकतरफा उपायों से डरते हैं।

## मुख्य प्रश्न

- ▶ उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं और विकासशील दुनिया के लिए समय आ गया है कि वे बहुपक्षवाद और उसके संस्थानों को कैसे आकार दें। टिप्पणी करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## नोट्स



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

**GS 3 || अर्थव्यवस्था || भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना  
|| राष्ट्रीय आय और इसके उपाय**

## शीर्षक

वैश्विक व्यापार प्रणाली को झुकाता हुआ अमेरिकी व्यापार आदेश, यह किस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगा?

## सुर्खियों में क्यों?

► क्षेत्रों में आर्थिक गति उस प्रमुख घटक, मांग की व्यापक अनुपस्थिति में धीमी हो रही है।

## हालिया संकेतक

- **ऑटोमोबाइल:** एक साल पहले ही, कारों, वाणिज्यिक वाहनों और दो पहिया वाहनों की घरेलू बिक्री का अनुबंधन अप्रैल 2019 में किया गया, **सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स (सियाम)** ने रिपोर्ट दी है।
- **कुल ऑटोमोबाइल उद्योग की बिक्री** में लगभग 16% की गिरावट एक संकेत है कि बाजारों में खपत की मांग - शहरी और ग्रामीण, संस्थागत और व्यक्तिगत रूप से - घट रही है।
- **वाणिज्यिक वाहनों** की बिक्री के दौरान, समग्र आर्थिक गतिविधि इस बात का निष्पक्ष प्रतिनिधित्व करती है कि, पिछले महीने बिक्री 6% फिसल गई, दोपहिया वाहनों की मांग में 16.4% की गिरावट ने नए वित्तीय वर्ष में खंड की मंदी को बढ़ा दिया, जिससे ग्रामीण संकट बढ़ गया।
- लगभग आठ वर्षों में **यात्री वाहनों** के आंकड़ों में सबसे ज्यादा गिरावट देखी गई, जो कमजोर प्रवृत्ति की है।
- कार की बिक्री लगभग 20% कम हो गई है, क्योंकि एक लंबी मंदी के कारण इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है।
- **औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP):** सरकार के नवीनतम औद्योगिक उत्पादन के **आंकड़े सूखे की व्यापक** प्रकृति को रेखांकित करते हैं।
- 21 महीनों के निचले स्तर के बाद, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) ने **मार्च 2019** में एक वर्ष पहले ही 0.1% की गिरावट का परिणाम दिया है, उपयोग पर आधारित वर्गीकरण करने के बाद, यह उस कमजोरी को दिखाता है जो छह खंडों में से किसी को भी नहीं छोड़ती है।
- पूर्ववर्ती महीने में 8.9% संकुचन के कारण **पूंजीगत वस्तु क्षेत्र** 8.7% तक सिकुड़ गया।
- **उपभोक्ता ड्यूरेबल्स** का आउटपुट एक साल पहले से 5.1% गिर गया था और मार्च 2018 में कंज्यूमर नॉन-ड्यूरेबल्स प्रोडक्शन की ग्रोथ 14.1% की स्पीड से 0.3% तक गिर गई थी।

- **विनिर्माण:** विनिर्माण, जिसमें सूचकांक में लगभग 78% भार होता है, फरवरी में इसी हद तक सिकुड़ने के बाद 0.4% तक उत्पादन अनुबंध के साथ, सबसे बड़ी गिरावट जारी है।
- कुल मिलाकर, पिछले वित्त वर्ष में क्षेत्र की विकास दर 2017-18 की 4.6% से कम होकर पिछले वित्त वर्ष में 3.5% हो गई है।

## संभावित कारण

- इस मंदी के लिए जिम्मेदार अनुमानित कारकों में शामिल हैं -
- **निजी उपभोग की घटती वृद्धि** -
- **यह स्थानिक मांग की कमी** का परिणाम हो सकता है, जो कि **विमुद्रिकरण द्वारा गहन हुआ** है, और बाद में एनबीएफसी क्षेत्र में आईएल एंड एफएस और अन्य के निहितार्थ से उत्पन्न संकट से बदतर हो गया।
- दृष्टि में, यह स्पष्ट नहीं है कि **अर्थव्यवस्था के पुनर्मुद्रिकरण** ने कार्यशील पूंजी चक्रों के विघटन और ऋण चुकाने में असमर्थता से प्रभावित छोटी फर्मों के संकटों को हल किया है या नहीं।
- **निश्चित निवेश में वृद्धि** -
- तथ्य यह है कि **आईबीसी तंत्र** लॉक की गई संपत्ति को जल्दी से जारी नहीं कर पाया है, हो सकता है कि उसने अनिश्चित निवेश परिदृश्य में जोड़ा गया है।
- हालांकि, यह सच है कि **2018-19 में निवेश में वृद्धि के संकेत** थे, जो एसबीआई और आईसीआईसीआई बैंक के कॉरपोरेट्स द्वारा उच्च ऋण उतार में परिलक्षित हुए थे।
- साख के विकास में तेजी के संकेत उत्साहजनक होते हैं, तो वे शुरुआती दिन होते हैं।
- यह स्पष्ट नहीं है कि क्या, संगठनों द्वारा की गई बैंक क्रेडिट खरीद और बाहरी वाणिज्यिक उधार ग्रीनफील्ड निवेश में परिवर्तित किए जाएंगे या नहीं।
- पहले चरण के दौरान बैंकों में अधिक साख आई और एक विकासक्षम बुनियादी ढाँचा बनाया गया।
- हम लेगेसी एनपीए (legacy NPAs) के साथ काम कर रहे हैं, वित्तीय क्षेत्र में दुर्बलताओं के साथ अभी भी हमें परेशान कर रहे हैं।
- **म्यूटेड निर्यात।**
- **निहितार्थ**
- **जीडीपी विकास धारणा:** इन सभी नंबरों से उभरने वाली समग्र तस्वीर सीएसओ की अनुमानित चौथी तिमाही की जीडीपी वृद्धि 6.5% मानती है, और इसे **अत्यधिक आशावादी** मानते हैं।
- **बाहरी क्षेत्र:** की पृष्ठभूमि में मजबूत वैश्विक विपरीत परिस्थितियों के साथ -
- दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं, यू.एस. और चीन के बीच एक बड़ा व्यापार युद्ध है, और
- पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव की वजह से शीर्ष तेल निर्यातक क्षेत्र से ऊर्जा की लागत बढ़ने लगी है,
- भारतीय नीति निर्माताओं को एक बाहरी क्षेत्र के साथ संघर्ष करना होगा जिससे केवल घरेलू दबाव बढ़ेगा, निश्चित यदि लंबे समय में नहीं तो निकट अवधि में।

## आगे की ओर

► **मांग निर्माण:** अगर पिछले महीने के पूर्वानुमान के अनुसार मानसून "सामान्य के करीब" हो जाए, तो वह ग्रामीण इलाकों में मांग को फिर से बढ़ाने में मदद कर सकता है, इससे कृषि क्षेत्र में संकट कुछ हद तक कम हो सकते हैं। फिर भी, नई सरकार को उचित नीति उपायों को तैयार करना चाहिए जो न केवल मांग को सुदृढ़ करने में मदद करेगा बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगा कि इस तरह का पुनरुद्धार पूरे बोर्ड में मजबूत हो और स्थायी हो।

## मुख्य प्रश्न

► क्षेत्रों में आर्थिक गति धीमी रही है। इस मंदी को चलाने वाले कारक कौन से हैं? संभव समाधान सुझाएं।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## अर्थव्यवस्था में निजी निवेश को बढ़ावा देना



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || आधारभूत संरचना || निवेश मॉडल

### शीर्षक

अर्थव्यवस्था में निजी निवेश को बढ़ावा देना, निजी निवेशकों के विश्वास को पुनर्जीवित करने के लिए आवश्यक सुधार

### सुर्खियों में क्यों?

► अगली सरकार जो पदभार संभालेगी उसे अपरिहार्य रूप से अर्थव्यवस्था पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। आर्थिक नीति के लिए यह एक विशिष्ट आवश्यकता है कि अगले छह महीनों के लिए एकल चर निजी निवेश पर एकतरफा ध्यान केंद्रित किया जाए: निजी निवेश

### विकास का परिदृश्य

► **उपभोग और सरकारी खर्च:** तथ्य यह है कि विकास का संचालन, खपत और सरकारी खर्चों से हो रहा है।

► अन्य दो – तार्किक रूप से अधिक शक्तिशाली - विकास के साधन, अर्थात्, निजी निवेश और निर्यात जो अभी भी सुस्त हैं। वास्तव में, यदि निजी निवेश गति प्राप्त करता है, तो खपत और सरकारी व्यय के साधन (निर्यात भी) अधिक तेजी प्राप्त होती है।

► **29% निजी निवेश:** जब भारत सबसे तेज़ रफ़्तार (2003-08) बढ़ा, तो सकल घरेलू उत्पाद के हिस्से के रूप में निजी निवेश लगभग 36% था। जो अब 29% के आसपास परिभ्रमण कर रहा है।

### जरूरत

► **संरचनात्मक सुधार:** बहिर्गामी सरकार ने खर्चा करने के लिए अच्छा काम किया है, निजी निवेश की सुस्ती को बनाए रखने के लिए, जिसमें विशेष रूप से बुनियादी ढांचा शामिल है। एक अल्पकालिक रणनीति के रूप में, यह काम करता है।

► मध्यम अवधि में, उत्पादकता के साथ और तेजी से खर्च करने की सरकारी क्षमता सीमित है। यह वित्त मंत्रालय के लिए भी विचलित करने वाला है, जो किसी भी सरकार में सबसे महत्वपूर्ण मंत्रालय है।

► **इसका ध्यान संरचनात्मक सुधार** करने के बजाय पूरी तरह से राजस्व बढ़ाने और विस्तृत व्यय योजनाओं के निर्माण पर है।

► **शक्ति के संतुलन को दूर स्थानांतरित करने की आवश्यकता है:** वित्त मंत्रालय के भीतर, निजी निवेश को शीर्ष पर होने के लिए, शक्ति के संतुलन को राजस्व और व्यय के विभागों से दूर स्थानांतरित करने की आवश्यकता है

- राजस्व और व्यय के विभागों से
- आर्थिक मुद्दों और वित्तीय सेवाओं के विभागों में

### प्राथमिकताएं

► **पूर्वव्यापी प्रभाव के साथ किसी प्रकार का नीति में परिवर्तन नहीं होता है:** नई सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह पूर्वव्यापी प्रभाव के साथ किसी प्रकार का नीति परिवर्तन लागू नहीं करेगी और यह अचानक और एकतरफा नियमों को नहीं बदलेगी।

► **रणनीतिक विनिवेश:** नई सरकार को बहिर्गमन सरकार द्वारा अनुमोदित रणनीतिक विनिवेश / निजीकरण योजनाओं को निष्पादित करना चाहिए।

► घाटे में चल रहा और अक्षम्य सार्वजनिक क्षेत्र पूरी अर्थव्यवस्था के लिए एक बोझ है और विकृतियों का कारण बनता है जो कई क्षेत्रों में निजी भागीदारी को रोकते हैं। यदि इन सार्वजनिक उपक्रमों के लिए कोई खरीदार नहीं हैं, तो उन्हें सार्वजनिक उपक्रमों के प्रदर्शन के



लिए मजबूर होने के बजाय बंद होना चाहिए।

► और अगर सरकार वास्तव में निजी निवेश को एक बूस्टर शॉट देना चाहती है, तो उसे रणनीतिक बिक्री के लिए अपनी बेहतर और बड़ी संपत्ति को, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और सड़कों, हवाई अड्डों, बंदरगाहों जैसे अन्य स्थानों पर रखना होगा।

► यह शेयर बाजार और विविध शेयरहोल्डिंग या पारदर्शी नीलामी के माध्यम किया जा सकता है।

► **एफडीआई:** सरकार को उन सभी एफडीआई कैप (FDI caps) से दूर होना चाहिए जो सेक्टरों में रहते हैं।

► 21 वीं सदी की अर्थव्यवस्था में उनका कोई मतलब नहीं है, खासकर जब रक्षा जैसे सबसे **रणनीतिक क्षेत्रों में आयात** निर्भरता लगातार बढ़ रही है और ज़ब भारतीय फर्मों के पास किसी अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र में विफल कंपनियों को संभालने की क्षमता नहीं है।

► **उदाहरण के लिए,** यदि केवल विदेशी एयरलाइनों को भारतीय एयरलाइन के 100% के लिए अनुमति दी गई थी (जो 49% है), तो जेट एयरवेज और एयर इंडिया के लिए खरीदार हो सकते हैं जो प्रतिस्पर्धा और कम किराए के माध्यम से हजारों नौकरियों को बचा सकते हैं और उपभोक्ताओं को लाभान्वित कर सकते हैं।

► **कर:** जबकि कर विभाग का यह कर्तव्य है कि वह वो सभी कर एकत्र करे, जो कर देय हैं, कर अधिकारियों के लिए लक्ष्य निर्धारित करने का वर्तमान तरीका अक्सर उल्टा होता है।

► **सिस्टम प्रतिरोधी और निष्कर्षित नहीं हो सकता है** और इसलिए निवेश के लिए एक बाधा है। रणनीति में एक पुनर्संरचना की तत्काल आवश्यकता है।

► **विवाद समाधान:** विवाद समाधान के वैकल्पिक (अदालतों के लिए) तरीकों पर सरकार के अंतर्गत एक वार्ता होने की आवश्यकता है।

- **न्यायपालिका** के विभिन्न स्तरों पर बड़े पैमाने पर बैकलॉग का कोई तात्कालिक समाधान होने की संभावना नहीं है, लेकिन सरकार को अपने कुछ विवादों को उस नैतिकता से बाहर निकालने का प्रयास करना चाहिए और उन्हें मध्यस्थता की तरह एक अलग फोरम में हल करना चाहिए, संभव हो पाये तो मध्यस्थ बनकर।
- यदि वैकल्पिक ढांचे में अपील के कम स्तर हैं, तो यह केवल मदद करेगा।

### प्रश्न

- अर्थव्यवस्था में निजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए सुधारों का सुझाव दें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

**GS 3 || अर्थव्यवस्था || कृषि || प्राथमिक इनपुट्स (बीज, सिंचाई, उर्वरक, कीटनाशक)**

### शीर्षक

बीज संप्रभुता क्या है? पेप्सिको बनाम गुजरात आलू किसान विवाद

### सुर्खियों में क्यों?

► पेप्सिको ने गुजरात के नौ किसानों के खिलाफ अपने सभी मामलों को वापस ले लिया है, जिन्होंने इसकी संरक्षित आलू की किस्म का इस्तेमाल किया था, जो कि लेज़ चिप्स बनाने के लिए उपयोग किए जाते हैं, जिसमें प्रत्येक छोटे किसान से 1.05 करोड़ रुपये का हर्जाना लिया जाना भी शामिल था।

### पृष्ठभूमि

- जब यह खबर सामने आई कि पेप्सिको भारत में आलू की किस्म को उगाने के लिए छोटे किसानों पर मुकदमा कर रही है, जिसका इस्तेमाल उसके लेज़ चिप्स में किया जाता है, तो तुरंत ही किसानों को लोकप्रिय सहानुभूति मिली।
- पेप्सिको द्वारा मुकदमा वापस लेने से कई किसानों को राहत मिल सकती है, जो न तो अदालत में अपने बचाव का भुगतान करने के सक्षम हैं, न ही मालिकाना किस्मों की खेती को छोड़ सकते हैं।
- हालाँकि, यह सरकार और नीति निर्माताओं के लिए एक चेतावनी होनी चाहिए, जिन्हें टिकाऊ ग्रामीण समाजों को सुरक्षित करने, मिट्टी के स्वास्थ्य की रक्षा करने और भारतीय किसानों और पूरे राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए बीज संप्रभुता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

### केंद्रीय समस्या

- **उच्च इनपुट:** कई छोटे किसान हैं, जैसे कि वे जो पेप्सिको द्वारा लक्षित थे, वे सीधे या परोक्ष रूप से, मालिकाना बीज पर निर्भर करते हैं।
- आमतौर पर ये बीज उच्च इनपुट (उर्वरक-कीटनाशक-सिंचाई) वातावरण में उगाए जाते हैं, जो समय के साथ, स्थानीय जैव विविधता को नष्ट कर देते हैं।
- **बड़ा खर्च:** इन बीजों और इनपुट को खरीदने में बड़ा खर्च आता है।

► **कौशल और सामाजिक रिश्तों का नुकसान:** इसके अलावा कौशल और सामाजिक रिश्तों की हानि होती है जिन्हें अन्यथा (स्वदेशी किस्मों के बीजों की बचत और विनिमय के माध्यम से) करते रहने की जरूरत है, वैसे छोटे पैमाने पर खेती में आय, पहचान और गरिमा में कमी जारी है।

### कानून

- बीजों में बौद्धिक संपदा अधिकारों को विनियमित करने वाले वर्तमान भारतीय कानून, प्लांट वैरायटी प्रोटेक्शन कानून, समान आधिकारिक वरीयता के लिए मालिकाना अधिकार का एक अलग रूप लेते हैं।
- यह कानून किसानों को बीजों को न केवल बचाने और पुनर्रोपण (बहुतायत) की अनुमति देता है, बल्कि उन्हें अन्य किसानों को बेचने की भी अनुमति प्रदान करता है, चाहे बीज का मूल स्रोत कोई भी हो।
- इस व्यापक अनुमति को (जिसे किसानों का विशेषाधिकार कहा जाता है) तथाकथित बीज संप्रभुता के लिए अपरिहार्य मानी जाती है, जो किसानों को बीजों को बचाने, बोने, गुणा करने और मालिकाना बीज का उपयोग करने के लिए अनुमति देने का पर्याय बन गया है, साथ ही उन मालिकाना वनस्पति प्रसार सामग्री का भी जो आलू की खेती के लिये उपयोग की जाती है।
- बीजों का स्थानांतरण करने से बचने के बजाए, उनको बचाने पर अधिक ध्यान दिया गया, इसलिए बीज को अधिकृत करने पर दबाव दिया जा रहा है।

### मालिकाना बीजों का वर्चस्व

- कोई भी किसानों को यह सोचने के लिए दोषी नहीं ठहरा सकता है कि मालिकाना बीज बेहतर हैं।
- हरित क्रांति के दिनों के बाद से कृषि अधिकारियों ने - कृषि आधुनिकता के क्षेत्र के प्रतिनिधियों - ने किसानों को अधिक उपज देने वाले बीज खरीदना ही सिखाया है।

### जोखिम

- **आनुवांशिक संरचना:** मालिकाना बीजों में संकीर्ण, एक-समान और गैर-परिवर्तनीय आनुवांशिक संरचना होती है।
- जहां किसान आनुवांशिक रूप से विशिष्ट बीजों का उपयोग, स्थानीय परिस्थितियों और खेती की परंपराओं के अनुसार कर सकते हैं, वे इसके बजाय स्थानीय परिस्थितियों और परंपराओं का पालन कर रहे हैं ताकि आनुवांशिक रूप से मानकीकृत बीजों का इस्तेमाल किया जा सके।
- बीज की गुणवत्ता पर विज्ञान और उद्योग का थोड़ा-बहुत रुख अपनाते हुए, कुछ प्रयास किये गये हैं लेकिन किसानों और गैर सरकारी संगठनों के दबाव के चलते, भारत में एक नया, बीज कानून, पारित करने की कोशिश असफल रही है, जो केवल प्रमाणित बीजों की बिक्री की अनुमति प्रदान कर सके।

### यूरोप में विनियमन

- **जैविक उत्पादन और जैविक उत्पादों की लेबलिंग पर यूरोपीय संघ नियमन,** को 2018 में पहली बार अपनाया गया, जैविक कृषि "कार्बनिक विजातीय सामग्री के पौधे की प्रजनन सामग्री" का उपयोग करने और उनका विपणन करने के लिए अनुमति देता है, जो कि यूरोपीय संघ विभिन्न और सबसे कठिन कानूनों के तहत पंजीकरण और प्रमाणन आवश्यकताओं का पालन किए बिना किया गया है।

- ▶ वर्तमान मालिकाना बीजों के विपरीत, विजातीय सामग्री को एक समान या स्थिर होने की आवश्यकता नहीं होती है।
- ▶ विनियमन स्पष्ट रूप से स्वीकार करता है कि इस तरह की विविध सामग्री का उपयोग करने के लाभ हो सकते हैं -
- ▶ रोगों के प्रसार को कम करने के लिए,
- ▶ लचीलापन बढ़ाने के लिए और
- ▶ जैव विविधता को बढ़ाने के लिए।
- ▶ तदनुसार, विनियमन "विजातीय सामग्रियों" के विपणन पर से कानूनी रोक को हटा देता है और जैविक कृषि के लिए इसकी बिक्री को प्रोत्साहित करता है, इस प्रकार स्वदेशी किस्मों के अधिक व्यापक उपयोग का रास्ता साफ होता है।
- ▶ एक बार यदि यूरोपीय संघ के विनियमन के तहत प्रत्यायोजित कृतियां तैयार हो जाती हैं, तो वे बाजारों के निर्माण का समर्थन करेंगी, जिसमें छोटे किसान भी शामिल हैं जो वर्तमान में स्वस्थान में ऐसे बीजों को बनाए रखने और सुधारने में सबसे अधिक सक्रिय हैं, यह समर्थन विशेषकर बाजारों और बाजारों में विषम बीजों के व्यापार की सुविधा के लिए होगा।
- ▶ वास्तव में, यूरोपीय संघ द्वारा बहु-मिलियन-यूरो अनुसंधान और नवाचार परियोजनाओं को आमंत्रित और वित्त पोषित किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य इस विविधता को यूरोप में खेती का अधिक अभिन्न अंग बनाना है।

### आवश्यकता

- ▶ भारत जैसे जैव-विविधता संपन्न राष्ट्र को अपनी कृषि को उच्च-उपज वाले आदर्श से उच्च-मूल्य वाले स्थान पर स्थानांतरित करने की आवश्यकता है, जहां मूल्यों में पोषण लाभ और किसान कल्याण को अधिकतम करते हुए पर्यावरणीय नुकसान को कम करने के प्रयास शामिल हैं।
- ▶ **विषम बीज:** छोटे किसानों को उचित कृषि को बढ़ावा देने वाली संरचनाओं के साथ शिक्षित और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जो कि "उन्नत" मालिकाना किस्मों के बजाय, स्वस्थानीयता में पारंपरिक / देसी (विजातीय) बीजों का संरक्षण और सुधार करते हैं।
- ▶ वर्तमान में, इस विविधता की रक्षा की आड़ में जैव विविधता के खिलाफ होने वाली धोखाधड़ी से बचने के लिए, भारत अपने किसानों के लाभ को ध्यान में रखते हुए, अपने प्रभावी उपयोग, प्रबंधन और मुद्रीकरण को रोक रहा है।
- ▶ **रिकॉर्ड रखने की आवश्यकता:** लाभदायक और मालिकाना बीजों के बीच की कड़ी को तोड़ने के लिए एक अपरिवर्तनीय रिकॉर्ड रखने वाली प्रणाली जैसेकि ब्लॉकचेन या DLT की शायद आवश्यकता है।
- ▶ इस तरह की प्रणाली से, भारत और उसके ग्रामीण समुदायों को, अपने बीज / प्रचार सामग्री और उसमें निहित आनुवंशिक संसाधनों पर नज़र रखने की अनुमति मिलती है साथ ही यह भी पता चलता है कि कैसे उनका हस्तांतरण और कारोबार किया जाता है।
- ▶ **माइक्रोप्रायमेंट के ज़रिए स्मार्ट-कॉन्ट्रैक्ट की सुविधा:** यह इसे भी सुनिश्चित करेगा कि माइक्रोप्रायमेंट के ज़रिए स्मार्ट-कॉन्ट्रैक्ट की सुविधा से, मौद्रिक रिटर्न, दुनिया भर के इन बीजों के उपयोगकर्ताओं और खरीदारों से ही आए।
- ▶ ये मौद्रिक रिटर्न एक तरफ निरंतर खेती और देसी बीजों के सुधार को प्रभावी ढंग से प्रोत्साहित करेंगे और दूसरी तरफ कृषि और ग्रामीण समुदायों की सतत वृद्धि सुनिश्चित करेंगे।

- ▶ **पारंपरिक ज्ञान प्रणाली:** भारत की अमूल्य पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित करने और मुख्यधारा की कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार सेवाओं का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है।
- ▶ प्राचीन भारतीय ग्रंथ जैसे कि वृक्षायुर्वेद और कृषि पाराशर इस बात के दायरे में आते हैं कि कन्वेंशन ऑन बायोलॉजिकल डायवर्सिटी पर कौन से अंतराष्ट्रीय सम्मेलन स्वदेशी और पारंपरिक प्रौद्योगिकियों के रूप में संदर्भित होते हैं।
- ▶ कम से कम जैविक और आयुर्वेदिक उत्पादों की बढ़ती वैश्विक मांग के कारण, इन तकनीकों का पुनरुद्धार स्थायी 'उच्च मूल्य' वाली कृषि को बढ़ावा देने पर केन्द्रित है।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- ▶ "बीज संप्रभुता" से आप क्या समझते हैं? पेप्सीको बनाम गुजरात के किसानों के विवाद पर चर्चा करें।



(बीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

### नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

**GS 3 || अर्थव्यवस्था || भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना  
|| राष्ट्रीय आय और उपाय**

## शीर्षक

मोदी 2.0 सरकार के लिए आर्थिक प्राथमिकताएँ, कौन-से क्षेत्र केंद्र में होने चाहिए?

## सुर्खियों में क्यों ?

► जैसे ही नई सरकार बनती है, इसके प्रारंभिक प्रमुख केंद्रीय क्षेत्रों में आर्थिक विकास का पुनरुद्धार, वित्तीय क्षेत्र का सुधार, प्रत्यक्ष कर और श्रम बाजार सुधारों की खोज करना है।

## वर्तमान आर्थिक परिदृश्य

- **जीडीपी:** सुधारों के रोडमैप के अगले चरण की उम्मीद एक चक्रीय मंदी की पृष्ठभूमि में अपेक्षित है। जनवरी - मार्च के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि के आंकड़े, 31 मई को जारी किए जाएंगे, जिसमें भारत के विकास चक्र को नुकसान होने की सम्भावना है।
- **आईआईपी:** इंडेक्स ऑफ इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन (आईआईपी) में पहले ही गिरावट देखी जा चुकी है, जो कमजोर निवेश और खपत की मांग के आधार पर मार्च में 0.1% के 21 महीने के निचले स्तर पर आ गई है।
- एक समग्र रूप में 2018-19 के वित्तीय वर्ष के लिए, IIP की वृद्धि 3.6% रही, जो कि पिछले वित्त वर्ष में 4.4% से कम है।
- **निर्यात:** भारत की धीमी खपत की कहानी और निर्यात में मातहत वृद्धि दर ऐसे कारक हैं जो आने वाले महीनों में देश की विकास दर को दबाव में रख सकते हैं।
- **ऑटोमोबाइल सेक्टर:** ऑटोमोबाइल सेक्टर में काफी वृद्धि देखी जा रही है और यात्री कार की खरीद में (passenger car segment) अप्रैल 2019 के महीने में 16% की गिरावट देखी गई।
- **FMCG:** FMCG सेक्टर में कुल विकास (volume growth) में सुस्ती देखी गई है।
- **उपभोग की मांग,** जो कि अर्थव्यवस्था का उभार था, कमजोर हो गई है और निजी निवेश अभी भी एक तेजी के संकेत दे रहा है।

## केंद्र

► **IBC:** IBC एनडीए सरकार द्वारा शुरू किया गया सबसे महत्वपूर्ण वित्तीय क्षेत्र सुधार है, जिसका उद्देश्य 10 लाख करोड़ रुपये से अधिक की तनावग्रस्त संपत्ति का त्वरित समाधान करना है।

► IBC को एक कॉर्पोरेट इनसॉल्वेंसी रिजॉल्यूशन प्रोसेस (CIRP) को 180 दिनों में पूरा करने की आवश्यकता होती है, जिसे अन्य 90 दिनों तक और अधिकतम 270 दिनों तक बढ़ाया जा सकता है।

► यह समय-सीमा यह सुनिश्चित करने के लिए निर्धारित की गई है कि गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) की वसूली समयबद्ध तरीके से हो।

► लेकिन, इनसॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड ऑफ इंडिया के आंकड़ों के अनुसार, 31 मार्च, 2019 तक, कुल 1,143 में से जो IBC के तहत रिजॉल्यूशन से गुजर रहे थे, कुल 548 मामले 180-दिन की समय सीमा को पार कर गए।

► यह दर्शाता है कि लगभग 48% मामलों (या 548 CIRPs) में, 180 दिनों के भीतर संकल्प प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

► कुल 362 मामले - या चालू CIRPs के 31.67% - IBC में निर्धारित 270 दिनों की बाहरी सीमा को पार कर गए।

► यह सुनिश्चित करना कि कानून में जो समय-सीमा निर्धारित की गई है वह ऋणों की वसूली के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जो कि पूंजी की उपलब्धता और विकास में सहायक सुधार करने में मदद करेगा।

► इस प्रकार, विकास पुनरुद्धार प्रक्रिया में एक प्रमुख तत्व इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (IBC) के तहत खराब ऋण समाधान प्रक्रिया को तेज किया जाएगा, जो बैंकों को आगे उधार देने के लिए संसाधनों को मुक्त करेगा।

► **एनबीएफसी:** गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के क्षेत्र के तरलता मुद्दों का सम्बोधन उसकी एक अन्य और प्राथमिकता समझी जा सकती है, क्योंकि एनबीएफसी क्षेत्र में संकट पूरे वित्तीय क्षेत्र को प्रभावित करता है।

► कई एनबीएफसी ने नए ऋण संवितरण पर रोक लगा दी है, जबकि कई अपने भुगतान पर चूक की कगार पर हैं।

► **सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक:** सरकार से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में पूंजीगत संचार को आगे बढ़ाए और कमजोर बैंकों को मजबूत बैंकों में विलय करके एकत्रीकरण कर उन्हें आगे बढ़ाए।

► अर्थशास्त्रियों और बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि जबकि NBFC सेक्टर फंड्स के लिए बंद है, लेकिन उनका पुनर्गठन अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वे टियर II और टियर III शहरों में ऋण संवितरण के बड़े हिस्से के लिए जिम्मेदार हैं।

► **औद्योगिक खंड:** इसके अलावा, जबकि बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में पिछले एक साल में ऋण की मांग में बढ़ोतरी देखी गई है और वित्त वर्ष 19 में इस क्षेत्र में अतिरिक्त ऋण की बढ़ोतरी 1.65 लाख करोड़ या 18.5% हुई है, औद्योगिक क्षेत्र के लिए ऋण विकास वृद्धि कमजोर बनी हुई है।

► **निजी निवेश:** बाजार में एक भावना है कि निजी क्षेत्र के निवेश को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है क्योंकि यह अर्थव्यवस्था को आवश्यक आधार प्रदान कर सकता है।

► **इंफ्रास्ट्रक्चर सेगमेंट की मजबूत मांग के बावजूद वित्त वर्ष 2016 में कुल ऋण की मांग में 6.9% की वृद्धि हुई।**

► **राजस्व:** मतदान के बाद, सरकार के व्यय को राजस्व संग्रह में एक शानदार वृद्धि की आवश्यकता होगी, एक ऐसा क्षेत्र जहां सरकार पिछले वित्तीय वर्ष में संघर्ष करती थी। प्रत्यक्ष कर राजस्व और माल और सेवा कर (जीएसटी) दोनों राजस्व 2018-19 के लिए संशोधित बजट अनुमानों से कम से कम 1 लाख करोड़ रुपये कम हो गए हैं।

नोट्स

► **प्रत्यक्ष कर:** इस वित्तीय वर्ष के लिए पहले से घोषित प्रत्यक्ष कर लक्ष्यों को पूरा करते हुए, एक फिसलन झुकाव होने वाला है, जो कर विभाग को 2019-20 के लिए पूर्ण बजट में अपने लक्ष्यों को जुलाई के मध्य में नई सरकार पूरा करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

► **जीएसटी:** जीएसटी के मोर्चे पर, कर की दरों में कोई बड़ा फेरबदल नहीं, कुछ छोटी वस्तुओं को छोड़कर, जहां कुछ विसंगति हो सकती है, बंद कर दिया है।

► इस वित्तीय वर्ष का ध्यान, अनुपालन बढ़ाने, प्रक्रियाओं को सरल बनाने और शायद कुछ वस्तुओं को शामिल करने की दिशा में एक कदम है, जो वर्तमान में GST के दायरे से बाहर हैं जैसे प्राकृतिक गैस और विमानन टरबाइन ईंधन।

► सकल जीएसटी राजस्व लक्ष्य की रक्षा के लिए अनुपालन और दर को बनाए रखने पर एक समर्पित ध्यान केंद्रित किया जाना आवश्यक है, जो कि 1.15 लाख करोड़ रुपये के मासिक लक्ष्य को पूरा करने के लिए लड़खड़ा सकता है।

► **श्रम सुधार:** श्रम सुधारों ने अपने पहले कार्यकाल में सरकार द्वारा निर्धारित क्रम को पूरा नहीं किया। अगस्त 2015 में अपने स्वतंत्रता दिवस के भाषण में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रम कानूनों के संहिताकरण के बारे में चार कोड (codes) में बात की थी।

► श्रम और रोजगार मंत्रालय ने चार श्रम कोडों का मसौदा तैयार किया था: औद्योगिक संबंध, मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा और कल्याण, और व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और काम करने की स्थिति, मौजूदा 44 केंद्रीय श्रम कानूनों के प्रासंगिक प्रावधानों का समामेलन है, जिन्हें सरलीकृत और तर्कसंगत बनाने के लिए विधायी मार्ग के माध्यम से अभी तक एक भी कोड अधिनियमित नहीं हुआ है।

► **रोजगार सृजन:** रोजगार सृजन, विशेष रूप से अच्छी गुणवत्ता और अच्छे वेतन के साथ, विशेष रूप से मजबूत आर्थिक विकास के अभाव में महत्वपूर्ण होगा।

## प्रश्न

► मोदी 2.0 सरकार के लिए आर्थिक प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिए? आलोचनात्मक परीक्षण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## भारत की व्यापार नीति, भारत वैश्विक अनिश्चितता को कैसे कम कर सकता है



हिंदी में

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बाहरी क्षेत्र || विदेशी व्यापार

### शीर्षक

भारत की व्यापार नीति, भारत वैश्विक अनिश्चितता को कैसे कम कर सकता है? क्षेत्रीय व्यापार परिदृश्य की व्याख्या

### समाचारों में क्यों?

► वैश्विक व्यापार में, और इसके बदलते स्वरूप में अनिश्चितता घटनाक्रम के साथ, भारत को अपनी व्यापार नीति पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है।

### हाल ही हुए परिवर्तन

► **यूएस-चीन:** मई 2019 की शुरुआत में, वैश्विक व्यापार तनाव बढ़ गया क्योंकि अमेरिका ने 200 बिलियन डॉलर के चीनी सामान पर अपने टैरिफ को 10% से बढ़ाकर 25% कर दिया।

► **चीन ने जवाबी कार्रवाई की,** चीनी वित्त मंत्रालय ने 60 बिलियन अमेरिकी डॉलर के सामान की सूची को लक्षित करते हुए 5% से 25% तक आयात शुल्क बढ़ाने की अपनी योजना की घोषणा की।

► नए यूएस-चीनी व्यापार युद्ध और उससे संबंधित अनिश्चितता के वैश्विक विकास पर यूएस-चीन द्विपक्षीय व्यापार से कहीं अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना है।

► **विश्व व्यापार संगठन** ने 2019 के लिए पहले से ही पूर्वानुमानित विश्व व्यापार विकास दर को 3.7% की दर से घटाकर 2.6% की कर दिया है।

यूएस-इंडिया: भारत में -

► यूएस द्वारा वरीयताओं की सामान्यीकृत प्रणाली (जीएसपी) को वापस लेना, जिसके जून 2019 की शुरुआत में शुरू होने की संभावना है,

► ईरान से कच्चे तेल के आयात के लिए मंजूरी छूट का अंत, और

► अमेरिका के वाणिज्य सचिव विलबर रॉस द्वारा पिछले एक सप्ताह में भारत के संरक्षणवादी शुल्क व्यवस्था और जटिल कारोबारी माहौल की गंभीर आलोचना।

► इनसे अमेरिका-भारत द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों और व्यापार कूटनीति को लेकर तनाव बढ़ गया है।

► **2018-19 में वस्तु व्यापार घाटा** \$ 176 बिलियन के उच्च स्तर पर पहुंच गया और \$ 331 बिलियन पर, निर्यात, हालांकि 2013-14 के बाद से उच्चतम रहा, परन्तु इस वर्ष के लिए वाणिज्य मंत्रालय (MoC) के लक्ष्य से काफी नीचे है।

### आवश्यकता

► **वैश्विक मूल्य श्रृंखला-आधारित व्यापार:** जबकि पारंपरिक क्षेत्रों में एक निर्यात प्रोत्साहन उचित रूप से काम कर रहे वाणिज्य मंत्रालय द्वारा स्थापित कार्यकारी समूह द्वारा किया जा रहा है, इन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के लिए वैश्विक मूल्य श्रृंखला (जीवीसी) आधारित व्यापार की गहरी समझ की आवश्यकता होती है क्योंकि यह हाल के दिनों में विकसित हुआ है और इसमें तरजीही व्यापारिक समझौतों (पीटीए) की सुविधा प्रदान करता है।

► विशेष रूप से, क्षेत्रीय व्यापार संरचनाओं के विकास के साथ भारत को संरक्षण के महत्व को पहचानने की तथा एकीकरण की रणनीति के तहत वैश्विक मूल्य श्रृंखला में पीटीए का उपयोग करने की आवश्यकता है।

### वर्तमान में भारत का निर्यात

► क्षेत्र: भारत का निर्यात मुख्य रूप से कम कौशल और श्रम गहन वस्तुओं के रूप में जारी है।

► **रत्न और जवाहरात, कपास, परिधान और जूते के रूप में एक से डेढ़ दशक में भारत ने 25-35% निर्यात किया है।**

► इसी अवधि में, वैश्विक रूप से सबसे गतिशील क्षेत्र, सीमाओं के पार उच्चतम उत्पादन विखंडन आधारित क्षेत्रीय स्थानांतरण के साथ, जो ग्लोबल वैल्यू चेन (GVC) के नेतृत्व वाले व्यापार की विशेषता है, कार्यालय मशीनरी, संचार उपकरण और वस्त्र और परिधान जैसे क्षेत्र रहे हैं।

► कार्यालय मशीनरी, लगभग 40% निर्यात पूरे देश में स्थानांतरित करने के साथ, सबसे गतिशील क्षेत्र रहा है। हालांकि, बिजली के उपकरणों और मशीनरी के संबंधित क्षेत्रों में भारत के निर्यात का केवल 4-5% हिस्सा है, इस प्रकार, वैश्विक जीवीसी में भारत के महत्वहीन समन्वय को दर्शाता है।

► **कपड़ा और परिधान:** एकमात्र क्षेत्र जहां भारत क्षेत्रीय गतिशीलता का लाभ साझा करने में सक्षम है, कपड़ा और परिधान है, हालांकि यह चीन, बांग्लादेश और वियतनाम जैसे अन्य देशों के साथ रहा है।

► **इस क्षेत्र में भी, समय के साथ, वैश्विक निर्यात में भारत का हिस्सा 2000-2012 में लगभग 5% की दर से घटकर 2017 में 4% हो गया है।**

► इसी अवधि के दौरान, बांग्लादेश जैसे प्रतिस्पर्धी देशों ने अपने वैश्विक निर्यात में 4.5% से 8.1% की हिस्सेदारी में वृद्धि दर्ज की है।

► **चीन कपड़ा और परिधान में वैश्विक निर्यात में 37% की हिस्सेदारी के साथ आगे है।**

► अन्य भारतीय शीर्ष निर्यात क्षेत्र जैसे चमड़े का सामान, रसायन, और मोटर वाहन निचले गतिशील श्रेणियों के साथ कम गतिशील क्षेत्रों में से हैं।

► **भारत की निर्यात बास्केट गतिशील वैश्विक मूल्य श्रृंखला-आधारित व्यापार के पैटर्न के अनुरूप विकसित नहीं हुई है।**

### क्षेत्रीय व्यापार परिदृश्य

► इसलिए यह अनिवार्य हो जाता है कि भारत पूर्वी एशिया के साथ अधिक एकीकरण की दिशा में एक व्यापार रणनीति की तलाश करे।

## क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP)

- RCEP भारत को यह अवसर प्रदान करता है।
- **RCEP को एक मेगा क्षेत्रीय व्यापार समझौते** के रूप में देखा जाना चाहिए, जो पूर्वी एशिया के माध्यम से क्षेत्रीय मूल्य श्रृंखलाओं या वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं या जीवीसी के साथ व्यापार उदारीकरण और एकीकरण दोनों का साधन है।
- **2017 तक**, विश्व व्यापार का लगभग आधा हिस्सा कुछ या अन्य पीटीए के तहत अस्तित्व में आया है।
- **बहुपक्षवाद** के माध्यम से काम करने के लिए भारत की व्यापार रणनीति एक बार एक विकल्प हो सकती है, लेकिन आज जब विश्व व्यापार संगठन प्रासंगिक बने रहने के लिए संघर्ष कर रहा है, मेगा क्षेत्रीय अधिमान्य व्यापार समझौते प्रमुख व्यापार वाहन बन गए हैं।

## अतिरिक्त जानकारी

## क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP)

- RCEP..... है -
- दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) (ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम) के दस सदस्य राज्यों के बीच एक प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए)
- छह एशिया-प्रशांत राज्यों के साथ आसियान ने मुक्त व्यापार समझौते किए हैं (ऑस्ट्रेलिया, चीन, भारत, जापान, दक्षिण कोरिया और न्यूजीलैंड)।
- RCEP वार्ता औपचारिक रूप से नवंबर 2012 में कंबोडिया में आसियान शिखर सम्मेलन में शुरू की गई थी।
- 2017 में, संभावित आरसीईपी सदस्य राज्यों में कुल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी, पीपीपी) में \$ 49.5 ट्रिलियन के साथ 3.4 बिलियन लोगों की आबादी है, जो दुनिया की जीडीपी का लगभग 39% है, चीन और भारत के संयुक्त जीडीपी के आधी से अधिक है।

## प्रश्न

- बदलते वैश्विक व्यापार परिदृश्य के साथ यह महत्वपूर्ण है कि भारत अपनी व्यापार नीति को पुनः पेश करे।
- आलोचनात्मक विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || बाहरी क्षेत्र || विश्व व्यापार संगठन

## शीर्षक

अमेरिका ने हुवावे पर प्रतिबंध लगाया

## खबरों में क्यों?

- ▶ अमेरिकी सरकार ने एक कार्यकारी आदेश जारी किया जिसमें अमेरिकी कंपनियों को ऐसी किसी भी कंपनी से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करने से रोका गया है जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा हो।
- ▶ यह कदम विशेष रूप से हुवावे को उद्देश्य बनाते हुए लिया गया है, एक दिग्गज टेलीकॉम।
- ▶ हुवावे के सहयोगियों में से 70 कंपनियों को एक "कंपनी सूची" में रखा गया है, इन अमेरिकी कंपनियों को ब्लैकलिस्ट कर व्यापार करने के लिए प्रतिबंधित किया गया है, ताकि वे हुवावे के साथ व्यापार बिना अनुमति के व्यापार न कर सकें।

## हुवावे



## रिपोर्ट

- ▶ एक चीनी बहुराष्ट्रीय दूरसंचार कंपनी जो दूरसंचार उपकरण और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स बनाती है
- ▶ शेन्जेन, चीन में मुख्यालय
- ▶ दुनिया में सैमसंग के बाद दूसरा सबसे बड़ा स्मार्ट फोन विक्रेता

किसने प्रतिबंध को ट्रिगर(बढ़ावा) दिया ?

## ▶ सुरक्षा मुद्दे

▶ चीनी सेना के लिए हुवावे पर एक प्रतिनिधि कंपनी होने का आरोप।

▶ चीनी सरकार द्वारा जासूसी के लिए हुवावे के उपकरण इस्तेमाल किये जा रहे हैं।

▶ समझौता (Compromised) उपकरण बैकडोर के रूप में कार्य करते हैं और हैकर्स को डेटा या निगरानी तक पहुंच प्रदान करते हैं

▶ अमेरिका के लिए कथित खतरा और जिसका निहितार्थ, वैश्विक साइबर सुरक्षा व्यवस्था है, के लिए खतरा।

▶ चीनी साइबर सुरक्षा कानून कहा जाता है कि निगमों को आक्रामक खुफिया अभियानों में सहायता करने के लिए मजबूर करता है

## ▶ आर्थिक मुद्दे

▶ एक भाग के रूप में, इसे अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते व्यापार युद्ध के परिणामस्वरूप देखा जाता है।

▶ इसके अलावा इसे अमेरिकी व्यापार मांगों के लिए चीन पर दबाव बनाने के एक कदम के रूप में देखा जाता है।

▶ अमेरिकी फर्मों ने बौद्धिक संपदा की चोरी और धोखाधड़ी वाले बाजार पहुंच के बारे में चिंता जताई है।

▶ हुवावे 5 वीं पीढ़ी की वायरलेस तकनीक में अग्रणी है, जो अमेरिकी कंपनियों में से कुछ को पछाड़ रही है, इस प्रकार अमेरिकी तकनीकी संकट का खतरा है।

## प्रभाव

### ▶ हुवावे

▶ कम से कम अमेरिका में हुवावे के लिए संभावित बाजार में नुकसान।

▶ हुवावे मुख्य Google प्लेटफॉर्मों तक पहुंच खो देगा जो सबसे बड़ी स्मार्टफोन निर्माता होने की इसकी योजना के लिए बड़ा झटका होगा।

### ▶ अमेरीका

▶ प्रतिबंध के खिलाफ Huawei द्वारा मुकदमा किया गया है।

▶ यह दोनों आर्थिक दिग्गजों के बीच पूर्ण विकसित राजनयिक संघर्ष में एक गंभीरता को बढ़ा सकता है।

### ▶ बाजार

▶ वैश्विक शेयर बाजारों में अस्थिरता

▶ वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान

▶ अल्पावधि में दूरसंचार उपकरणों के अन्य आपूर्तिकर्ताओं के लिए प्रतिस्पर्धात्मक लाभ

▶ इसका अर्थ नए मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम का उदय और संभवतः Android के लिए एक गंभीर चुनौती भी हो सकता है।

## व्यापार युद्ध

### ▶ क्या

▶ जब कोई देश आयात पर शुल्क या कोटा लगाता है और विदेशी देश व्यापार संरक्षणवाद के समान रूपों के साथ जवाबी कार्रवाई करते हैं

### ▶ क्यों

नोट्स

- ▶ घरेलू उद्योग की रक्षा और बढ़ावा देना और स्थानीय आबादी के लिए रोजगार का सृजन करना
- ▶ संरक्षणवाद के राष्ट्रिय खतरे से सुरक्षा के लिए
- ▶ **परिणाम**
- ▶ वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ एकीकृत सभी देशों के लिए नौकरियों की लागत और निम्न आर्थिक विकास को दर्शाती है।
- ▶ मुद्रास्फीति को ट्रिगर(बढ़ावा) करता है क्योंकि टैरिफ आयातित वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि करते हैं।
- ▶ ऑटो (स्वचालित वाहन) के लिए स्टील जैसे कच्चे माल के आयात की प्रतिस्पर्धा को कम करता है।
- ▶ व्यापार युद्ध संरक्षित घरेलू उद्योग को कमजोर करते हैं क्योंकि प्रतिस्पर्धा के बिना कंपनियां नवाचार नहीं करती हैं, इस प्रकार स्थानीय उत्पाद गुणवत्ता में गिरावट आती है।
- ▶ अन्य अर्थव्यवस्थाओं पर दूरगामी प्रभाव होगा क्योंकि चीन आज कई देशों की विनिर्माण इकाइयों का केंद्र है।
- ▶ राजनयिक संघर्ष भी हो सकता है।
- ▶ **भारत पर प्रभाव**
- ▶ अल्पावधि में, भारत चीनी कंपनियों द्वारा खाली किए गए स्थान को भरकर लाभ प्राप्त कर सकता है।
- ▶ इसके अलावा, भारत के पास चीन के साथ अपने व्यापार घाटे को कम करने का अवसर है।
- ▶ हालांकि, दीर्घावधि में, वैश्विक आर्थिक मंदी भारतीय निर्माताओं को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगी और निवेश को कम करेगी।

### आगे का रास्ता

- ▶ बहुपक्षीय मुक्त व्यापार, खुले बाजार और आपूर्ति श्रृंखलाओं का अधिक से अधिक एकीकरण प्रतिकूल आर्थिक वृद्धि के खिलाफ सबसे अच्छा कदम है।
- ▶ दोनों देशों को वैश्विक व्यापार के हित में विश्व व्यापार संगठन के मानदंडों का सम्मान करना चाहिए और एक दूसरे के फायदे के लिए व्यापार सौदा विकसित करना चाहिए।
- ▶ भारत को अपने विनिर्माण को प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए भारतमाला, सागरमाला, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस जैसी पहल को प्रभावी ढंग से लागू करने की जरूरत है।

### मुख्य परीक्षा के लिए प्रश्न

- ▶ हुवावे पर हालिया प्रतिबंध सुरक्षा खतरों के खिलाफ कम जबकि आर्थिक वर्चस्व के लिए एक युद्ध है। टिप्पणी करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## भारत को एक नई मुर्गीपालन नीति की आवश्यकता क्यों है



हिंदी में

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || कृषि || पशुपालन

### शीर्षक

भारत को एक नई मुर्गीपालन नीति की आवश्यकता क्यों है? मुर्गीपालन क्षेत्र द्वारा सामना किए गए मुद्दों की व्याख्या की गई है।

### सुर्खियों में क्यों ?

► दुनिया के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक होने के बावजूद, भारत में एक सुसंगत मुर्गी पालन नीति का अभाव है।

### हालिया मुद्दा

► **ब्राजील का मांस प्रोसेसर JBS:** हाल ही में सरकार ने ब्राजील के मांस प्रोसेसर JBS को अनुमति दी, जो दुनिया का सबसे बड़ा मांस विक्रेता है, जिसका पिछले साल का कारोबार रु 3.2-लाख करोड़ है, परिष्कृत चिकन टुकड़ों को बेचने के लिए - मुख्य रूप से पैर के टुकड़े, जिनके और क्वार्टर के भारतीय शौकीन हैं।

► शिर्ष पर आते आते भारत पिछले साल अमेरिका से फ्रोज़न हुए चिकन पैरों के आयात पर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में अपनी लंबी लड़ाई हार गया, यह भारत के तेजी से बढ़ते मुर्गी पालन क्षेत्र के लिए बुरी खबर है, जो दुनिया के सबसे बड़े उत्पादकों में से है। और इसका प्रभाव तत्कालिक हुआ है।

► अप्रैल 2018-जनवरी 2019 की अवधि में फ्रोज़न चिकन का आयात एक साल पहले की समान अवधि में मात्र 100 किलोग्राम से बढ़कर 136 टन हो गया।

### घरेलू उद्योगों पर प्रभाव

► हालांकि परिष्कृत मांस, जैसे चिकन पैर या सॉसेज (मांसादि से भरी हुई खाद्यवस्तु) पर अभी भी 100% आयात शुल्क लगता है, वैश्विक मांस उद्योग में बड़े पैमाने पर अभिकर्ताओं के लिए उत्पादन की लागत इतनी कम है कि, 100% शुल्क के साथ भी, कुल लागत भारत में उत्पादन लागत से भी 20% सस्ता है।

### भारत

► **प्रमुख उत्पादक:** 2017 में भारत का ब्रॉयलर मांस उत्पादन 4.2 मिलियन टन (शव वजन) था, और अंडा उत्पादन 88 बिलियन को पार कर गया, जो दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हिस्सा है।

► सम्पूर्ण क्षेत्र में (जिसमें अंडे और परत का उत्पादन शामिल है) भारत के कृषि-उद्योगों के विस्तार में सबसे अधिक तेज़ी से बढ़ रहा है, जिसमें वार्षिक वृद्धि दर 7-8% है।

► **70% संगठित:** यद्यपि भारत का लगभग 70% मुर्गीपालन उत्पादन संगठित क्षेत्र में है, लंबवत एकीकृत प्रक्रियाओं के साथ, इनका आकार वैश्विक अभिकर्ताओं की तुलना में हल्का होता है।

► उदाहरण के लिए, अमेरिकी मांस उत्पादक टायसन के पास \$ 40 बिलियन से अधिक 2017 का राजस्व था, जो इसे किसी भी क्षेत्र में दुनिया की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक बनाता है।

► टायसन ने अकेले 2017 में एक 1.8 मिलियन मुर्गियों को हलाल किया है, जबकि भारत की कुल चिकन आबादी लगभग 2.5 बिलियन है।

### वैश्विक अभिकर्ता

► वैश्विक अभिकर्ता को महत्वपूर्ण लाभ मिलता है, जो भारत में संगठित निर्माताओं को भी नहीं मिल पाता है, छोटे या पिछड़े किसान को भी पीछे छोड़ देता है, जो बाजार का लगभग एक तिहाई हिस्सा है।

► **खाद्य की कम लागत:** सबसे बड़ी, बेशक, खाद्य की कम लागत है, जो एक पक्षी की उत्पादन की लागत का 60 से 70 प्रतिशत के बीच है।

► ब्राजील या अमेरिकी पक्षियों को सस्ते आनुवंशिक रूप से संशोधित मक्का और सोया खिलाया जाता है, जो भारत में प्रतिबंधित हैं।

► मक्का और सोया, कृषि फसलों के रूप में, मौसम और कीमतों में एक ही प्रकार से प्रभावित होते हैं जो भारत में अन्य अनाज फसलों को प्रभावित करते हैं।

► मक्का की कीमतें पिछले छह महीनों में सख्त हुई हैं और इस अवधि के दौरान लगभग 50 प्रतिशत बढ़ी हैं, जबकि ब्रॉयलर की कीमतों में केवल 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

► मांग गिरने की आशंका से निर्माता पूरी लागत बढ़ा नहीं पा रहे हैं।

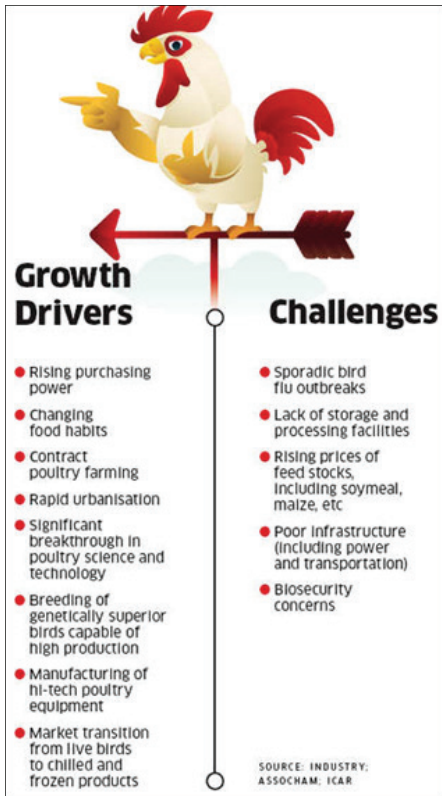
### चुनौतियां

► **अवसंरचना:** बुनियादी ढाँचे की कमी केवल उनके संकट को कम करती है। मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण, भंडारण, कोल्ड स्टोरेज और प्रशीतित आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए बुनियादी ढाँचे की भारी कमी है।

► इसका मतलब है कि बाजार का लगभग 94 प्रतिशत हिस्सा अभी भी कच्चे मांस के लिए मांग करता है, जो मुर्गीपालन उत्पादक के लिए सीमित है।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



नोट्स

- तथ्य यह है कि शीत श्रृंखला की कमी और मौसम में छोटे-मोटे उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील अंडे और पक्षी दोनों ही खराब होते हैं, इसका मतलब है कि उत्पादकों की धारण क्षमता बहुत सीमित है।
- **सोया भोजन और मक्का की कीमतों** में बड़े उतार-चढ़ाव का मतलब यह भी है कि वे निश्चितता के साथ मूल्य निर्धारण के पूर्वानुमान में असमर्थ हैं और वितरकों की दया पर चल रहे हैं।
- बीमारी के लगातार प्रकोप के कारण, उत्पादक के सामने एक ऐसी तस्वीर बनती है जो निर्माता के लिए उचित समय पर होने वाले निर्माण को लेकर अनिश्चित होती है।
- **विनियमन और नियंत्रण:** बेशक, उचित विनियमन और नियंत्रण की कमी ने व्यवसाय में कुछ भयानक प्रथाओं को जन्म दिया है, जिससे पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को खतरा है।
- **एंटीबायोटिक्स:** सबसे महत्वपूर्ण, एंटीबायोटिक्स का अत्यधिक उपयोग और यहां तक कि वजन बढ़ाने के लिए हार्मोन का बढ़ना है।
- एक जांच से पता चला है कि कैसे 'आखिरी उम्मीद' के एंटीबायोटिक, कोलिस्टिन का अनियंत्रित उपयोग दवा प्रतिरोधी सुपरबग्स के रूप में दुनिया भर में वृद्धि के लिए अग्रणी है।
- यह सब भारत के मुर्गीपालन क्षेत्र के लिए एक सुसंगत, राष्ट्रीय नीति की तत्काल आवश्यकता की ओर इशारा करता है।

### मुख्य प्रश्न

- भारत में मुर्गीपालन क्षेत्र में किन मुद्दों का सामना करना पड़ता है? क्या भारत को एक सुसंगत मुर्गीपालन नीति की आवश्यकता है?





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || अर्थव्यवस्था || कृषि || पशुपालन

## शीर्षक

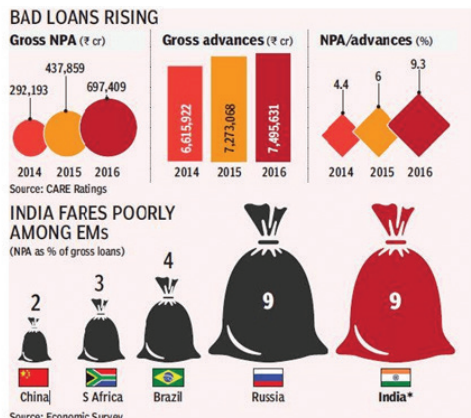
भारत में बैंकिंग संकट, अनर्जक परिसंपत्ति मुद्दा कितना गंभीर है?

## सुर्खियों में क्यों ?

► **भारत का बैंकिंग क्षेत्र:** आम चुनाव के बाद पद ग्रहण करने वाली सरकार को एक गंभीर और अनसुलझी समस्या का सामना करना पड़ेगा।

## NPA

- वाणिज्यिक बैंकों में अनर्जक परिसंपत्तियां (NPA) मार्च 2018 में 10.3 ट्रिलियन रुपये या अग्रिम के 11.2% तक दर्ज की गयी हैं।
- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSB) में NPA 8.9 ट्रिलियन या कुल NPA का 86% है।
- PSB में सकल NPA - अग्रिम अनुपात 14.6% था। ये आमतौर पर बैंकिंग संकट से जुड़े स्तर होते हैं।
- 2007-08 में NPA कुल मिलाकर 566 बिलियन रुपये था (आधा ट्रिलियन से थोड़ा अधिक), या सकल अग्रिमों का 2.26%।
- तब से NPA में वृद्धि चौका देने वाली रही है।



## संकट की उत्पत्ति

► **ऋण में उछाल:** इस संकट का कारण वर्ष 2004-05 से 2008-09 में आए ऋणों के उछाल में आंशिक रूप से निहित है।

► उस अवधि में, वाणिज्यिक ऋण (या जिसे गैर-खाद्य ऋण ' कहा जाता है) दोगुना हो गया।

► यह एक ऐसी अवधि थी जिसमें विश्व अर्थव्यवस्था के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था फलफूल रही थी।

► भारतीय फर्मों ने आने वाले विकास के अवसरों का लाभ उठाने के लिए तीव्र रूप से उधार लिया।

► अधिकांश निवेश बुनियादी ढांचे और संबंधित क्षेत्रों - दूरसंचार, बिजली, सड़क, विमानन, इस्पात में चला गया।

► व्यवसायी के पास बहुतायत थी, जो आंशिक रूप से तर्कसंगत और आंशिक रूप से तर्कहीन थे। जैसा कि कई अन्य मानते थे, वैसा ही उनका मानना था, कि भारत ने 9% विकास युग में प्रवेश किया था।

► **आर्थिक सर्वेक्षण के निष्कर्ष:** इसके बाद, 2016-17 के आर्थिक सर्वेक्षण का अनुमान था, कई चीजें गलत होने लगीं।

► भूमि प्राप्त करने और पर्यावरणीय मंजूरी प्राप्त करने की समस्याओं के कारण, कई परियोजनाएं ठप हो गईं। उनकी लागत बढ़ गई।

► **2007-08 में वैश्विक वित्तीय संकट:** समान समय में, 2007-08 में वैश्विक वित्तीय संकट की शुरुआत और 2011-12 के बाद वृद्धि में मंदी के साथ, राजस्व में पूर्वानुमानों की कमी हुई।

► संकट की प्रतिक्रिया में भारत में नीतिगत दरों को कड़ा करने के कारण वित्तीय लागत बढ़ी।

► **रुपये का मूल्यहास:** रुपये मूल्यहास का अर्थ उन कंपनियों के लिए उच्चतर बहिर्वाह था, जिन्होंने विदेशी मुद्रा में उधार लिया था।

► प्रतिकूल कारकों के इस संयोजन ने कंपनियों के लिए भारतीय बैंकों को अपना ऋण देना मुश्किल बना दिया।

## रुपये का गिरता मूल्य

► **एनपीए:** वर्ष 2014-15 में एक विभाजन चिह्नित किया गया। भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI), जो इस विश्वास के साथ कार्य कर रहा था कि NPA पर पर्दा डाला जा रहा है, ने एसेट कालिटी रिव्यू के तहत NPA मान्यता के लिए कठिन मानदंड प्रस्तुत किए।

► 2015-16 में NPA पिछले वर्ष की तुलना में लगभग दोगुने हो गये।

► ऐसा नहीं है कि अचानक खराब फैसले किये गये थे। यह सिर्फ इतना था कि अतीत के संचित बुरे निर्णय अब अधिक सटीक रूप से फलित हो रहे थे।

► उच्च NPA का अर्थ था बैंकों द्वारा उच्च प्रावधान निर्धारित किया जाना। प्रावधान उस स्तर तक बढ़ गए जहां बैंकों, विशेष रूप से PSB ने घाटा झेलना शुरू किया। परिणामस्वरूप उनकी पूंजी नष्ट हो गई।

► **अग्रिम:** सरकार से पूंजी आने की गति धीमी थी और यह न्यूनतम पूंजी के लिए नियामक मानदंडों को पूरा करने के लिए यह शायद ही पर्याप्त थी।

► पर्याप्त पूंजी के बिना बैंक ऋण बढ़ नहीं सकता है।

► यहां तक कि सकल NPA / अग्रिमों के अनुपात में अंश में तेजी से बढ़त हुई लेकिन भाजक में गिरावट आई।

- इन दोनों के कारण अनुपात, संकट के स्तर तक पहुंच गया।
- एक बार यदि एनपीए बन जाते हैं, उन्हें जल्दी से हल करना महत्वपूर्ण हो जाता है। अन्यथा, बकाया राशि पर ब्याज, NPA के कारण तेजी से बढ़ता है।

### प्रभावित क्षेत्र

- PSB की पहुंच पांच सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में थी जिनमें सबसे अधिक जोखिम था। वे क्षेत्र थे - खनन, लोहा और इस्पात, वस्त्र, बुनियादी ढांचा और विमानन।
- दिसंबर, 2014 में इन क्षेत्रों में 29% अग्रिमों और PSB पर 53% के तनावग्रस्त अग्रिम बढ़ गये। (RBI की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट उसके बाद की अवधि के लिए समान डेटा प्रदान नहीं करती है।) These sectors accounted for 29% of advances and 53% of stressed advances at PSBs in December 2014.

### ऐसे संकटों को रोकने की योजना

- ऐसे संकटों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए मध्यम अवधि के दौरान प्रतिक्रियाओं को, कुछ तात्कालिक और अन्यो, को कार्यान्वित किया जाना आवश्यक है।
- **तत्काल कार्रवाई:**
- एक तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है जिसे NPA को हल करना होगा। बैंकों को ऋण पर नुकसान झेलना पड़ता है।
- उन्हें जांच एजेंसियों द्वारा उत्पीड़न के डर के बिना ऐसा करने में सक्षम होना चाहिए।
- इंडियन बैंक्स एसोसिएशन ने प्रमुख ऋणदाताओं के रिजॉल्यूशन योजनाओं की देखरेख के लिए छह-सदस्यीय पैनल का गठन किया है।
- संकल्प में तेजी लाने के लिए, ऐसे और पैनलों की आवश्यकता हो सकती है।
- एक विकल्प यह भी है कि संसद के एक अधिनियम के माध्यम से आवश्यक होने पर ऋण समाधान प्राधिकरण स्थापित किया जाए।
- दूसरा, सरकार को बैंकों के पुनर्पूँजीकरण के लिए जो भी अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता होती है, उसे एक बार में पूरा करना होगा - ऐसी पूंजी को कई किशतों में प्रदान करना सहायक नहीं होगा।
- **मध्यम अवधि की कार्रवाई:**
- मध्यम अवधि में, RBI को वृहद-विवेकशील संकेतकों की निगरानी के लिए बेहतर तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है। इसे विशेष रूप से ऋण के चक्र से बाहर देखने की ज़रूरत है।
- एक साधारण संकेतक, ऋण का वृद्धि दर होगा जो ऋण वृद्धि की प्रवृत्ति दर या अर्थव्यवस्था की व्यापक विकास दर से बिल्कुल अलग होगा।
- सामान्य रूप से बैंकों के कामकाज को मजबूत करने के लिए कार्रवाई करने की आवश्यकता है, और विशेष रूप से, पीएसबी को सशक्त करने की ज़रूरत है।
- PSB में शासन का अर्थ है PSB बोर्ड की कार्यप्रणाली, जो निश्चित रूप से सुधर सकती है।
- NPA के साथ पिछले एक दशक के अनुभव से एक महत्वपूर्ण सबक यह मिला कि संगठित जोखिम का प्रबंधन - अर्थात्, किसी भी व्यावसायिक समूह, क्षेत्र, भूगोल, आदि के लिए अत्यधिक जोखिम - पूरी तरह से बैंक बोर्ड पर छोड़ दिया जाना बहुत महत्वपूर्ण होता है। RBI ने कुछ हद तक यह सबक ले लिया है।

- 1 अप्रैल, 2019 से प्रभावी, किसी भी व्यावसायिक समूह के संपर्क की सीमा को कुल पूंजी के 40% से घटाकर टीयर 1 पूंजी 25% (जिसमें इक्विटी और कासी-इक्विटी उपकरण शामिल हैं) तक कर दिया गया है।
- एकल उधारकर्ता के लिए सीमा टीयर 1 पूंजी का 20% (कुल पूंजी का 20% के बजाय) होगी।

### जोखिम प्रबंधन

- संगठित जोखिम के अन्य पहलुओं पर ध्यान दिया जाना बाकी है। PSB में समग्र जोखिम प्रबंधन को उच्च स्तर पर ले जाने की आवश्यकता है।
- **PSB बोर्ड का सुदृढीकरण:** इसके लिए निश्चित रूप से PSB बोर्ड को मजबूत करने की आवश्यकता है। हमें PSB बोर्ड पर अधिक उच्च गुणवत्ता वाले पेशेवरों को शामिल करने और उन्हें बेहतर मुआवजा देने की आवश्यकता है।
- **PSB में उत्तराधिकार की योजना:** PSB में उत्तराधिकार की योजना में भी सुधार की आवश्यकता है।
- शीर्ष प्रबंधन के चयन के बारे में सलाह देने के लिए बैंक्स बोर्ड ब्यूरो के गठन के बावजूद, प्रबंध निदेशक और कार्यकारी निदेशकों की नियुक्ति में लंबे समय से देरी हो रही है। यह समाप्त होना चाहिए।

### अतिरिक्त जानकारी

### अनर्जक परिसंपत्ति (NPAs)

- NPA, वह ऋण या अग्रिम है जिसके लिए मूल या ब्याज भुगतान 90 दिनों की अवधि के लिए अतिदेय रहा है।
- **विवरण:** बैंकों को NPA को बेकार, संदिग्ध और नुकसान घाटा परिसंपत्ति में वर्गीकृत करने की आवश्यकता है।
- **बेकार संपत्ति:** परिसंपत्तियां जो 12 महीने से कम या उसके बराबर की अवधि के लिए NPA बनी रही हैं।
- **संदिग्ध संपत्ति:** एक संपत्ति को संदिग्ध के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा यदि वह 12 महीने की अवधि के लिए पहली श्रेणी में रही है।
- **नुकसान की संपत्ति:** RBI के अनुसार, नुकसान की संपत्ति को इतने कम मूल्य का माना जाता है कि बैंक योग्य संपत्ति, के रूप में इसकी निरंतरता पर वारंट प्रदान नहीं करता है, हालांकि कुछ निस्तारण या वसूली मूल्य हो सकता है।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- अनर्जक परिसंपत्तियों की समस्या को संबोधित किए बिना आर्थिक विकास में तेजी संभव नहीं है। चर्चा करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## सुरक्षा

## दक्षिण एशिया में आइसिस का विस्तार



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || आतंक

## शीर्षक

2019 श्रीलंका ईस्टर बम विस्फोट, दक्षिण एशिया में ISIS का विस्तार और चुनौतियां

## सुर्खियों में क्यों ?

► **राजधानी कोलंबो के तीन होटलों में एक-के-बाद-एक भयानक विस्फोट हुए।**

○ सिनामन ग्रैंड में लगभग 8:30 बजे (0300 GMT) और हाई-एंड शांघ्री-ला में सुबह 9:05 बजे विस्फोट हुआ।

► **कोलंबो में चर्च पर हमले:** विस्फोटों की उस लहर में तीन चर्चों को भी निशाना बनाया गया:

- कोलंबो का ऐतिहासिक सेंट एंथोनी का तीर्थस्थल,
- नेगोम्बो के शहर में सेंट सेबेस्टियन चर्च और
- बाटिकालोआ के पूर्व-तटीय शहर में सियोन चर्च।

► घंटों बाद, दो और विस्फोट हुए - उनमें से एक **कोलंबो होटल** में हुआ।

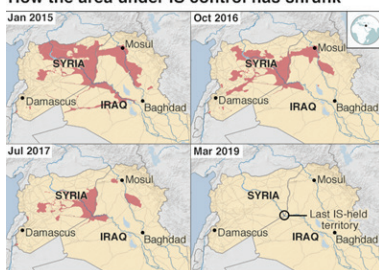
► पुलिस सूत्रों और होटल के एक अधिकारी के अनुसार, आठ में से कम से कम दो को, आत्मघाती हमलावरों द्वारा अंजाम दिया गया था।

## IS की उपस्थिति

► **खलीफा का अधिकार क्षेत्र** जिसे इराक-सीरिया सीमा पर अबू बक्र अल-बगदादी ने स्थापित किया था, **नष्ट कर दिया गया।**

► लेकिन अमेरिका और सीरिया में कुर्द विद्रोहियों के IS के कब्जे वाले क्षेत्र के आखिरी टुकड़े पर कब्जा कर जीत घोषित करने के एक महीने बाद हुई श्रीलंका की बमबारी ने इस बात की पुष्टि की है कि, भौतिक खलीफा के विनाश ने, समूह के खतरे को समाप्त नहीं किया है।

How the area under IS control has shrunk



► **रणनीति में बदलाव:** 2015 की शुरुआत से, जब IS ने अपने अधीन क्षेत्रों को खोना शुरू किया, तो उसने अपनी रणनीति को क्षेत्रीय विस्तारण से विद्रोह और आतंक के विस्तार में परिवर्तित कर दिया और दक्षिण एशिया इसके प्रमुख लक्ष्यों में से एक रहा है।

► **अफगानिस्तान:** पूर्वी अफगानिस्तान के **नांगरहार** में, IS ने एक विलायती (प्रांत) की स्थापना की, जहाँ से इसने अपने दक्षिण एशिया अभियानों को नियंत्रित किया, जिसमें मुख्य रूप से क्षेत्र के युवकों की भर्ती शामिल थी।

○ पिछले कुछ वर्षों में, IS ने अफगानिस्तान में दर्जनों हमलों को अंजाम दिया है, जिसमें ज्यादातर शिया-हजारा अल्पसंख्यकों को लक्षित किया गया।

► **पाकिस्तान:** पाकिस्तान में, IS के संपर्क के साथ पाकिस्तान तालिबान के एक उन्मादी समूह **जमात-उल-अहरार** ने कई आतंकी हमले किए, जिसमें **2016 ईस्टर रविवार** को लाहौर में ईसाइयों को निशाना बनाया गया था।

► **बांग्लादेश:** बांग्लादेश में, IS ने जुलाई 2016 में **होली आर्टिसन बेकरी हमले** की ज़िम्मेदारी ली।

► **भारत:** भारत में, इसने किसी एक हमले को अंजाम नहीं दिया बल्कि दर्जनों भर्तियों को अंजाम दिया।

## चुनौतियां

► **युवा भर्तियां:** IS ने अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत और श्रीलंका जैसे दक्षिण एशियाई देशों के हजारों युवाओं की भर्ती की थी। उनमें से कुछ नांगरहार के विलायात में शामिल हो गए और अन्य ने इराक और सीरिया की यात्रा की।

○ शुरुआती रिपोर्टों से पता चलता है कि श्रीलंका के हमलों में शामिल दो संदिग्धों ने **इराक और सीरिया की यात्रा** की थी।

○ यह आईएस द्वारा निर्देशित हमलों में एक निर्धारित पैटर्न है और कई देशों के लिए एक बड़ी सुरक्षा चुनौती है।

► **नए गढ़:** अब जब खलीफा को नष्ट कर दिया गया है, तो हजारों प्रशिक्षित उग्रवादियों को छिपने के लिए जगह नहीं मिली है।

○ कई लोग इराक-सीरिया सीमा पर या सीरिया, इराक और जॉर्डन में रेगिस्तानों की ओर रुख कर चुके हैं। कई अन्य लोग अपने-अपने गृह देशों में लौट आए, जैसा कि श्रीलंका में हुआ था।

► एक और चुनौती यह है कि **IS अभी भी अफगानिस्तान में कुछ क्षेत्रों को नियंत्रित करता है।** अमेरिका ने दो साल पहले घोषणा की थी कि अफगानिस्तान में IS को हराना उसके मुख्य नीतिगत लक्ष्यों में से एक था, लेकिन उसने ज़मीन पर बहुत प्रगति नहीं की है।

► **विचारधारा:** समान रूप से दुर्जेय चुनौती आईएस की विचारधारा का मुकाबला करना है।

○ पुरानी कहावत है कि, शिक्षा की कमी और गरीबी से आतंकवाद पनपता है, IS के मामले में औचित्य नहीं रखती है।

● श्रीलंका में हमला करने वाले आतंकवादियों में से कुछ देश के सबसे धनी परिवारों में से थे।

● केरल से अफगानिस्तान के IS क्षेत्रों में जाने वालों में से अधिकांश उच्च मध्यम वर्गीय परिवारों से थे।

- यह शुद्धतावादी सलाफी-जिहादवाद की विचारधारा है जो असंतुष्ट युवा लोगों को आकर्षित करने के लिए जारी है।
- किसी भी आतंकवाद रोधी रणनीति में सुरक्षा उपायों के अलावा IS की विश्वदृष्टि के लिए एक ज़ोरदार जवाबी रुख होना चाहिए, ताकि वह प्रभावित हो सके।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- इस्लामिक स्टेट क्षेत्रीय रूप से सफ़ाया होने के कगार पर है, लेकिन अभी भी वह खूफिया उपकरणों के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। परीक्षण करें।

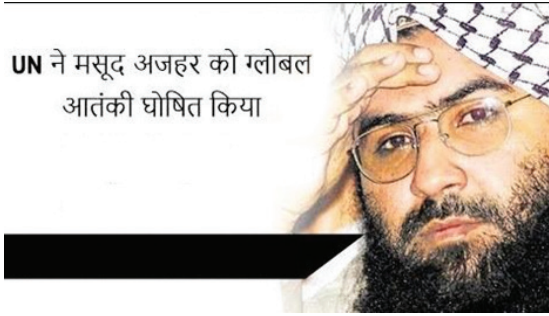


(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



UN ने मसूदा अजहर को ग्लोबल आतंकी घोषित किया



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || आतंक सुर्खियों में क्यों?

### शीर्षक

मसूदा अजहर वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित

### सुर्खियों में क्यों ?

► जैश-ए-मोहम्मद प्रमुख मसूदा अजहर को यू.एन.एस.सी. द्वारा वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित किया गया है।

### मसूदा अजहर कौन है?

- वह पाकिस्तान अवस्थित आतंकवादी संगठन 'जैश-ए-मोहम्मद' का संस्थापक व नेता है।
- उसने जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी समूहों के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए बांग्लादेश के माध्यम से जम्मू-कश्मीर में प्रवेश किया और फरवरी, 1994 में कश्मीर में गिरफ्तार हुआ।
- उसे वर्ष 1999 में अपहृत भारतीय वायु-मार्ग विमान आई.सी.-814 उड़ान के यात्रियों के बदले में रिहा किया गया था।
- वह भारत में हुए कई खतरनाक आतंकवादी हमलों यथा संसद हमले (वर्ष 2001), मुंबई हमले (वर्ष 2008), वायु सेना अड्डे (वर्ष 2016) पर हमले और पुलवामा हमले (वर्ष 2019) आदि में शामिल रहा है।

### उसे वैश्विक आतंकवादी के रूप में क्यों नामित किया गया है?

- जैश-ए-मोहम्मद (JeM) (वर्ष 2001 में यू.एन.एस.सी. द्वारा प्रतिबंधित) की स्थापना के बाद से इसके लिए उसका समर्थन है।
- अल-कायदा से उसका संबंध।
- अफगानिस्तान में हमलावरों की भर्तियों में उसकी भूमिका।

### उसे वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित करने में चीन की क्या भूमिका है?

- यू.एन.एस.सी. के पांच स्थायी सदस्यों में से एक होने के परिणामस्वरूप चीन ने चार बार अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग किया ताकि मसूदा अजहर को वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित होने से रोका जा सके।

### उसे आतंकवादी के रूप में नामित करने के मामले कैसे आगे बढ़ीं?

- वर्ष 2009: अजहर को वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित करने के लिए भारत ने स्वयं एक प्रस्ताव रखा, चीन ने इस कदम को रोक दिया।
- वर्ष 2016: भारत ने पी-3 संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस के समर्थन के साथ इस प्रस्ताव को पुनः आगे बढ़ाया।
- वर्ष 2017: पी-3 राष्ट्रों ने फिर से इस समान प्रस्ताव को प्रस्तुत किया; चीन ने इस प्रस्ताव को रोक दिया।
- फरवरी, 2019: पी-3 राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में एक नया प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
- 13 मार्च, 2019: चीन ने इस प्रस्ताव पर रोक (इस प्रकार की चौथी निविदा) लगाई।
- 28 मार्च, 2019: अमेरिका ने फ्रांस और ब्रिटेन द्वारा समर्थित एक प्रत्यक्ष मसौदे से इस प्रस्ताव को स्थानांतरित कर दिया।
- 3 अप्रैल, 2019: चीन ने अमेरिका पर 'सभी उपलब्ध संसाधनों' का इस्तेमाल करने की धमकी देकर पाकिस्तान के JeM प्रमुख को 'वैश्विक आतंकवादी' घोषित करने की धमकी दी।
- 30 अप्रैल, 2019: चीन ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा अजहर को वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित करने पर "कुछ प्रगति" हासिल की गई है तथा उम्मीद है कि इस मुद्दे को "सुचारु रूप से हल" किया जाएगा।
- 1 मई, 2019: जब चीन ने रोक हटाई तब 1267 प्रतिबंध समिति ने अजहर को एक वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित किया।

### विभिन्न हितधारकों की प्रतिक्रिया

- पाकिस्तान: पाकिस्तान ने कश्मीर में अजहर की किसी प्रकार की भूमिका का कोई स्पष्ट उल्लेख न कर उसको सूचीबद्ध किए जाने के विषय में कोई सीधा तर्क न देकर स्वयं के पक्ष को बचा लिया है।
- चीन: चीनी विदेश मंत्रालय के अनुसार, चीन ने प्रायोजित '1267 समिति के लिए प्रस्ताव को संशोधित और पुनः प्रस्तुत सामग्री' के बाद अपना विचार बदलने का फैसला किया।
- भारत: विदेश मंत्रालय के अनुसार, सूचीबद्ध किए जाने का निर्णय यह था "उस जानकारी अद्यतन करना जिसे भारत ने प्रतिबंध समिति के सदस्यों के साथ साझा किया था। इसका उद्देश्य मसूदा अजहर को आतंकवादी के रूप में नामित करना था और यह उद्देश्य पूरा भी हुआ।"

### चीन के रुख में बदलाव की वास्तविक वजह

- कहा जा रहा है कि चीन के इस प्रक्रिया में सार्वजनिक अलगाव की आवाज के जोखिम के कारण अपनी स्थिति को नरम कर दिया क्योंकि अजहर को ब्लैकलिस्ट न किए जाने के सवाल पर सार्वजनिक वोटिंग का खतरा था।

► कुछ विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि वर्तमान में चीन अमेरिका के साथ **अत्यधिक जटिल व्यापार वार्ता** में शामिल है। भारत के अनुरोध करने पर अजहर को अंतराष्ट्रीय आतंकवादियों की सूची में शामिल कर अमेरिका ने अपनी राजनयिक शक्ति का प्रयोग कर, भारत को ईरान से तेल आयात करने के लिए प्रतिबंधित कर दिया है

### इस प्रकार के प्रयोजन का क्या महत्व है?

- **मसूदा अजहर पर प्रभाव:** यू.एन.एस.सी. के प्रस्तावों के अनुसार, अजहर द्वारा **अधिकृत परिसंपत्ति जब्त, उसके द्वारा स्वामित्व हथियार पर सावधिक प्रतिबंध और उसके द्वारा की जाने वाली यात्रा पर प्रतिबंध** लग गया है। इस प्रकार इसका तात्पर्य प्रभावी रूप से **अजहर के पूर्णतः संचालन को बाधित** करेगा तथा आतंकवादी संगठनों व मदरसों जैसे **उसके संगठन एवं संस्थानों को बंद** करने हेतु लक्षित होगा।
- **पाकिस्तान पर प्रभाव:** अजहर का एक वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित होने से **पाकिस्तान को उसके तथा उसके साथ संबंधित व्यक्तियों एवं संस्थाओं के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए मजबूर** करेगा।
- **भारत के वैश्विक पद पर प्रभाव:** अजहर पर प्रतिबन्ध आरोपित होने के परिणामस्वरूप **वास्तव में यह भारतीय कूटनीति की जीत तथा बदलती वैश्विक धाराओं का सूचक** है।

### अनिर्णीत चिंताएँ:

- **लेकिन इस प्रकार के कदम से कोई खास अंतर नहीं पड़ा है।** उदाहरणतः के लिए संयुक्त राष्ट्र ने हाफिज सईद, दाऊद इब्राहिम को दूसरे आतंकवादियों की सूची में सूचीबद्ध किया है, लेकिन इससे भारत को **उनकी गतिविधियों पर अंकुश लगाने में शायद ही सहायता मिली है।**

### अतिरिक्त जानकारी: प्रतिबंध समिति क्या है?

- **वर्ष 1999 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की प्रतिबंध समिति की स्थापना, प्रस्ताव-1267 के अंतर्गत** की गई थी, जिसने **तालिबान पर सीमित प्रतिबंध** आरोपित किये थे।
- **कार्य:**  
प्रतिबंध कार्यवाहियों के **कार्यान्वयन का निरीक्षण** करता है।
- इन कार्यवाहियों के कार्यान्वयन पर **सुरक्षा परिषद को प्रतिवर्ष की रिपोर्ट प्रस्तुत** करता है।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## भारत पर इस्लामिक राज्य का प्रभाव



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || आतंक

### शीर्षक

भारत में इस्लामिक स्टेट का प्रभाव

### सुर्खियों में क्यों ?

- श्रीलंका में ईस्टर पर हुए हमलों में की ज़िम्मेदारी इस्लामिक स्टेट (IS) ने ली है, इस हमले में 250 लोगों की मृत्यु का दावा किया गया है।
- हमले के सूत्र भारत से निकटता से जुड़े हुए हैं, श्रीलंका में हुए हमले से पहले उन्हीं हमलों का एक आत्मघाती हमलावर भारत में काफी समय से रह रहा था।
- एजेंसियां चिंतित हैं कि इस स्तर के समन्वित हमलों का भारत के तटों से निकट का संबंध है।

### भारत में उपस्थिति/प्रभाव

- 2013 में, आईएस भारतीय खुफिया एजेंसियों के रडार पर तब आया जब सीरिया की ओर से यह रिपोर्ट आई कि कुछ भारतीय पार्श्व में आईएस के समर्थन में वहां लड़ रहे हैं।
- 2014 तक भी एजेंसियों द्वारा इसे मध्य पूर्व की एक समस्या माना जाता था, जब आईएस ने इराक में 39 भारतीयों का अपहरण कर लिया और उन्हें मार डाला।
- आईएस का खोरासन खिलाफत का एक मानचित्र भारत के कुछ राज्यों को भी इसके भाग के रूप में दिखा रहा था।
- तब से आईएस के साथ लड़ने के लिए कई भारतीयों ने इराक और सीरिया की यात्रा की है और एजेंसियों ने ऐसे 100 से भी अधिक लोगों को गिरफ्तार किया जो सीरिया से लौट रहे थे या उनमें शामिल होने की तैयारी में थे।
- आईएस से प्रेरित होने के बाद भारत में एक हमले को अंजाम देने की तैयारी में भी कई लोग पकड़े गए हैं।

### भारत की प्रतिक्रिया

- भारतीय सुरक्षा प्रतिष्ठान ने आईएस के प्रभाव के मुद्दे को अत्यंत सावधानी से लिया है।
- आईएस में शामिल होने का यह दृष्टिकोण इस तथ्य की सूचना देता है कि एक बहुत बड़ी मुस्लिम आबादी होने के बावजूद भी, भारत से आईएस में बहुत कम लोगों की भर्तियां हुई हैं।

### वैश्विक निष्कर्ष

- यह स्पष्ट है कि कुछ युवा आईएस में शामिल होने के लिए आतुर हैं, ऐसे ही कुछ खाली बैठे युवाओं को आईएस ने केवल अपने ऑनलाइन प्रचार किए गए वीडियो गेम जैसे मैकबेर वीडियो के द्वारा आकर्षित कर लिया है।
- उन्हें पूर्णरूप से सुधार की आवश्यकता नहीं है, उनकी निष्कलंक पृष्ठभूमि कहती है, उनके सुधार के लिए एजेंसियों को केवल एक परामर्श का सहारा लेना होगा।
- केवल ऐसे लोगों को ही गिरफ्तार किया गया है, जिनके लिए एजेंसियों को लगा कि वे हमला करने की प्रक्रिया में थे या परामर्श के बावजूद भी सीरिया जाने के लिए अनेक प्रयास कर चुके थे।
- इसमें हैदराबाद का युवा अब्दुल्ला बसिथ शामिल था, जिसने सीरिया जाने का तीन बार प्रयास किया और हर बार उसे पकड़ लिया गया। अंत में उसे अपने तीसरे प्रयास में आतंकवाद के आरोपों में गिरफ्तार कर लिया गया।

### दक्षिण भारत और आईएस

- दक्षिणी राज्यों ने आईएस में अधिकतम भर्तियां भेजी हैं।
- सभी भर्तियों में लगभग 90% दक्षिणी राज्यों से हैं।
- राज्य जैसे कि तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना, कर्नाटक और महाराष्ट्र हैं।
- केरल से इस्लामिक स्टेट में शामिल होने वाले अधिकांश लोग खाड़ी देशों के साथ काम कर रहे थे।
- उत्तर भारत के जम्मू-कश्मीर, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों ने भी युवाओं पर आईएस का कुछ प्रभाव देखा है।

### अगला कदम

- भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी आंतरिक सुरक्षा संरचना में बदलाव लेकर आए।
- आतंकी संगठनों का सामना करने के लिए, नाटो (NATO) जैसे अंतरराष्ट्रीय निकायों के साथ एक संबंध स्थापित करना, आतंकवाद से निपटने के लिए अधिक संभावनाएं लेकर आ सकता है।
- गत्यात्मक उपायों को अच्छी तरह से लागू करने से पहले, विश्लेषकों और खुफिया एजेंटों को अनुसंधान करना चाहिए।
- जिहादियों की विचारधारा का विरोध करना महत्वपूर्ण है, अप्रत्यक्ष रूप से कड़ी कानूनी कार्रवाई में कुछ कमियाँ छोड़कर इसका समर्थन करना नहीं है।
- दक्षिण भारतीय आईएसआईएस की ओर आकर्षित हो रहे हैं, सरकार को कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल के प्रमुख मुस्लिम नेताओं तक पहुंचना चाहिए ताकि वे अपने समुदाय के युवाओं को खतरनाक आतंकवादी समूह के प्रभाव से सुरक्षित रख सकें।

## अतिरिक्त संदर्भ

<https://economictimes.indiatimes.com/news/defence/view-south-asias-biggest-terror-attack-is-a-warning-for-indian-agencies-to-smarten-up/articleshow/69091410.cms>

<https://indianexpress.com/article/explained/sri-lanka-blasts-islamic-state-isis-nia-explained-5699515/>

## मुख्य परीक्षा का प्रश्न

आतंकवाद से निपटने के उपाय क्या हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## भारत ने 'क्राइस्टचर्च कॉल टू एक्शन' पहल पर हस्ताक्षर किये



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

**GS 3 || सुरक्षा|| आंतरिक सुरक्षा संबंधी खतरे || सोशल मीडिया और आंतरिक सुरक्षा**

### शीर्षक

भारत ने 'क्राइस्टचर्च कॉल टू एक्शन' पहल पर हस्ताक्षर किये

### सुर्खियों में क्यों ?

► ऑनलाइन चरमपंथ का मुकाबला करने के लिए, भारत ने **क्राइस्टचर्च हमलों के बाद शीर्ष सोशल मीडिया कंपनियों के साथ-साथ फ्रांस और न्यूजीलैंड की सरकारों द्वारा शुरू किए गए एक अंतरराष्ट्रीय पहल पर हस्ताक्षर करने का फैसला किया है।**

### हस्ताक्षरकर्ता

- सोशल मीडिया की अधिकतम जिम्मेदारी के लिए जवाबदेही **न्यूजीलैंड के प्रधान मंत्री जैकिंडा अर्डन** की याचिका के बाद, वे और उनके फ्रांसीसी समकक्ष, राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रोन ने इस मामले में पहल का आयोजन किया, जिसका पेरिस में अनावरण किया गया।
- **26 राष्ट्र:** "क्राइस्टचर्च कॉल टू एक्शन" नामक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए गए और 26 देशों से भागीदारी के साथ इसे अपनाया गया, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं -
- फ्रांस, न्यूजीलैंड, यूरोपीय आयोग, आयरलैंड, नॉर्वे, सेनेगल, कनाडा, जॉर्डन, ब्रिटेन, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, जापान, स्पेन, नीदरलैंड, स्वीडन और भारत।
- **सोशल मीडिया कंपनियों और IT उद्यमों:** सामाजिक मीडिया कंपनियों और IT उद्यमों में से निम्नलिखित शामिल थे:
  - माइक्रोसॉफ्ट, क्वॉन्ट, डेली मोशन, गूगल, यू-ट्यूब, ट्विटर, फेसबुक और अमेज़न।

### लापता

- जहां एक ओर दस्तावेज़ यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल देता है कि यह किसी भी देश के नागरिकों के स्वतंत्र भाषण के अधिकारों पर नहीं लागू होगा, वहीं US ने स्वतंत्र भाषण के मामलों के बीच दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर नहीं करने का फैसला किया है।
- व्हाइट हाउस के अधिकारियों ने चिंता जताई कि दस्तावेज़ पहले संशोधन के उल्लंघन में हो सकता है।

### शासनादेश

- दस्तावेज़ में निम्नलिखित पर प्रकाश डाला गया है-
- "इस मुद्दे पर सभी कार्यवाई एक स्वतंत्र, खुले और सुरक्षित इंटरनेट के सिद्धांतों के अनुरूप होनी चाहिए, मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता से समझौता किए बिना, जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता शामिल है। इसे इंटरनेट की क्षमता को एक बल की तरह कार्य करने के रूप में भी पहचानना चाहिए यानी कि नवाचार, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ समावेशी समाजों को भी बढ़ावा देना चाहिए।"
- दस्तावेज़ में कहा गया है कि **सरकारों / हस्ताक्षरकर्ताओं को निम्नलिखित के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए:**
- विभिन्न समाजों में लचीलेपन और समावेशिता को मजबूत करके, आतंकवाद के संचालकों और हिंसक उग्रवाद का मुकाबला किया जा सकता है, जिससे कि उन्हें आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी विचारधाराओं का विरोध करने में सक्षम बनाया जा सके, शिक्षा सहित मीडिया साक्षरता का निर्माण किया जा सकता है, जो विकृत आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी आख्यानो का मुकाबला करने में सहायता करें और असमानता के खिलाफ लड़ाई लड़ें।
- लागू कानूनों का प्रभावी प्रवर्तन सुनिश्चित करना जो कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सहित कानून और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के नियम के अनुरूप, **आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी सामग्री के उत्पादन या प्रसार को रोकते हैं।**
- आतंकवाद और हिंसक अतिवादी सामग्री को बढ़ावा देने से बचने के लिए, जब ऑनलाइन आतंकवादी घटनाओं का चित्रण हो रहा हो, तब मीडिया आउटलेट्स को नैतिक मानकों को लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।
- आतंकवाद और हिंसक चरमपंथ की जिम्मेदार कवरेज के लिए आतंकवादी मानकों पर रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने के लिए उद्योग के मानकों का समर्थन करना, **ताकि आतंकवादी हमलों पर की जाने वाली रिपोर्टिंग, आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी सामग्री को बढ़ावा न दे।**
- सहयोगी कार्यवाई के माध्यम से, **आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी सामग्री के प्रसार व ऑनलाइन सेवाओं के उपयोग को रोकने के लिए** उचित कार्यवाई पर विचार करना जैसे कि:
- दस्तावेज़ ऑनलाइन सेवा प्रदाताओं के लिए निम्नलिखित प्रतिबद्धता पूर्ण बातें रखते हैं:
- पारदर्शी रूप से कुछ कदमों को उठाया जाना चाहिए, आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी सामग्री के अपलोड और सोशल मीडिया पर इसके प्रसार को रोकने के लिए और समान सामग्री-साझाकरण सेवाओं पर रोक लगाने के लिए, जिसमें उसका तत्काल और स्थायी निष्कासन शामिल होना चाहिए, कानून प्रवर्तन और उपयोगकर्ता अपील की आवश्यकताओं के पूर्वाग्रह के बिना, वह एक तरह से मानव अधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता के अनुरूप होना चाहिए।
- सामुदायिक मानकों या सेवा की शर्तों की सेटिंग में अधिक पारदर्शिता प्रदान करना, जिसमें शामिल होंग:
- आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी सामग्री को साझा करने के परिणामों को रेखांकित और प्रकाशित करना;
- नीतियों का वर्णन करना और आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी सामग्री का पता लगाने और हटाने के लिए प्रक्रियाओं को लागू करना।
- अन्य चीजों की एक सूची के बीच, ये दस्तावेज़, मानव अधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता के अनुरूप स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिये सुरक्षा उपाय भी सुनिश्चित करते हैं, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी सामग्री को प्राथमिकता देना,
- जहां उपयुक्त हो वहां खाता बंद करना;
- अपनी सामग्री को हटाने या अपनी सामग्री को अपलोड न करने का निर्णय लेने के इच्छुक लोगों के लिए एक प्रभावशाली शिकायत और अपील प्रक्रिया प्रदान करना।
- सभी हस्ताक्षरकर्ताओं ने एक साथ काम करने और एक दूसरे की सहायता करने व पहल के लिए गति बढ़ाने और समर्थन करने के लिए मौजूदा मंचों और संबंधित संगठनों, संस्थानों, तंत्र और प्रक्रियाओं में एक साथ काम करने की अपनी इच्छा की "पुष्टि" की है।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- मानवीय संकटों के जवाब में प्रौद्योगिकी की अपनी सीमाएँ होती हैं। सोशल मीडिया के विकास के विभिन्न अनपेक्षित परिणामों का विश्लेषण करें। मुक्त, खुले और सुरक्षित इंटरनेट के सिद्धांतों को संरक्षित करते हुए इंटरनेट के दुरुपयोग को रोकने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || आतंक

## शीर्षक

सरकार ने अगले 5 वर्षों के लिए LTTE पर लगाया प्रतिबंध, ईलम (Eelam) की अवधारणा क्या है?

## सुर्खियों में क्यों ?

► केंद्र ने तत्काल प्रभाव से **लिबरेशन टाइगर्स ऑफ़ तमिल ईलम (LTTE) पर गैरकानूनी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम, 1967** के तहत प्रतिबंध को 5 साल तक बढ़ा दिया है।

## गैरकानूनी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम, 1967

- **आतंकवाद विरोधी कानून:** UAPA भारत का प्राथमिक आतंकवाद विरोधी कानून है -
- "व्यक्तियों और संघों की कुछ गैरकानूनी गतिविधियों की अधिक प्रभावी रोकथाम के लिए, और आतंकवादी गतिविधियों या संबंधित मामलों से निपटने के लिए, एक अधिनियम है"।
- **धारा 3:** UAPA की धारा 3 "एक गैरकानूनी रूप से एक संघ की घोषणा" के साथ संबंधित है, और निर्दिष्ट करती है कि ऐसी घोषणा करने वाली सरकार की सूचनाएं "उस आधार को निर्दिष्ट करेंगी जिस पर यह जारी किया गया है और ऐसे अन्य विवरण जिन्हें केंद्र सरकार ने आवश्यक समझा हो।"

## हाल में लिया गया फैसला

- **विस्तारित प्रतिबंध:** केंद्र ने गैर-कानूनी गतिविधियों (रोकथाम) अधिनियम, 1967 की धारा 3 की उप-धाराओं (1) और (3) के तहत LTTE पर प्रतिबंध बढ़ा दिया है।
- LTTE पर प्रतिबंध का विस्तार करने वाली अधिसूचना में कहा गया है कि -
- **संगठन की निरंतर हिंसक और विघटनकारी गतिविधियाँ भारत की अखंडता और संप्रभुता के लिए हानिकारक हैं;** और
- यह एक मजबूत भारत-विरोधी रुख को अपनाता है साथ ही यह भारतीय नागरिकों की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा भी बना हुआ है।
- **UAPA की धारा 3** के तहत गृह मंत्रालय (MHA) द्वारा प्रतिबंधित संगठन, अधिनियम की पहली अनुसूची में सूचीबद्ध हैं।

► MHA वेबसाइट पर प्रकाशित सूची के नवीनतम संस्करण में 41 प्रविष्टियाँ शामिल हैं, जिनमें LTTE के अलावा, खालिस्तानी आतंकवादी संगठन, पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूह, पूर्वोत्तर के कई आतंकवादी संगठन, कश्मीरी अलगाववादी संगठन, माओवादी समूह, इस्लामिक स्टेट या दाएश, इंडियन मुजाहिदीन और स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ़ इंडिया (SIMI) शामिल हैं।

## लिबरेशन टाइगर्स ऑफ़ तमिल ईलम (LTTE)

- **वेलुपिल्लई प्रभाकरन द्वारा स्थापित:** LTTE की स्थापना 1976 में वेलुपिल्लई प्रभाकरन ने श्रीलंका के बाहर एक स्वतंत्र तमिल ईलम बनाने के लक्ष्य के साथ की थी।
- श्रीलंकाई सेना के साथ संघर्ष, **1980 के दशक के प्रारंभ में LTTE ने देश के उत्तर और पूर्व में एक पूर्ण पैमाने पर राष्ट्रवादी विद्रोह शुरू किया**, जिसमें सैन्य और नागरिक दोनों लक्ष्यों के खिलाफ बड़े आतंकवादी हमलों की एक श्रृंखला को अंजाम दिया गया था।

## भारत और LTTE

- **कॉम्प्लेक्स:** गुरिल्लाओं को सहायता प्रदान करने से लेकर 1987-1990 तक भारतीय शांति सेना (IPKF) को श्रीलंका भेजने तक LTTE के साथ भारत के संबंध जटिल रहे हैं।
- LTTE ने आतंक के हथियार के रूप में **आत्मघाती बम** विस्फोट का नेतृत्व किया, और 1991 में, एक LTTE आत्मघाती हमलावर ने भारतीय जमीन पर एक हमले में राजीव गांधी की हत्या कर दी।
- राजीव गांधी की हत्या के बाद भारत ने सबसे पहले LTTE पर प्रतिबंध लगाया; 2014 में प्रतिबंध को आखिरी बार पांच साल के लिए बढ़ाया गया था।

## भारत और LTTE

- **कॉम्प्लेक्स:** गुरिल्लाओं को सहायता प्रदान करने से लेकर 1987-1990 तक भारतीय शांति सेना (IPKF) को श्रीलंका भेजने तक LTTE के साथ भारत के संबंध जटिल रहे हैं।
- LTTE ने आतंक के हथियार के रूप में **आत्मघाती बम** विस्फोट का नेतृत्व किया, और 1991 में, एक LTTE आत्मघाती हमलावर ने भारतीय जमीन पर एक हमले में राजीव गांधी की हत्या कर दी।
- राजीव गांधी की हत्या के बाद भारत ने सबसे पहले LTTE पर प्रतिबंध लगाया; 2014 में प्रतिबंध को आखिरी बार पांच साल के लिए बढ़ाया गया था।

## आतंकवादी उन्मुखीकरण

- **हाई-प्रोफाइल हत्याएं:** तमिल टाइगर्स द्वारा की गई अन्य हाई-प्रोफाइल हत्याओं में से एक 1993 में श्रीलंका के राष्ट्रपति रणसिंघे प्रेमदासा थे।
- **LTTE जिसने संघर्ष में महिलाओं और बच्चों का उपयोग किया**, ने श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी राज्यों के तीन-चौथाई हिस्से को नियंत्रित किया था।
- 2009 में राष्ट्रपति महिंद्रा राजपक्षे की सरकार द्वारा संगठन को एक क्रूर सैन्य हमले में कुचल दिया गया था।

► LTTE को भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और यूरोपीय संघ के अलावा 32 देशों ने आतंकवादी संगठन घोषित किया था।

► **FTO:** US ने LTTE को 1997 में एक विदेशी आतंकवादी संगठन (FTO) घोषित किया था।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► डिजिटल मीडिया के माध्यम से धार्मिक झुकाव के कारण भारतीय युवा ISIS में शामिल हो गए हैं। ISIS और उसका मिशन क्या है? हमारे देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए ISIS कैसे खतरनाक बन सकता है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## जम्मू और कश्मीर में ISIS

प्रशान्त धवन द्वारा

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || सुरक्षा खतरे से निपटने || सीमा प्रबंधन

### शीर्षक

जम्मू और कश्मीर में ISIS

### सुर्खियों में क्यों ?

► ISIS की समाचार एजेंसी ने दावा किया कि समूह ने कश्मीर में "हिंद (प्रांत) के विलायाह" की स्थापना की है।

### ISIS क्या है?

- इस्लामिक स्टेट, या ISIS, एक आतंकवादी संगठन है जो 2014 में अलकायदा की शाखा के रूप में उभरा।
- समूह को कभी-कभी ISIL के रूप में भी संदर्भित किया जाता है - इस्लामिक स्टेट ऑफ़ इराक एंड द लेवेंट के लिए - या अरबी में संक्षिप्त रूप से इसे दाएश भी कहा जाता है।
- ISIS की स्थापना इराक के अबू बक्र अल-बगदादी ने की थी।
- यह बड़े पैमाने पर इराक और सीरिया के सुन्नी आतंकवादियों से बना है, लेकिन मुस्लिम दुनिया और यूरोप के हजारों लड़ाकों को भी अपनी ओर खींचता है।

### इसे अन्य आतंकवादी संगठनों की तुलना में बड़ा खतरा क्यों माना जाता है?

- ISIS के उभरने तक, आतंकी संगठनों के नेताओं ने पैगंबर मोहम्मद के प्रति निष्ठा दिखाई है।
- जून 2014 में, ISIS ने अल-बगदादी को पैगंबर मुहम्मद के वंशज के रूप में प्रदर्शित करने वाला घोषणापत्र प्रकाशित किया और दावा किया कि वह एक भविष्यवक्ता यानी ईश्वर का दूत है।

### कश्मीर में ISIS के प्रांत होने की घोषणा कैसे की गई?

- 10 मई 2019 को, ISIS की अमाक समाचार एजेंसी ने दावा किया कि समूह ने 'हिंद के विलायाह' की स्थापना की है।
- अमाक ने हालांकि, तथाकथित प्रांत की भौगोलिक सीमाओं के बारे में विस्तार से नहीं बताया।
- उद्घोषणा, उसी दिन दक्षिण कश्मीर के शोपियां में एक मुठभेड़ में सुरक्षा बलों द्वारा भारत में ISIS के एक संदिग्ध संचालक इश्फाक अहमद सोफी के खाल्ते के साथ की गयी।

### भारत में, ऐसे दावों के लिए प्रतिक्रिया

- कश्मीर की पुलिस ने इसे मात्र एक प्रोपेगैंडा करार दिया।
- हालांकि, SITE इंटरनेट ग्रुप की निदेशक, रीता काटज ने कहा है कि दावे को "पूर्ण रूप से व्यर्थ नहीं समझना चाहिए"।
- हालांकि इसे स्पष्ट रूप से सूचना प्रचार के रूप में देखा जा रहा है, लेकिन भारतीय खुफिया एजेंसियों को हाई अलर्ट पर रखा गया है।

### इस घोषणा को भारत में मात्र प्रोपेगैंडा क्यों माना जा रहा है?

- विश्लेषकों का मानना है कि सीरिया, अफगानिस्तान और संघर्ष का फायदा उठाने में विफल रहे हैं।
- कश्मीर मुद्दा मुख्य रूप से एक क्षेत्रीय और राजनीतिक विवाद है, जो विशुद्ध रूप से धार्मिक / इस्लामवादी संघर्ष के विपरीत है।
- लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे सीमा पार आतंकवादी समूह ग्लोबल इस्लामिक खलीफा की अवधारणा के विरोध में हैं।
- नतीजतन, ISIS कश्मीर घाटी में अपने पदचिह्न स्थापित करने में विफल रहा है।

### अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ ऐसी घोषणा के बारे में क्या सोचते हैं

- यह अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहा है:
- यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ISIS के शीर्ष अधिकारी काफी दबाव में हैं और यह अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है।
- बगदादी संभवतः पूर्व की ओर बढ़ गया है:
- यदि ISIS का नेतृत्व पूर्व की ओर स्थानांतरित होता है, तो पूरा आतंकी नेटवर्क एक अलग प्रतिमान ले सकता है।
- गायब होने वाला दाएश, हर संभव दिशा में बेतरतीब ढंग से हिंसा की घटनाओं के साथ घातक हो सकता है।
- वे पारंपरिक सेना पर कब्जा करने के लिये पर्याप्त शक्तिशाली नहीं हो सकते हैं, लेकिन आत्मघाती हमलावरों और स्वतंत्र स्वामित्व का एक घातक संयोजन खतरा बन सकता है।
- इन परिस्थितियों में एक भारतीय शाखा की उद्घोषणा, सुरक्षा और खुफिया एजेंसियों के लिए सावधानी का संकेत देती है।
- ISIS वैश्विक खलीफा की अपनी छवि को जारी रखेगा और अपने मूल ठिकानों पर 'सामंती समर्थन' की निरंतर खोज में रहेगा।

### क्या यह वैश्विक खतरा है?

- अप्रैल 2019 में श्रीलंका में ईस्टर आत्मघाती विस्फोटों के बाद ISIS द्वारा प्रचार कार्यक्रमों की एक श्रृंखला शुरू की गई है।
- ISIS प्रमुख अबू बक्र अल-बगदादी 2014 के बाद से खुद ही घोषित किये हुए अलगाव से फिर से उभरा और बघौज में ISIS के नुकसान का बदला लेने के लिए श्रीलंका के जिहादियों की सराहना की।
- ISIS ने "बंगाल क्षेत्र का नया अमीरात" घोषित किया, जाहिर तौर पर इसने पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश राज्य को लक्षित किया।
- इस श्रृंखला में नवीनतम घोषणा कश्मीर में ISIS प्रांत का दावा है।

## ISIS के खिलाफ लड़ाई

- 2014 से, US ने ISIS के खिलाफ हवाई हमले करने और इराकी सैनिकों के समर्थन में उग्रवादियों से लड़ने वाले देशों के गठबंधन का नेतृत्व किया है।
- 2017 के अंत तक, ISIS ने इराक और सीरिया में अपना अधिकांश मैदान गंवा दिया और इराक ने अपना युद्ध घोषित कर दिया।
- हालाँकि, ISIS की स्व-घोषित खिलाफत क्षेत्रीय स्थानों में है, विश्लेषकों ने चेतावनी दी है कि समूह एक "आभासी खिलाफत" कहकर पीछे हट रहा है, जहां से वह पश्चिम में अधिक हमलों को प्रेरित करने का प्रयास करेगा।

## भारत को क्या करना चाहिए?

- अब तक ISIS का भारतीय मुसलमानों पर कम से कम प्रभाव था।
- अगर कश्मीर में ISIS प्रांत की खबर सच है, तो यह भारत की क्षेत्रीय अखंडता के लिए सबसे बड़ा खतरा जो इससे पहले कभी नहीं हुआ है।
- इसलिए, भारत को ISIS से लड़ने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी विभिन्न स्तरों का पता लगाना चाहिए।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## गढ़चिरौली नक्सल हमला



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || वाम विंग अतिवाद

### शीर्षक

गढ़चिरौली नक्सल हमला, क्या भारत नक्सलवाद को खत्म करने के लिए पूरी तरह तैयार है?

### सुर्खियों में क्यों ?

महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में माओवादी हमले में 15 पुलिस कमांडो मारे गए। मारे गए लड़ाके इलीट सी-60 विंग के सदस्य थे, जिसे विशेष रूप से 1990 में नक्सली हिंसा से निपटने के लिए स्थापित किया गया था।

### हाल की घटना

- ▶ 36 वाहनों को आग लगा दी गयी: एक त्वरित रिस्पांस टीम दफ्तर से कुर्खेड़ा के दादपुर की ओर जा रही थी जहां चरमपंथियों ने एक सड़क निर्माण कंपनी के 36 वाहनों को दिन में पहले ही आग लगा दी थी, तथा विस्फोट ने टीम को छोटे-छोटे टुकड़ों में उड़ा दिया।
- ▶ जिस आसानी से चरमपंथी इतने वाहनों को जलाने में सक्षम थे, वह भयावह है, और जिस तरह से प्रतिक्रिया दल ने नीचता से घात लगाकर हमला किया, वह तुच्छ योजना का एक चौकाने वाला उदाहरण है।

### सी-60

- ▶ नक्सली गतिविधि सबसे पहले 1980 में तत्कालीन आंध्र प्रदेश से महाराष्ट्र में फैला।
- ▶ 1982 में चंद्रपुर जिले से अलग हुआ, गढ़चिरौली जिला, हिंसा की भावना से अत्यधिक प्रभावित हुआ था।
- ▶ 26/11 के हमलों के दौरान हेमंत करकरे की मौत के बाद महाराष्ट्र एटीएस की कमान संभालने वाले अनुभवी पुलिस अधिकारी के.पी. रघुवंशी को 1990 में राज्य पुलिस का एक कुलीन कमांडो बल बनाने का प्रभार दिया गया था।

### भूमिका

- ▶ एक-समान मूल: सी-60 गढ़चिरौली के लिए बनाया गया था, 60 कमांडो के एक बैच के भर्तियाँ उन्हीं क्षेत्रों से की गई थीं, जहां से नक्सलियों ने अपने स्वयं के लड़ाकुओं को भर्ती किया था।

- ▶ समान मूल होने के कारण, C-60 के पास राज्य पुलिस की अन्य इकाइयों की तुलना में परिचालन लाभ था, जैसे कि तीव्र युद्धाभ्यास और स्थानीय आबादी के साथ बातचीत करने की अधिक क्षमता।
- ▶ सी -60 कठिन जंग के मैदानों, जैसे घने जंगलों और पहाड़ी इलाकों में युद्ध के लिए योग्य है।
- ▶ कमांडो को राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड परिसर, मानेसर, पुलिस प्रशिक्षण केंद्र, हजारीबाग, जंगल वारफेयर कॉलेज, कांकेर और अपरंपरागत संचालन प्रशिक्षण केंद्र, नागपुर सहित देश के कुलीन संस्थानों में प्रशिक्षित किया जाता है।
- ▶ माओवादियों के आत्मसमर्पण करने और मुख्यधारा में शामिल होने की सुविधा: वास्तविक मुकाबले के अलावा, सी-60 के कार्य में माओवादियों के आत्मसमर्पण करने और मुख्यधारा में शामिल होने की सुविधा भी शामिल है।
- ▶ इसके लिए, यूनिट के सदस्य माओवादियों के परिवारों से मिलते हैं, जो उन्हें पूर्व माओवादियों के लिए बनाई गई सरकारी योजनाओं से अवगत कराते हैं।
- ▶ दूसरी शाखा: आने वाले वर्षों में नक्सल गतिविधियां बढ़ी हैं, 1994 में एक दूसरी शाखा भी बनाई गई थी।
- ▶ इकाई का आदर्श वाक्य 'वीर भोग्या वसुंधरा' या 'द ब्रेव विन द अर्थ' है।

### हाल के हमले के निहितार्थ

- ▶ नक्सलवाद को कुचलने में विफलता: गढ़चिरौली में एक बारूदी सुरंग हमले में 15 सुरक्षाकर्मियों की मौत भारतीय राज्य की नक्सलवाद को कुचलने में लगातार विफलता की ओर एक और गंभीर चेतावनी है।
- ▶ एक महीने से भी कम समय से पहले, एक विधायक और कुछ सुरक्षाकर्मियों ने मतदान से पहले पड़ोसी राज्य छत्तीसगढ़ में इसी तरह के हमले में अपनी जान गंवा दी।
- ▶ सुरक्षा बलों की अतत्परता: केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF) की 30 कंपनियों की तैनाती के बावजूद यह हमला हुआ - एक कंपनी में 135 कर्मचारी शामिल होते हैं - और राज्य रिजर्व पुलिस बल की 13 कंपनियों के साथ-साथ 5,500 कर्मचारी गढ़चिरौली और पड़ोसी चंद्रपुर जिले में स्थानीय पुलिस होने के बावजूद न केवल नक्सलवादियों के दुस्साहस को दिखाती है, बल्कि सुरक्षा बलों की अतत्परता को भी दिखाती है।

### आगे का रास्ता

- ▶ यह कोई संयोग नहीं है कि अपराधियों ने इस हिंसक संदेश को भेजने के लिए, जिले में मतदान के बाद, महाराष्ट्र स्थापना दिवस को चुना।
- ▶ नक्सली परिस्थितियों को नियंत्रित करने में सक्षम है, खुफिया जानकारी के शीर्ष पर हैं, फुर्तीले हैं और सुरक्षा योजनाकारों से कई कदम आगे हैं जो एक गहरी चिंता का विषय होना चाहिए।
- ▶ यह थोड़ी सुखद बात है कि 2014 के लोकसभा चुनाव की तुलना में गढ़चिरौली और पड़ोसी चंद्रपुर दोनों में मतदान प्रतिशत क्रमशः 70.04% से 71.98% और 63.29% से 64.65% हो गया है।
- ▶ लेकिन नक्सल बहुल जिलों में मतदान केंद्र तक मतदाता का रास्ता अभी भी कठिनाइयों से भरा हुआ है।
- ▶ इसी क्षेत्र में तैनात सुरक्षा बल उन्हें अधिक भरोसा नहीं दिला पाए हैं।
- ▶ बाकी सब चीजों के शीर्ष पर, इस हाल ही के हमले में जितने भी पुलिस कर्मी थे, उनमें से ज्यादातर स्थानीय नागरिक थे।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► "भारत आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियों को हल्के में लेने का जोखिम नहीं उठा सकता है।" अर्धसैनिक कर्मियों के जीवन लेने वाले हालिया हमलों जांच करते हुए उन पर प्रकाश डालें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

**GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || जम्मू और कश्मीर मिलिटेंसी**

## शीर्षक

जम्मू-कश्मीर में मानवाधिकार उल्लंघन, जम्मू-कश्मीर पर UNHRC की रिपोर्ट भारत को उत्तेजित करती है

## सुर्खियों में क्यों ?

► सरकार को जम्मू-कश्मीर में मानवाधिकारों के उल्लंघन के मामलों में न्याय सुनिश्चित करना चाहिए।

## मामला क्या है?

► स्पेशल रैपपोर्टर्स (विशेष दूत): नयायेंतर क्रियान्वयन, यातनाएं और स्वास्थ्य अधिकार पर वर्तमान विशेष रैपपोर्टर्स ने जून 2018 की एक रिपोर्ट को मानवाधिकार के उच्चायुक्त कार्यालय (OHCHR) को संदर्भित किया था और मार्च 2019 में सरकार को लिखा था, रिपोर्ट में सूचीबद्ध कथित मानवाधिकार उल्लंघनों को संबोधित करने के लिए नई दिल्ली द्वारा लिए गए कदमों के बारे में पूछा गया था।

► इसके अलावा, विशेष रैपपोर्टर्स ने अकेले 2018 से "चिंता के 13 मामले" सूचीबद्ध किए थे, जिसमें "सुरक्षा बलों के सदस्यों द्वारा मारे गए आठ नागरिकों में से चार बच्चे थे।"

► संयुक्त राष्ट्र के निकाय की रिपोर्ट उसी समय आई थी जब श्रीनगर में अत्याचार के कथित मामलों पर राज्य के दो गैर-सरकारी संगठनों की एक रिपोर्ट जारी की गई थी, जिसका समर्थन संयुक्त राष्ट्र के एक पूर्व विशेष प्रतिनिधि ने किया था।

## भारत का रुख

### Spat over reports

**June 2018:** OHCHR publishes report on 'Human Rights Situation in Jammu and Kashmir' and Pakistan-occupied Kashmir

■ India slams report, says it shows individual bias of Commissioner of Human Rights Zeid Ra'ad AL Hussein

**January 2018-March 2019:** UN says Special Rapporteurs sent 34 communications (27 in 2018 and 7 in 2019 to date), 20 pending requests for Special Rapporteur visits, including to Jammu and Kashmir

■ India doesn't reply, declines to clear visits by Special Rapporteurs

**March 2019:** Three UN Special Rapporteurs send submission to India, ask for action taken on human rights violations

■ India rejects submissions, says it will no longer engage with them on the issue

► दावों को खारिज कर दिया: सभी दावों को खारिज करते हुए, जेनेवा में संयुक्त राष्ट्र में भारतीय स्थायी मिशन ने 23 अप्रैल को ओएचसीएचआर को जवाब दिया, जिसमें "व्यक्तिगत पूर्वाग्रह" का आरोप लगाया गया।

► भारत ने कश्मीर में मानवाधिकारों की स्थिति 'पर ओएचसीएचआर की रिपोर्ट को भी खारिज कर दिया था - जम्मू और कश्मीर पर पहली ऐसी रिपोर्ट जो जून 2018 में सामने आई - और इसे बाहर न लाने के लिए मानवाधिकार उच्चायुक्त पर "स्पष्ट पूर्वाग्रह" का आरोप लगाया गया।

► अपनी आपत्तियों में, सरकार ने कहा कि रिपोर्ट "गलत भावना से प्रेरित थी", कि इसके निष्कर्ष और सिफारिशें भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन थीं और विशेष दूत ने भारत के खिलाफ "व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों" की रिपोर्ट तैयार करने का आरोप लगाया।

► पुलवामा हमला: इसके अलावा, भारत ने इस साल पुलवामा हमले का सामना किया और आतंकवाद को मानवाधिकारों का "सबसे बड़ा" उल्लंघन बताया, न कि सुरक्षा बलों के खिलाफ आरोपण किया।

► 23 अप्रैल को लिखे गए एक पत्र में, संयुक्त राष्ट्र के जेनेवा में भारत के स्थायी मिशन ने मानवाधिकारों के लिए उच्चायुक्त कार्यालय को लिखा, जिसने जम्मू-कश्मीर के साथ-साथ पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर संयुक्त राष्ट्र की मूलभूत रिपोर्ट को जो जून 2018 में प्रस्तुत की गई थी को किसी भी संदर्भ को खारिज कर दिया, और घाटी में हिंसा में 2016 और 2018 के बीच 69 नागरिकों की मौत के बारे में सवाल के जवाब देने से इनकार कर दिया।

## प्रतिक्रिया

► जम्मू-कश्मीर में कथित मानवाधिकार उल्लंघनों पर भारत से सवाल करने की मांग करने वाले संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत के साथ संचार को बंद करने का सरकार का निर्णय चरम पर दिखाई दिया, जो पिछले कुछ वर्षों में इस तरह की अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों पर इसकी प्रतिक्रिया के अनुरूप नहीं है।

► ओएचसीएचआर रिपोर्ट और इस वर्ष अनुवर्ती कार्रवाई को लेकर संयुक्त राष्ट्र निकाय द्वारा लगाए गए आरोपों की अक्सर चयनात्मक प्रकृति को देखते हुए भारत की आपत्तियों को समझा जा सकता है।

► संप्रभुता: यह भी स्पष्ट है कि भारतीय अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई और कानूनों में संशोधन की मांग भारतीय संप्रभुता को पार कर सकती हैं।

► पिछले एचसीएचआर द्वारा आह्वान किया गया था कि संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद ने कश्मीर में भारत के रिकॉर्ड की जांच के लिए एक स्वतंत्र और अंतराष्ट्रीय न्यायाधिकरण का गठन किया था, जिसे बाहरी माना गया था और नई दिल्ली द्वारा भी खारिज किया जा सकता था।

## स्रोत

► भारत के भीतर: ओएचसीएचआर रिपोर्ट के लिए अधिकांश स्रोत आधिकारिक भारतीय प्राधिकरण, राज्य और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, अंतराष्ट्रीय मानवाधिकार एजेंसियां और प्रतिष्ठित भारतीय गैर सरकारी संगठन हैं।

► इसलिए यह भारत के भीतर का एक दृष्टिकोण है, न कि संयुक्त राष्ट्र के कुछ विस्थापित अधिकारियों का और इसे बहुत गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

नोट्स

- इस प्रकार, सरकार उन परेशान करने वाले सवालों को खारिज नहीं कर सकती है जो संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट और विशेष दूत की प्रस्तुतियाँ केवल उन्हें अस्वीकार करके उठाती हैं।
- दो कश्मीरी एनजीओ ने भी कश्मीर में सुरक्षा बलों द्वारा कथित क्रूरता के 432 विशिष्ट मामलों का दस्तावेजीकरण करते हुए एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें बिजली द्वारा यातना, 'वाटर-बोर्डिंग' और नागरिकों के साथ यौन यातना शामिल है, जिनमें से केवल 27 को राज्य मानवाधिकार आयोग द्वारा लिया गया था।
- सरकार को इनमें से प्रत्येक में उचित प्रक्रिया और न्याय के लिए दबाव डालना चाहिए।
- आखिरकार, भारत को लेकर न केवल यह अनुमान लगाया जाएगा कि वह दुनिया के सबसे शक्तिशाली देशों के कितने करीब है, बल्कि यह अनुमान भी लगाया जाएगा कि कैसे राज्य अपनी सीमाओं के भीतर खुद को सबसे अधिक संवेदनशील बनाता है।

### अतिरिक्त जानकारी

#### मानव अधिकार के लिए उच्चायुक्त का कार्यालय (OHCHR)

- मानवाधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त का कार्यालय (आमतौर पर ओएचसीएचआर के रूप में जाना जाता है) संयुक्त राष्ट्र के सचिवालय का एक विभाग है जो उन मानवाधिकारों को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा के लिए काम करता है, जिन्हें 1948 के मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा करने वाले अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत सुरक्षा प्राप्त है।
- कार्यालय संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 20 दिसंबर 1993 को मानव अधिकारों पर 1993 विश्व सम्मेलन के मद्देनजर स्थापित किया गया था।
- कार्यालय का नेतृत्व मानवाधिकारों के लिए उच्चायुक्त करता है, जो संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में मानव अधिकारों की गतिविधियों का समन्वय करता है और जिनेवा, स्विट्जरलैंड में मानव अधिकार परिषद के सचिवालय के रूप में कार्य करता है।
- यह संयुक्त राष्ट्र विकास समूह की समिति का पदेन सदस्य है।

### प्रश्न

- एक लोकतंत्र के रूप में, भारत के पास मानव अधिकारों को बनाए रखने का एक बेहतर रिकॉर्ड होना चाहिए। कश्मीर में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर संयुक्त राष्ट्र की संस्था की रिपोर्ट को लेकर भारत की निराशा पर प्रकाश डालिए।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## भारत में ISIS का प्रभाव, भारत ने कट्टरता से निपटने के लिए उठाए कदम



हिंदी में

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || आतंक

### शीर्षक

भारत में ISIS का प्रभाव, भारत ने कट्टरता से निपटने के लिए उठाए कदम

### सुर्खियों में क्यों ?

- इस्लामिक स्टेट ने श्रीलंका में हमलों की जिम्मेदारी ली है जिसमें दावा किया गया है कि पिछले रविवार को 250 लोगों की जान गई थी।
- यह देखते हुए कि हमले के सूत्र भारत के साथ श्रीलंका के एक आत्मघाती हमलावर के साथ निकटता से जुड़े हुए हैं, जो हमले से पहले भारत में कुछ समय के लिये रूका हुआ था, एजेंसियों ने दक्षिण भारत में संदिग्ध IS भर्तियों के लिए तलाशी शुरू कर दी है।

### भारत में उपस्थिति

- **2013:** इस्लामिक स्टेट 2013 में भारतीय खुफिया एजेंसियों के राडार पर आया, जब सीरिया की रिपोर्टों ने सुझाव दिया कि कुछ भारतीय वहां IS के साथ लड़ रहे थे।
- यह अभी भी 2014 तक एजेंसियों द्वारा मध्य पूर्व की समस्या माना जाता था, IS ने इराक में 39 भारतीयों का अपहरण किया और उन्हें मार डाला।
- IS की योजनाओं पर करीबी नज़र डालने से पता चला कि शुरू से ही भारत उनकी नज़र में था।
- खुरासान खलीफा के एक IS मानचित्र ने भारत के कुछ राज्यों को इसके भाग के रूप में दिखाया।
- तब से कई भारतीयों ने IS के साथ लड़ने के लिए इराक और सीरिया की यात्रा की है और 100 से अधिक लोग एजेंसियों द्वारा या तो सीरिया से लौटने पर या उन्हें शामिल करने की तैयारी करते हुए गिरफ्तार किये गये हैं।
- IS से प्रेरित होने के बाद भारत में हमले को अंजाम देने की तैयारी के लिए कई लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है।

### दक्षिण भारत

- **अधिकतम भर्तियां:** भले ही उत्तर भारत नियमित रूप से सांप्रदायिक झड़पों का सामना करता है, लेकिन यह दक्षिणी राज्य हैं जिन्होंने अधिकतम भर्तियां IS को भेजी हैं।

- एजेंसियों के मुताबिक, सीरिया जाने वाले सभी भर्तियों में लगभग 90% दक्षिणी राज्यों के हैं।
- एजेंसियों द्वारा गिरफ्तार किये गए हमले शुरू करने की तैयारी करने वाले लोगों में से अधिकांश तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना, कर्नाटक और महाराष्ट्र जैसे राज्यों से हैं।
- वास्तव में 2013 में इस्लामिक स्टेट में शामिल होने के लिए भारत की ओर से पहली भर्ती कुड्डालोर (तमिलनाडु) में हुई थी - जिसका नाम हजा फखरुद्दीन था। वह IS में शामिल हो गया और सिंगापुर में काम करते हुए सीरिया चला गया।
- **IS की चरम विचारधारा:** केरल के अधिकांश लोग जो इस्लामिक स्टेट में शामिल हो गए थे, वे या तो खाड़ी में काम कर रहे थे या IS की चरम विचारधारा के लिए पहले से विकसित पसंद के साथ वहाँ से वापस आ गए थे।
- उत्तर भारत में जम्मू-कश्मीर, MP और UP जैसे राज्यों ने भी युवाओं पर कुछ आईएस प्रभाव देखा है।

### संगठनात्मक समर्थन

- **प्रवासन:** IS ने बड़े पैमाने पर युवाओं को या तो सीरिया और इराक की ओर पलायन करने के लिए प्रेरित किया है या भारत में अपने संसाधनों से हमले किए हैं।
- इंडियन मुजाहिदीन का पूर्व संचालक शफी अरमार जैसे अधिकांश भर्तिकर्ता भी भारतीय हैं।
- कई भारतीयों के पास एक हैंडलर भी नहीं था और वे आईएस के नाम पर हमले करने के लिए केवल एक साथ आए थे।
- उन्होंने उम्मत ई मोहम्मदिया, हरकत उल हरब-ए-इस्लाम, अंसार उल तौहीद फाई बिलाद अल हिंद और जुनूद अल खिलफा ई हिंद जैसे विभिन्न समूहों का गठन किया है।
- हालाँकि, किसी ने भी उनके करीबी गुट से परे कोई प्रभाव नहीं डाला है।
- इनमें से अधिकांश समूहों को अपनी जेब से योगदान देने वाले सदस्यों के साथ विस्फोटकों और हथियारों के लिए व्यवस्था करने के लिए बनाया गया था।
- पोटैशियम क्लोरेट जैसे स्थानीय रूप से उपलब्ध विस्फोटक माचिस की तीली जैसे तेज़ हैं जो आसानी से आग पकड़ लेते हैं और उनमें अमोनियम नाइट्रेट पाया गया है। वे ऑनलाइन ट्यूटोरियल के माध्यम से बम बनाना सीखते हैं।

### भारत की प्रतिक्रिया

- परामर्श दृष्टिकोण: भारतीय सुरक्षा प्रतिष्ठान ने सावधानी के साथ IS के प्रभाव के मुद्दे पर संपर्क किया है।
- IS में भर्ती होने वाले कई लोग जो IS की ऑनलाइन सामग्री की सर्फिंग करते समय पकड़े गये या सीरिया में पलायन करने की कोशिश करते समय पकड़े गए उनकी काउंसिलिंग की गई थी, जिसके तहत वे एक सख्त कार्यक्रम से गुजरना होता है और आगे ये काम न करने की चेतावनी के साथ उन्हें छोड़ा जाता जाता है।
- दृष्टिकोण को इस तथ्य से सूचित किया जाता है कि एक बहुत बड़ी मुस्लिम आबादी के बावजूद, भारत ने IS में बहुत कम भर्तियां भेजी हैं।
- भारतीय सुरक्षा प्रतिष्ठान का मानना है कि IS में शामिल होने के लिए उत्सुक युवाओं में से कुछ को IS ऑनलाइन प्रचार से महरूम कर दिया गया है, जिसने वीडियो गेम जैसे मैकाब्रे वीडियो के साथ एक युवा को आकर्षित किया है।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► आतंकवाद और धर्म के बीच क्या संबंध है? हाल के उदाहरणों के साथ विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## मुस्लिम ब्रदरहुड (भाईचारा) को आतंकवादी संगठन घोषित



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || आतंक

### शीर्षक

मुस्लिम ब्रदरहुड (भाईचारा) को आतंकवादी संगठन घोषित करने के लिए व्हाइट हाउस (अमेरिका) का समर्थन

### सुर्खियों में क्यों ?

► व्हाइट हाउस ने कहा कि मुस्लिम ब्रदरहुड को एक विदेशी आतंकवादी संगठन नामित करने का एक प्रस्ताव "आंतरिक प्रक्रिया के माध्यम से अपना काम कर रहा था"।

### पूर्वी घटनाक्रम

- यह बयान अप्रैल 2019 में व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और मिस्र के अब्देल फताह अल-सीसी के बीच एक बैठक से जुड़ा हुआ था, जिसके दौरान मिस्र के नेता ने संयुक्त राज्य अमेरिका से भाईचारे पर मंजूरी देने का आग्रह किया था, जो उनकी सरकार का विरोध करता है।
- हाल ही में, ट्रम्प प्रशासन ने ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) को एक विदेशी आतंकवादी संगठन (FTO) के रूप में नामित किया।
- यह पदनाम, जिसने आईआरजीसी और संगठनों, कंपनियों और व्यक्तियों से संबंधित दोनों पर व्यापक आर्थिक और यात्रा प्रतिबंध लगाए थे, 15 अप्रैल, 2019 को लागू हुए हैं।

### विदेशी आतंकवादी संगठन (FTO)

- **संयुक्त राज्य आव्रजन और राष्ट्रीयता अधिनियम की धारा 219 अमेरिकी विदेश मंत्री** अमेरिकी सचिव को को यह अधिकार देता है कि वह एक संगठन को एक विदेशी आतंकवादी संगठन के रूप में नामित सकता है, यदि यह पता चलता है कि -
- संगठन एक विदेशी संगठन है;
- संगठन आतंकवादी गतिविधि या आतंकवाद, में संलग्न है या
- संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिकों की सुरक्षा या संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा है।
- **आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई:** आतंकवाद के खिलाफ राज्य विभाग के ब्यूरो का कहना है कि FTO पदनाम आतंकवाद के खिलाफ (अमेरिका की) लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और आतंकवादी गतिविधियों और आतंकवाद के कारोबार से बाहर निकलने के लिए समूहों पर दबाव बनाने के लिए एक प्रभावी साधन हैं।

► **अइसठ आतंकवादी संगठन** वर्तमान में अमेरिकी राज्य विभाग की FTOs की सूची में शामिल हैं, जिनमें हमास, हिजबुल्लाह, अल-कायदा और इसकी क्षेत्रीय शाखाएं, इस्लामिक स्टेट और इसके क्षेत्रीय संचालन, जुदाल्लाह, बोको हरम और कोलम्बियाई FARC शामिल हैं।

► **सूची में पाकिस्तान और अफगानिस्तान** पर आधारित कई संगठन भी हैं, जो सीधे तौर पर भारत को धमकी देते हैं, जैसे जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा, हिज्ब उल-मुजाहिदीन, हक्कानी नेटवर्क और लश्कर-ए-झांगवी।

► इंडियन मुजाहिदीन, LTTE, और हरकत-उल जिहाद अल-इस्लामी-बांग्लादेश भी एफटीओ की सूची में हैं।

### मुस्लिम ब्रदरहुड (भाईचारा)

► यह एक आंदोलन है जो मिस्र में 1928 में हासन अल-बन्ना नामक एक स्कूली छात्र द्वारा स्थापित किया गया था, जिसने प्रचार किया कि एक इस्लामी धार्मिक पुनरुत्थान मुस्लिम राष्ट्रों को उनकी स्थिति में सुधार करने और उनके औपनिवेशिक स्वामित्व को हराने में मदद करेगा।

► जबकि, हसन अल-बन्ना मुस्लिम पुनरुत्थानवादी सरकार की वकालत करने के लिए विशिष्ट नहीं थे, तब उनके विचारों ने पूरी दुनिया में यात्रा की और बड़ी संख्या में इस्लामिक समूहों और आंदोलनों को प्रेरित किया - न केवल राजनीतिक आंदोलनों और पार्टियों, बल्कि शक्तिशाली संसदीय भी और धर्मार्थ की भी पहल की।

► जॉर्डन, इराक, कुवैत, बहरीन, मोरक्को, तुर्की और ट्यूनीशिया ऐसे देशों में से हैं, जिनकी बड़ी पार्टियां हैं जो भाईचारे की उत्पत्ति का पता लगाती हैं।

► आज के सभी आंदोलनों और संगठनों ने खुद को मुस्लिम ब्रदरहुड नहीं कहा है।

### आतंकवादी अभिमुखता

► **सशस्त्र विंग:** 1940 के दशक में, मिस्र के मुस्लिम ब्रदरहुड ने एक सशस्त्र विंग बनाया और 1948 में, इसके सदस्यों में से एक ने प्रधान मंत्री, महमूद फहमी अल-नोकराशी पाशा की हत्या कर दी।

► हसन अल-बन्ना ने हत्यारों को "न तो भाइयों और न ही मुसलमानों" के रूप में घोषित किया, और 1960 के दशक में, ब्रदरहुड ने औपचारिक रूप से घोषणा की कि वे केवल "प्रचारक" थे।

► इतिहासकारों और विश्लेषकों के बीच अब व्यापक सहमति है कि कम से कम एक संगठन के रूप में मिस्र के ब्रदरहुड ने तब से हिंसक कार्यवाई नहीं की है।

► **विभाजन:** 2013 में काहिरा (Cairo) में सैन्य अधिग्रहण के बाद मिस्र के ब्रदरहुड जैसे हमास और लिवा अल-थवारा के कुछ गुटों ने सरकार के खिलाफ हिंसा की थी।

► इन दोनों समूहों को पहले ही अमेरिका द्वारा FTOs के रूप में नामित किया जा चुका है।

► लेकिन राष्ट्रपति अल-सीसी ने ब्रदरहुड पर आतंकवाद का समर्थन करने और उसे अंजाम देने का आरोप लगाया है, जिससे कुछ ब्रदरहुड इनकार कर रहे हैं।

► मिस्र के बाहर, हमास, मुस्लिम ब्रदरहुड का एक हिस्सा है जिसे अमेरिका ने एफटीओ के रूप में नामित किया है, उसने इस्राइली नागरिकों पर बमबारी और रॉकेट से हमले किए।

► अयमान अल-जवाहिरी, अल-कायदा का भगोड़ा नेता, मिस्र ब्रदरहुड का एक पूर्व सदस्य है - हालांकि, उसने ब्रदरहुड द्वारा ली गई अहिंसक स्थिति को आत्मसात कर लिया है; ब्रदरहुड ने अल-कायदा की कड़ी आलोचना की है।

- **बंटवारा (Crosshairs):** दुनिया भर में, मुस्लिम ब्रदरहुड आंदोलनों ने लोकतांत्रिक चुनावों की वकालत की है, जिसने उन्हें सत्ताधारी शासकों के साथ-साथ आतंकवादी इस्लामवादियों के में बाँट दिया।
- मिस्र में, ब्रदरहुड 1980 के दशक से संसद में रहा है और 2011 में राष्ट्रपति होसनी मुबारक को हटाए जाने के बाद, इसने संसदीय चुनाव में अच्छा प्रदर्शन किया, इसके एक नेता मोहम्मद मुर्सी राष्ट्रपति बने।
- हालांकि, संसद को 2012 में भंग कर दिया गया था और अगले वर्ष मुर्सी (Morsi) को बाहर कर दिया गया था।

### मुख्य प्रश्न

- मुस्लिम ब्रदरहुड क्या है? अमेरिका इसे आतंकवादी संगठन' के रूप में क्यों नामित करना चाहता है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## स्किमिंग क्या है? क्या एटीएम उपयोगकर्ताओं के व्यक्तिगत डेटा को चुरा सकता है



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || साइबर सुरक्षा

### शीर्षक

स्किमिंग क्या है? क्या एटीएम उपयोगकर्ताओं के व्यक्तिगत डेटा को चुरा सकता है? जानिए इससे बचाव के तरीके।

### सुर्खियों में क्यों ?

- दिल्ली पुलिस ने पाया कि सात दिनों के भीतर तीन एटीएम के 87 खातों से 19 लाख रुपये की धोखाधड़ी की गई थी।
- यह स्किमिंग द्वारा किया गया था, एक प्रक्रिया जिसमें अपराधी चोरी के डेटा के साथ एटीएम कार्ड प्रतिलिपि बनाते हैं। ये देश में मिसाल बन चुके हैं।

### स्किमिंग

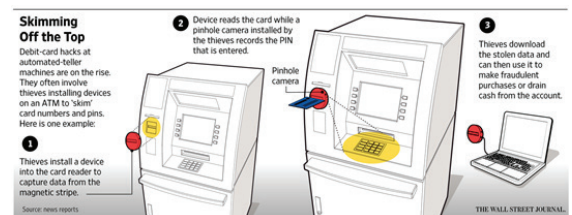
- **कार्ड प्रविष्टि स्लॉट की तरह दिखने और परिवर्तित करने के लिए डिज़ाइन किया गया उपकरण:** स्किमर एक उपकरण है जो एटीएम कार्ड प्रविष्टि स्लॉट की तरह दिखता है और कार्ड को बदलने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- स्किमर्स, जो आमतौर पर एक अप्रशिक्षित नेत्रो द्वारा देखा नहीं जा सकता है, विदूत परिपथ तंत्र है, जो एटीएम कार्ड की चुंबकीय पट्टी पर डेटा को पढ़ते हैं और संग्रहीत करते हैं, यहां तक कि एटीएम भी उसी डेटा को संसाधित करता है।
- **पिनहोल कैमरा:** आमतौर पर, जालसाज़ भी कैश डिस्पेंसर के शीर्ष, जमा स्लॉट या कीबोर्ड के ऊपर की तरह अगोचर स्थानों में पिनहोल कैमरा स्थापित करते हैं। यह कार्ड के लिए पिन चुराता है।
- कुछ मामलों में, अपराधियों ने एक स्किमिंग उपकरण के साथ लगे एक धोखाधड़ी पूर्ण पिन पैड का उपयोग किया है और मूल पिन पैड को रखा है।
- स्थापना के कुछ दिनों बाद, अपराधी स्किमिंग मशीनों और कैमरों को पुनर्प्राप्त कर लेते हैं और चुराए गए डेटा को एकत्र करते हैं, और कार्ड के लिए पिन को डिकोड करते हैं।
- एक मामले में, तिरुवनंतपुरम में, स्किमर और कैमरे से दूरस्थ वायरलेस मोड में डेटा एकत्र किया गया था।
- **एटीएम कार्ड का प्रतिलिपि:** चोरी किए गए डेटा का उपयोग करके, अपराधी एटीएम कार्डों का प्रतिलिपि बनाते हैं और विभिन्न शहरों में इनका उपयोग करते हैं; अन्य समय में, वे डेटा को सहयोगियों को स्थानांतरित करते हैं, या अन्य गिरोह को डेटा बेच देते हैं।

### बेंगलुरु

- **2017:** सितंबर 2017 में, अलर्ट कैश लोडिंग एजेंट को बेंगलुरु में कोटक महिंद्रा बैंक के एटीएम से जुड़े अवैध उपकरण मिले।
- पुलिस ने बेंगलुरु के समस्त बैंक अधिकारियों को अन्य एटीएम में समान उपकरणों की जांच करने का आदेश दिया।
- पुलिस को बेंगलुरु अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक कोटक महिंद्रा एटीएम में एक समान स्किमर और मिनी कैमरा स्थापित मिला।
- सीसीटीवी फुटेज से पता चला कि उन्हीं लोगों ने 40 किमी दूर दो कियोस्क पर स्किमर और कैमरा लगाया था।
- कर्नाटक CID ने दो एटीएम में जाल बिछाया
- रोमानियाई राष्ट्रीय डैन सबिन क्रिश्चियन, 40 और हंगेरियन राष्ट्रीय मार जानोस, 44, जो 1 सितंबर, 2017 को पहली बार टूरिस्ट वीजा पर भारत आए थे और 19 सितंबर को वापस जाने के लिए, एटीएम के एक स्किमर कैमरा को पुनः प्राप्त करने के लिए जब उन्होंने एक एटीएम में प्रवेश किया, जिसे उन्होंने पहले स्थापित किया था, तब उन्हें हिरासत में ले लिया गया।
- दोनों पहले इसी तरह के अपराध के लिए जमैका में पकड़े गए थे।
- पूछताछ के दौरान, उन्होंने दावा किया कि वे विदेश में यात्रा के दौरान एटीएम कार्ड डेटा चोरी करने में शामिल एक गिरोह के यूके-आधारित ऑपरेटर के लिए काम कर रहे थे।
- 2018 में, ईसाई और जानोस बेंगलुरु से जमानत पर चले गए और मुकदमे का सामना किए बिना गायब हो गए।

### अन्य शहर

- कार्यप्रणाली का मिलान किया गया: 2016 में तिरुवनंतपुरम में एटीएम में डेटा चोरी करने वाले और दिसंबर 2017 में हैदराबाद और मुंबई में डेटा चोरी करने वाले, दो व्यक्तियों की कार्य प्रणाली का मिलान किया गया।
- तिरुवनंतपुरम: तिरुवनंतपुरम मामले में, संदिग्धों में से एक को मुंबई में गिरफ्तार किया गया था।
- जांच में पता चला कि स्किमर्स और कैमरे तिरुवनंतपुरम के एटीएम में लगाए गए थे, पास के एक होटल में वायरलेस मोड में डेटा एकत्र किया गया था और कार्डों का प्रतिलिपि बनाया गया था; बाद में इन्हें भारत के अन्य हिस्सों में स्वाइप किया गया, जहां गिरोह ने अपने यात्रा वीजा पर यात्रा की थी।
- हैदराबाद: हैदराबाद के मामले में चार रोमानियाई नागरिक शामिल पाए गए। वे दिसंबर 2017 में भारत आए और मुंबई और हैदराबाद को निशाना बनाया।
- बिना गार्ड वाले विभिन्न एटीएम में स्किमर्स और मिनिचर कैमरे स्थापित करने के बाद, उन्होंने 500 डेबिट कार्डों का



प्रतिरूपण किया और हैदराबाद निवासी के एक खाते से 1 लाख रुपये सहित 35 लाख रुपये निकाल लिए।

► इस गिरोह ने कथित तौर पर नाइजीरियाई नागरिकों के एक अन्य गिरोह की सेवाओं का उपयोग किया, जो यूरो में पैसे को परिवर्तित करने और पश्चिमी संघ की सहायता से उसे रोमानिया में स्थानांतरित कर रहे थे।

► साइबराबाद पुलिस ने सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से गिरोह की पहचान की।

► अप्रैल 2019 में, कोलकाता पुलिस के जासूसी विभाग ने दो एटीएम में स्किमर और कैमरे लगाने के लिए तीन रोमानियाई नागरिकों को गिरफ्तार किया।

## विस्तार

► **बड़े शहर छोटे शहरों में:** इस प्रकार के मामले छोटे शहरों से भी बताए जा रहे हैं। यहां तक कि भारतीय गिरोह भी शामिल हैं।

► इन दिनों अधिकांश एटीएम में सुरक्षा नहीं होती है और कैश लोड करने वाले लोग भी शायद ही एटीएम में लगे अवैध संलग्नकों से परिचित होते हैं, इसलिए ऐसे मामले बढ़ रहे हैं।

► **दिल्ली का मामला:** दिल्ली मामले में, स्थानीय अपराधियों पर संदेह है।

► भारतीय गिरोह में जो शामिल पाए गए हैं वे, बहुसंख्यक लोग या तो डार्क वेब और प्रतिरूपित कार्ड पर डेटा खरीदते हैं, जबकि कुछ व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में कार्ड स्वाइप मशीन पर छोटे स्किमर्स स्थापित करके डेटा चोरी करते हैं।

## रोकथाम

► स्किमिंग की रोकथाम संभव है -

► एटीएम में नकदी लोड करने वाले लोगों और बैंक अधिकारियों की सतर्कता जो एटीएम में लगाए गए किसी भी गैरकानूनी उपकरण को देख सकते हैं;

► एटीएम में गार्ड की तैनाती

► ऐसी मशीनें स्थापित करना जो कैमरों और स्किमर्स की स्थापना को सुविधाजनक नहीं बनाती हैं; तथा

► नए हाई-सिक्योरिटी बैंक कार्ड्स का उपयोग करना जिसमें स्कीमिंग के जरिए डेटा चोरी करने की सुविधा है।

## मुख्य प्रश्न

► स्किमिंग क्या है? क्या एटीएम उपयोगकर्ताओं के व्यक्तिगत डेटा को चुरा सकता है? इससे बचाव के तरीके क्या हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## कश्मीर का मोस्ट वांटेड उग्रवादी जाकिर मूसा की हत्या हिंदी में

प्रशान्त धवन द्वारा



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || सुरक्षा || आंतरिक सुरक्षा के खतरे || जम्मू और कश्मीर मिलिटेंसी

### शीर्षक

कश्मीर का मोस्ट वांटेड उग्रवादी जाकिर मूसा की हत्या

### सुर्खियों में क्यों ?



- ▶ भारतीय सुरक्षा बलों ने 23 मई, 2019 को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले में शीर्ष कश्मीरी आतंकवादी जाकिर मूसा को मार गिराया।

### जाकिर मूसा

- ▶ हिज्बुल मुजाहिदीन का पूर्व कमांडर
- ▶ सोशल मीडिया पर बड़ी संख्या में अनुयायी के साथ नई पीढ़ी के उग्रवादियों में से एक
- ▶ अल कायदा जैसे वैश्विक जिहादी समूहों के प्रति आत्मीयता
- ▶ अंसार-गज़ावत-उल-हिंद नामक अल-कायदा के आतंकवादी सेल की स्थापना

### अलकायदा

- ▶ एक आतंकवादी सुन्नी इस्लामवादी बहु-राष्ट्रीय संगठन जिसकी स्थापना 1988 में ओसामा बिन लादेन और अन्य ने अफगानिस्तान पर सोवियत आक्रमण के दौरान की थी।
- ▶ इसे UNSC द्वारा आतंकवादी समूह के रूप में नामित किया गया है।
- ▶ इसकी विचारधारा के रूप में, यह मानव निर्मित कानूनों के विरोध में है और इन्हें शरिया से प्रतिस्थापित करना चाहता है।

## जम्मू-कश्मीर में उग्रवाद का नया चेहरा

- ▶ उग्रवाद, राजनीतिक या सामाजिक कार्यों के समर्थन में टकराव या हिंसक तरीकों का उपयोग है।
- ▶ उग्रवादियों की नई पीढ़ी देसी, निर्भीक, युवा, तकनीक प्रेमी और शिक्षित है।
- ▶ वे सोशल मीडिया के माध्यम से 24 \* 7 जुड़े हुए हैं और सार्वजनिक रूप से वैचारिक दृढ़ प्रतिज्ञा रखते हैं।
- ▶ भारत विरोधी ताकतों द्वारा घाटी में मुस्लिम युवाओं को कट्टरपंथी और अलग-थलग करने का एक व्यवस्थित प्रयास है।
- ▶ उग्रवादियों और अलगाववादियों की ढाल बनने के लिए स्थानीय लोग पथराव और सड़क विरोध प्रदर्शन का सहारा लेते हैं।
- ▶ सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन आतंकवादी संगठन द्वारा युवाओं की भर्ती के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान कर रहा है।

## कश्मीर में उग्रवाद के कारण

### आंतरिक

- ▶ **प्रशासनिक** - AFSPA लागू करने और असाधारण हत्याओं के मामलों पर असंतोष
- ▶ शासन संरचनाओं की कमजोर नींव के साथ-साथ शासन का घाटा और भ्रष्टाचार
- ▶ **राजनीतिक** - अनुच्छेद 370 का आंशिक कार्यान्वयन, चुनावी राजनीति के तोड़फोड़ पर असंतोष, धर्म के नाम पर वोट बैंक की राजनीति
- ▶ **आर्थिक** - अवसंरचनात्मक पिछड़ापन, युवाओं में बेरोजगारी, पारंपरिक हस्तकला का विघटन
- ▶ **सामाजिक** - खराब स्वास्थ्य और शैक्षिक संकेतक, मुस्लिम वर्गों को लक्षित करते हुए गायों के प्रति सतर्कता

### बाह्य

- ▶ सीमा पार कट्टरपंथी और परोक्ष युद्ध
- ▶ शत्रुतापूर्ण पड़ोसियों से स्थानीय विद्रोहियों को नैतिक, सामग्री और सैन्य सहायता
- ▶ राज्य प्रायोजित आतंकवाद

## आगे का रास्ता

- ▶ **4 डी दृष्टिकोण** - अलगाववादी ताकतों के खिलाफ लोकतंत्र, विकास, संवाद, प्रत्यक्ष कार्रवाई (4 D approach - Democracy, Development, Dialogue, Direct Action against separatist forces)

## दीर्घावधि

- ▶ न्यायमूर्ति जीवन रेड्डी समिति की सिफारिशों के अनुसार AFSPA को तर्कसंगत बताया गया है
- ▶ अनुच्छेद 370 पर आम सहमति आधारित कार्यान्वयन
- ▶ लोकतांत्रिक संस्थानों को संस्थागत बनाना और स्थानीय प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देना

- ▶ वार्ताकारों के माध्यम से अधिक से अधिक जुड़ाव और संवाद को बढ़ावा देना
- ▶ योजनाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से विकास घाटा की पूर्ति करना
- ▶ आजीविका के अवसरों के विविधीकरण के माध्यम से आर्थिक विकास, पर्यटन को पुनर्जीवित करना, खाद्य प्रसंस्करण या कपड़ा या केसर की खेती जैसे गहन श्रम क्षेत्रों को बढ़ावा देना।
- ▶ एक भारत श्रेष्ठ भारत जैसी पहलों के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देना

### लघु अवधि

- ▶ समुदाय के बुजुर्गों और परिवार की अधिक भागीदारी
- ▶ किसी भी लापता व्यक्ति के लिए अधिक सतर्कता और त्वरित रिपोर्टिंग
- ▶ किसी भी संदिग्ध सोशल मीडिया अकाउंट या पोस्ट की निगरानी करना
- ▶ धारणा प्रबंधन और शिकायत निवारण
- ▶ शिक्षण संस्थानों में युवाओं के बीच **नियमित परामर्श सत्र**

### सरकार द्वारा पहल

### उड़ान

- ▶ 5 वर्ष की अवधि में जम्मू-कश्मीर के 40000 बेरोजगार युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना और रोजगार में वृद्धि करना है।
- ▶ भारत के सर्वश्रेष्ठ कॉरपोरेटों में बेरोजगार स्नातकों को अवसर प्रदान करना।
- ▶ कॉर्पोरेट भारत को राज्य में उपलब्ध समृद्ध प्रतिभा प्रदान करना।

### नई मंजिल

- ▶ सामुदायिक शिक्षित संस्थानों में स्कूल छोड़ने वाले या शिक्षित लोग, जो 17 से 35 वर्ष के आयु वर्ग हैं, उन अल्पसंख्यक युवाओं को लाभान्वित करने का उद्देश्य
- ▶ उन्हें औपचारिक शिक्षा का एक एकीकृत निवेश प्रदान करना (कक्षा आठवीं तक)
- ▶ संगठित क्षेत्र में बेहतर रोजगार पाने के लिए उन्हें सक्षम बनाने के उद्देश्य से, प्रमाणपत्र के साथ-साथ कौशल प्रशिक्षण।

### USTTAD

- ▶ अल्पसंख्यकों के पारंपरिक पुश्तैनी कला / शिल्प के संरक्षण में **कौशल और प्रशिक्षण के उन्नयन** के उद्देश्य से।

### नई रोशनी

- ▶ सरकारी प्रणालियों, बैंकों और अन्य संस्थानों के साथ बातचीत कर, योजना के अंतर्गत अल्पसंख्यक महिलाओं को ज्ञान, उपकरण और तकनीक प्रदान करके सभी स्तरों पर सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना।

- ▶ साथ ही, जम्मू और कश्मीर सरकार राज्य के उग्रवादियों को हथियार छोड़ने और उन्हें मुख्यधारा में लाने में मदद करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है, साथ ही उनकी पुनर्वास नीति पर विचार कर रही है।

### मुख्य प्रश्न

- ▶ कट्टरपंथीकरण में हालिया उछाल जम्मू-कश्मीर के सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन में निहित है। टिप्पणी।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## आपदा प्रबंधन

**चक्रवात फानी, यह दुर्लभ चक्रवात क्यों है? उष्णकटिबंधीय चक्रवात कैसे बनते हैं**



हिंदी में

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || आपदा प्रबंधन || प्रमुख आपदाएँ || चक्रवात

## शीर्षक

**चक्रवात फानी, यह दुर्लभ चक्रवात क्यों है? उष्णकटिबंधीय चक्रवात कैसे बनते हैं?**

## सुर्खियों में क्यों ?

► मई में ओडीशा तट पर **फानी** नाम का एक बहुत शक्तिशाली चक्रवाती तूफान आया है। यह तीव्र चक्रवात अप्रैल-मई के इस मौसम में बंगाल की खाड़ी में दुर्लभ और असामान्य है।

► चक्रवात फानी को "अत्यंत गंभीर चक्रवात" के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

## उष्णकटिबंधीय चक्रवात

► गर्म महासागर जल : चक्रवात थोड़े गर्म समुद्र के जल पर बनते हैं।

► चक्रवात के निर्माण के लिए समुद्र की शीर्ष परत का तापमान, लगभग 60 मीटर की गहराई तक, कम से कम 28° C होना चाहिए।

► यह बताता है कि अप्रैल-मई और अक्टूबर-दिसंबर अवधि चक्रवात के लिए अनुकूल क्यों हैं।

► उत्तरी गोलार्ध में एंटीक्लॉकवाइज रोटेशन: पानी के ऊपर हवा के निम्न स्तर के लिए एक 'एंटीक्लॉकवाइज' रोटेशन (उत्तरी गोलार्ध में; दक्षिणी गोलार्ध में घड़ी की दिशा में) की आवश्यकता होती है।

► आईटीसीजेड: इस अवधि के दौरान, बंगाल की खाड़ी के क्षेत्र में एक क्षेत्र है (जिसे अंतर-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र कहा जाता है जो मौसम के साथ बदलता है) -

► दक्षिणी सीमा में पश्चिम से पूर्व की ओर हवाएं बहती हैं।

► जबकि उत्तरी सीमा में पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली हवाएँ हैं।

► यह हवा के एंटीक्लॉकवाइज घुमाव को प्रेरित करता है। एक बार बनने के बाद, इस क्षेत्र में चक्रवात आमतौर पर उत्तर पश्चिम की ओर बढ़ते हैं।

► जब यह समुद्र के ऊपर से गुजरता है, तो चक्रवात गर्म समुद्र से अधिक नम हवा इकट्ठा करता है, और इसकी अधिकांश मात्रा को आपने साथ ले लेता है।

## प्रसार

► पूर्वी तट में सामान्य घटना: भारत का पूर्वी तट चक्रवातों के लिए कोई अजनबी नहीं है। बंगाल की खाड़ी में हर साल औसतन पाँच से छह महत्वपूर्ण चक्रवाती तूफान उभरते हैं।

► मानसून की शुरुआत से ठीक पहले अप्रैल और मई के महीने, और फिर मानसून के अंत के तुरंत बाद अक्टूबर से दिसंबर, उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के लिए प्रमुख मौसम होते हैं।

► फिर भी, फानी का आना थोड़ा अजीब है, मुख्य रूप से अपनी शक्ति के आधार पर, और जिस तरीके से यह आया है।

► अप्रैल-मई में उभरने वाले चक्रवात आमतौर पर अक्टूबर-दिसंबर की तुलना में बहुत कमजोर होते हैं।

► 1891 के बाद से अप्रैल में बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में "गंभीर चक्रवात" के केवल 14 उदाहरण हैं, और उनमें से केवल एक, जो 1956 में आया था, ने भारतीय मुख्य भूमि को छू लिया था।

► अन्य सभी दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र में बांग्लादेश, म्यांमार या अन्य देशों से टकराने के लिए पूर्वोत्तर की ओर बढ़े।

► 1990 के बाद से, अप्रैल में इस प्रकार के केवल चार चक्रवात आए हैं।

## अक्टूबर-दिसंबर चक्रवात

► समुद्र के ऊपर अधिक समय: चक्रवात पर आधारित सामान्य नियम के आधार पर (या हरिकेन्स और टाइफून के लिए, जैसा कि उन्हें अमेरिका और जापान में कहा जाता है) यह कहा गया है कि वे जितना अधिक समय समुद्र पर बिताते हैं, उतना ही मजबूत होते जाते हैं।

► अमेरिका के चारों ओर हरिकेन्स, जो विशाल खुले प्रशांत महासागर में उत्पन्न होते हैं, आमतौर पर बंगाल की खाड़ी के एक अपेक्षाकृत संकीर्ण और संलग्न क्षेत्र में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की तुलना में बहुत अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं।

► स्थल से टकराने के बाद यहाँ उत्पन्न होने वाले चक्रवात, घर्षण और नमी की अनुपस्थिति के कारण तेजी से क्षय होते हैं।

## चक्रवात फानी

► "अत्यधिक गंभीर चक्रवात": फानी सिर्फ एक गंभीर चक्रवात नहीं है, बल्कि एक "अत्यंत गंभीर चक्रवात" है।

► बंगाल की खाड़ी में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों को उनके केंद्र में हवा की अधिकतम गति के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है।

► अवसाद(अवनमन) जो हवा की गति 30 से 60 किमी प्रति घंटा उत्पन्न करते हैं,

► चक्रवाती तूफान (61 से 88 किलोमीटर प्रति घंटे),

► गंभीर चक्रवाती तूफान (89 से 117 किलोमीटर प्रति घंटे),

► बहुत गंभीर चक्रवाती तूफान (118 से 166 किलोमीटर प्रति घंटे),

नोट्स

- अत्यंत गंभीर चक्रवाती तूफान (167 से 221 किलोमीटर प्रति घंटे) और
- सुपर साइक्लोन (222 किलोमीटर प्रति घंटे या अधिक)।
- उत्पत्ति: अप्रैल-मई में चक्रवात की उत्पत्ति स्थानीय रूप से बंगाल की खाड़ी में होती है, जो स्थल से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित होता है।
- दूसरी ओर, अक्टूबर-दिसंबर में चक्रवात आमतौर पर चक्रवाती प्रणालियों के अवशेष होते हैं जो प्रशांत महासागर में उभरे, लेकिन बंगाल की खाड़ी में आने का प्रबंधन करते हैं, दक्षिण चीन सागर के पास दक्षिण पूर्व एशियाई भूखंड को पार करने के बाद काफी कमजोर हो जाते हैं।
- इन प्रणालियों में पहले से ही कुछ ऊर्जा होती है, और वे बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरते हुए गति पकड़ते हैं।
- बंगाल की खाड़ी में स्थानीय रूप से चक्रवाती प्रणाली आमतौर पर चेन्नई या तिरुवनंतपुरम के साथ 10 ° अक्षांश के आसपास उत्पन्न होती है।
- दूसरी ओर फ़ानी, भूमध्य रेखा के काफी करीब श्रीलंकाई भूखंड से लगभग 2 °, नीचे उत्पन्न हुआ।
- मार्ग: ओडिशा तट पर पूर्वानुमान का अनुमान लगभग 20 ° अक्षांश पर है।
- इसने समुद्र पर एक लंबा रास्ता तय किया है, इस प्रकार इस मौसम में इतनी सामर्थ्य प्राप्त करना बंगाल की खाड़ी में उत्पन्न होने वाले चक्रवातों के लिए असामान्य है।
- यह शुरू में तमिलनाडु तट के साथ उत्तरपश्चिम की ओर जाता था, लेकिन बीच में रास्ता बदलने के कारण ओडिशा तट तक पहुंचने के लिए उत्तर-पूर्व तट की ओर घूम गया। इसने इसे समुद्र पर और भी अधिक समय दिया है।
- फ़ानी, इस प्रकार, असामान्य है और इसका मुख्य कारण है कि यह जिस स्थान पर उत्पन्न हुआ है, वह भूमध्य रेखा के बहुत करीब है और भूखंड तक पहुंचने के लिए इसके द्वारा लंबा
- रास्ता तय किया गया है।

### मुख्य प्रश्न

- उष्णकटिबंधीय चक्रवात कैसे बनते हैं? चक्रवात फ़ानी सबसे दुर्लभ क्यों है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



## रूम फॉर द रिवर परियोजना क्या है



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || आपदा प्रबंधन || बड़ी आपदा || बाढ़

### शीर्षक

रूम फॉर द रिवर परियोजना क्या है

### सुर्खियों में क्यों ?

► 8 मई, 2019 से शुरू होने वाले अपनी 13-दिवसीय यूरोपीय दौरे की शुरुआत में, केरल के मुख्यमंत्री पिनारयी विजयन नीदरलैंड्स के नूरड्वार्ड में 'रूम फॉर द रिवर परियोजना' की साइट पर रुके थे।

### नीदरलैंड में बाढ़ प्रबंधन

► नीदरलैंड में 55% आवास बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में स्थित हैं।  
 ► सदियों से, डचों ने खाड़ी में पानी रखने के लिए उच्च से उच्चतर डाईक (dikes) का निर्माण किया है।  
 ► लेकिन जलवायु परिवर्तन ने उन्हें यह स्पष्ट कर दिया है कि यह दृष्टिकोण अब काम नहीं करेगा, इसलिए देश ने उफनती हुई नदियों के लिए जगह बनाने के लिए दर्जनों डाईको को पीछे हटाने के एक विशाल कार्य को शुरू किया।

### 'रूम फॉर द रिवर' प्रोजेक्ट क्या है?

रूम फॉर रिवर परियोजना का मूल आधार अनिवार्य रूप से जल निकाय के लिए अधिक स्थान प्रदान करना है ताकि यह बाढ़ के दौरान असाधारण उच्च जल स्तर का प्रबंधन कर सके।

► परियोजना को परिभाषित करने वाले माप निम्नलिखित हैं:

1. बाढ़ के मैदान/गाद का निम्निकरण
2. तल को गहरा करना
3. डाईक्स को मजबूत बनाना
4. डाईक का स्थानांतरण
5. ग्रीन (पुलिन-रोध) की ऊंचाई कम करना
6. सहायक नदियों की गहराई बढ़ाना
7. रोधिकाओं को दूर करना

► परियोजना का एक महत्वपूर्ण पहलू जल प्रपात और विशाल दीवारों के माध्यम से नदी के किनारों के परिवेश में सुधार करना भी है।

► किसी भूमि प्रदेश को इस तरह से बदल दिया जाता है कि वे प्राकृतिक स्पंज (पानी सोखने वाली वस्तु) में बदल जाते हैं जो बाढ़ के दौरान अतिरिक्त पानी को समायोजित कर सकते हैं।

### लक्ष्य:

- बाढ़ से देश की सुरक्षित करने के लिए उसकी सुरक्षा बढ़ाना
- नदियों के आसपास के क्षेत्र में एक स्थानिक गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए देश को नदियों के माध्यम से फिर से जोड़ना

### यह डाईक (dykes) से "रूम फॉर रिवर" प्रोजेक्ट में क्यों चला गया?

- यह डाईक (dykes) से "रूम फॉर रिवर" प्रोजेक्ट में क्यों चला गया?

### नीदरलैंड मॉडल की सफलता का कारण?

- **समुदाय और सरकार अधिकारियों की भागीदारी:**
- स्थान का चयन करने के लिए जो मानदंड बनाए जाते हैं उनमें स्थानीय लोगों और सरकारी अधिकारियों के हितधारकों की भागीदारी भी थी।
- स्थानीय सरकार के पास वाटरफ्रंट को बदलने का अवसर है और काम के लिए भुगतान राष्ट्रीय सरकार द्वारा किया जाता है।
- निज्मेजेन शहर की "रूम फॉर द रिवर" योजना को वाशिंगटन, डीसी-आधारित वाटरफ्रंट से "एक्सीलेंस ऑन वाटरफ्रंट ऑनर अवार्ड 2011" प्राप्त हुआ है।

### केरल को जरूरत है ?

- **समुदाय और सरकार अधिकारियों की भागीदारी:**
- स्थान का चयन करने के लिए जो मानदंड बनाए जाते हैं उनमें स्थानीय लोगों और सरकारी अधिकारियों के हितधारकों की भागीदारी भी थी।
- स्थानीय सरकार के पास वाटरफ्रंट को बदलने का अवसर है और काम के लिए भुगतान राष्ट्रीय सरकार द्वारा किया जाता है।
- निज्मेजेन शहर की "रूम फॉर द रिवर" योजना को वाशिंगटन, डीसी-आधारित वाटरफ्रंट से "एक्सीलेंस ऑन वाटरफ्रंट ऑनर अवार्ड 2011" प्राप्त हुआ है।

### इससे केरल को कैसे मदद मिलेगी?

- पिछले साल, केरल ने सदी की सबसे भीषण बाढ़ देखी थी, जिसने लगभग 500 लोगों की जान ले ली थी और हजारों घरों को बहा ले गई थी।
- पिछले साल बाढ़ में, कोट्टायम और अलप्पुझा जिलों में कुट्टनाड और आसपास के क्षेत्र हफ्तों तक डूबे रहे।

### केरल की योजना

► केरल की एलडीएफ सरकार का मानना है कि परियोजना और उसके मूलभूत आदर्शस्वरूप को कुट्टनाड का प्रतिकृत रूप दिया जा सकता है, इस राज्य का राइस बाउल (the state's rice bowl) समुद्र तल से नीचे स्थित है।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## सूरत अग्नि हादसे से सीख हिंदी में

प्रशान्त धवन द्वारा



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || आपदा प्रबंधन || प्रमुख आपदाएँ || अन्य

### शीर्षक

सूरत अग्नि हादसे से सीख

### सुर्खियों में क्यों ?

- 24 मई 2019 को गुजरात के सूरत में एक कोचिंग संस्थान में आग लगने से 22 लोगों की मृत्यु हो गयी जिसमें 18 छात्र भी शामिल थे।
- यह आग विदूत उपकरण में आग लगने से फैली।
- आग तीन मंजिल बिल्डिंग के चौथे तल पर लगी, जिसकी अभी मंजूरी मिलनी बाकी थी।
- चौथे तल को भूतल से जोड़ने वाली सीढ़ी बंद थी।
- टायर जैसी ज्वलनशील वस्तुओं ने आग को फैलने में तीव्रता प्रदान की।



### आंकड़े

- एन.सी.आर.बी. के अनुसार गुजरात और महाराष्ट्र दो अत्यधिक शहरीकृत राज्य, आग से होने वाली मृत्यु में 30 फीसदी योग देते हैं।
- यू.एन.आई.एस.डी.आर. के अनुसार भारत विश्व में सबसे अधिक आपदा प्रवण राष्ट्र है।

### आपदा की परिभाषा

- व्यापक सामग्री, आर्थिक, पर्यावरणीय हानि के परिणामस्वरूप समुदाय की कार्यविधियों में गंभीर व्यवधान उत्पन्न करते हैं। ये सामग्री समुदाय के संसाधनों का प्रयोग करने की क्षमता में वृद्धि करती हैं।

### शहरी अग्नि हादसे

- शहरी आग केवल दुर्घटनाएँ नहीं हैं बल्कि मानव निर्मित आपदाएँ हैं।
- भारतीय शहरों में ऊँचे भवनों के निर्माण में अचानक से तेजी देखी जा रही है।
- ऐसे भवनों की संरचनाओं में पर्याप्त मात्रा में निर्मित अग्नि सुरक्षा प्रणालियों का अभाव है तथा बचाव कार्य स्वाभाविक रूप से कठिन भी हैं।
- शहरी केंद्र तीव्र आर्थिक गतिविधि के केंद्र होते हैं, ऐसे क्षेत्रों में अग्नि हादसे से बड़े पैमाने पर आर्थिक हानि होती है।
- अपेक्षाकृत अधिक जनसँख्या, उच्च घनत्व वाले शहरी केंद्रों में, आग लगने की घटनाओं के कारण अधिक लोगों की मृत्यु होती है।
- यह हानि मानवीय असावधानी तथा नियामक कमियों के कारण है।

### शहरी अग्नि हादसे के कारण

- निजी स्वामित्व
- निर्माण मानकों का उल्लंघन और बिना अनुपालन किये भवनों का निर्माण
- फ्लैक्स, रबर, बांस जैसी अत्यधिक ज्वलनशील सामग्री का प्रयोग
- सुरक्षा प्रक्रियाओं जैसे निकासी निर्देश के संबंध में लापरवाही
- गैर कार्यात्मक अग्नि सुरक्षा उपकरण
- अग्नि शामक, आपातकालीन निकास जैसे एहतियाती रखरखाव का अभाव
- सरकारी एजेंसियों
- लाइसेंस की मंजूरी प्रक्रिया और स्वीकृति में भ्रष्टाचार
- मानकों का अपर्याप्त प्रवर्तन
- निरीक्षणों तथा नियमों में शिथिलता
- दोषपूर्ण नागरिक निकाय और अग्नि सुरक्षा बुनियादी ढांचे की कमी।
- अनियोजित शहरीकरण

### उपाय

### निवारक उपाय

- नेशनल बिल्डिंग कोड 2016 का सख्त अमल
- नियमित निरीक्षण और अग्नि सुरक्षा परीक्षण
- भवन मानकों के उल्लंघन पर भारी जुर्माना
- फायर स्टेशनों की क्षमता निर्माण
- निकास मार्गों के हवाई मानचित्रण हेतु एल.आई.डी.ए.आर. जैसी प्रौद्योगिकी का प्रयोग
- अग्निशमन कार्यशालाओं का आयोजन करके सामुदायिक सहभागिता एवं संवेदना

### उपचार

- नागरिक निकायों तथा अधिकारियों पर जवाबदेही तय करना
- गुजरात सरकार ने इस संबंध में दो नागरिक अधिकारियों को निलंबित किया है।

- ▶ पीड़ित के परिवारों को 4 लाख रूपए के मुआवज़ा की घोषणा
- ▶ कोचिंग संस्थान के मालिकों को इस शिथिलता के लिए कठोर सजा
- ▶ शहरी केंद्रों के बीच सीख और उपयुक्त प्रथाओं को साझा करना

### समान घटनाएं

- ▶ करोल बाग होटल अग्नि हादसा, 2019
- ▶ मुंबई खुला छत रेस्तरां अग्नि हादसा, 2018

### आगे की राह

- ▶ आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 का पूर्णतः कार्यान्वयन
- ▶ रक्षा की पहली पंक्ति के रूप में शहरी स्थानीय निकायों का आधुनिकीकरण एवं क्षमता निर्माण
- ▶ वृहत संसाधन उत्पादन एवं संग्रहण, उदाहरणतः, कैटेस्ट्रोफ़ बांड
- ▶ आपदा बीमा की संस्कृति को बढ़ावा देना
- ▶ अग्नि सेवा एक राष्ट्र विषय होने के नाते, शासन के विभिन्न स्तरों के बीच प्रभावी समन्वय

### अतिरिक्त जानकारी

- ▶ **सैंदाई फ्रेमवर्क 2015-2030** के अंतर्गत, भारत ने निम्न प्रतिबद्धता के लिए स्वीकृति दी है:
- ▶ आपदा जोखिम को सभी आयामों द्वारा समझना
- ▶ राष्ट्रीय से वैश्विक स्तर तक आपदा जोखिम शासन को मजबूत करना
- ▶ लचीलेपन में कमी हेतु आपदा जोखिम में निवेश करना
- ▶ प्रभावी प्रतिक्रिया के लिए किसी भी आपदा हेतु तैयारी को बढ़ाना
- ▶ पुनर्वसन व पुनर्निर्माण सहित रिकवरी में उपयुक्त निर्माण करना

### मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- ▶ भारत में, निरंतर घटित होने वाले शहरी अग्नि हादसे अनियोजित शहरीकरण तथा ध्वस्त शहरी योजना के लक्षण हैं। हाल में घटित सूरत आग त्रासदी के आलोक में समलोचनात्मक विश्लेषण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## विज्ञान और प्रौद्योगिकी

### मंकीपॉक्स का संक्रमण



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

#### प्रासंगिकता

GS 3 || एस एंड टी || स्वास्थ्य और चिकित्सा || रोग

#### शीर्षक

मंकीपॉक्स का संक्रमण

#### सुर्खियों में क्यों ?

सिंगापुर ने एक **नाइजीरियाई व्यक्ति** द्वारा लाए गए **दुर्लभ बंदरों के वायरस** के पहले मामले की सूचना दी है, जिसमें अधिकारियों का कहना है कि वह व्यक्ति शादी में **बुशमीट खाने** से संक्रमित हुआ है।

#### क्या है यह?

► मंकीपॉक्स वायरस (MPXV) एक **आर्थोपॉक्सवायरस** है जो एक वायरल बीमारी का कारण बनता है।

#### रोग की विशेषताएं

- मंकीपॉक्स आमतौर पर एक **स्व-सीमित बीमारी** है।
- इसके लक्षण **14 से 21 दिनों** तक रहते हैं।
- गंभीर मामले **बच्चों में अधिक पाए** जाते हैं।
- **मामलों की गंभीरता** रोगी के स्वास्थ्य की स्थिति से **वायरस के संपर्क की सीमा** पर निर्भर करती है।
- जंगलों में या उसके आस-पास रहने वाले **लोगों को संक्रमित जानवरों से अप्रत्यक्ष या निम्न-स्तर का संपर्क** हो सकता है, जो संभवतः **स्पर्शोन्मुख संक्रमण** का कारण बन सकता है।

#### ऊष्मायन अवधि

► **मंकीपॉक्स की ऊष्मायन अवधि** (संक्रमण से लक्षणों की शुरुआत तक) आमतौर पर **6 से 16 दिनों तक** होती है, लेकिन **5 से 21 दिनों तक** रह सकती है।

#### संक्रमण को दो अवधियों में विभाजित किया जा सकता है

#### ► वायरस के आक्रमण की अवधि (0-5 दिन):

- इसके लक्षणों में बुखार, तीव्र सिरदर्द, लिम्फोडेनोपैथी (लिम्फ नोड की सूजन), पीठ दर्द, माइलगिया (मांसपेशियों में दर्द) और एक तीव्र अस्टेनिया (ऊर्जा की कमी) शामिल है।
- **त्वचा पर फुंसियों की अवधि (बुखार आने के बाद 1-3 दिनों के भीतर):**
  - इस अवधि में **चकत्ते के विभिन्न चरण** अक्सर चेहरे पर शुरू होते हैं और फिर शरीर पर फैलते हैं।
  - **चेहरे (95% मामलों में), और हाथों की हथेलियों और पैरों के तलवे (75% मामलों में)** सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।
  - **मैकुलोपापुल्स** (एक सपाट आधार के साथ घाव) और **पुटिकाओं** (द्रव से भरे छोटे फफोले), **से होने वाले चकत्तों का विकास**, और इसके बाद दरार लगभग 10 दिनों में आ जाती है।
  - **दरार के पूर्ण रूप से गायब होने के लिए तीन सप्ताह आवश्यक हो सकते हैं।**

#### विषैलेपन के प्रकार

#### ► वायरस के दो अलग-अलग समूहों की पहचान की गई है:

- **कांगो बेसिन के क्लोन**
- **पश्चिम अफ्रीकी क्लोन**
- **कांगो बेसिन के क्लोन अधिक विषैले पाए गए हैं।**

#### कुछ मामले

- पश्चिमी और मध्य अफ्रीकी देशों से बंदरों के कुछ मामले सामने आए हैं।
- बढ़ती जागरूकता के साथ अधिक देश, मामलों की पहचान और रिपोर्टिंग कर रहे हैं।
- **1970 के बाद से 10 अफ्रीकी देशों - कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, कांगो गणराज्य, कैमरून, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, नाइजीरिया, आइवरी कोस्ट, लाइबेरिया, सिएरा लियोन, गैबॉन और दक्षिण सूडान से मंकीपॉक्स के मामले सामने आए हैं।**

#### प्रकोप

#### ► 1970:

- मंकीपॉक्स की पहचान मनुष्यों में **पहली बार 1970 में कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य** (तब ज़ाईरे के रूप में जानी जाती थी) में **9-वर्षीय लड़के** में हुई थी, जहां 1968 में चेचक का सफाया हो गया था।
- तब से, अधिकांश मामले **कांगो बेसिन और पश्चिमी अफ्रीका के ग्रामीण वर्षावन क्षेत्रों** में देखे गए हैं, विशेष रूप से कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में, जहां इसे **स्थानिक माना जाता है।**

#### ► 1996-97:

- कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में एक **बड़ा प्रकोप** हुआ था।
- **2003:**
  - संयुक्त राज्य अमेरिका में बंदर पॉक्स के मामलों की पुष्टि की गई, जो कि अफ्रीकी महाद्वीप के बाहर इस बीमारी की पहली रिपोर्ट थी।

• अधिकांश रोगियों के बारे में बताया गया था कि वे पालतू प्रेयरी कुत्तों से निकट से संपर्क में थे जो अफ्रीकी कृन्तकों द्वारा संक्रमित थे जिन्हें देश में आयात किया गया था।

► 2017:

• 2017 में नाइजीरिया ने सबसे बड़े प्रलेखित प्रकोप का अनुभव किया, लगभग 40 सालों तक जब देश ने बंदरों के शिकार के आखिरी मामलों की पुष्टि की थी।

## संचरण

► प्राथमिक संचरण:

• यह एजेंट से प्राथमिक होस्ट तक वायरस का संचरण है।  
• संक्रमण के मामलों के सूचकांक के अनुसार यह संक्रमित जानवरों के रक्त, शारीरिक तरल पदार्थ, या त्वचीय या श्लैष्मिक घावों के सीधे संपर्क से उत्पन्न होता है।

► माध्यमिक संचरण:

• ये मानव-से-मानव संचरण हैं।  
• यह संक्रमित श्वसन पथ के स्राव, संक्रमित व्यक्ति की त्वचा के घावों या हाल के रोगी के तरल पदार्थ या घाव से दूषित पदार्थों के संपर्क में आने के परिणामस्वरूप हो सकता है।  
• संचरण मुख्य रूप से छोटी सांस के कणों के माध्यम से होता है जो कि आम तौर पर लंबे समय तक आमने-सामने के संपर्क के कारण होता है, परिणाम स्वरूप जो सक्रिय मामलों के घरेलू सदस्यों को संक्रमण के अधिक जोखिम में डालता है।  
• जन्मजात मंकीपॉक्स: यह संचरण टीकाकरण या नाल के माध्यम से हो सकता है।  
• हालांकि, आज तक, कोई सबूत नहीं है, कि यह व्यक्ति-से-व्यक्ति संचरण, मानव आबादी में मंकीपॉक्स के संक्रमण को बनाए रख सकते हैं।

## निदान

► मंकीपॉक्स का केवल प्रयोगशाला में निश्चित रूप से निदान किया जा सकता है जहां वायरस को विभिन्न परीक्षणों द्वारा पहचाना जा सकता है जिन्हें विशेष प्रयोगशालाओं में आयोजित करने की आवश्यकता होती है।

## उपचार और टीका

► मंकीपॉक्स के संक्रमण के लिए कोई विशिष्ट उपचार या टीके उपलब्ध नहीं हैं।  
► हालांकि, प्रकोपों को नियंत्रित किया जा सकता है।  
► चेचक को रोकने के लिए चेचक के खिलाफ टीकाकरण 85% प्रभावी साबित हुआ है।  
• हालांकि, वैश्विक चेचक उन्मूलन के अलावा यह टीका आम जनता के लिए उपलब्ध नहीं है।  
• फिर भी, चेचक का टीकाकरण पहले दिए लगने से रोग को कुछ हद तक कम किया जा सकेगा।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## रोगाणुरोधी प्रतिरोध का आर्थिक प्रभाव: आईएसीजी रिपोर्ट



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || स्वास्थ्य और चिकित्सा || रोग

### शीर्षक

आई.ए.सी.जी. द्वारा प्रतिजैविक प्रतिरोध का आर्थिक प्रभाव, इसके बारे में पूर्ण जानकारी

### सुर्खियों में क्यों ?

- ▶ यद्यपि, प्रतिजैविक प्रतिरोध को नीति-निर्माताओं द्वारा एक बड़े स्वास्थ्य संकट के रूप में स्वीकार किया जाता है, परंतु कुछ ने इसके आर्थिक प्रभाव का उल्लेख किया है।
- ▶ प्रतिजैविक प्रतिरोध पर अंतर-समन्वय समूह द्वारा जारी रिपोर्ट जिसका शीर्षक "नो टाइम टू वेट: सेक्यूरिंग द फ्यूचर फ्रॉम ड्रग रेसिस्टेंट इन्फेक्शन्स (No Time to Wait: Securing The Future From Drug Resistant Infections)" है। यह रिपोर्ट वित्तीय हानि परिदृश्य को उजागर करती है।



### विशेषताएँ

- ▶ **वैश्विक आर्थिक हानि:** इस रिपोर्ट के अनुसार, अब से लगभग तीन दशकों में अनियंत्रित प्रतिजैविक प्रतिरोध वर्ष, 2008-09 के वित्तीय संकट के स्तर पर वैश्विक आर्थिक हानि का कारण होगा।
- ▶ **मृत्यु:** वर्ष 2050 तक प्रति वर्ष लगभग 10 मिलियन लोगों की प्रतिरोधी संक्रमण से होने वाली मृत्यु का अनुमान लगाया गया है, जहां एक ओर स्वास्थ्य देखभाल तथा खाद्य उत्पादन की लागत में वृद्धि होगी, वहीं आय असमानता तीव्रता से फैलेगी।
- ▶ **गरीबी:** सबसे बुरी परिस्थिति में, वर्ष 2050 तक विश्व वार्षिक जी.डी.पी. में 3.8 फीसदी कमी का अनुभव करेगा, जबकि वर्ष 2030 तक 24 मिलियन लोगों को अत्यधिक गरीबी की ओर धकेला जाएगा। देशों को इस घटना को शीघ्र स्वीकार करना चाहिए और इसके प्रति कार्यवाही करनी चाहिए।

- उच्च एवं मध्यम आय वाले राष्ट्रों हेतु रोकथाम का मूल्य प्रति वर्ष 2 अमेरिकी डॉलर प्रति व्यक्ति है, जो वहन करने योग्य है।
- गरीब राष्ट्रों के लिए यह मूल्य अधिक है परंतु फिर भी प्रतिरोधक अंतर्भास की लागत की अपेक्षाकृत यह कम है।

### भारत

- ▶ **व्यापक रूपरेखा:** लगभग नौ वर्ष पूर्व भारत ने पहली बार प्रतिजैविक प्रतिरोध के प्रति योजना को व्यापक रूप से प्रकाशित किया था। इसे लागू करने में कठिनाई देखी गई, यह प्रतिरोधक के अतिप्रयोग और अल्पप्रयोग की जुड़वां चुनौतियों को दर्शाता है।
- ▶ आज भी रक्तविषणता तथा निमोनिया जैसी बीमारियों से कई भारतीयों की मृत्यु हो जाती है, क्योंकि उन्हें सही समय पर सही औषधि उपलब्ध नहीं होती है।
- ▶ **असन्तोषजनक विनियमित औषधि उद्योग:** दूसरी ओर, असन्तोषजनक विनियमित औषधि उद्योग का अर्थ यह है कि प्रतिरोधक केवल उन लोगों के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हैं जो लागत वहन कर सकते हैं।

### आगे की राह

- ▶ आई.ए.सी.जी. की यह रिपोर्ट इन बाधाओं को दर्शाती है तथा उन्हें दूर करने के लिए यथोचित प्रयासों का आह्वान करती है।
- ▶ कुछ कदमों की शुरुआत वर्तमान में भी की जा सकती है, जैसे **पशुपालन क्षेत्र में संकटपूर्ण, मानव-प्रयोग प्रतिरोधक औषधियों** यथा किनोलोन को निष्कासित करना। परंतु इन कदमों को केवल विनियमन संस्था द्वारा संचालित नहीं किया जा सकता है।
- निजी उद्योग, लोकपकारी समूह और नागरिक कार्यकर्ता शामिल हैं, को **बहु-हितधारक दृष्टिकोण** की आवश्यकता है।
- **निजी औषधि उद्योगों** को उत्तरदायी रूप से औषधियों को वितरित करने के लिए दायित्व स्वीकार करना चाहिए।
- लोकपकारी संस्थाओं को नई प्रतिरोधक औषधियों के विकास के लिए निधि प्रदान करना चाहिए, वहीं नागरिक कार्यकर्ताओं को जागरूकता अभियान आयोजित करना चाहिए।



## अतिरिक्त जानकारी

## प्रतिजैविक प्रतिरोध (ए.एम.आर.)

- ए.एम.आर. तब घटित होता है जब जीवाणु, विषाणु, कवक अथवा परजीवी जैसे **सूक्ष्मजीव** उन तरीकों से परिवर्तित हो जाते हैं जो **निष्प्रभावी संक्रमण को ठीक करने के लिए प्रयोग की जाने वाली औषधियों का प्रतिपादन करते हैं।**
  - जब सूक्ष्मजीव अधिकांश प्रतिजैविक प्रतिरोधी हो जाते हैं तो उन्हें अक्सर "सुपरबग" कहा जाता है।
  - यह एक मुख्य चिंता का विषय है क्योंकि एक प्रतिरोधी संक्रमण को खत्म कर सकता है, अन्य जीवों में फैल सकता है, तथा वह व्यक्तियों एवं समाज में भारी लागत को भी आरोपित करता है।
- प्रतिजैविक प्रतिरोध **विभिन्न प्रकार के सूक्ष्मजीवों में प्रतिरोध के लिए व्यापक पद** है तथा जीवाणुरोधी, विषाणुरोधी, परजीवीरोधी और कवकरोधी औषधियों को शामिल करता है।
- **कारण:** प्रतिजैविक प्रतिरोध **प्राकृतिक रूप** से घटित होता है परन्तु **औषधियों के अनुचित उपयोग से प्रसारित होता है**, उदाहरणतः विषाणु संक्रमण यथा सर्दी या फ्लू के लिए प्रतिरोधक औषधियों का प्रयोग करना या प्रतिरोधक औषधों को साझा करना।
  - निम्न गुणवत्ता वाली औषधियां, अनुपयुक्त नुस्खे एवं अपर्याप्त संक्रमण की रोकथाम एवं नियंत्रण भी औषधियों के प्रतिरोध क्षमता के विकास व प्रसार को प्रोत्साहित करते हैं।
  - इन मुद्दों, असन्तोषजनक निगरानी अथवा निदान, उपचार तथा रोकथाम उपकरणों की कमियों को कम करने हेतु सरकार की प्रतिबद्धता की कमी भी प्रतिजैविक औषधि प्रतिरोध के नियंत्रण में बाधा उत्पन्न करती है।

## मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- प्रतिजैविक प्रतिरोध (ए.एम.आर.) क्या है? ए.एम.आर. से निपटने में असफल होने के आर्थिक व्यय का अनुमान लगाएं।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## लक्षद्वीप के लोगों का आनुवंशिक अध्ययन



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || जैव प्रौद्योगिकी || मानव जीनोम और डीएनए

### शीर्षक

लक्षद्वीप द्वीप समूह के लोगों का आनुवंशिक अध्ययन

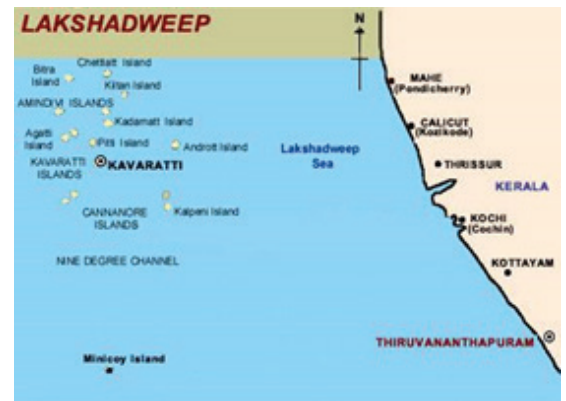
### सुर्खियों में क्यों ?

- लक्षद्वीप द्वीपसमूह के लोगों पर आनुवंशिक अध्ययन पहली बार **CSIR- सेंटर फॉर सेलुलर एंड मॉलेक्युलर बायोलॉजी (CCMB)** की एक टीम द्वारा किया गया था।
- **माइटोकॉन्ड्रियल DNA** के लिए आठ प्रमुख द्वीपों से 557 व्यक्तियों के DNA नमूनों और वाई गुणसूत्र मार्करों के लिए 166 व्यक्तियों का विश्लेषण किया गया।

### आनुवंशिक अध्ययन निष्कर्ष

- यह द्वीप **अफ्रीका और भारत के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से के बीच** स्थित हैं।
- अपने पहले के अध्ययनों के माध्यम से हम जान सकते हैं कि **अफ्रीका से अंडमान और ऑस्ट्रेलिया में मानव का प्रारंभिक प्रवास, भारत के पश्चिमी तट से हुआ।**
- इसलिए यह अनुमान लगाया गया था कि लक्षद्वीप द्वीपसमूह ने प्रारंभिक मानव प्रवास में एक प्रमुख भूमिका निभाई होगी और इसके अलावा **अंडमानी और ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों** जैसे प्राचीन लोगों के आनुवंशिक हस्ताक्षर की उपस्थिति की उम्मीद भी की गई थी।
- लक्षद्वीप के **अगत्ती, एन्डोर्थ, बिट्टा, चेतलत, कदमत, कल्पेनी, किल्टान और मिनिकॉय** के प्रमुख द्वीपों के अध्ययन ने **मालदीव, श्रीलंका और भारत के लोगों के साथ लक्षद्वीप द्वीप समूह के एक करीबी आनुवंशिक संबंध का प्रदर्शन किया।**

### लक्षद्वीप का अध्ययन क्यों?



- लक्षद्वीप **36 द्वीपों का एक द्वीपसमूह है**, जो लगभग **65,000 की आबादी** के साथ, **अरब सागर के लगभग 78,000 वर्ग किमी, भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट से 200-440 किलोमीटर की दूरी पर बिखरा हुआ है।**
- हालांकि, इस द्वीपसमूह की पहली मानव बस्ती की **आनुवंशिक संरचना स्पष्ट नहीं है।**
- यह द्वीप प्राचीन काल से **नाविकों के लिए जाना जाता था और ऐतिहासिक दस्तावेजों का कहना है कि इन द्वीपों में बौद्ध धर्म का प्रसार 6 वीं शताब्दी ई.पू. में हुआ और अरबियों द्वारा 661 ई. में इस्लाम का प्रसार किया गया था।**
- **11 वीं शताब्दी में चोलाओं ने, 16 वीं शताब्दी में पुर्तगालियों ने, 17 वीं में अली राजाओं ने, 18 वीं शताब्दी में टीपू सुल्तान ने और 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश राज ने द्वीप पर शासन किया।**

### सेंटर फॉर सेलुलर एंड मॉलेक्युलर बायोलॉजी के बारे में

- **सेंटर फॉर सेलुलर एंड मॉलेक्युलर बायोलॉजी (CCMB)** एक प्रमुख शोध संगठन है जो आधुनिक **जीव विज्ञान के सीमांत क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले बुनियादी अनुसंधान और प्रशिक्षण आयोजित करता है, और जीव विज्ञान के अंतःविषय क्षेत्रों में नई और आधुनिक तकनीकों के लिए केंद्रीयकृत राष्ट्रीय सुविधाओं को बढ़ावा देता है।**
- यह **1 अप्रैल, 1977 को तत्कालीन क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला (वर्तमान में, भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, IIT) हैदराबाद के जैव रसायन प्रभाग के साथ एक अर्ध-स्वायत्त केंद्र के रूप में स्थापित किया गया था।**
- यह हैदराबाद में स्थित है और **वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR)** के तत्वावधान में संचालित होता है।
- इसे **ग्लोबल मॉलेक्यूलर एंड सेल बायोलॉजी नेटवर्क, यूनेस्को द्वारा "सेंटर ऑफ एक्सीलेंस" के रूप में नामित किया गया है।**

## अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.thehindu.com/sci-tech/scientists-carry-out-genetic-study-on-people-of-lakshadweep-islands/article27051377.ece>

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

आनुवंशिक अध्ययन का महत्व और क्षमता क्या है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## विश्व का पहला मलेरिया का टीका



हिंदी में

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || स्वास्थ्य और चिकित्सा || रोग

### शीर्षक

विश्व का पहला मलेरिया का टीका, मलावी के मोसकिरिक्स टीके की पायलट परियोजना

### सुर्खियों में क्यों ?

- **मलावी**, बीमारी को रोकने के लिए एक प्रयास में दुनिया के सबसे उन्नत प्रायोगिक **मलेरिया के टीके** का बड़े पैमाने पर पायलट परीक्षण करेगी।
- **WHO द्वारा** 3 अफ्रीकी देशों - घाना, केन्या और मलावी के चयनित क्षेत्रों में पायलट परिचय के लिए टीके की सिफारिश की गई है।

### मलेरिया

- **परजीवी रोग**: मलेरिया एक संभावित जानलेवा परजीवी रोग है जो परजीवी प्लास्मोडियम विविक्स (पी. विविक्स), प्लास्मोडियम फाल्सीपेरम (पी. फाल्सीपेरम), प्लास्मोडियम मलेरिया (पी. मलेरिया), और प्लाज़्मोडियम ओवले (पी. ओवले) से फैलता है जो कि मादा एनोफिलीज मच्छर द्वारा फैलाया जाता है।

### RTS,S टीका

- **प्रतिरक्षा प्रणाली को लक्षित करना**: PATH के मलेरिया वैक्सीन इनिशिएटिव (MVI), RTS, S के एक विवरण के अनुसार, मलेरिया के पहले चरण से बचाव के लिए प्रतिरक्षा प्रणाली को लक्षित करना होता है जब प्लास्मोडियम फाल्सीपेरम परजीवी, मच्छर के काटने और संक्रमण के माध्यम से, मानव के रक्तप्रवाह में प्रवेश करता है और यकृत की कोशिकाओं को प्रभावित करता है।
- यह टीका, परजीवी को यकृत को संक्रमित करने से रोकने के लिए अभिकल्पित किया गया है, जहां यह परिपक्व होता है, गुणा होता है, रक्तप्रवाह में फिर से प्रवेश कर सकता है, और लाल रक्त कोशिकाओं को संक्रमित कर सकता है, जिससे रोग के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।
- **ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन (GSK) द्वारा विकसित**: वैक्सीन GSK द्वारा विकसित किया गया है - कंपनी पायलट के लिए उत्पाद की लगभग 10 मिलियन खुराक दान कर रही है।

- यह 1987 में GSK द्वारा बनाया गया था, और बाद में **बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन** के समर्थन से विकसित किया गया था।
- 2014 में, टीके ने तीसरे चरण के क्लिनिकल परीक्षण को भी पार कर लिया, जिसने प्रमाणित किया कि यह मनुष्यों में उपयोग के लिए प्रभावी और सुरक्षित दोनों था।

### पायलट कार्यक्रम

- **विश्व स्वास्थ्य संगठन** ने 2 साल से कम उम्र के बच्चों को मलेरिया का टीका देने के लिए मलावी में एक पायलट प्रोजेक्ट का स्वागत करते हुए एक बयान जारी किया।
- **चयनित देश**: तीन अफ्रीकी देशों - मलावी, घाना और केन्या में कुल 3,60,000 बच्चे हर साल टीके का लाभ उठाएंगे।
- **डब्ल्यूएचओ परिणामों की समीक्षा करेगा**: एक बार पायलट पूरा हो जाने के बाद, WHO परिणामों की समीक्षा करेगा और वैक्सीन के उपयोग के लिए अपनी सिफारिशों के साथ सामने आएगा।

### महत्व

- **विश्व का प्रमुख हत्यारा**: WHO के अनुसार, मलेरिया दुनिया के अग्रणी हत्यारों में से एक है, जो हर दो मिनट में एक बच्चे का जीवन छीन रहा है।
- इनमें से ज्यादातर मौतें अफ्रीका में होती हैं, जहां हर साल 2,50,000 से ज्यादा बच्चे बीमारी से मर जाते हैं।
- 5 साल से कम उम्र के बच्चों को इसकी जानलेवा जटिलताओं से सबसे ज्यादा खतरा होता है।
- टीके को आने में तीन दशक लग गए हैं, और यह एक ऐसी बीमारी के खिलाफ आई है, जो एक साल में 4,35,000 लोगों को मारती है, उनमें से ज्यादातर बच्चे हैं।
- भारत मच्छर जनित बीमारी से सबसे ज्यादा प्रभावित देशों की सूची में उच्च स्थान पर है।

### भारत

- **मलेरिया की गंभीर स्थिति**: भारत, उन देशों की सूची में सबसे ऊपर है जहां मलेरिया की गंभीर स्थिति है।
- नेशनल वेक्टर बॉर्न डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम के आंकड़ों के मुताबिक, 2018 में मलेरिया के 3,99,134 मामले सामने आए थे और देश में बीमारी से 85 मौतें हुईं।
- **छह राज्य** - भारत में ओडिशा (40%), छत्तीसगढ़ (20%), झारखंड (20%), मेघालय, अरुणाचल प्रदेश और मिज़ोरम (5-7%) - मलेरिया का दंश झेलते हैं।
- इन राज्यों में, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों के साथ, भारत के कुल मलेरिया मामलों के 90 फीसद का सामना करते हैं।
- भारतीय डेटा की सत्यता के बारे में बार-बार प्रश्न पूछे जाते हैं, कुछ **रिपोर्टों के अनुसार भारत मलेरिया के मामलों की वास्तविक संख्या का सिर्फ 8% रिकॉर्ड** कर रहा है।
- शहरी क्षेत्रों में 60 से 80% रोगियों का इलाज निजी डॉक्टरों या स्वास्थ्य प्रतिष्ठानों द्वारा किया जाता है, जिनमें से अधिकांश **मामलों की सूचना नहीं** देते हैं।
- यद्यपि मलेरिया एक उल्लेखनीय बीमारी है, यह केवल **स्वैच्छिक अधिसूचना** है - ऐसा करने वाले डॉक्टरों या अस्पतालों के लिए कोई दंड नहीं है। हालाँकि, मामलों की सही रिपोर्टिंग के लिये नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया गया है।

## अतिरिक्त जानकारी

## PATH

- PATH उन नवप्रवर्तनकर्ताओं की एक अंतरराष्ट्रीय गैर-लाभकारी टीम है जो सार्वजनिक संस्थानों, व्यवसायों, जमीनी स्तर के समूहों और निवेशकों के साथ साझेदारी और सलाह देता है, ताकि मलेरिया सहित दुनिया की सबसे कठिन वैश्विक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटा जा सके।
- PATH का मलेरिया वैक्सीन इनीशिएटिव (MVI) मलेरिया टीके के विकास के लिए विभिन्न हितधारकों के साथ काम करता है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- भारत में मलेरिया की स्थिति की जाँच करें। इस संबंध में मोसकिरिक्स - जो विश्व का पहला मलेरिया टीका है उसकी क्षमता पर आपका आकलन क्या है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## समझें रडार विवाद, कैसे काम करता है रडार



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)



### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || रक्षा || सैन्य प्रौद्योगिकी

### शीर्षक

समझें रडार विवाद, कैसे काम करता है रडार

### सुर्खियों में क्यों ?

► **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणी ने सोशल मीडिया पर तूफान उठा दिया है।** उनकी टिप्पणी इस बारे में थी कि कैसे उन्होंने खराब मौसम के बावजूद बालाकोट हवाई हमले की मंजूरी दी थी क्योंकि बादलों ने भारतीय वायु सेना के लड़ाकू जेट को दुश्मन के राडार की पहुँच से बाहर रहने में सक्षम बनाया था।

### एक रडार क्या होता है?

- रडार का अर्थ है **"रेडियो डिटेक्शन एंड रेंजिंग"**।
- **रडार के घटक:** एक रडार में आमतौर पर एक मैग्नेट्रोन, ट्रांसमीटर, रिसीवर और एक स्क्रीन होती है।
- **एक रडार का मूल सिद्धांत:** मैग्नेट्रोन रेडियो तरंगों को उत्पन्न करता है जो एक निश्चित समय अंतराल पर विभिन्न दिशाओं में एक एंटीना के माध्यम से उसे भेजता है।
- यदि हवा में कोई वस्तु है, उदाहरण के लिए, एक हवाई जहाज, तो रेडियो तरंगें उससे टकराती हैं और वापस लौटती हैं, जिसे रडार के रिसीवर द्वारा पकड़ा जाता है।
- ग्रिड मैप के साथ स्क्रीन पर परावर्तित तरंगों की मैपिंग करके, हवाई जहाज को स्क्रीन पर एक रडार लक्ष्य के रूप में प्रदर्शित करता है और इसकी गति को दिखाता है क्योंकि रेडियो तरंगें इससे एक अंतराल पर टकराती हैं। यह एक रडार का मूल काम है।
- दशकों से, रडार में जबरदस्त तकनीकी प्रगति हुई है, जिससे वे अत्यधिक परिष्कृत और शक्तिशाली बन गए हैं।

### क्या बादल रडार में बाधा डालते हैं?

- रेडियो तरंगों के होने के आधार पर, रडार दिन और रात के दौरान बादलों के पार भी देख सकते हैं। वास्तव में, यही करने के लिये वे बनाए गए हैं।
- किसी शहर में खराब मौसम और आसमान में छाई धुंध के बावजूद हवाई अड्डों पर वाणिज्यिक उड़ानें जारी रहती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि दुनिया भर में एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स (ATC) रडार पर निर्भर हैं।

- सभी ATC में दो रडार होते हैं - प्राथमिक और माध्यमिक।
- **प्राथमिक श्रेणी** एक क्लासिक रडार की है जो ऊपर वर्णित सिद्धांत पर आधारित है।
- **द्वितीयक रडार** विमान पर ट्रांसपोंडर के साथ संचार करके, विमान के विवरण की पहचान करता है।
- इस प्रकार, रडार बादल होने की स्थिति में भी निरंतर हवाई अड्डे के संचालन को सक्षम करते हैं।
- यही कार्य सेना के रडार भी करते हैं, पाकिस्तान के रडार भी समान कार्य करते हैं, जिनके पास एक उन्नत सैन्य दल है।

### रडार की उत्पत्ति

- रडार की उत्पत्ति द्वितीय विश्व युद्ध में हुई थी, जब 1935 में ब्रिटेन में पहले रडार का प्रदर्शन किया गया था। युद्ध शुरू होने तक, ब्रिटेन के आसपास घुसपैठियों का पता लगाने के लिए इसके तटों पर रडार की एक श्रृंखला थी। और द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक, सभी प्रमुख देशों में राडार तैनात हो गए थे।
- ज़मीन आधारित रडार की मुख्य रूप से पृथ्वी की वक्रता के कारण कुछ सीमाएं होती हैं। इसलिए विमान पर रडार लगाए गए थे जो 360 डिग्री कवरेज के साथ जमीन से हजारों फीट ऊपर उड़ते हैं। इन्हें एयरबोर्न वार्निंग एंड कंट्रोल सिस्टम (AWACS) के रूप में जाना जाता है, और आज के युद्धक्षेत्रों में प्रमुख बल गुणक हैं।
- 26 फरवरी को बालाकोट हवाई हमले के दौरान, IAF ने अपने स्ट्राइक मिशन पर लड़ाकू जेट विमानों को निर्देशित करने और पाकिस्तानी जेट द्वारा किसी भी आंदोलन के लिए आसमान की निगरानी करने के लिए स्वदेशी और इजरायली AWACS दोनों को मैदान में उतारा था।

### बादल हथियार को प्रभावित कर सकते हैं

- रडार बादलों के पार भी देख सकते हैं, ऐसे अन्य हथियार सिस्टम हैं जो बादलों से प्रभावित होते हैं, जैसे कि टेलीविजन-निर्देशित मिसाइलें।
- एक टीवी-निर्देशित मिसाइल हवा से जमीन पर वार करने वाली मिसाइल है, जिसे पायलट द्वारा रिमोट से नियंत्रित किया जाता है, जो इसे भेजे जाने वाले लाइव चित्रों का उपयोग करके इसे चलाता है। बादल किसी विमान से दागे गए "दृश्य-मिलान हथियारों" (scene-matching weapons) को भी प्रभावित कर सकते हैं। मिसाइल अपने लाइव फीड में पूर्व-क्रमबद्ध छवियों से मिलान कर जानकारी देती है।
- विशेष रूप से बालाकोट में, वायु सेना की SPICE-2000 मिसाइल-जो कि इज़राइल में बनाई गई थी, का उपयोग हवाई हमले के लिए किया गया था। यह एक सटीक हथियार है क्योंकि-
- छोड़े जाने के बाद यह अपनी उड़ान के शुरुआती चरण में उपग्रह डेटा का उपयोग करता है;
- उड़ान के टर्मिनल चरणों की ओर, यह लक्ष्य पर वार करने के लिए एक डिजिटल मानचित्र का उपयोग करता है।
- इस तरह की मिसाइलें उपग्रह और पूर्व-प्रोग्राम किए गए मार्गदर्शन के संयोजन का उपयोग करती हैं और अपने "टर्मिनल चरण" के दौरान निचले बादलों से प्रभावित हो सकती हैं।

## अतिरिक्त जानकारी

## रडार अपवंचन (evasion)

- इन वर्षों में, जैसे-जैसे राडार सुधरे हैं, इनसे बच निकलने की तकनीकें आती जा रही हैं। रडार से बच निकलने के या रडार क्रॉस सेक्शन या फुट प्रिंट (radar cross section or foot print) को कम करने के कई तरीके हैं।
- यहां पर चालबाज़ी की अवधारणा सामने आती है। चालबाज़ी एक सापेक्ष अवधारणा है न कि निरपेक्ष।
- रडार, परावर्तित रेडियो तरंगों द्वारा किसी वस्तु को अनिवार्य रूप से पहचानते हैं। इसलिए अगर रेडियो तरंगों को रिसीवर से दूर रखा जाए, तो यह रडार की पहचान नहीं सकते।
- इसके लिए एक बेहतरीन उदाहरण US F-117 है जो अब सेवा से बाहर हो गया है।
- एक अन्य तरीका रडार शोषक पेंट के साथ कुछ या अधिकांश रेडियो तरंगों को अवशोषित करना है, और क्रॉस सेक्शन को कम करने के लिए आकार बदलना है।
- प्रतिष्ठित US B2 बॉम्बर इसके लिए एक आदर्श उदाहरण है।
- नवीनतम चालबाज़ विमान F-22 और F-35 रडार से बचने के लिए इनमें से एक संयोजन का उपयोग करते हैं।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- राडार क्या है? राडार के कार्य का वर्णन करें। इसके विभिन्न अनुप्रयोगों की गणना भी करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## ब्लू मून परियोजना क्या है?

प्रशान्त धवन द्वारा

हिंदी में



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || अंतरिक्ष || अंतरिक्ष मिशन

### शीर्षक

ब्लू मून परियोजना क्या है? जेफ बेजोस के मिशन के बारे में जानें सब कुछ

### सुर्खियों में क्यों ?

► जेफ बेजोस, जो अमेज़ॉन और अंतरिक्ष कंपनी ब्लू ओरिजन दोनों के प्रमुख हैं, ने एक **चंद्र लैंडर** का अनावरण किया है जिसके लिये उन्होंने कहा था कि **2024 तक चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव** पर उपकरण, और संभवतः मानव परिवहन के लिए उपयोग किया जाएगा।

### ब्लू ओरिजन का मून मिशन

► बेजोस ने परियोजना के पहले लॉन्च के लिए किसी विशेष तारीख की घोषणा नहीं की, लेकिन कहा कि यह **राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की घोषणा के लिए उस समय तक तैयार हो जाएगा जब लैंडर 2024 तक लोगों को चंद्रमा पर वापस ला सकेगा।**

► पिछले तीन वर्षों से यह वाहन विकासधीन है।

► यह वैज्ञानिक उपकरणों, चार छोटे रोवर्स, और भविष्य में मनुष्यों के लिए दबाव वाले वाहन को ले जाने में सक्षम होगा।

► **लक्ष्य:** इसका लक्ष्य चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरना है, जहां 2018 में बर्फ के जमाव की पुष्टि की गई थी।

► **हाइड्रोजन का उत्पादन** करने के लिए पानी का उपयोग किया जा सकता है, जो भविष्य में सौर प्रणाली के भविष्य की खोज कर सकता है।

► **विशेष विवरण:** पूरी तरह से ईंधन से भरा हुआ, ब्लू ओरिजन का वज़न लगभग 33,000 पाउंड (15,000 किलोग्राम) होगा, जब यह जमीन पर उतरेगा तो लगभग 7,000 पाउंड इसका वजन तक घट जाएगा।

► 2024 में चंद्रमा पर लौटने के व्हाइट हाउस के इरादे ने मार्च के अंत से नासा को गतिशीलता के प्रवाह की ओर धकेल दिया है, क्योंकि उस विशेष मिशन को मूल रूप से 2028 के लिए प्रत्याशित किया गया था।

### अमेरिकी सरकार की योजना

► संयुक्त राज्य अमेरिका, 2024 तक चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने की कोशिश करेगा, **2028 तक चंद्रमा पर एक स्थायी मानव उपस्थिति** की योजना करेगा, और **मंगल अन्वेषण के लिए भविष्य का रास्ता तय करेगा।**



► नासा की **चंद्र उपस्थिति का ध्यान निम्नलिखित पर होगा -**

► विज्ञान,

► संसाधन प्रबंधन, और

► मंगल ग्रह पर भविष्य के मिशन के लिए जोखिम में कमी

► नासा एक **मून-टू-मार्स मिशन निदेशालय** बनाएगा और चंद्रमा पर एक मूलभूत **मानव रहित मिशन - एक्सप्लोरेशन मिशन -1** को प्राप्त करने के लिए सभी आवश्यक प्रयास करेगा।

► अन्वेषण मिशन -1, 2020 से पहले ही होगा और

► चंद्रमा पर मानवयुक्त मिशन - एक्सप्लोरेशन मिशन -2, 2022 से पहले-पहले सम्पन्न किया जाएगा।

### चंद्र उपनिवेश

► लैंडर के अनावरण के रूप में बेजोस ने एक व्यापक आधारभूत संरचना का निर्माण करने के लिए अपनी व्यापक दृष्टि को रेखांकित किया, **जो भविष्य की मनुष्यों की पीढ़ियों द्वारा अंतरिक्ष के उपनिवेशीकरण को बनाए रखेगा** और पृथ्वी से प्रदूषणकारी उद्योगों को स्थानांतरित करेगा।

► जहां एक ओर अंतरिक्ष एजेंसियां, मनुष्यों को चंद्रमा पर लौटने के लिए तैयार कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर शीर्ष इंजीनियर पहले चंद्र निवासियों के लिए, **भूमिगत कॉलोनिजों को खोदने में सक्षम सुरंग खोदने वाली मशीनों को अभिकल्पित** की होड़ कर रही हैं।

► **लेकिन चंद्रमा की सतह पर कठोर परिस्थितियों का मतलब** है कि, एक बार ऊपर जाने के बाद, मानव को संरचनाओं में विकिरण और ठंड के तापमान से सुरक्षित होना होगा जो उस खालीपन में वायुमंडलीय दबाव बनाए रखते हैं।

► उन्हें **उल्कापिंड के हमलों से सुरक्षा** की भी आवश्यकता है।

► **निश्चित रूप से मंगल चन्द्रमा की तुलना में रहने योग्य है,** एक बहु-ग्रहों पर मानवीय उपस्थिति की ओर संकेत कर सकता है।

### रॉकेट प्लेटफॉर्म के रूप में चंद्रमा

► **रॉकेट विज्ञान की मुख्य समस्या:** अंतरिक्ष यान को ले जाने के लिए **पेलोड जितना अधिक** होता है, रॉकेट को लॉन्च करने के लिए उतने ही अधिक ईंधन की आवश्यकता होती है।

► चूंकि अधिक ईंधन के समावेश से रॉकेट का वजन भी बढ़ता है, हमें उस ईंधन को ले जाने के लिए अधिक ईंधन की आवश्यकता होती है।

- ▶ जब आप अंतरिक्ष यान में अधिक भार डालते हैं, तो ईंधन की आवश्यकताएं तेजी से बढ़ जाती हैं।
- ▶ इस आवश्यकता को **डेल्टा-वी बजट** कहा जाता है।
- ▶ जितने अधिक डेल्टा-वी की आवश्यकता होती है, **उतनी ही अधिक एक मिशन की लागत और तकनीकी जटिलता होती है** क्योंकि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव से बाहर निकलने के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है।
- ▶ **पृथ्वी से निम्न पृथ्वी की कक्षा (LEO) में जाने के लिए 9.4 किमी / सेकंड के डेल्टा-वी की आवश्यकता होती है।**
- ▶ अगर अंतरिक्ष यान को पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से खुद को मुक्त करना है तो **3.2 किमी / सेकंड के अतिरिक्त डेल्टा-वी की आवश्यकता होती है।**
- ▶ **रॉकेट प्लेटफॉर्म के रूप में चंद्रमा:** ध्यान दें कि **चंद्रमा पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के बाहरी हिस्से में मौजूद है।**
- ▶ चंद्रमा की सतह से पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बचने के लिए चंद्रमा के कम गुरुत्वाकर्षण के साथ, आवश्यक डेल्टा **सिर्फ 2.64 किमी / सेकंड है**, जो कि LEO से निकलने के लिये आवश्यक डेल्टा से भी कम है।
- ▶ कम डेल्टा-वी का अर्थ है समान पेलोड को चंद्रमा से लॉन्च करने पर पृथ्वी की तुलना में कम ईंधन लगता है।
- ▶ स्पेस एक्स फाल्कन हेवी या BFR जैसे बड़े रॉकेट पृथ्वी की तुलना में **चंद्रमा से कहीं अधिक पेलोड लॉन्च कर सकते हैं।**
- ▶ **चंद्रमा को पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकालने की कुल लागत पृथ्वी की तुलना में 10 गुना कम हो सकती है।**

### चंद्रमा से सामग्री का स्रोत

- ▶ रॉकेट लॉन्च करने में सक्षम होने का अर्थ होता है कि हम **रॉकेट का उत्पादन कर रहे हैं और उन्हें चंद्रमा पर ही ईंधन दे रहे हैं।**
- ▶ यदि हमारे पास चंद्र कॉलोनी होती है, तो चंद्रमा के संसाधनों का उपयोग किया जा सकता था।
- ▶ यदि हम चंद्रमा से रॉकेट लॉन्च करने के लिए पृथ्वी को उसकी आपूर्ति के रूप में उपयोग करते हैं, तो इसका कोई मतलब नहीं है क्योंकि सभी डेल्टा-वी समान होंगे।
- ▶ चंद्र मिट्टी रॉकेट बनाने के लिए आवश्यक सामग्री और खनिजों का एक स्रोत हो सकती है।
- ▶ चंद्रमा पर **बर्फ के पानी** की उपस्थिति हाइड्रोजन के लिए पानी का स्रोत उसकी क्षमता को तेज कर देगा जिसका उपयोग ईंधन को बढ़ाने के रूप में किया जा सकता है।
- ▶ पृथ्वी के निकट छोटे गृहों (Near-Earth Asteroids) (NEA) का खनन, विनिर्माण में सहायता कर सकता है क्योंकि इन क्षुद्रग्रहों को पृथ्वी / चंद्रमा की कक्षा में पहुंचने के लिए बहुत कम डेल्टा-वी की आवश्यकता होती है।

### निष्कर्ष

- ▶ अपने खुद के रॉकेट बनाने और लॉन्च करने में सक्षम चंद्रमा कॉलोनी की प्रारंभिक लागत, निश्चित रूप से उच्च होगी। लेकिन लंबी अवधि में ऐसा करना फायदेमंद होगा।
- ▶ जब आप सौर मण्डल में मानव उपस्थिति का विस्तार करने के लिए आवश्यक हजारों लॉन्चों पर विचार करते हैं, तो लागत जल्दी से बढ़ जाती है।
- ▶ हमारे रॉकेट प्लेटफॉर्म के रूप में चंद्रमा काफी लागत को कम कर सकता है और कुशल विकास का पथ सशक्त कर सकता है।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- ▶ परियोजना ब्लू मून क्या है? इसका क्या महत्व है?

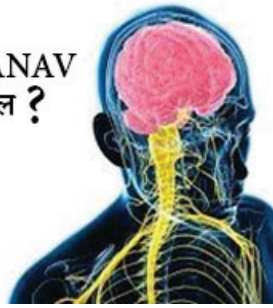


(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## क्या है परियोजना MANAV मानव एटलस पहल ?



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

**GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || जैवप्रौद्योगिकी ||  
कोशिका सिद्धांत**

### शीर्षक

क्या है परियोजना MANAV: मानव एटलस पहल?

### सुर्खियों में क्यों ?

- ▶ पहली बार, भारतीय वैज्ञानिक मानव शरीर के हर एक ऊतक का मानचित्रण करेंगे ताकि विभिन्न रोगों से जुड़े ऊतकों और कोशिकाओं की भूमिकाओं के बारे में गहराई से समझा जा सके।
- ▶ जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) ने मानव शरीर क्रिया विज्ञान पर ज्ञान में सुधार की दिशा में **MANAV: मानव एटलस पहल** की शुरुआत की है।

### क्या है MANAV : मानव एटलस पहल?

- ▶ यह DBT द्वारा वित्त पोषित एक परियोजना है, जिसका उद्देश्य **उपलब्ध वैज्ञानिक साहित्य से मानव शरीर में सभी ऊतकों का एक डेटाबेस नेटवर्क** बनाना है।
- ▶ सूचना को एकत्रित करने वाले छात्र समुदाय, को प्रशिक्षण दिया जाएगा और सूचनाओं की व्याख्या और रोगनिवारक पहलुओं के प्रदर्शन के लिए कौशल प्रदान किया जाएगा जो अंततः ऑनलाइन नेटवर्क का निर्माण करेगा।
- ▶ निवेश -
- ▶ DBT ने पुणे में दो संस्थानों - **नेशनल सेंटर फॉर सेल साइंस (NCCS) और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, एजुकेशन एंड रिसर्च (IISER)**, पुणे के बीच 13 करोड़ रुपये का निवेश साझा किया है।
- ▶ इसके अलावा, **पर्सिस्टेंट सिस्टम्स लिमिटेड** ने इस परियोजना को सह-वित्त पोषित किया है और प्लेटफॉर्म का विकास कर रहा है, और इसने **7 करोड़ रुपये** का योगदान दिया है।
- ▶ यह एक ऐसी परियोजना है जिसमें सूचनाओं की व्याख्या को समझने के लिए **वैज्ञानिक कौशल विकास**, बड़े डेटा को संभालने के साथ-साथ विज्ञान की मदद शामिल है।
- ▶ निम्नलिखित माध्यमों से कार्यक्रम के ज़रिए **बेहतर जैविक अंतर्दृष्टि** प्राप्त करना संभव होगा -
- ▶ शारीरिक और आणविक मानचित्रण,
- ▶ **भावी सूचक गणना** के माध्यम से रोग मॉडल विकसित करना और एक पूर्ण विश्लेषण प्राप्त करना
- ▶ अंत में दवा की खोज करना।

## इस परियोजना में कौन भाग ले सकता है?

- ▶ परियोजना में उन छात्रों को शामिल किया जा सकता है जो अपने **स्नातक के अंतिम वर्ष** में हैं या उससे अधिक योग्यता रखते हैं।
- ▶ जैव रसायन, जैव प्रौद्योगिकी, सूक्ष्म जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, जैव सूचना विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, सिस्टम जीवविज्ञानी, औषधविद और डेटा विज्ञान क्षेत्र के छात्र इस परियोजना के साथ जुड़ सकते हैं।
- ▶ यहां तक कि एक विज्ञान पृष्ठभूमि वाले प्रतिभागी जो अनिवार्य रूप से किसी सक्रिय वैज्ञानिक अनुसंधान में शामिल नहीं हैं, वे भी इस नेटवर्क का हिस्सा हो सकते हैं।
- ▶ MANAV दल ने कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को दलों के रूप में पंजीकरण करने और इस परियोजना में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया है।
- ▶ प्रारंभ में, DBT उन कॉलेजों को समायोजित करेगा जो इस मानव एटलस कार्यक्रम के लिए पंजीकरण करने के लिए **DBT स्टार कॉलेज योजना** संचालित करते हैं।
- ▶ छात्र की भागीदारी के लिए निर्धारित समयावधि पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

## MANAV क्यों महत्वपूर्ण है?

- ▶ यह प्लेटफॉर्म **छात्र समुदाय** को इस मामले में वर्गीकृत वैज्ञानिक साहित्य पढ़ने के लिए, व्यक्तिगत ऊतक-आधार पर, सूचनाओं की व्याख्या और रोगनिवारक दवाएं तैयार करने के लिए **प्रमुख कौशल प्रदान करेगा**।
- ▶ चूंकि उत्पन्न की गई सभी जानकारी कई स्तरों की समीक्षाओं से गुज़रेगी, इसलिए यह **एटलस, मानव शरीर के ऊतकों पर एक विश्वसनीय संग्रह होगा**।
- ▶ यह तुलनात्मक डेटा **भविष्य के शोधकर्ताओं** और समानांतर रूप से, चिकित्सकों और दवा निर्माताओं के लिए उपयोगी हो सकता है, जो अंत में रोगों के रोग निवारण के लिये ज़िम्मेदार होते हैं।

## MANAV के माध्यम से उत्पन्न सूचना के अनुप्रयोग क्या हैं?

- ▶ परियोजना का उद्देश्य **मानव शरीर विज्ञान को दो चरणों में समझना और एकत्रित करना है -**
- ▶ एक **सामान्य अवस्था** में और
- ▶ एक **बीमारी** के चरण में।
- ▶ व्यक्तिगत ऊतकों पर तैयार होनेवाला यह डेटाबेस, बीमारी के कारणों का पता लगाने में मदद कर सकता है, विशिष्ट मार्गों को समझ सकता है और अंततः ऊतकों और कोशिकाओं से जुड़े शरीर के रोग चरण की व्याख्या कर सकता है।
- ▶ अध्ययन करने वाले दल विशिष्ट कोशिकाओं या ऊतकों को लक्षित करने के लिए किसी शक्तिशाली तत्व या अणुओं का अध्ययन करेंगे, जिनका अब तक दवाओं के रूप में कभी उपयोग नहीं किया गया है।

## अतिरिक्त जानकारी

### ऊतक

जीव विज्ञान में, एक ऊतक, कोशिकाओं और एक पूर्ण अंग के बीच एक सेलुलर संगठनात्मक स्तर बनाता है।

► **ऊतक:** एक ऊतक समान मूल की समान कोशिकाओं और उनके बाह्य मैट्रिक्स का एक संयोजन है जो एक साथ मिलकर विशिष्ट कार्य करते हैं।

► **अंग:** संरचनात्मक इकाइयों में शामिल होने वाला ऊतकों का संग्रह अंगों की रचना में एक समान कार्य करते हैं।

### पशु ऊतक

► जानवरों के ऊतकों को चार मूल प्रकारों में बांटा गया है: संयोजी, मांसपेशी, तंत्रिका और वाहिकाओं।

► **संयोजी ऊतक,** गैर-जीवित सामग्री द्वारा अलग की गई कोशिकाओं से बने रेशेदार ऊतक होते हैं, जिसे एक बाह्य सेलुलर मैट्रिक्स कहा जाता है।

► **मांसपेशियों के ऊतक:** मांसपेशियों की कोशिकाएं शरीर के सक्रिय संकुचन ऊतक बनाती हैं जिन्हें मांसपेशियों के ऊतकों या मांसपेशियों के ऊतकों के रूप में जाना जाता है।

► मांसपेशियों के ऊतक बल और गति उत्पन्न करते हैं, यह गति या तो आंतरिक अंगों के भीतर की गति होती है या स्वचालित होती है।

► **तंत्रिका के ऊतक:** केंद्रीय तंत्रिका और परिधीय तंत्रिका से युक्त कोशिकाओं को तंत्रिका (या स्नायु संबंधी) ऊतक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

► **केंद्रीय तंत्रिका के तंत्र** में, स्नायु के ऊतक, मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी का निर्माण करते हैं।

► **परिधीय तंत्रिका के तंत्र** में, स्नायु के ऊतक कपाल तंत्रिका और रीढ़ की हड्डी का निर्माण करते हैं और मोटर न्यूरॉन्स के समावेशी होते हैं।

► **वाहिकाओं के ऊतक:** वाहिका ऊतक कोशिकाओं द्वारा निर्मित होते हैं जो अंग की सतहों को घेरते हैं, जैसे कि त्वचा की सतह, वायुमार्ग, प्रजनन पथ और पाचन तंत्र के आंतरिक भाग।

### पौधे का ऊतक

► पौधे की शारीरिक रचना में, ऊतकों को मोटे तौर पर **तीन ऊतक प्रणालियों** में वर्गीकृत किया जाता है: एपिडर्मिस, जमीनी ऊतक और संवहनी ऊतक।

► **एपिडर्मिस** - पत्तियों की बाहरी सतह और युवा पौधे के शरीर की कोशिकाएं बनाते हैं।

► **संवहनी ऊतक** - संवहनी ऊतक के प्राथमिक घटक ज़ाइलम और फ्लोएम हैं। ये आंतरिक रूप से तरल पदार्थ और पोषक तत्वों का परिवहन करते हैं।

► **जमीनी ऊतक** - जमीनी ऊतक अन्य टिशू की तुलना में कम विभेदित होता है। जमीनी ऊतक प्रकाश संश्लेषण द्वारा पोषक तत्वों का निर्माण करता है और आरक्षित पोषक तत्वों को संग्रहीत करता है।

► पौधों के ऊतकों को भी दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है:

► **मेरिस्टेमेटिक ऊतक:** मेरिस्टेमेटिक ऊतक में सक्रिय रूप से विभाजित कोशिकाएं होती हैं, जो पौधे की लंबाई और मोटाई में वृद्धि करती हैं।

► एक पौधे की प्राथमिक वृद्धि केवल कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में होती है, जैसे कि तनों या जड़ों की युक्तियों में। इन्हीं क्षेत्रों में मेरिस्टेमेटिक ऊतक मौजूद होते हैं।

► **स्थायी ऊतक:** स्थायी ऊतकों को मेरिस्टेमेटिक ऊतक द्वारा गठित जीवित या मृत कोशिकाओं के एक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिन्होंने पौधे के शरीर में स्थायी स्थिति में विभाजित करने और स्थायी रूप से रखने की अपनी क्षमता खो दी है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► प्रोजेक्ट MANAV क्या है? इसके महत्व का परीक्षण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## पृथ्वी के करीब से गुजरेगा विशाल क्षुद्रग्रह (तारा) एपोफिस



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || अंतरिक्ष || विविध

### शीर्षक

पृथ्वी के करीब से गुजरेगा विशाल क्षुद्रग्रह (तारा) एपोफिस

### सुर्खियों में क्यों ?

► **99942 एपोफिस** नामक एक विशालकाय क्षुद्रग्रह (तारा) - जिसका नाम प्राचीन मिस्र के प्रलय देवता के रूप पर रखा गया है - 13 अप्रैल, 2029 को पृथ्वी से गुजरेगा, जिसके गुजरने में लगभग एक दशक का समय है, लेकिन वैज्ञानिक पहले से ही इस महत्वपूर्ण खगोलीय घटना की तैयारी कर रहे हैं, जिसे एक प्रमुख वैज्ञानिक अवसर माना जा रहा है।

### 99942 एपोफिस

► **संभावित खतरनाक क्षुद्रग्रह (तारा) (PHAs):** नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार, यह क्षुद्रग्रह (तारा) वर्तमान में ज्ञात लगभग 2,000 PHAs का प्रतिनिधि है जो पृथ्वी से टकरा सकते हैं या नुकसान पहुंचा सकते हैं।  
► 99942 एपोफिस नासा के अनुसार, पृथ्वी से हानिरहित रूप से गुजरेगा, लेकिन यह सतह से लगभग 19,000 मील या 31,000 किमी ऊपर हमारे ग्रह के बहुत करीब आ जाएगा।

### विशेषताएं:

► यह क्षुद्रग्रह (तारा) **340-मीटर चौड़ा** है और इसे विज्ञान के लिए एक अवसर के रूप में देखा जा रहा है क्योंकि इतनी कम दूरी से इस आकार का शायद ही कोई क्षुद्रग्रह (तारा) पृथ्वी से गुजरा हो।  
► क्षुद्रग्रह (तारा) दक्षिणी गोलार्ध में **खुली आंखों से भी दिखाई देगा**। यह पूर्वी तट से ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट तक देखा जाएगा।  
► अंतरिक्ष चट्टान को **"बाइलोब्ड"** माना जा रहा है, जिसका अर्थ है कि यह एक पतले खंड से जुड़ी चट्टान के दो बड़े हिस्से हैं।  
► **"कॉन्टेक्ट बाइनरी"** के रूप में संदर्भित, इस प्रकार के क्षुद्रग्रहों में आमतौर पर बर्फ और चट्टान के दो अलग-अलग छोटे टुकड़े होते हैं जो उनके संपर्क बिंदु से जुड़े होते हैं।

### "कॉन्टेक्ट बाइनरी"

► क्षुद्रग्रह (तारा) का प्रक्षेपवक्र इंगित करता है कि यह हिंद महासागर को पार कर जाएगा, और पूर्वी अमेरिका में दोपहर तक यह भूमध्य रेखा को पार कर जाएगा, यह अभी भी अफ्रीका के ऊपर पश्चिम दिशा में चल रहा है।

► निकटतम दृष्टिकोण के अनुसार, शाम 6 बजे EDT से पहले, एपोफिस अटलांटिक महासागर के ऊपर होगा और शाम 7 बजे EDT से, क्षुद्रग्रह (तारा) संयुक्त राज्य अमेरिका को पार कर जाएगा।

► जून 2004 में एपोफिस की खोज की गई और प्रारंभिक टिप्पणियों से पता चला कि 2029 में क्षुद्रग्रह (तारा) के पास पृथ्वी को प्रभावित करने का 2.7 प्रतिशत मौका था, हालांकि बाद में इसे रद्द कर दिया गया।

► नासा की प्रेस विज्ञप्ति में यह भी कहा गया है कि वर्तमान गणना से पता चलता है कि एपोफिस में अभी भी पृथ्वी को प्रभावित करने का एक छोटा सा मौका है, जो अब से कई दशकों में 1 लाख में से 1 से भी कम है।

### अतिरिक्त जानकारी

### क्षुद्रग्रह (तारा)

► **क्षुद्रग्रह (तारा) बेल्ट:** क्षुद्रग्रह (तारा) अंतरिक्ष में चट्टानी निकाय हैं, और वे ज्यादातर मंगल और बृहस्पति की कक्षाओं के बीच उत्पन्न होते हैं। इस क्षेत्र को क्षुद्रग्रह (तारा) बेल्ट के रूप में भी जाना जाता है।

► निम्नलिखित को क्षुद्रग्रह (तारा) भी कहा जाता है, हालांकि नासा इन्हें "छोटे ग्रह" बुलाना पसंद करता है

► **ट्रोजन:** ये चट्टानी निकाय हैं जिनमें उतनी ही कक्षाएं होती हैं जितनी ग्रह में।

► इसमें बृहस्पति, मंगल और नेपच्यून ट्रोजन हैं।

► 2011 में, नेचर ने पहली पृथ्वी ट्रोजन, 2010 TK7 की खोज प्रकाशित की थी।

► **सेटॉर्स:** ये बृहस्पति और नेपच्यून के बीच की चट्टानी निकाय हैं।

► **ट्रांस-नेपच्यूनियन वस्तुएं:** वे वस्तुएं जो नेपच्यून की कक्षा से परे हैं।

### संरचना

► वे मिट्टी और सिलिकेट चट्टानों से लेकर धातुओं तक किसी भी चीज़ से बने हो सकते हैं।

► वास्तव में, नासा अपनी रचना के आधार पर क्षुद्रग्रहों का वर्गीकरण करता है, जो निम्नलिखित हैं:

► **C-प्रकार (कॉन्डाइट):** इस तरह के क्षुद्रग्रह (तारा) मिट्टी और सिलिकेट चट्टानों से बने होते हैं।

► **S-प्रकार (पथरीले):** ये सिलिकेट सामग्री और निकेल-लोहे से बने होते हैं।

► **M-प्रकार:** ऐसे क्षुद्रग्रहों की धात्विक रचना होती है।

### पृथ्वी के पास का क्षुद्रग्रह (तारा)

► कोई भी वस्तु जिसकी कक्षा पृथ्वी के पास होती है, उसे पृथ्वी के निकट क्षुद्रग्रह (तारा) कहा जाता है।

► पृथ्वी के निकट क्षुद्रग्रहों का निम्नलिखित वर्गीकरण किया गया है:

► **अटीरास:** ये ऐसी वस्तुएँ होती हैं जिनकी कक्षाएँ पृथ्वी की कक्षा से छोटी होती हैं, और वे पृथ्वी की कक्षा के अंदर भी होती हैं।

- **एटेन्स और अपोलोज़:** ये पृथ्वी-क्रॉसर्स होते हैं (यानि वे पृथ्वी की कक्षा को पार करते हैं) जिनकी कक्षाएं पृथ्वी की कक्षा के निकट होती हैं।
- **अमोर्स:** इन क्षुद्रग्रहों की कक्षाएं पृथ्वी की कक्षाओं के बाहर होती हैं लेकिन मंगल ग्रह के अंदर होती हैं।
- **संभावित खतरनाक क्षुद्रग्रह (तारा):** निकट-पृथ्वी का कोई भी क्षुद्रग्रह (तारा) संभावित खतरा बन सकता है यदि पृथ्वी से उनकी दूरी 0.5 खगोलीय इकाइयों या 7.5 मिलियन किमी. से कम हो।
- 1 खगोलीय इकाई 150 मिलियन किमी. के बराबर होती है जो पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी के बराबर है।

### धूमकेतु

- धूमकेतु एक बर्फीले छोटे सौर मंडल का पिंड है, जो सूर्य के काफी करीब होने पर एक दृश्यमान कोमा (visible coma) (एक पतला, अस्पष्ट, अस्थायी वातावरण) और कभी-कभी एक पूंछ भी प्रदर्शित करता है।
- ये घटनाएं सौर विकिरण के प्रभाव और धूमकेतु के केन्द्रक पर सौर हवा के कारण होती हैं।
- **धूमकेतु नाभिक** कुछ सौ मीटर से लेकर दसियों किलोमीटर तक होता है और बर्फ, धूल और छोटे चट्टानी कणों के कमज़ोर संग्रहों से बना होता है।

### उल्का

- **उल्कापिंड** सौर मंडल में मलबे के बड़े या रेत के आकार के कण होते हैं।
- पृथ्वी (या किसी अन्य पिंड के) पर वातावरण में प्रवेश करने वाले उल्कापिंड के दृश्यात्मक पथ को उल्का कहते हैं, जिसे बोलचाल की भाषा में एक **शूटिंग स्टार या गिरता हुआ तारा** कहा जाता है।
- यदि कोई उल्कापिंड जमीन पर पहुँचता है और प्रभाव झेल जाता है, तो उसे **उल्कापिंड** कहा जाता है।
- कई उल्काएं कुछ सेकंड या मिनट के अंतराल में दिखाई देती हैं जिन्हें **उल्का बौछार** कहा जाता है।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- क्षुद्रग्रह (तारा) एपोफिस क्या है? इसका क्या महत्व है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## वायुसेना को मिला पहला अपाचे हेलीकॉप्टर



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || प्रतिरक्षा || सैन्य प्रौद्योगिकी

### शीर्षक

वायुसेना को मिला पहला अपाचे हेलीकॉप्टर

### सुर्खियों में क्यों?

► भारतीय वायु सेना को USA में एरिज़ोना के मेसा में बोइंग उत्पादन सुविधा में पहला AH-64E (I) अपाचे गार्डियन अटैक हेलीकॉप्टर सौंप दिया गया है।

#### The force multipliers

A look at the new deal for Apache attack helicopters

##### Earlier deal

- Contract for 22 AH-64E Apaches attack helicopters and 15 Chinook heavy-lift helicopters signed with the U.S. and Boeing on September 28, 2015
- The 22 Apaches cost ₹13,951.57 crore. They will be operated by the Indian Air Force
- Delivery: From July 2019 to March 2020
- Indian Air Force currently operates Russian Mi-25 and Mi-35 attack helicopters which are nearing the end of their service life

##### Current deal

- In August 2017, the government approved the procurement of six Apaches at the same cost
- On June 12, 2018 the Defence Security Cooperation Agency (DSCA) notified the U.S. Congress of the possible sale to India
- The six Apaches and associated equipment and training will cost about \$930 million
- These will be operated by the Indian Army, which has long pitched for attack helicopters of its own. It has projected a requirement of 39 helicopters

► AH-64E (I) अपाचे गार्डियन

► AH-64E अपाचे एक प्रमुख बहु-भूमिका वाला अटैक हेलीकॉप्टर है और अमेरिकी सेना द्वारा उड़ाया जाता है।

► IAF अपाचे का नवीनतम संस्करण खरीद रहा है, जिसे AH-64E (I) अपाचे गार्डियन कहा जाता है।

► भारतीय वायु सेना को भविष्य में बोइंग से 22 अपाचे हेलीकॉप्टर प्राप्त होंगे जो जुलाई 2019 तक भारतीय वायु सेना में शामिल होने लगेंगे।

► अपाचे को व्यापक रूप से दुनिया का सबसे घातक लड़ाकू हेलीकॉप्टर माना जाता है, जिसने 1991 में प्रथम खाड़ी युद्ध से लेकर अफगानिस्तान में चल रही लड़ाई में मिशन तक लगभग एक लाख घंटे का संघर्ष तय किया था।

► यह समान प्रभावशीलता के साथ दिन या रात में काम कर सकता है, ज़मीन से कुछ मीटर ऊपर उड़ता है और पेड़ों और रेत के टीलों के पीछे आड़ लेता है।

► इसका उन्नत धनुष (लॉन्गबो) रडार दुश्मन के बख़्तरबंद वाहनों को उठाता है और फिर उन्हें एंटी-टैंक मिसाइलों, एयर-टू-सरफेस रॉकेट या 625 राउंड प्रति मिनट की रफ़्तार से लक्ष्य को भेदने वाली चैन गन से ध्वस्त कर देता है।

► एक अत्यधिक गतिशील, कवच सहित स्ट्राइक कोर को हवाई घटक के रूप में संचालित करने के लिए अभिकल्पित किये गये अपाचे को "फ्लाइंग टैंक" करार दिया गया है।

### सौदा

► भारत और अमेरिका ने सितंबर 2015 में भारतीय वायुसेना के लिए 22 AH-64E हेलीकॉप्टरों के लिए लगभग (INR 13,952 करोड़) \$ 2 बिलियन के समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

► सभी विमानों की डिलीवरी 2020 में पूरी होने वाली है।

► रक्षा मंत्रालय ने सेना के लिए INR 4,168 करोड़ (\$ 596 मिलियन) की लागत से बोइंग के छह AH-64E अपाचे हेलीकॉप्टरों, आयुध और सम्बद्ध उपकरणों की खरीद को अतिरिक्त रूप से मंजूरी दे दी है।

### भारतीय वायुसेना की संवर्द्धन क्षमता

► AH-64E (I) अपाचे हेलीकॉप्टर वायु सेना बल के हेलीकॉप्टर बेड़ों के आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

► अपाचे के आगमन के साथ भारतीय वायुसेना के अटैक हेलीकॉप्टर बेड़े का आधुनिकीकरण होगा जो वर्तमान में रूसी मूल के MI-35 हेलीकॉप्टरों से लैस है।

► पंजाब में पठानकोट और राजस्थान के सूरतगढ़ में तैनात रूसी अटैक हेलीकॉप्टर अब सेवानिवृत्ति के कगार पर हैं और इस तरह, IAF को क्षमताओं में तत्काल वृद्धि की आवश्यकता है।

► डेटा नेटवर्किंग के माध्यम से हथियार प्रणालियों के ज़रिए युद्ध के मैदान की तस्वीर को प्राप्त करने और संचारित करने की इन हेलीकॉप्टरों की क्षमता, इन्हें एक घातक हथियार बनाता है।

► ये हेलीकॉप्टर दो उच्च-प्रदर्शन टर्बोशाफ्ट इंजनों द्वारा संचालित होते हैं, जिसमें अधिकतम कूज गति 284 किमी प्रति घंटा या 152 नॉट्स समुद्री मील है।

► दो भारतीय वायुसेना के स्काइनों के बीच वितरित 22 अपाचे में "दुश्मन के हवाई सुरक्षा के दमन (SEAD)" की युद्धकालीन भूमिका होगी।

► यह सीमा के पास दुश्मन के वायु रक्षा रडार और मिसाइल बैटरियों को नष्ट करने के अमेरिकी सिद्धांत को संदर्भित करता है, जिससे लड़ाकू विमान को दुश्मन के हवाई क्षेत्र को अनिर्धारित रूप से पार करने की अनुमति मिलती है।

► हेलीकॉप्टर को भारतीय वायुसेना की भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया गया है और पहाड़ी इलाकों में इसकी महत्वपूर्ण क्षमता होगी।

► हेलीकॉप्टर में गतिरोध सीमाओं पर सटीक हमले करने और जमीन से खतरों के साथ-साथ शत्रुतापूर्ण हवाई क्षेत्र में संचालित करने की क्षमता है।

► AH-64E, वे हेलीकॉप्टर हैं जो AGM-118 हेलफायर मिसाइल और हाइड्रा 70 रॉकेट पॉड ले जाने में सक्षम हैं। उनके चार ब्लेड हैं और इसमें लगे पंखे घूम सकते हैं।

► AGM-114R हेलफायर मिसाइलें: यह मुख्य रूप से विरोधी कवच भूमिका के लिए विकसित हवा से जमीन पर वार करने वाली मिसाइल हैं।

► प्रत्येक हेलफायर का वजन 45.4किग्रा.-49किग्रा. है, जिसमें 8-9किग्रा. का बहुउद्देशीय वारहेड शामिल है।

► हाइड्रा 70: यह एक 2.75 इंच का फिन-स्टेबलाइज्ड अन-गाइडेड रॉकेट है जो अपाचे द्वारा हथियार स्तंभ पर लगाया जाता है और इसका इस्तेमाल एयर-टू-ग्राउंड हमलों के लिए किया जाता है, जिसका इस्तेमाल मुख्य रूप से एंटी-मैटरियल, एंटी-पर्सनल सप्लेशन ऑपरेशन के लिए किया जाता है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- भारतीय वायु सेना की परिचालन तैयारियों को बढ़ावा देने के उपाय सुझाएं।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## ISRO द्वारा प्रक्षेपित किया गया RISAT 2B पृथ्वी अवलोकन उपग्रह



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || अंतरिक्ष || उपग्रह और लॉन्च वाहन

### शीर्षक

ISRO द्वारा प्रक्षेपित किया गया RISAT 2B पृथ्वी अवलोकन उपग्रह, जानिए इसके बारे में प्रमुख तथ्य

### सुर्खियों में क्यों ?

► भारत की क्षमताओं में वृद्धि करते हुए, पृथ्वी के सभी मौसमों और सभी स्थितियों का निरीक्षण करने के लिए, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने RISAT-2B उपग्रह लॉन्च किया गया है।

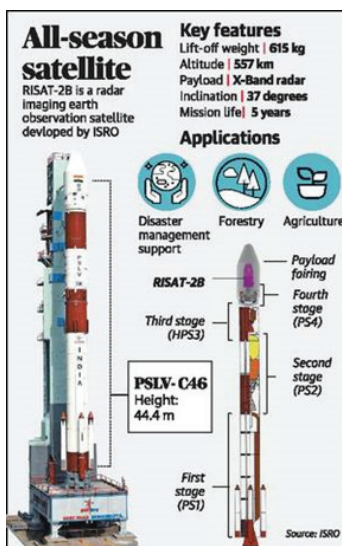
### RISAT

► **रडार इमेजिंग उपग्रह:** RISAT श्रृंखला में दो उपग्रह इसरो द्वारा लॉन्च किए गए थे।

► RISAT-2, 2009 में पहली बार लॉन्च किया गया था, जबकि RISAT-1, जिसे विलंब हो गया था, केवल 2012 में ही लॉन्च किया गया था।

► RISAT-1 अब कार्यरत नहीं है।

► बहुत लंबे समय के बाद, इसरो के PSLV रॉकेट का उपयोग केवल एक उपग्रह को अंतरिक्ष में लॉन्च करने के लिए किया गया था। हाल के दिनों में, इसरो एक ही बार में कई उपग्रहों का प्रक्षेपण कर रहा है।



### विशेषताएं

- **सिंथेटिक एपर्चर रडार:** RISAT, या रडार इमेजिंग उपग्रह, सिंथेटिक एपर्चर रडार' के रूप में जाना जाता जो सेंसर से लैस है, जिसे 'रडार इमेज' कहते हैं वह उनका चित्रण करता है।
- यह कैमरे की फ्लैश लाइट की तरह काम करता है: जैसे कि -
- कैमरे के फ्लैश लाइट्स, जो किसी वस्तु को रोशन करने के लिए दृश्यमान प्रकाश छोड़ते हैं और फिर एक छवि बनाने के लिए परावर्तित प्रकाश का उपयोग करते हैं।
- सिंथेटिक एपर्चर रडार हर सेकंड सैकड़ों रेडियो सिग्नल को इस विषय (इस मामले में, पृथ्वी) की ओर भेजता है और रेडियो आकृति बनाने के लिए परावर्तित संकेतों को कैद करता है, जिसका उपयोग वास्तविक छवि बनाने के लिए कंप्यूटर द्वारा किया जा सकता है।
- **माइक्रोवेव स्पंदन :** वस्तु की नमी और बनावट माइक्रोवेव सिग्नल की क्षमता का निर्धारण करेगी जो प्रतिबिंबित होती है।
- जबकि परावर्तित संकेतों की शक्ति विभिन्न लक्ष्यों को निर्धारित करने में मदद करेगी, संचरित और परावर्तित संकेतों के बीच का समय वस्तु की दूरी निर्धारित करने में मदद करेगा।
- इसरो द्वारा अप्रैल 2012 में लॉन्च किए गए RISAT-1 उपग्रह की तरह, RISAT-2B भी माइक्रोवेव विकिरण का उपयोग करेगा।
- दृश्य प्रकाश के विपरीत, माइक्रोवेव में तरंग दैर्ध्य होता है और इसलिए यह वायुमंडलीय प्रकीर्णन के लिए अतिसंवेदनशील नहीं होगा।
- माइक्रोवेव विकिरण इस प्रकार आसानी से मेघावरणांक, धुंध और धूल से गुजर सकता है, और जमीन पर छवि बना सकता है।
- इसलिए, RISAT-2B उपग्रह लगभग सभी मौसम और पर्यावरणीय परिस्थितियों में छवि बनाने में सक्षम होगा।
- चूंकि यह छवि के लिए दृश्यमान प्रकाश पर निर्भर नहीं करता है, यह दिन और रात दोनों के दौरान जमीन पर छवि बनाने में सक्षम होगा।
- **एक्स-बैंड सिंथेटिक एपर्चर रडार:** RISAT-2B उपग्रह पहली बार एक्स-बैंड सिंथेटिक एपर्चर रडार का उपयोग करेगा; सिंथेटिक एपर्चर रडार स्वदेशी रूप से विकसित किया गया था।
- RISAT-1 द्वारा उपयोग किए जाने वाले C- बैंड के विपरीत, X- बैंड की छोटी तरंग उच्च लक्ष्य पहचान और भेदभाव के लिए उच्च संकल्पित छवि की अनुमति देता है।
- चूंकि इसका उच्च संकल्पन है, उपग्रह एक मीटर से भी छोटे आयामों की वस्तुओं का पता लगाने में सक्षम होगा।
- छोटी वस्तुओं का अध्ययन करने की यह क्षमता और गति निगरानी के लिए भी उपयोगी हो सकती है।

### महत्व

► 22 मई को भोर से पहले के RISAT-2B उपग्रह के सफल लॉन्च के साथ, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने एक और उपलब्धि हासिल की है।

► उपग्रह भारत की क्षमता में वृद्धि करेगा -

► मानसून के मौसम के दौरान फसल की निगरानी,

► वन की आग और वनों की कटाई के लिए वानिकी मानचित्रण, और

► राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन कार्यक्रम के हिस्से के रूप में बाढ़ मानचित्रण।

► यह देखते हुए कि मानसून के मौसम के दौरान आच्छन्न आसमान स्थिर होता है और बाढ़ के समय में, मेघावरणांक में घुसने की क्षमता की आवश्यकता होती है।

► जबकि ऑप्टिकल रिमोट सेंसिंग जो छवि के लिए दृश्यमान प्रकाश पर निर्भर करता है, बादलों द्वारा बाधित हो जाता है, RISAT-2B नहीं होगा।

## मुख्य प्रश्न

► इसरो द्वारा शुरू की गई RISAT 2B पृथ्वी अवलोकन उपग्रह की विशेषताओं और महत्व की जांच करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



मेड इन इंडिया एरियल टारगेट ड्रोन अभ्यास DRDO ने 'अभ्यास' का सफल परीक्षण किया

प्रशान्त धवन द्वारा



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || रक्षा || सैन्य प्रौद्योगिकी

## शीर्षक

मेड इन इंडिया एरियल टारगेट ड्रोन अभ्यास DRDO ने 'अभ्यास' का सफल परीक्षण किया

## सुर्खियों में क्यों ?

- ▶ भारत के रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) ने घोषणा की कि उन्होंने अभ्यास हाई-स्पीड एक्सपेंडेबल एरियल टारगेट (HEAT) ड्रोन का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है।
- ▶ पायलट रहित विमान, जिसे लाइव-फायर हथियार परीक्षणों में एक लक्ष्य के रूप में काम करने के लिए डिज़ाइन किया गया था, का उड़ा परीक्षण ओडिशा के चांदीपुर के पास भारत की अंतरिम टेस्ट रेंज में किया गया था।

## विकास

- ▶ अभ्यास 2012 से विकास में है और 2013 में इसका प्रदर्शन अंतरराष्ट्रीय रक्षा प्रदर्शनी में डीआरडीओ द्वारा प्रदर्शित किया गया था।
- ▶ उस वर्ष, अभ्यास को दक्षिण कोरिया के सियोल में अंतरराष्ट्रीय एयरोस्पेस और रक्षा प्रदर्शनी ADEX-2013 में प्रदर्शित किया गया था।
- ▶ उड़ान परीक्षण को विभिन्न रडार और इलेक्ट्रो ऑप्टिक प्रणालियों द्वारा ट्रैक किया गया और पूरी तरह से स्वायत्त तरीके से इसने पॉइंट नेविगेशन मोड में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया।



## डिज़ाइन

▶ अभ्यास सीधे छोटे गैस टरबाइन इंजन पर डिज़ाइन किया गया है और यह नेविगेशन और मार्गदर्शन करने के लिए स्वदेशी रूप से विकसित एमईएमएस आधारित नेविगेशन प्रणाली का उपयोग करता है।

### ▶ डीआरडीओ लक्ष्य

▶ अभ्यास एक पुराने भारतीय ड्रोन, लक्ष्य, का विकसित रूप है।  
▶ हवाई जहाज़ के ढांचे का डिज़ाइन डीआरडीओ के वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (ADE) द्वारा विकसित हाई-स्पीड टारगेट ड्रोन प्रणाली, 'लक्ष्य' पर आधारित है।

### ▶ डीआरडीओ अभ्यास

- ▶ अभ्यास ने नाक के शंकु (nose cone) में लंबर्ग लेंस के उपयोग के माध्यम से लाइव-फायर अभ्यास और अन्य अभ्यासों के लिए एक समायोज्य सिम्युलेटेड रडार क्रॉस सेक्शन की सुविधा प्रदान की है, जो लक्ष्य की रडार परावर्तकता में सुधार करता है।
- ▶ अभ्यास रडार क्रॉस-सेक्शन (आरसीएस) के साथ-साथ इसके दृश्यात्मक और इंफ्रारेड सिग्नचर (visual and infrared signatures) का संवर्धन विभिन्न प्रकार के विमानों में वायु-रक्षा हथियार अभ्यास के लिए किया जा सकता है।
- ▶ यह जैमर प्लेटफॉर्म और डिक्ॉय के रूप में भी कार्य कर सकता है।
- ▶ हीट (HEAT) प्रणाली का उपयोग पोस्ट लॉन्च रिकवरी मोड से दूर करने के लिए किया जाता है, जो समुद्र परिदृश्य में समय लेने वाली और मुश्किल होती है।

## यह महत्वपूर्ण क्यों है?

- ▶ टारगेट मिसाइल और ड्रोन, इंटरसेप्टर की एक श्रृंखला के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसमें सतह से हवा प्रणाली के साथ-साथ कूज और बैलिस्टिक मिसाइल की रक्षा प्रणाली शामिल हैं।
- ▶ अभ्यास को एंडो-वायुमंडलीय सतह से वायु अवरोधन परीक्षणों के साथ-साथ हवा से हवा में अभ्यास के लिए विमान का अनुकरण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।  
टारगेट ड्रोन में सेंसर भी हैं, जिसमें ध्वनिक मिसाइल दूरी संकेतक भी शामिल हैं, जिससे डीआरडीओ इंजीनियरों को लाइव-फायर परीक्षणों की जानकारी एकत्र करने की अनुमति मिलती है।
- ▶ भारत के पास स्वदेशी और आयातित वायु और मिसाइल रक्षा प्रौद्योगिकियों का एक विविध सेट है, जिसमें रूसी एस-400 सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली और स्वदेशी आकाश प्रणाली शामिल है।
- ▶ रूसी एस -400 सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली का नई दिल्ली में अक्टूबर 2020 तक वितरण किए जाने की उम्मीद है।
- ▶ हथियार अभ्यास के लिए एक स्थिर वाहन होने के अलावा, अभ्यास को एक प्रभावी जैमर प्लेटफॉर्म के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

## अतिरिक्त जानकारी

## लक्ष्य(टारगेट) ड्रोन

- एक लक्षित ड्रोन एक मानव रहित हवाई वाहन है, जिसे आमतौर पर रिमोट से नियंत्रित किया जाता है, और इसे विमान-रोधी दल के प्रशिक्षण में उपयोग किया जाता है।
- आरंभिक ड्रोन में से एक ब्रिटिश डीएच.82 क्वीन बी था, जो कि 1935 के टाइगर मोथ ट्रेनर विमान का एक प्रकार था। यह वर्तमान "ड्रोन" के नाम का प्रतिनिधित्व करता है।
- एक बहुत बड़े बजट के साथ, अमेरिकी सेना सेवानिवृत्त विमानों या उनके पुराने संस्करणों जो अभी भी सेवा में हैं (जैसे, QF-4 फैटम II और QF-16 फाइटिंग फाल्कन) और दूरस्थ संचालित लक्ष्य के रूप में, अमेरिकी सेना, अमेरिकी नौसेना और अमेरिकी जल सेना के द्वारा व्यापक रूप से हवाई लक्ष्यों के रूप में प्रयोग किया जाएगा।

## मुख्य प्रश्न

- लक्ष्य(टारगेट) ड्रोन क्या हैं? युद्ध की प्रभावशीलता में उनके महत्व की जांच करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## स्वदेशी जैव विमान ईंधन के इस्तेमाल की औपचारिक मंजूरी मिल गई

प्रशान्त धवन द्वारा

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || ऊर्जा || जैव ऊर्जा

### शीर्षक

भारतीय वायुसेना द्वारा जैविक ईंधन का प्रयोग

### सुर्खियों में क्यों ?

- ▶ भारतीय वायुसेना ने ए.एन. -32 परिवहन विमान में जैव ईंधन के प्रयोग को मंजूरी दी है।
- ▶ यह 10% ट्री बॉर्न तेल (Tree Borne Oil) तथा 90% परमाणु रहित विमान ईंधन के साथ मिश्रित होता है।
- ▶ विमानन क्षेत्र विश्व भर में ग्रीनहाउस गैस के सबसे बड़े उत्सर्जकों में से एक है।

### जैव ईंधन क्या है?



- ▶ जैव ईंधन जैविक प्रक्रियाओं से जैविक पदार्थ या बायोमास से निर्मित हाइड्रोकार्बन ईंधन हैं, जो ठोस, तरल तथा गैसीय प्रारूप में हो सकते हैं।

### जैव ईंधन की पीढ़ियाँ

- ▶ भोज्य फसलें यथा गेहूँ, गन्ना
- ▶ अभोज्य फसलें यथा लकड़ी, जैविक अपशिष्ट, खाद्य फसल अपशिष्ट तथा विशिष्ट जैविक फसलें
- ▶ विशिष्ट ऊर्जा फसल यथा शैवाल
- ▶ कार्बन नकारात्मक प्रक्रियाओं के माध्यम से कार्बन अवशोषण व भण्डारण में सहायता करने वाले ईंधन

### जैव ईंधन के महत्व

- ▶ भारत पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक में 180 देशों में 177वां स्थान प्राप्त कर दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में है।
- ▶ जैव ईंधन पर्यावरण के अनुकूल हैं, और भारतीय वायु सेना के कार्बन उत्सर्जन को कम करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।
- ▶ अमेरिकी वायु सेना ने पहले से ही आंशिक रूप से जैव ईंधन पर उड़ान भरने वाले इंजनों को शामिल किया है।
- ▶ इसके अतिरिक्त, पेरिस जलवायु समझौते के अंतर्गत हमारे आई.एन.डी.सी. लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में यह एक सकारात्मक कदम होगा।
- ▶ यह अपशिष्ट प्रबंधन का प्रभावी तरीका है।
- ▶ **अर्थव्यवस्था**
- ▶ यह 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देने के साधन के अभिप्राय में एक कदम है।
- ▶ आदिवासी क्षेत्रों में महुआ के पौधों से जनित ट्री बॉर्न तेल (Tree Borne Oil) उनकी आय में पर्याप्त वृद्धि करेगा।
- ▶ भारत में ट्री बॉर्न तिलहन यथा नीम, करंजा, महुआ का एक वृहत संसाधन है।
- ▶ वैकल्पिक रोजगार अवसरों का सृजन
- ▶ **ऊर्जा सुरक्षा**
- ▶ यह कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता कम करेगा।
- ▶ **सामाजिक**
- ▶ यह ईंधन संग्रह में महिलाओं के कठोर श्रम को कम करेगा
- ▶ स्वच्छ खाद्य ईंधन की सहायता से 3 मिलियन अवधिपूर्व मृत्यु को रोका जा सकता है
- ▶ ग्रामीण सामाजिक आर्थिक सशक्तीकरण हेतु ईंधन/विद्युत उपलब्धता

### जैव ईंधन की सीमाएँ

- ▶ खाद्य बनाम ईंधन की बहस ईंधन उत्पादन के लिए खाद्य फसलों के पंथतारण के जोखिम पर प्रकाश डालती है।
- ▶ कुछ जैव ईंधनों की कम दक्षता उन्हें कम स्पर्धी बनाते है
- ▶ एकल कृषि पद्धति के अभ्यास के परिणामस्वरूप जैव विविधता की हानि
- ▶ इसके कच्चे माल के उत्पादन हेतु भारी मात्रा में जल और भूमि की आवश्यकता होती है।
- ▶ पर्याप्त अनुसंधान तथा संभावित असर की कमी प्रभाव पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ता है।

### अतिरिक्त जानकारी

### जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति-2018

- ▶ वर्ष 2030 तक पेट्रोल में 5 प्रतिशत इथेनॉल और डीजल में 5 प्रतिशत बायोडीजल मिश्रण का सांकेतिक लक्ष्य
- ▶ मूल और विकसित में जैव ईंधन का वर्गीकरण
- ▶ राष्ट्रीय जैव ईंधन समन्वय समिति और राष्ट्रीय बायोमास भंडार की स्थापना

- इथेनॉल हेतु अधिशेष खाद्यान्न के विक्रय के माध्यम से आय के वैकल्पिक साधन प्रदान करना
- व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण का प्रावधान
- अनुसंधान एवं विकास पर जोर
- जैव ईंधन आपूर्ति श्रृंखला को मजबूती प्रदान करना

### अन्य पहल

- बायोफ्यूचर प्लेटफार्म ,सतत न्यून कार्बन बायोइकोनॉमी हेतु सरकार द्वारा नेतृत्व वाली, बहु-हितधारक पहल
- मिशन इनोवेशन, एक वैश्विक पहल जो स्वच्छ ऊर्जा निवेश को दोगुना करने के लिए कार्य कर रही है
- गोबरधन योजना जैव ईंधन के उत्पादन हेतु मवेशी अपशिष्टों का प्रयोग करने के लिए
- प्रधानमंत्री जी-वन योजना दूसरी पीढ़ी इथेनॉल के उत्पादन हेतु व्यावसायिक परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए

### मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- जैव ईंधन में निवेश पर्यावरणीय अनिवार्यता तथा आर्थिक आवश्यकता दोनों है। जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति- 2018 के आलोक में विवेचना करें।

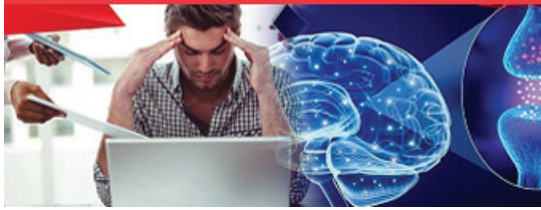


(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## सेरोटोनिन मस्तिष्क की कोशिकाओं को तनाव से निपटने में मदद करता है।



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || स्वास्थ्य और चिकित्सा || रोग

### शीर्षक

भारतीय वैज्ञानिकों ने खोज की कि कैसे सेरोटोनिन मस्तिष्क की कोशिकाओं को तनाव से निपटने में मदद करता है।

### समाचार में क्यों?

- ▶ भारतीय वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि सेरोटोनिन मस्तिष्क की कोशिकाओं में ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाता है और उन्हें तनाव में जीवित रहने में मदद करता है। इस नई सूचना को संभवतः भविष्य में तनाव-रोधी दवाओं के विकास के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।
- ▶ उनके निष्कर्षों को प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज पत्रिका में प्रकाशित किया गया था।

### सेरोटोनिन की भूमिका

- ▶ सेरोटोनिन एक रसायन है जो मस्तिष्क के एक हिस्से की जानकारी का दूसरे हिस्से तक प्रसारण करता है और नींद से लेकर सामाजिक व्यवहार तक कई कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए जाना जाता है।
- ▶ मुंबई स्थित टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR) के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया है कि न्यूरोट्रांसमीटर मस्तिष्क कोशिकाओं में माइटोकॉन्ड्रिया की संख्या को बढ़ाता है।
- ▶ मस्तिष्क की कोशिकाओं में माइटोकॉन्ड्रिया कोशिकीय कार्यों को करने के लिए ऊर्जा उत्पन्न करते हैं और तनाव के तहत मस्तिष्क कोशिकाओं के अस्तित्व में भूमिका निभाते हैं।
- ▶ इसके अलावा, सेरोटोनिन माइटोकॉन्ड्रिया द्वारा ऊर्जा का उत्पादन भी बढ़ाता है।
- ▶ न्यूरोनल ऊर्जावान को विनियमित करने में सेरोटोनिन की यह भूमिका अब तक ज्ञात नहीं थी।

### सेरोटोनिन के लाभ

- ▶ सेरोटोनिन न्यूरोन्स में विषाक्त प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन एंजाइम को कम करता है और सेलुलर तनाव के हानिकारक प्रभावों से रक्षा करते हुए एंटी-ऑक्सीडेंट एंजाइम और प्रतिरोधक न्यूरोन्स को बढ़ाता है।
- ▶ अध्ययन ने न्यूरोन्स में ऊर्जा उत्पादन में सेरोटोनिन की एक अभूतपूर्व भूमिका को उजागर किया है, जो न्यूरोन्स को तनाव में संभलने के लिए प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।
- ▶ इसने न्यूरोडीजेनेरेटिव और मनोरोग विकारों के उपचार के लिए नए चिकित्सीय लक्ष्यों की भी पहचान की है।

### Serotonin Facts

Molecular Structure:	$C_{10}H_{12}N_2O$
Where Produced:	Brain and gut
Controls:	Mood, memory, sleep, cognition
Too Much:	Serotonin syndrome leading to diarrhea, muscle rigidity, fever, seizures
Too Little:	Irritability, aggression, depression, insomnia

**Activities that Boost Levels:** Smiling, exercising, sunshine, eating well

### ऊर्जा बढ़ाने वाला कार्य

- ▶ इस विषय में यह बात सामने आई है कि, सेरोटोनिन द्वारा न्यूरोन्स में नई माइटोकॉन्ड्रिया की पीढ़ी में वृद्धि होती है जिसे सेलुलर श्वसन और ऊर्जा रसायन एटीपी (ATP) का साथ मिलता है।
- ▶ सेरोटोनिन के इन प्रभावों में सेरोटोनिन 2A रिसेप्टर और माइटोकॉन्ड्रियल पीढ़ी के मास्टर नियामक शामिल हैं - SIRT1 और PGC-1α।
- ▶ अध्ययन से ज्ञात होता है कि सेरोटोनिन प्रत्यक्ष रूप से न्यूरोनल पॉवरप्लांट को प्रभावित कर सकता है, इस तरह से न्यूरोन्स तनाव से जूझने के तरीके को प्रभावित करता है। अभी तक इस प्रक्रिया का अध्ययन प्रयोगशाला के जानवरों पर किया गया है।

### अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.thehindu.com/sci-tech/science/stress-buster-serotonin-may-help-treat-neurological-decline/article27051379.ece>

### मुख्य प्रश्न

- ▶ सेरोटोनिन क्या है और इसके उपयोग की व्याख्या करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## ISRO के 5 उपग्रहों ने चक्रवात तूफान से बचाई कई लोगों की जान 5



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || अंतरिक्ष || विविध

### शीर्षक

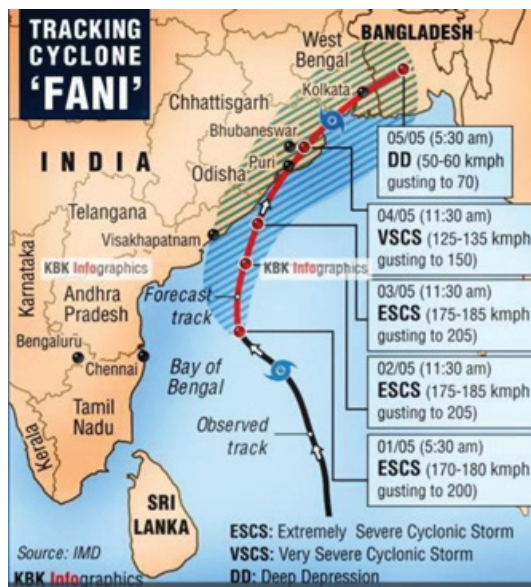
ISRO के 5 उपग्रहों ने चक्रवात फानी से बचाई कई लोगों की जान 5

### सुर्खियों में क्यों ?

► मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, ओडिशा में 1999 के बाद से पूर्वी भारत में आने वाले सबसे भयंकर तूफानों में से एक चक्रवात फानी ने विध्वंस मचाया और लगभग 77 लोगों की जान ले ली।

### संयुक्त राष्ट्र से प्रशंसा

- ओडिशा, हालांकि, चक्रवातों के लिए कोई अजनबी नहीं है।
- सरकारी मृत्यु गणना के अनुसार 1999 में, एक ताकतवर चक्रवात ने 9,885 लोगों को मार डाला था।
- इस बार मृत्यु गणना में कमी दर्ज की गई जो आपदा जोखिम को कम करने के लिये पिछले 20 साल से किये जा रहे निवेश का परिणाम है।



► आपदा में कमी के लिए संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी ने भारतीय मौसम विभाग की शुरुआती चेतावनियों के "लगभग सटीक" अनुमानों की सराहना की है, जिससे अधिकारियों को एक अच्छी तरह से लक्षित निकासी योजना का संचालन करने और जीवन के नुकसान को कम करने में मदद मिली क्योंकि बेहद गंभीर चक्रवाती तूफान फानी ने पुरी के तटीय शहरों के पास तहलका मचाया था।

### ISRO के 5 उपग्रह

- जैसे ही मौसम विज्ञानियों ने दक्षिणी हिंद महासागर में निम्न स्तर का एक गर्त देखा, पांच भारतीय उपग्रहों ने चक्रवात फानी पर निरंतर नज़र रखी जो चक्रवात में परिवर्तित होने जा रहा था।
- जैसे ही यह एक "अत्यंत गंभीर चक्रवात" के रूप में विकसित हुआ, इसरो द्वारा लॉन्च किए गए उपग्रहों ने हर 15 मिनट में ग्राउंड स्टेशन पर डेटा भेजा, जिससे उसके पूर्वानुमान का अनुमान लगाने और सैकड़ों लोगों की जान बचाने में मदद मिली।
- आईएमडी के अनुसार, फानी के आसपास की तीव्रता, स्थान और क्लाउड कवर का अध्ययन करने के लिए उपग्रहों INSAT-3D, INSAT-3DR, स्कैटसैट-1, ओशियनसैट-2 और मेघा ट्रॉपिक के डेटा का उपयोग किया गया था।
- **INSAT-3D:** INSAT-3D भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा विकसित एक मौसम विज्ञान, डेटा प्रसारण और उपग्रह सहायता से लैस, खोज और बचाव उपग्रह है, जिसे 26 जुलाई 2013 को फ्रेंच गुयाना से एरियन 5 ईसीए लॉन्च वाहन का उपयोग करके सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया था।
- **INSAT-3DR:** INSAT-3DR भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा निर्मित और भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली द्वारा संचालित एक भारतीय मौसम उपग्रह है।
- यह 6-चैनल इमेजर और 19-चैनल साउंडर का उपयोग करते हुए भारत को मौसम संबंधी सेवाएं प्रदान करेगा, साथ ही प्लेटफार्मों के लिए यह क्षेत्रीय डेटा का संग्रह कर जानकारी एकत्रित करेगा, सूचना देगा और संदेश का प्रसारण करेगा।
- उपग्रह को 8 सितंबर 2016 को लॉन्च किया गया था और यह INSAT-3D का अनुवर्ती है।
- **स्कैटसैट-1:** स्कैटसैट-1 (स्कैटरोमीटर सैटेलाइट-1) एक लघु उपग्रह है जो भारत को मौसम की भविष्यवाणी, चक्रवात की भविष्यवाणी और नज़र रखने की सेवाएं प्रदान करता है।
- इसे ISRO सैटेलाइट सेंटर, बंगलुरु द्वारा विकसित किया गया है जबकि इसका पेलोड स्पेस एप्लीकेशन सेंटर, अहमदाबाद द्वारा विकसित किया गया था।
- उपग्रह ने ओशियनसैट-2 का स्थान ले लिया, जो साढ़े चार साल के अपने जीवन काल के बाद सेवानिवृत्त हो गया था।
- **ओशियनसैट-2:** ओशियनसैट-2 एक भारतीय उपग्रह है जो ओशियनसैट-1 पर सागर के रंग के नियंत्रण (OCM) उपकरण के परिचालन उपयोगकर्ताओं के लिए सेवा निरंतरता प्रदान करने हेतु बनाया गया है।
- यह अन्य क्षेत्रों में अनुप्रयोगों की क्षमता को भी बढ़ाएगा।
- ओशियनसैट-2 का मुख्य उद्देश्य सतह की हवाओं और समुद्र की सतह का अध्ययन करना है, क्लोरोफिल सांद्रता का निरीक्षण करना, फाइटोप्लांकटन खिलने की निगरानी करना, वायुमंडलीय एरोसोल का अध्ययन और पानी में निलंबित तलछट का अध्ययन करना है।

- ▶ यह अन्य क्षेत्रों में अनुप्रयोगों की क्षमता को भी बढ़ाएगा।
- ▶ ओशियनसैट -2 का मुख्य उद्देश्य सतह की हवाओं और समुद्र की सतह का अध्ययन करना है, क्लोरोफिल सांद्रता का निरीक्षण करना, फाइटोप्लांकटन खिलने की निगरानी करना, वायुमंडलीय एरोसोल का अध्ययन और पानी में निलंबित तलछट का अध्ययन करना है।
- ▶ ओशियनसैट -2 समुद्र अनुसंधान के लिए समर्पित भारतीय रिमोट सेंसिंग उपग्रहों की श्रृंखला में इसरो का पहला उपग्रह है, और ओशियनसैट -1 (1999 में लॉन्च) के अनुप्रयोगों को निरंतरता प्रदान करेगा।
- ▶ **मेघा ट्रापिक्स:** मेघा-ट्रॉपिक जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में उष्णकटिबंधीय वातावरण में पानी के चक्र का अध्ययन करने के लिए एक उपग्रह मिशन है।
- ▶ भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) और फ्रेंच सेंटर नेशनल डी'एट्यूड स्पैटियल्स (CNES) के बीच सहयोगात्मक प्रयास के फलस्वरूप मेघा-ट्रॉपिक्स को अक्टूबर 2011 में एक PSLV रॉकेट द्वारा सफलतापूर्वक कक्षा में तैनात किया गया था।
- ▶ उपग्रह, पूर्वानुमानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विशेष रूप से चक्रवातों के दौरान, मौसम के मॉडल में डाले गए प्रारंभिक मापदंडों का वर्णन करने में मदद करते हैं, जो वायुमंडल की परिस्थितियों के करीब होती हैं। यह पूर्वानुमानों का बेहतर वर्णन करने में हमारी मदद करते हैं।
- ▶ IMD सटीक स्थान का सटीक अनुमान लगाने में सक्षम है, यानी उस स्थान का अनुमान जहां चक्रवात आता है। ओडिशा, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल में अधिकारियों ने सुरक्षा के लिए 11.5 लाख से अधिक लोगों को चक्रवात अधीन क्षेत्रों से बाहर निकाला था।
- ▶ उपग्रहों में से मुख्य पेलोड जो फानी के मूल को चिह्नित करने के लिए इस्तेमाल किया गया था, वह था स्कैटरोमीटर ऑनबोर्ड स्कैटसैट-1 - ध्रुवीय परिक्रमा करने वाला लघु उपग्रह और ओशियनसैट -2 जो समुद्र की सतह, हवा की गति और हवा की दिशा के बारे में डेटा भेज रहा था।

## समाधान

- ▶ जबकि मृत्यु दर कम रही है, एक स्पष्ट तस्वीर अब भौतिक क्षति के मद्देनजर उभर रही है, जो विशेष रूप से महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे के रूप में फानी ने दिखायी है।
- ▶ पुरी शहर, जो अपने पवित्र स्थलों और पर्यटकों के आकर्षण के लिए प्रसिद्ध है, विशेष रूप से फानी द्वारा क्षतिग्रस्त हुआ है।
- ▶ मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि हजारों लोग बेघर हुए थे और शहर पूरी तरह से बिजली और संचार खो चुका था।
- ▶ ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर भी अंधकारमय हो गया था और बंद संचार लाइनों से काफी नुकसान हुआ।
- ▶ भारत के नागरिक उड्डयन मंत्रालय के अनुसार, भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर यात्री टर्मिनल भवन काफी क्षतिग्रस्त हो गया था और हवाई अड्डे के यातायात नियंत्रण टॉवर की छत उड़ गई थी।
- ▶ ये रिपोर्ट आपदा रोधी बुनियादी ढाँचे में अधिक निवेश की आवश्यकता की ओर इशारा करती हैं।
- ▶ सक्षम बुनियादी ढाँचे का निर्माण करना और पुरानी सेवाओं को वापस शुरू किए जाने, विघटन को कम करने, कम आर्थिक नुकसान और तेजी से प्रतिक्रिया और पुनरोत्थान के प्रयासों में मदद कर सकता है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- ▶ केवल प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने के बजाए क्षमता में सुधार करने के लिए बदलाव करना होगा। टिप्पणी करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## नासा DART मिशन क्या है? नासा का क्षुद्रग्रह प्रभाव मिशन



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || अंतरिक्ष || अंतरिक्ष मिशन

### शीर्षक

नासा DART मिशन क्या है? नासा का क्षुद्रग्रह प्रभाव मिशन

### सुर्खियों में क्यों?

► नासा का पहला मिशन होगा जो गतिज (kinetic) प्रभावकारी तकनीक का प्रदर्शन करेगा - अपनी कक्षा को स्थानांतरित करने के लिए क्षुद्रग्रह पर प्रहार करेगा - संभावित भविष्य में क्षुद्रग्रह प्रभाव से बचाव के लिए।

### नासा DART मिशन

- **Didymos:** DART का लक्ष्य एक क्षुद्रग्रह है, जो 2022 के अक्टूबर में पृथ्वी के निकट होगा और फिर 2024 में यह फिर आएगा।
- नासा और जॉन्स हॉपकिन्स एप्लाइड फिजिक्स लेबोरेटरी (APL) के बीच एक संयुक्त परियोजना है और इसे नासा के ग्रह रक्षा समन्वय कार्यालय के तत्वावधान में विकसित किया जा रहा है।
- **डिडिमोस:** डीएआरटी का लक्ष्य एक क्षुद्रग्रह है जो पृथ्वी से एक नियमित दूरी रखेगा, जिसे पहले अक्टूबर 2022 में और फिर 2024 में दोहराया जायेगा।
- क्षुद्रग्रह को डिडिमोस - ग्रीक में "द्विन" कहा जाता है - क्योंकि यह एक क्षुद्रग्रह द्विआधारी प्रणाली है जिसमें दो निकाय होते हैं:
- डिडिमोस ए, आकार में लगभग 780 मीटर और
- एक छोटा क्षुद्रग्रह जो इसकी परिक्रमा करता है, डिडिमोस बी कहलाता है, आकार में लगभग 160 मीटर।
- **डिडिमोस बी:** डिडिमोस बी, DART केवल दो पिंडों में से छोटे को प्रभावित करेगा।
- **संरचना:** 2003 से डिडिमोस प्रणाली का बारीकी से अध्ययन किया गया है।
- इसकी प्राथमिक काया एक चट्टानी एस-प्रकार की वस्तु है, जिसमें कई क्षुद्रग्रहों के समान रचना होती है।
- इसके छोटे साथी, डिडिमोस बी की रचना अज्ञात है, लेकिन आकार क्षुद्रग्रहों के जैसा है, जो संभावित रूप से क्षेत्रीय प्रभाव पैदा कर सकते हैं, उन्हें पृथ्वी को प्रभावित करना चाहिए।

- **गतिज प्रभाव:** गतिज प्रभाव तकनीक अपने कुल वेग के एक छोटे से अंश द्वारा एक खतरनाक क्षुद्रग्रह की गति को बदलकर काम करती है, लेकिन इस मुठभेड़ के होने वाले पूर्वानुमानित प्रभाव से पहले ही यह छोटा-सा प्रयास एक बड़ी पारी के लिए समय के साथ पृथ्वी से क्षुद्रग्रह के मार्ग को परिवर्तित कर देगा।
- लॉन्च होने के बाद, DART डिडिमोस के लिए उड़ान भरेगा और एपीएल-विकसित ऑनबोर्ड स्वायत्त लक्ष्यीकरण प्रणाली का उपयोग करेगा, जो डिओडोस बी पर खुद को लक्षित करेगा।
- उसके बाद एक रेफ्रिजरेटर के आकार का अंतरिक्ष यान एक गोली से लगभग नौ गुना तेजी से छः किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से छोटे निकाय पर हमला करेगा।
- पृथ्वी-आधारित ऊपरिक्ष डिडिमोस ए के चारों ओर डिडिमोस बी की कक्षा में प्रभाव और परिणाम में परिवर्तन को देखने में सक्षम होंगी, जिससे वैज्ञानिकों को क्षुद्रग्रह शमन रणनीति के रूप में गतिज प्रभाव की क्षमताओं को बेहतर ढंग से निर्धारित करने की अनुमति मिलती है।

### बड़ा मिशन

- क्षुद्रग्रह प्रभाव और विक्षेपण आकलन (AIDA): AIDA मिशन अंतरिक्ष जांचों की एक प्रस्तावित जोड़ी है जो एक प्रभावशाली अंतरिक्ष यान को क्षुद्रग्रह चंद्रमा में दुर्घटनाग्रस्त करने के गतिज प्रभावों का अध्ययन और प्रदर्शन करेगा।
- इस मिशन का परीक्षण करने का उद्देश्य है कि क्या एक अंतरिक्ष यान पृथ्वी के साथ टकराव के मार्ग पर एक क्षुद्रग्रह को सफलतापूर्वक नष्ट कर सकता है।
- अवधारणा दो अंतरिक्ष यान का प्रस्ताव रखती है:
- हेरा (ESA द्वारा निर्मित) क्षुद्रग्रह की परिक्रमा करेगा, और
- डबल एस्टेरॉयड रिडायरेक्शन टेस्ट (DART) (नासा द्वारा निर्मित) इसके उपग्रह को प्रभावित करेगा।
- क्षुद्रग्रह उपग्रह के कक्षीय मापदंडों के परिवर्तन के अवलोकन के अलावा, प्लम का निरीक्षण, क्रेटर, और ताजा निवारित सामग्री क्षुद्रग्रह विक्षेपण, विज्ञान और खनन समुदायों के लिए अद्वितीय जानकारी प्रदान करेगी।
- मूल रूप से, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) और नासा के पास क्षुद्रग्रह विक्षेपण रणनीतियों का परीक्षण करने के लिए एक मिशन के लिए स्वतंत्र योजना थी और 2015 तक उन्होंने एआईडीए (AIDA) नामक एक सहयोग किया, जिसमें दो अंतरिक्ष यान अलग-अलग लॉन्च हुए थे लेकिन जो आपासी तालमेल में काम करते थे।
- प्रस्ताव के तहत, यूरोपीय अंतरिक्ष यान, AIM, दिसंबर 2020 में और DART जुलाई 2021 में लॉन्च होगा।
- AIM ने बड़े क्षुद्रग्रह की परिक्रमा की और इसकी संरचना और इसके चंद्रमा का अध्ययन किया।
- DART पृथ्वी पर एक निकट दृष्टिकोण के दौरान, अक्टूबर 2022 में चंद्रमा को प्रभावित करेगा।
- AIM क्षुद्रग्रह की ताकत, उसकी सतह के भौतिक गुणों और उसकी आंतरिक संरचना का अध्ययन किया करेगा, साथ ही बड़े क्षुद्रग्रह के आसपास क्षुद्रग्रह के उपग्रह की कक्षा पर प्रभाव को भी मापेगा।
- चूंकि (AIM) ऑर्बिटर रद्द कर दिया गया था, क्षुद्रग्रहों के लक्षण का पूर्ण वर्णन प्राप्त नहीं किया गया और DART के प्रभाव के असर की निगरानी धरातल-आधारित दूरबीनों और रडार से की जाएगी।



## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- नासा का DART मिशन क्या है? इसके महत्व का परीक्षण करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## कामोव KA-31 हेलीकॉप्टर

प्रशान्त धवन द्वारा

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || रक्षा || सैन्य प्रौद्योगिकी

### शीर्षक

रूस से कामोव 31 हेलीकॉप्टर खरीदेगा भारत

### सुर्खियों में क्यों ?

► रक्षा मंत्रालय ने अपने विमान वाहक और बड़े युद्धपोतों के लिए हवाई खतरों के खिलाफ अपनी क्षमता को मजबूत करने के लिए 10 कामोव -31 हेलीकॉप्टरों के लिए रूस के साथ भारतीय नौसेना के सौदे को मंजूरी दे दी है।

### समाचार के बारे में

► हेलीकॉप्टरों को भारतीय नौसेना के विमान वाहक और युद्धपोतों पर तैनात किया जाएगा, जिनमें INS विक्रान्त और त्रिगोरोविच-क्लास के युद्धपोत शामिल हैं।  
► कामोव -31 सौदा एक अनुवर्ती आदेश है। (यानी एक नया आदेश नहीं है क्योंकि भारतीय नौसेना के पास पहले से ही इन कामोव -31 हेलीकॉप्टरों में से 12 का एक बेड़ा है) इसलिए एक बार नौसेना द्वारा संसाधित किए जाने के बाद, इसे सीधे अंतिम मंजूरी के लिए सुरक्षा पर कैबिनेट समिति के सामने पेश किया जाएगा।

### इसकी ज़रूरत क्या है?

► पनडुब्बी रोधी युद्ध संचालन के लिए भारतीय नौसेना के पास पहले से ही "सीकिंग हेलिकॉप्टरों के साथ रूसी कामोव -28" हेलिकॉप्टरों का एक बेड़ा है जो 1980 के दशक में खरीदे गए थे, लेकिन उन्हें भविष्य के संचालन के लिए अपग्रेड करने की आवश्यकता है।

### रक्षा अधिग्रहण परिषद

► केंद्रीय रक्षा मंत्री की अध्यक्षता में रक्षा अधिग्रहण परिषद (DAC) का गठन एक निष्पक्ष रक्षा खरीद योजना प्रक्रिया को सुनिश्चित करने के लिए किया गया था। परिषद का उद्देश्य आवंटित बजटीय संसाधन के समय-समय पर उपयोग के लिए समय सीमा निर्धारित कर सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं की शीघ्र खरीद सुनिश्चित करना है।

### कार्य

- रक्षा बलों के 15 साल लंबे एकीकृत परिप्रेक्ष्य योजना के लिए सिद्धांत अनुमोदन प्राधिकरण।
- "बाय", "बाय एंड मेक" और "मेक" से संबंधित अधिग्रहण प्रस्तावों का वर्गीकरण।
- एकल विक्रेता निकासी से संबंधित मुद्दों को संबोधित करना।
- 300 करोड़ रुपये से ऊपर अधिग्रहण प्रस्तावों के संबंध में ऑफ़सेट प्रावधानों के बारे में निर्णय लेना।
- अधिग्रहण प्रस्तावों के "बाय एंड मेक" श्रेणी के तहत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के बारे में निर्णय लेना।
- क्षेत्र परीक्षण मूल्यांकन।

### आदेश का पालन

- वह ऑर्डर या अनुबंध जो मूल ऑर्डर या अनुबंध के तहत आपूर्ति की गई वस्तुओं या सेवाओं की आपूर्ति को दोहराता है।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## डी.आर.डी.ओ. ने आकाश एम.के. -1 : एस मिसाइल का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || रक्षा सेना || प्रौद्योगिकी

### शीर्षक

डी.आर.डी.ओ. ने आकाश एम.के. -1 एस मिसाइल का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया

### सुर्खियों में क्यों ?

► डी.आर.डी.ओ. ने ओडिशा के चांदीपुर में अपनी एकीकृत परीक्षण रेंज से आकाश एम.के. -1 एस मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है।



### आकाश मिसाइल के बारे में

► हर मौसम में उपयुक्त मध्यम मारक क्षमता की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल है जो उन्नत वायु हमलों को निष्प्रावित कर सकती है।

- इसे डी.आर.डी.ओ. द्वारा एकीकृत गाइडेड मिसाइल विकास कार्यक्रम के एक भाग के रूप में विकसित किया गया है।
- यह स्थिर या चालित स्थानों यथा पहिएदार ट्रक या युद्ध टैंक से प्रक्षेपित किए जाने के लिए उपयुक्त है।
- मिसाइल के दो संस्करण भारतीय वायु सेना तथा भारतीय सेना हेतु बनाए जा रहे हैं।
- यह कई हमलों को संभाल सकता है तथा यह यू.ए.वी., लड़ाकू विमान, क्रूज मिसाइलों सहित विशिष्ट हमलों को नष्ट कर सकता है।
- आकाश 2.5 से 3.5 मैक तक सुपरसोनिक गति से उड़ान भर सकता है।
- इसकी उड़ान परिचालन क्षमता 30 किमी से 35 किमी तक तथा 18,000 मीटर तक की ऊंचाई है।
- यह अपने साथ 60 किलोग्राम तक के वज़नी परमाणु रहित एवं परमाणु आयुध ले जाने में सक्षम है।
- यह रैमजेट-रॉकेट प्रणोदन प्रणाली द्वारा संचालित है।

### आकाश एम.के. -1 एस मिसाइल

- आकाश एम.के. -1 एस मिसाइल स्वदेशी रूप में आकाश मिसाइल का उन्नत प्रारूप है।
- आकाश, दिये हुए आदेश का मार्गदर्शन करने और सक्रिय रूप से लक्ष्य को साधने में मार्गदर्शन करने की एक संयोजित हथियार प्रणाली है।
- यह उन्नत सटीकता एवं उच्च रेंज क्षमता प्रदान करता है।

### अन्वेषक क्या है?

- तकनीकी भाषा में एक अन्वेषक का अर्थ बेहद संवेदनशील सेंसर समूह से है जो अवरक्त प्रकाश में दिखाई देता है।
- यह मिसाइल स्वयं अपने लक्ष्य को नहीं 'देख' सकती है, बल्कि उसे केवल ट्रैक (track) दिखाता है, जिस पर उसे अपना लक्ष्य साधन होता है।

### अतिरिक्त जानकारी

### एकीकृत गाइडेड मिसाइल कार्यक्रम

- यह मिसाइल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने के लिए डॉ. अब्दुल कलाम आज़ाद का आविष्कार था।
- इसे वर्ष 1982-83 में भारत सरकार द्वारा अनुमोदित किया गया था।
- इस कार्यक्रम के अंतर्गत निम्न मिसाइलों का विकास हुआ
- पृथ्वी - कम दूरी की सतह से सतह मार करने वाली प्राक्षेपिक मिसाइल
- त्रिशूल - कम दूरी व कम ऊंचाई की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल
- आकाश - मध्यम मारक क्षमता की सतह से हवा में मार करने वाली
- अग्नि - प्राक्षेपिक मिसाइल

### शौर्य मिसाइल

- कनस्तर प्रक्षेपण प्रणाली ने हाइपरसोनिक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल का प्रक्षेपण किया।
- इसकी परिचालन क्षमता 750 किलोमीटर है।
- यह अपने साथ 1 टन तक का वजन परमाणु रहित एवं परमाणु आयुध ले जाने में सक्षम है।
- इसकी गति 7.5 मैक है।

### धनुष मिसाइल

- यह पृथ्वी मिसाइल का नौसैनिक प्रारूप है। यह 500 किलोग्राम तक आयुध ले जा सकता है तथा भूमि-आधारित व समुद्र-आधारित दोनों हमलों को लक्षित कर सकता है।

### ब्रह्मोस

- यह 2.8-3 मैक गति के साथ सबसे तेज सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है।
- यह भारत और रूस के मध्य एक सहयोगात्मक परियोजना है।

### मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- भारत ने अपनी स्वदेशी मिसाइल आयुध प्रणाली में एक विश्वसनीय रणनीतिक निपुणता विकसित की है। एकीकृत गाइडेड मिसाइल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत हाल में शुरू हुए परियोजनाओं के आलोक में विवेचना करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स





(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

### GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || विविध

## शीर्षक

चेहरे की पहचान तकनीक कैसे काम करती है, इसके पक्ष और विपक्ष क्या हैं?

## सुर्खियों में क्यों ?

- पुलिस के द्वारा चेहरे की पहचान करने वाले सॉफ्टवेयर के उपयोग को अवरुद्ध करने वाला पहला प्रमुख अमेरिकी शहर, सैन फ्रांसिस्को बन गया है। इसने कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों की ओर इशारा किया है, जो यह बताते हैं कि, अपराध की दुनिया का सामना करने के लिए एक सफल तकनीक का होना आवश्यक है और इन दोनों के समन्वयन –समझौते और नागरिक स्वतंत्रता समूहों द्वारा व्यक्त की जाने वाली चिंताओं की ओर ध्यान दिया जाये तो, इस प्रकार का फैसला राज्य की एजेंसियों द्वारा अपनी क्षमताओं का दुरुपयोग है।
- बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए, सैन फ्रांसिस्को का निर्णय आया है, कि इस वर्ष के अंत तक वह, यात्रियों के लिए बोर्डिंग के हिस्से के रूप में चेहरे की पहचान के रूप में इस तकनीक का प्रयोग करेगा।

## चेहरे की पहचान

- **बायोमेट्रिक तकनीक:** चेहरे की पहचान एक बायोमेट्रिक तकनीक है जो किसी व्यक्ति की पहचान करने और उसे अलग करने के लिए चेहरे पर विशिष्ट विशेषताओं का उपयोग करती है।
- 1960 के दशक से अब तक के कैमरे जिनसे चेहरों की पहचान की जाती थी, कई प्रकार से विकसित हुए हैं — चेहरे की 3D आकृति को देखने से लेकर त्वचा के पैटर्न को पहचानने तक।
- **मशीन लर्निंग:** मशीन लर्निंग के साथ, तकनीक विभिन्न प्रकार के चेहरों को छांटने में सक्षम हो गई है।
- **उपकरणों तक पहुंच:** यहां तक कि सस्ते स्मार्टफोन भी पुरुष और महिला के रूप में चेहरे की पहचान करने में सक्षम हैं, और इतना ही नहीं उनकी उम्र को भी चिह्नित करते हैं।
- फेस आईडी, ऐप्पल की फेशियल रिकग्निशन प्रणाली का प्रयोग नवीनतम आईफोन और आईपैड को अनलॉक करने और अन्य कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।
- सुरक्षित वातावरण या उपकरणों तक पहुँच प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।

- सार्वजनिक स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे, शक्तिशाली कंप्यूटरों में प्लग किए जाने पर, चेहरे की पहचान कर सकते हैं और उन्हें डेटाबेस के साथ मैच कर सकते हैं, या कुछ विशेष प्रकार के चेहरे चुन सकते हैं।
- जैसा कि कैमरा क्षमताओं में सुधार हुआ है, चेहरे की पहचान कम रोशनी में, और लंबी दूरी से भी संभव हो गई है।
- **सोशल नेटवर्किंग डिवाइस:** फेसबुक ने चार वर्षों तक इस प्रौद्योगिकी का उपयोग किया है, जिससे उपयोगकर्ताओं अपलोड की गई तस्वीरों पर अपने चेहरे को टैग कर सकते थे।
- हालांकि, इसका मतलब यह भी है कि सोशल नेटवर्क एक फेस रिकग्निशन डेटाबेस पर आधारित है, जिसमें शायद एक अरब सत्यापित चेहरे हैं।
- Yoti, GBG और AgeID जैसी कंपनियाँ पहचान, उम्र और व्यक्तियों की दूरस्थ उपस्थिति को सत्यापित करने के लिए इस तकनीक को बेच रही हैं।

## लोगों में बेचैनी क्यों?

- **शहरी रिक्त स्थान:** पिछले एक दशक में, दुनिया भर में शहरी स्थानों को बड़े पैमाने पर निगरानी कैमरों द्वारा कवर किया गया है, इससे चेहरे की पहचान प्रौद्योगिकियों के दुरुपयोग या दुष्प्रचार के लिए रास्ते खुल गए हैं।
- **व्यापक उपयोग:** चीन, जो संभवतः दुनिया में सीसीटीवी कैमरों का सबसे व्यापक नेटवर्क है, कथित तौर पर हवाई अड्डों और रेलवे स्टेशन पर भीड़ से वांछित व्यक्तियों को बाहर निकालने के लिए चेहरे की पहचान का उपयोग कर रहा है।
- **चीन का उदाहरण:** चीन ने अपने नागरिकों की नस्लीय पहचान करने के लिए चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग करने की भी रिपोर्ट की है - हान चीनी और उइगर (Uyghurs) मुस्लिम की श्रेणियों में चेहरे छांट रहे हैं।
- चीन के पश्चिमी जिंजियांग स्वायत्त क्षेत्र में रहने वाले तुर्क लोग, बीजिंग के शासन के तहत रह रहे हैं और चीनी राज्य ने निगरानी, गिरफ्तारी और प्रतिबंधों की दमनकारी प्रणाली को जारी रखा है।
- इस तथ्य को देखते हुए कि प्रौद्योगिकी में कोई विशेष त्रुटि दर नहीं बनी हुई है, ऐसे में एक दंडात्मक कार्रवाई न्याय की गंभीर निष्फलता का नेतृत्व करेगी।
- **पुलिस अधिकारी:** संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कई देशों में पुलिस अधिकारी हवाई यात्रा में अपराध के संदिग्धों की पहचान करने के लिए चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग कर रहे हैं।
- जून 2018 में मैरीलैंड के एनापोलिस में कैपिटल गज़ेट न्यूज़रूम में बड़े पैमाने पर हुई गोलीबारी में संदिग्धों की पहचान, जिसमें पाँच लोग मारे गए थे, इस तकनीक के इस्तेमाल से हुई थी।
- अमेरिका के सीमा शुल्क और सीमा सुरक्षा कई हवाई अड्डों और बंदरगाहों में चेहरे की पहचान का उपयोग करता है।
- **गोपनीयता की हानि:** चेहरे की पहचान के उपयोग के आस-पास की असंगति गोपनीयता के नुकसान पर चिंताओं से उपजी है, और डर है कि राज्य, नागरिकों के इस मौलिक अधिकार की रक्षा के लिए अनिच्छुक या अक्षम हो सकता है।

नोट्स

► **नागरिक स्वतंत्रता:** नागरिक स्वतंत्रता के अधिवक्ताओं ने चेतावनी दी है कि लोगों की जानकारी और सहमति के बिना उनकी पहचान उनकी स्वतंत्र रूप से कार्य करने और कहीं भी घूमने की स्वतन्त्रता के विरुद्ध है।

► **द न्यूयॉर्क टाइम्स** ने बताया कि सैन फ्रांसिस्को के समान ओकलैंड, कैलिफ़ोर्निया और सोमरविले, मैसाचुसेट्स में प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं और अमेरिकी कांग्रेस में एक बिल पेश किया गया है जो उपयोगकर्ताओं को वाणिज्यिक चेहरा पहचान तकनीक के उपयोग के लिए बाधित करता है, क्योंकि उसका उपयोग करके उपभोक्ताओं की पहचान या उनकी आवाजाही का डाटा उनकी सहमति के बिना एकत्रित किया जा सकता है।

## भारत कहां खड़ा है?

► **बेंगलुरु का हवाई अड्डा:** सैन फ्रांसिस्को का निर्णय इस वर्ष के अंत में बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के बारे में सामने आया, यह यात्रियों के लिए बोर्डिंग प्रक्रिया के भाग के रूप में चेहरे की पहचान को तैयार करता है।

► **डिजी यात्रा:** चेहरे के बायोमेट्रिक कार्यक्रम को नागरिक उड्डयन मंत्रालय की डिजी यात्रा पहल के हिस्से के रूप में लागू किया जाएगा।

► **एयरपोर्ट ऑपरेटर बेंगलुरु इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड** ने प्रौद्योगिकी को लागू करने के लिए एक पुर्तगाली सॉफ्टवेयर फर्म के साथ पिछले साल एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

► **उपयोग और दुरुपयोग:** भारत में चेहरे की पहचान तकनीक के उपयोग और दुरुपयोग दोनों की बड़े पैमाने पर क्षमता है।

► **यूआईडीएआई:** इसका कारण यह है कि देश का दुनिया में चेहरों का सबसे बड़ा सत्यापित बायोमीट्रिक डेटाबेस है, जो भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) के प्रयासों के कारण संभव है जो अधिक से अधिक नागरिकों के डेटा पर कब्जा कर सकता है।

► **UIDAI** को अपने फेस रिकग्निशन API खोलने के साथ, वित्तीय या अन्य लेनदेन के लिए अतिरिक्त सत्यापन विधि के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

► एक ही समय में, सिस्टम की, जब तक कि मजबूत जांच नहीं की जाती है, बड़े पैमाने पर दुरुपयोग या दुरुप्रचार के अधीन है।

## प्रश्न

► चेहरे की पहचान तकनीक कैसे काम करती है ? इसके पक्ष और विपक्ष क्या हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बी आईएनएस वेला को लांच किया गया

### INS VELA हुई लॉन्च



प्रशान्त धवन द्वारा

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || रक्षा || सैन्य प्रौद्योगिकी

### शीर्षक

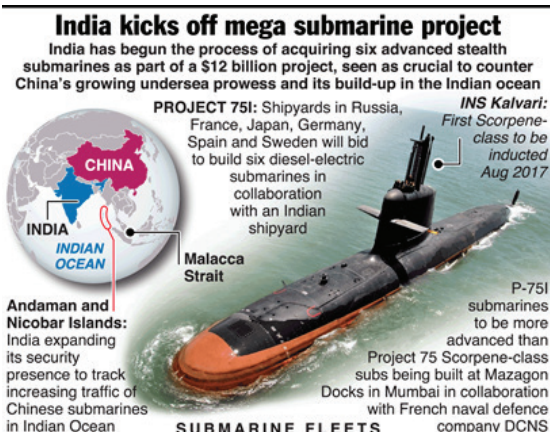
स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बी आईएनएस वेला को लांच किया गया।

### समाचार में क्यों?

► स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बी वेला, फ्रांसीसी सहयोग के साथ भारत में बनाए जा रहे पानी के नीचे के छह युद्धपोतों में से चौथी, हाल ही में रणनीतिक समुद्री लेन की रक्षा और सुरक्षा करने के लिए भारतीय क्षमता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की गई थी।

### आईएनएस वेला

► आईएनएस वेला मुंबई में मज़गन डॉक लिमिटेड (एमडीएल) में बनाई जा रही छह स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बियों की श्रृंखला में चौथी है।



► पनडुब्बी की मरम्मत MDL में पूरी की गई है, यह प्रोजेक्ट 75 फ्रां भाग के रूप में DCNS (अब नौसेना समूह के रूप में जाना जाता है) और MDL के बीच हुए अनुबंध के अनुसार पूरा हो चुका है।

► अनुबंध के अनुसार फ्रांसीसी कंपनी DCNS (वर्तमान में नवल ग्रुप) और MDL ने 2005 में भारतीय नौसेना के लिए प्रोजेक्ट -75 के तहत छह पनडुब्बियों के लाइसेंस उत्पादन के लिए \$ 3.75 बिलियन के समझौते पर हस्ताक्षर किए और फ्रांसीसी कंपनी ने प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और भारत में संयुक्त रूप से निर्माण करने का फैसला किया। यह कांट्रैक्ट 2020 तक पूरा होने की उम्मीद है।

► कलवरी क्लास, डीजल-इलेक्ट्रिक हमलावर पनडुब्बियों का एक वर्ग है, जो भारतीय नौसेना के लिए बनाई जा रही स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बी पर आधारित है।

► भारतीय नौसेना में शामिल पहली पनडुब्बियों में से ही नई पनडुब्बियों का वर्ग और नामांकरण निर्धारित किया जाता है।

► परियोजना 75 के तहत छह पनडुब्बियों में से, आईएनएस कलवरी को दिसंबर 2018 में भारतीय नौसेना में कार्यभार दिया गया है।

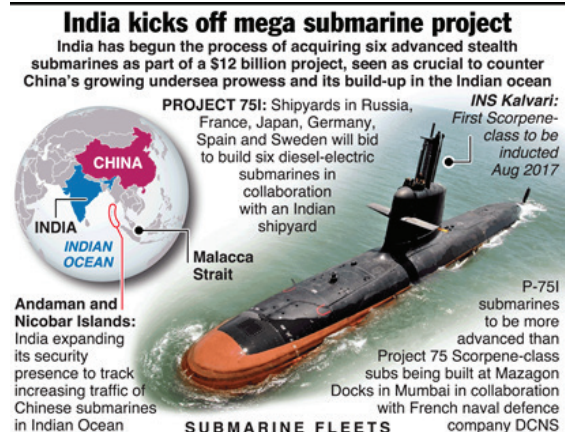
► भारतीय नौसेना में INS खंडेरी और INS करंज दोनों के कार्यभार लेने की संभावना है।

► आईएनएस वागीर और आईएनएस वाघशीर पहले से ही "निर्माण के उन्नत चरणों" में हैं।

► 1999 में स्वीकृत 30 वर्षीय पनडुब्बी निर्माण योजना के अनुसार, भारतीय नौसेना को पानी में चीन की बढ़ती उपस्थिति का सामना करने के लिए कम से कम 24 पनडुब्बियों की आवश्यकता है।

### स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बियां

► स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बियां जो किसी भी खतरे में परिचालन करने की क्षमता रखती हैं, उनमें विभिन्न प्रकार के मिशन में कार्यरत रहने की भी क्षमता है, जिसमें सतह पर होने वाले युद्ध, पनडुब्बी-रोधी युद्ध, खुफिया जानकारी एकत्र करना, सुरंग खोदना और क्षेत्र निगरानी शामिल हैं।



► उनके पास गोपनीयता की शीर्ष विशेषताएं हैं, जिनमें शामिल हैं -

► उन्नत ध्वनिक साइलेन्सिंग तकनीक,

► कम विकिरणित शोर स्तर,

► हाइड्रो-डायनामिक रूप से अनुकूलित आकार और

► परिशुद्धता-निर्देशित हथियारों का उपयोग करके दुश्मन को अपंग करने के लिये हमले शुरू करने की क्षमता।

### वर्तमान पनडुब्बी बेड़े

- ▶ भारतीय नौसेना वर्तमान में 4 जर्मन एचडीडब्ल्यू-क्लास और 9 रूसी किलो-क्लास पनडुब्बियों का संचालन कर रही है।
- ▶ जुलाई 2000 में, इसने रूस से खरीदे गए एक पारंपरिक डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बी, आईएनएस सिंधुशास्त्र को शामिल किया था।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## प्रोजेक्ट 75 आई (75I)

- ▶ प्रोजेक्ट 75 आई-क्लास पनडुब्बी भारतीय नौसेना के लिए प्रोजेक्ट 75 कलवरी-क्लास पनडुब्बियों का अनुसरण है।
- ▶ इस परियोजना के तहत, भारतीय नौसेना छह डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों का अधिग्रहण करने का इरादा रखती है, जो उन्नत वायु-स्वतंत्र प्रणोदन प्रणाली की सुविधा भी प्रदान करेगी ताकि वे अधिक समय तक जलमग्न रहें और उनकी परिचालन सीमा में पर्याप्त वृद्धि हो सके।
- ▶ सभी छह पनडुब्बियों का निर्माण भारतीय शिपयार्ड में किए जाने की उम्मीद है।

## अतिरिक्त जानकारी

### वायु-स्वतंत्र प्रणोदन (AIP)

- ▶ एयर-इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (AIP) एक समुद्री प्राणोदन तकनीक है जो एक गैर-परमाणु पनडुब्बी को वायुमंडलीय ऑक्सीजन तक पहुंच के बिना (सॉर्कल का उपयोग करके या सर्किंग करके) संचालित कर सकती है।
- ▶ **AIP** गैर-परमाणु जहाजों के डीजल-इलेक्ट्रिक प्रणोदन प्रणाली को बढ़ा या बदल सकता है।
- ▶ आधुनिक गैर-परमाणु पनडुब्बियां परमाणु पनडुब्बियों की तुलना में संभावित रूप से गुप्त(स्टीलथी) हैं।
- ▶ **परमाणु पनडुब्बी:** एक परमाणु जहाज के रिएक्टर को लगातार शीतलक पंप से ठंडा करते रहना चाहिए, जिससे उसकी उपस्थिति का थोड़ा शोर (ध्वनिक हस्ताक्षर) होता है।
- ▶ **गैर-परमाणु पनडुब्बियां:** दूसरी तरफ बैटरी पावर या AIP पर चलने वाली गैर-परमाणु पनडुब्बियां, वस्तुतः शांत होती हैं।
- ▶ जबकि परमाणु-संचालित डिजाइन अभी भी जलमग्न अवस्था और गहरे-समुद्र के प्रदर्शन में हावी हैं।
- ▶ छोटे, उच्च तकनीक वाले गैर-परमाणु हमले वाली पनडुब्बियां तटीय अभियानों में अत्यधिक प्रभावी हैं और जो कम-गोपनीय और कम गतिशील, परमाणु पनडुब्बियों के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करती हैं।

## मुख्य परीक्षा के लिए प्रश्न

- ▶ नौसेना द्वारा अधिक शक्ति का अधिग्रहण भारत के विकास की कहानी के साथ अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। कथन का विश्लेषण करें।

नोट्स



## किलोग्राम की परिभाषा बदली



### प्रशान्त धवन द्वारा

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || विविध

### शीर्षक

ISRO के 5 उपग्रहों ने चक्रवात फानी से बचाई कई लोगों की जान 5

### सुर्खियों में क्यों ?

- किलोग्राम की परिभाषा, अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली इकाइयों के तहत पदार्थ की मात्रा की मानक इकाई (unit of mass) को पुनर्परिभाषित किया गया है।
- नई परिभाषा 20 मई को विश्व मेट्रोलोजी दिवस पर प्रभावी हुई
- सीएसआईआर - राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, राष्ट्रीय माप निकाय ने भी वैश्विक प्रस्ताव को अपनाया है।



### SI इकाई को समझना

- किलोग्राम को 1889 से ही फ्रांस स्थित इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ वेट एंड मेजर्स द्वारा पेरिस में रखे गए एक चंक प्लैटिनम-आधारित मिश्र धातु के वजन के रूप में परिभाषित किया जाता है।
- इसे अंतर्राष्ट्रीय प्रोटोटाइप किलोग्राम या बिग के (Big K) कहा जाता है
- इसकी प्रतियां दुनिया भर में वितरित की जाती हैं जो तराजू को कांटे को जांचने के लिए उपयोग की जाती हैं और जिससे यह सुनिश्चित किया जाता है कि पूरी दुनिया में माप की एक ही प्रणाली है
- नई परिभाषा के अनुसार, अब किलोग्राम को प्लांक के स्थिरांक (Planck's constant) के निश्चित संख्यात्मक मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाएगा

### बदलाव क्यों?

- बिग के (Big K) एक मानव निर्मित वस्तु है, इसलिए, इसमें गलती होने का खतरा है
- प्रोटोटाइप किलोग्राम ने इसे बनाने के बाद से लगभग 50 माइक्रोग्राम का नुकसान दर्ज किया है
- इस प्रकार, इसकी माप दुनिया भर में वितरित अन्य प्रतियों की तुलना में भिन्न है
- मीटर की परिभाषा के मामले में भी इसी तरह का परिवर्तन किया गया था और यह अब प्रकाश की गति, ब्रह्मांड में एक अपरिवर्तित और स्थायी घटना के साथ संबंधित है।
- अब, मीटर वैक्यूम में एक सेकंड के  $1 / 299,792,458$  में प्रकाश की दूरी की यात्रा के बराबर है
- किलो की नई परिभाषा में सटीक वजन वाली मशीनें शामिल हैं जिन्हें 'किबल संतुलन' कहा जाता है।

### प्रभाव

- एक समान परिवर्तन अब स्कूल की पाठ्यपुस्तकों, इंजीनियरिंग-शिक्षा पुस्तकों और पाठ्यक्रम अध्ययन सूची में पेश किया जाएगा
- अतिरिक्त सटीकता वैज्ञानिकों के लिए एक वरदान होगी, हालांकि, औसत उपभोक्ता के लिए, बिल्कुल कोई बदलाव नहीं होगा

### अतिरिक्त जानकारी

- **प्लैंक स्थिरांक** एक भौतिक स्थिरांक है जो विद्युत चुम्बकीय क्रिया की मात्रा है, जो फोटॉन की आवृत्ति द्वारा लाई गई ऊर्जा से संबंधित है
- **फोटॉन विद्युत चुम्बकीय विकिरण** की एक मात्रा है।
- कांटम शब्द मात्रा की सबसे छोटी तत्व इकाई है या किसी चीज़ की सबसे छोटी असतत मात्रा है।
- इस प्रकार, विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा की एक मात्रा को फोटॉन कहा जाता है। कांटम का बहुवचन कांटो है
- **विश्व मापविद्या दिवस**
- 20 मई को होने वाला एक कार्यक्रम इंटरनेशनल सिस्टम ऑफ यूनिट्स के रूप में मनाया जा रहा है
- यह तारीख 1875 में मीटर परंपरा के हस्ताक्षर की वर्षगांठ है
- मेट्रोलॉजी माप का अध्ययन है

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- किलोग्राम की माप की नई प्रणाली, हमारे माप प्रणालियों को तकनीकी रूप से उन्नत, अपरिवर्तनीय और सार्थक बनाने की दिशा में एक कदम है। चर्चा करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## इंटरनेट ऑफ थिंग्स के लिए ब्लॉकचेन



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || विज्ञान और प्रौद्योगिकी || चौथी औद्योगिक क्रांति || इंटरनेट ऑफ थिंग्स

### शीर्षक

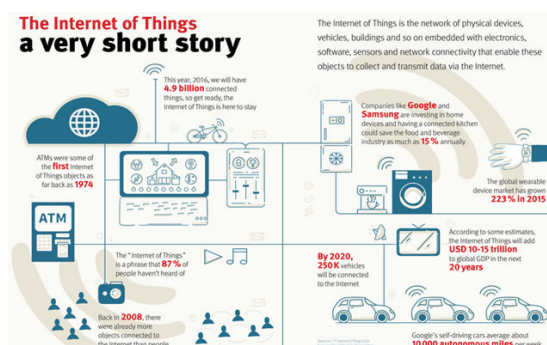
इंटरनेट ऑफ थिंग्स के लिए ब्लॉकचेन, जानें IoT ब्लॉकचेन के उपयोग की प्रमुख विशेषताओं के बारे में

### सुर्खियों में क्यों ?

▶ IoT या इंटरनेट ऑफ थिंग्स इन दिनों एक बहुत ज़्यादा बेची जा रही तकनीक है। हालाँकि, इस संदर्भ में सुरक्षा महत्वपूर्ण चिंता का विषय है क्योंकि IoT का नेटवर्क बड़ा होता जा रहा है। ब्लॉकचेन तकनीक यहां सबसे अच्छा काम करती है।

### IoT

- ▶ इंटरनेट ऑफ थिंग्स या IoT, को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया जा सकता है—
- ▶ परस्पर संबंधित कंप्यूटिंग उपकरणों, यांत्रिक और डिजिटल मशीनों, वस्तुओं, जानवरों या लोगों की एक प्रणाली जिसमें निम्नलिखित चीज़ें प्रदान की जाती हैं -
- ▶ विशिष्ट पहचानकर्ता (UID) और



▶ मानव-से-मानव या मानव-से-कंप्यूटर सहभागिता की आवश्यकता के बिना किसी नेटवर्क पर डेटा स्थानांतरित करने की क्षमता।

### महत्व

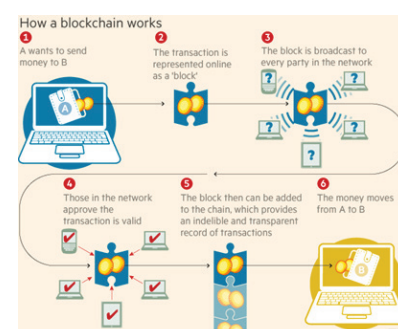
- ▶ **जुड़े उपकरणों की संख्या:** वार्षिक सिसको विजुअल नेटवर्किंग रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया में एकसाथ जुड़े उपकरणों की संख्या 2.4 गुना बढ़ जाएगी, जो 2017 में 6.1 बिलियन से 2022 तक 14.6 बिलियन हो जाएगी।
- ▶ **ट्रैफिक:** यह उम्मीद जताई जा रही है कि इन जुड़े उपकरणों के कारण यह भीड़, समान अवधि में सात गुना तक बढ़ सकता है।

### चुनौतियां

- ▶ हम केवल उपकरणों की संख्या में एक घातीय वृद्धि पर ही ध्यान नहीं देंगे, बल्कि संचारित डेटा और गणना की आवश्यक मात्रा में वृद्धि भी देखेंगे।
- ▶ **सुरक्षा:** बड़े IoT नेटवर्क के निर्माण पर विचार करते समय मापकता, विश्वसनीयता और सुरक्षा से संबंधित कुछ अधिसूचियां हैं और यह ब्लॉकचेन, उद्योग के लिए सिर्फ आवश्यक रासायनिक घटक साबित हो सकती हैं।
- ▶ घटनाओं को देखते हुए, नेटवर्क की "चीजों" की संख्या में अपेक्षित वृद्धि के संदर्भ में, यह ज़रूरी हो जाता है कि उन प्लेटफार्मों को सशक्त किया जाए जो इंटरनेट ऑफ थिंग्स को सशक्त करेंगे।
- ▶ ब्लॉकचेन की वितरित नेटवर्क के रूप में काम करने की क्षमता, और विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं पर सुरक्षित रूप से निष्पादित होने के कारण यह इसे IoT की सफलता के लिये आवश्यक नवाचार के स्तर का समर्थन कर एक आदर्श घटक बनाता है।
- ▶ **आर्थिक मूल्य:** यह प्रभावशाली लग सकता है, लेकिन सवाल यह है कि क्या हम उत्पन्न आंकड़ों के ढेर से अधिकतम आर्थिक मूल्य प्राप्त कर सकते हैं?
- ▶ इसका उत्तर पूरी तरह से उत्साहजनक नहीं है क्योंकि यहां इसकी सफलता, बैक-ऑफिस सिस्टम और प्रौद्योगिकियों की गुणवत्ता और पर्याप्तता पर निर्भर करती है।
- ▶ वैश्विक स्तर पर, केवल 30 प्रतिशत IoT परियोजनाएं ही पायलट चरण से आगे बढ़ी हैं, यह एक प्रभावशाली संकेतक है जिसको इस नई तकनीक का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता है।
- ▶ स्केलेबिलिटी, पहचान प्रबंधन, स्वायत्तता, विश्वसनीयता, सुरक्षा और विपणन के सभी प्रमुख मुद्दों को एक अच्छी तरह से तैयार ब्लॉकचेन द्वारा संबोधित किया जा सकता है।

### ब्लॉकचेन

- ▶ इस संदर्भ में संभावित राहत प्रदान करने के लिए ब्लॉकचेन या मल्टी-लेज़र तकनीक का उपयोग किया जाता है।
- ▶ ब्लॉकचेन की सैद्धांतिक संरचना का विकास हुआ है जो विशेष रूप से बिटकॉइन के अंतिम छोर के रूप में अभिकल्पित की गयी है, और लगभग हर उद्योग में इससे संबंधित सैद्धांतिक विनियोग मिला है।

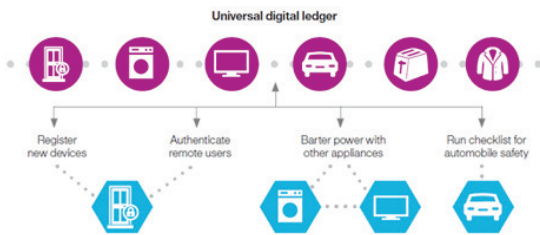


- एक बात स्पष्ट है: ब्लॉकचेन, एक सैद्धांतिक ढांचे के रूप में, आश्चर्यजनक रूप से बहुमुखी है।
- ब्लॉकचेन के कई संभावित उपयोगों में से, IoT उनमें से है जो महत्वपूर्ण रूप से लाभान्वित होता है, फिर भी संयोजन को शायद ही कभी वह महत्व दिया गया है जिसका वह अधिकारी है।

## IoT-ब्लॉकचेन

- **विकेंद्रीकरण:** जब हम शहरव्यापी नेटवर्क के पैमाने पर विचार करते हैं, तो IoT नेटवर्क की वर्तमान केंद्रीकृत संरचना, लाखों चीजों से सैकड़ों मेट्रिक पर नज़र रखने के लिये, एक समस्या पैदा करती है।

The Blockchain functions as a distributed transaction ledger for various IoT transactions



- विफलता और मापकता (scalability) बाधाओं के अपेक्षित बिंदुओं को ब्लॉकचेन द्वारा पर्याप्त रूप से संबोधित किया जा सकता है।
- विकेंद्रीकरण, ब्लॉकचेन की एक प्रमुख विशेषता है, और यदि इसका उचित रूप से कार्यान्वयन किया जाये तो इसे पियर-टु-पियर नेटवर्क डिज़ाइन पर स्थानांतरित करना सहज हो जाएगा जिससे अधिक से अधिक दोष सहिष्णुता और शीघ्र स्केलेबिलिटी (scalability) को सुनिश्चित किया जा सकेगा।
- **पहचान प्रबंधित करें:** उपयोगकर्ताओं और चीजों - दोनों की कुशलतापूर्वक और सुरक्षित रूप से पहचान का प्रबंधन करने के लिए एक विशाल IoT नेटवर्क की आवश्यकता होगी।
- एक सामान्य ब्लॉकचेन का सहज लाभ निश्चित रूप से वह दक्षता होगी जिसके साथ यह पहचान प्रबंधन करेगा।
- आखिरकार, यदि सभी पहचान रिकॉर्ड एक ही नेटवर्क के अंदर समाहित होते हैं, तो उनकी खोज और प्रबंधन, डेटा को साझा करने के उद्देश्य से इन्हीं उपकरणों के लिये अनेक नेटवर्क को जोड़ने की तुलना में कहीं अधिक सरल हो जाएगा।
- **स्वायत्तता:** IoT की प्रकृति प्लेटफार्मों को सक्षम करने के कार्य में एक निश्चित स्तर की स्वायत्तता को अनिवार्य करती है।
- सर्वर फ़ार्म पर निर्भरता किसी भी बड़े पैमाने पर IoT कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है। इस प्रकार ब्लॉकचेन, एक बार फिर, एक संभावित समाधान प्रदान करता है।
- ब्लॉकचेन के साथ, उपकरण बड़े सर्वर फ़ार्म की आवश्यकता के बिना संचार करने में सक्षम होंगे और पैमाने पर उपकरण-अज्ञेय तरीके से तैनात किए जा सकेंगे।
- **सुरक्षा:** ब्लॉकचेन के साथ छेड़छाड़ नहीं की जा सकती और इसकी यही गुणवत्ता है जो कंपनियों और सभी उद्योगों को अपनी ओर खींचती है।
- यह आवश्यक सुरक्षा सुविधा IoT में सही अनुप्रयोग को ढूँढती है, जहां डेटा की प्रामाणिकता और सत्यापन महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से डिजिटल शहरव्यापी नेटवर्क के मामले में।
- इसकी सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा होगा क्योंकि IoT नेटवर्क बड़े और अधिक महत्वाकांक्षी हो जाते हैं।
- IoT नेटवर्क पर आदान-प्रदान की जाने वाली जानकारी को एक ब्लॉकचेन पर लेनदेन के रूप में संग्रहीत करके प्रभावी ढंग से सुरक्षित किया जा सकता है।

## बड़े पैमाने पर लागू किया जाना

- उल्लेखनीय रूप से, ब्लॉकचेन में तैनात सेवाओं के पास बाजार पहुंच को बढ़ाने की क्षमता है।
- साथियों के बीच लेनदेन को एक महत्वपूर्ण स्तर तक सरल किया जा सकता है, वह भी अधिकारियों या तीसरे पक्ष की आवश्यकता के बिना।
- **ब्लॉकचेन का विश्वास रहित वातावरण,** जो आश्चर्यजनक रूप से वितरित सुरक्षा को अभूतपूर्व स्तर प्रदान करता है, सूक्ष्म सेवाओं की तैनाती और सूक्ष्म लेनदेन के सरलीकृत निष्पादन के लिए आदर्श है।
- ब्लॉकचेन और इंटरनेट के बीच तुलना निराधार है।
- ब्लॉकचेन की बहुमुखी प्रतिभा को इस तथ्य से स्थापित किया जाता है कि यह विभिन्न प्रकार के अनुप्रयोगों में अच्छी तरह से एकीकृत होता है, और कई मापदंडों पर दक्षता प्रदान कर सकता है।

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- ब्लॉकचेन तकनीक के साथ IoT सुरक्षा मुद्दों को कैसे हल किया जा सकता है? चुनौतियां क्या हैं? संभव समाधान सुझाएं।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## पर्यावरण

घटना हुआ सम्राट  
पेंगुइन की आबादी

(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जलवायु परिवर्तन || ग्लोबल वॉर्मिंग

## शीर्षक

अंटार्कटिका के इम्परर पेंगुइन की आबादी में गिरावट आई है।

## सुर्खियों में क्यों ?

- एक नए अध्ययन के अनुसार, इम्परर पेंगुइन की अंटार्कटिक की दूसरी सबसे बड़ी कॉलोनी वर्ष 2016 में खत्म हो गई थी, जिसमें 10,000 से अधिक चूजे खो गए थे और यह आबादी अब तक पुनः प्राप्त नहीं हुई है।
- फिर भी, हैली बे में आबादी इम्परर पेंगुइन की वैश्विक आबादी का केवल 8% प्रतिनिधित्व करती है।

आवासन क्षति से प्रजनन  
विफलता में वृद्धि

- इम्परर पेंगुइन — जमे हुए समुद्री जल का भाग, समुद्री बर्फ की निवास करने वाली विश्व की सबसे बड़ी नस्ल है।
- हैली बे क्षेत्र में सितंबर 2015 तूफानी महीना था, अल नीनो का प्रभाव 60 वर्षों में सबसे तीव्र था, जिसमें तेज हवाएं तथा कम समुद्री बर्फ का रिकॉर्ड दर्ज किया गया।
- पेंगुइन सामान्यतः अप्रैल से दिसंबर तक यहां प्रवास करते थे जब उनके चूजे भाग जाते थे या उनके पंख निकल आते थे, परंतु इस बार चूजों के बड़े होने से काफी पूर्व ही तूफान आ गया था।
- इस परिस्थितियों में उस वर्ष लगभग 14,500 से 25,000 अंडे या चूजों नष्ट हुए और फिर कॉलोनी दुबारा नहीं बसी।

## इम्परर पेंगुइन के बारे में

- इम्परर पेंगुइन (एथीनोडाईट्स फ़ोर्सिटेरी) सभी जीवित पेंगुइन प्रजातियों में सबसे लंबा और सबसे भारी है तथा अंटार्कटिका में स्थानिक है।
- सभी पेंगुइन के समान यह भी उड़ने में अक्षम है, और समुद्री आवास हेतु सुडौल काया और कठोर व समतल पंखों का जीव है।
- इसके आहार में मुख्य रूप से मछली शामिल है, परन्तु परुषकवची जीव (कड़े खोल वाला जानवर), जैसे क्रिल (एक प्रकार की छोटी मछली), और कपालपाद, जैसे समुद्रफेनी (स्किड) भी शामिल हैं।

► अंटार्कटिक सर्दियों में प्रजनन करने वाली एकमात्र पेंगुइन प्रजाति, इम्परर पेंगुइन, प्रजनन कॉलोनी जिसमें कई हजार पेंगुइन शामिल हो सकते हैं, बर्फ से 50-120 किमी. तक पैदल यात्रा करती है।

► वर्ष 2012 में इम्परर पेंगुइन को आई.यू.सी.एन.द्वारा संकटमुक्त श्रेणी से परिवर्तित कर संकट-घेरे श्रेणी में सूचीबद्ध किया गया है।

## हैली बे

► हैली रिसर्च स्टेशन धरती पर जलवायु की दृष्टि से, वायुमंडलीय एवं अंतरिक्ष मौसम अवलोकन हेतु संवेदनशील क्षेत्र है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक महत्वपूर्ण मंच है।

► वेडेल सागर के अस्थायी बर्फ के शेल्फ पर निर्मित हैली VI विश्व की पहला पुनरावस्थापन अनुसंधान केंद्र है।

► वर्ष 1985 में पहली बार खोजे गए हैली का पुरस्कृत एवं उन्नत अनुसंधान स्टेशन, वैज्ञानिकों को अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं तथा निवास हेतु आवास प्रदान करता है, जो उन्हें जलवायु परिवर्तन तथा समुद्री स्तर में वृद्धि से लेकर अंतरिक्ष के मौसम व ओजोन छिद्र तक वैश्विक समस्याओं का अध्ययन करने में सक्षम बनाता है।

## अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.thehindu.com/news/international/antarctic-penguins-suffer-huge-breeding-failure/article26946232.ece>

## मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

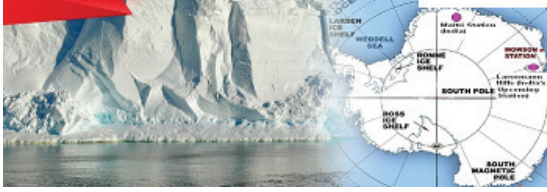
जलवायु परिवर्तन के क्या प्रभाव हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



## अंटार्कटिका की रॉस आइस शेल्फ पिघल रही है



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जलवायु परिवर्तन || ग्लोबल वॉर्मिंग

### शीर्षक

रॉस हिमचट्टान

### खबरों में क्यों?

► अंटार्कटिक की रॉस हिमचट्टान, दुनिया की सबसे बड़ी बर्फ चट्टान है, जो तेजी से पिघल रही है।

### रॉस हिमचट्टान

- वैज्ञानिकों की एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने पता लगाया है कि आसपास फैले महासागर के सौर ताप के कारण, बर्फ की यह चट्टान कुल औसत गति से **10 गुना ज्यादा तेजी** से पिघल रही है।
- पिछले 40 वर्षों में बर्फ की चट्टान के पिघलने से वैश्विक समुद्री-स्तर लगभग **13.8 मिमी** अधिक हो गया है।
- आसपास की समुद्री सतह का ताप, चट्टान पिघलने की दर को बढ़ा रहा है।
- न्यूजीलैंड के निकटतम अंटार्कटिक के किनारे स्थित, यह स्पेन के आकार के बराबर के क्षेत्रफल में फैला है और इसकी औसत मोटाई लगभग 1,300 फीट है। यह उन अनेक चट्टानों में से एक है जिन्होंने अपने 90 प्रतिशत भाग को जलमग्न करके अंटार्कटिक महासागर के किनारों को विस्तार दिया है।



## रॉस हिमचट्टान इतनी तेज़ी से क्यों पिघल रही है

- अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार, तेज समुद्रगामी हवाएं समुद्र की बर्फ को उनकी चट्टानों के महत्वपूर्ण किनारे से दूर बहा कर ले जा रही हैं, जो महासागर के उस क्षेत्र को सौर ताप के लिए उजागर कर रही हैं, जो पहले बर्फ से ढंके हुए थे। पानी की गर्मी के कारण बर्फ तेज़ी से पिघल रही है।
- गर्म तापमान हिमचट्टान के आसपास की बर्फ को कमजोर कर सकता है, इससे हवा के लिए आसान हो जाता है कि वह बर्फ के टुकड़ों को पानी में बहा कर ले जा सके और समुद्र के पानी को सूरज की रोशनी के लिए उजागर कर सके।
- अनुसंधानकर्ताओं को एक विशेष रूप से कमजोर हिस्सा भी मिला है, जहां अन्य हिमचट्टानों की तुलना में बर्फ के पिघलने की दर 10 गुना अधिक है।



## अंटार्कटिक में बर्फ की कमी

- अंटार्कटिक में अधिकांश बर्फ के नुकसान के लिए **हाइड्रो फ्रैक्चर (Hydrofracture)** दो कारणों में से एक है।
- अन्य कारण तब उत्पन्न होता है जब गहरी, गर्म महासागरीय तरंगें एक हिमचट्टान के नीचे बहती हैं, वे उसे उस भूमि से अलग करने का प्रयास करती हैं जिस "धरातल रेखा" से वे जुड़ी होती हैं।
- रॉस की समस्या का अन्य संभावित कारण है, महासागर के धरातल पर हिमचट्टान के सामने रहने वाले वृहद मात्रा के पानी का समय-समय पर गर्म हो जाना है।
- सर्दियों में, समुद्री बर्फ का एक टुकड़ा — वास्तविक बर्फ से अत्यंत कमजोर — चट्टान के सामने के समुद्री हिस्से को ढकती है। लेकिन गर्मियों में, वह समुद्री बर्फ पिघल जाती है और पानी गहराई तक सौर ऊर्जा को अवशोषित कर लेता है और नीचे के पानी को गर्म कर देता है। इसके बाद सतह पर गर्म हुआ यह पानी रॉस हिमचट्टान के उत्तर-पश्चिमी कोने को नष्ट कर देता है, उसकी पिघलती हुई बर्फ को अपने अंदर समा लेता है और जिससे उसके किनारे टूटकर छोटे हिमखंड बन जाते हैं।

## अतिरिक्त जानकारी – हिममंडल

- ▶ पृथ्वी पर ऐसे स्थान हैं जो इतने ठंडे हैं कि वहाँ का पानी भी तरह ठंडा और जमा हुआ रहता है।
- ▶ बर्फ या बर्फ के ये क्षेत्र, जिनका तापमान आधे वर्ष तक कम से कम  $32^{\circ} \text{F}$  से नीचे रहता है, वे हिममंडल का निर्माण करते हैं।
- ▶ "क्रायोस्फियर" शब्द ग्रीक शब्द "क्रियोस" से आया है, जिसका अर्थ है ठंडा।

## मुख्य प्रश्न

जलवायु परिवर्तन के क्या परिणाम हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## तेजी से घटती हुई आबादी



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जैव विविधता || पशु विविधता

### शीर्षक

कश्मीरी हिरण (हंगुल)

### सुर्खियों में क्यों ?

कश्मीर की विशिष्ट वन्यजीव प्रजातियों की आबादी में भारी गिरावट आई है, हंगुल (*Cervus hanglu hanglu*), जिसे कश्मीरी हिरण के नाम से भी जाना जाता है, एक बड़ी चिंता का विषय बना हुआ है।



### कश्मीरी हिरण (हंगुल)

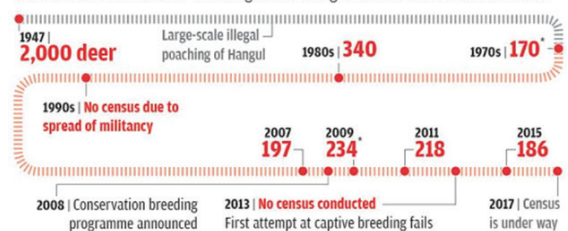
- ▶ जम्मू और कश्मीर का राजकीय पशु, हंगुल, जम्मू और कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर से 15 किमी उत्तर-पश्चिम में दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान तक सीमित है।
- ▶ हंगुल को भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत अनुसूची 1 में और जम्मू-कश्मीर वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1978 में रखा गया है।
- ▶ आईयूसीएन की रेड लिस्ट ने इसे गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजाति के रूप में वर्गीकृत किया है और समान रूप से इसे भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) और पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) के कार्यक्रम पर्यावरण सूचना प्रणाली (ENVIS) के तहत प्रजातियों की पुनःप्राप्ति में भी सूचीबद्ध किया है।

### हंगुल अत्यंत महत्वपूर्ण क्यों है?

- ▶ 1900 की शुरुआत में 5,000 की आबादी वाले हंगुल की जनसंख्या में, दशकों से लगातार गिरावट देखने को मिली है।
- ▶ जम्मू-कश्मीर राज्य में हंगुल उतना ही महत्वपूर्ण माना जाता है, जितना कि पूरे भारत में बाघ को।
- ▶ यह यूरोपीय लाल हिरण की एकमात्र एशियाई जीवित या उप-प्रजाति है। लेकिन राज्य के जानवरों की घटती आबादी एक बड़ी चिंता का विषय बनी हुई है।
- ▶ 2017 के, नवीनतम सर्वेक्षण के अनुसार, दाचीगाम और उससे जुड़े आसपास के क्षेत्रों में हंगुल की आबादी 182 है। इससे पहले इस प्रजाति की जनसंख्या का अनुमान 2004 में 197 और 2015 में 186 हिरण लगाया जा रहा था।
- ▶ आईयूसीएन रेड डाटा बुक — जिसमें उन प्रजातियों की सूची है जिन पर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है — ने जम्मू-कश्मीर में गंभीर रूप से संकटग्रस्त तीन प्रजातियों में से एक विलुप्तप्राय प्रजाति हंगुल का नाम भी घोषित किया है।
- ▶ अन्य दो मारखोर हैं — विश्व में जंगली बकरी की सबसे अधिक प्रजातियां कश्मीर और मध्य एशिया के कई क्षेत्रों में पाई जाती हैं — और तिब्बती मृग या 'चिरु'।

### Diminishing numbers

It was only during the 1980s that the Jammu and Kashmir government woke up to the imminent extinction of the Hangul. But thought has not translated into action



### विभिन्न खतरे

- ▶ हंगुल के संरक्षण और जनसंख्या वृद्धि के तरीकों में विशेषज्ञों ने जिन सबसे बड़ी चुनौतियों की पहचाना है, वे हैं उनके आवास से उनका बिछड़ जाना, शिकार और हिरण के बच्चे-मादा का बहुत कम अनुपात होना।
- ▶ वांछनीय प्रजनन और हिरण के बच्चे का जीवन संकट में होने के कारण, जनसंख्या वृद्धि के लिए यह गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है।
- ▶ हंगुल की आबादी में एक और चुनौती पुरुष-महिला और बच्चों-वयस्कों के बीच असमानता का होना है।
- ▶ दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान में खानाबदोश समुदायों के, पशुओं के झुंडों का आना वर्षों से एक चुनौती बना हुआ है। कश्मीर में सशस्त्र संघर्ष की शुरुआत होने के बाद सेना द्वारा एक दर्जन से भी अधिक पर्वतीय चरागाहों (गुरेज़ में) के लिए खोले जाने वाले पारंपरिक मार्गों को बंद कर दिया गया है, तब से खानाबदोश अपने पशुओं को उन चरागाहों में चराने में सक्षम नहीं हो पाये हैं।
- ▶ इसलिए, ग्रीष्मकाल के दौरान अब वे अपने पशुओं के बड़े झुंडों को दाचीगाम की ऊपरी चोटी में ले जा रहे हैं।
- ▶ हंगुल की आबादी के संकटग्रस्त होने के अन्य खतरों में सामान्य तेंदुओं, काले हिमालयी भातू और घुमंतू जंगली कुत्ते शामिल हैं, जो अत्यधिक मात्रा में हिरण के बच्चों का शिकार करते हैं।

## नोट

- **आवास विखंडन:** जीवों के लिए उपलब्ध उपयुक्त आवास की मात्रा के कम हो जाने पर, आवास विखंडन, संपूर्ण जैव विविधता को प्रभावित कर रहा है। इसे प्रजातियों के लिए सबसे बड़ा खतरा माना जाता है।
- **परभक्षण:** हंगुल के आवासीय स्थानों में, जहां खानाबदोश लोग अपने पशुओं को चराते हैं, उन जंगलों के कुत्ते और खानाबदोशों के कुत्तों के झुंड हिरण के बच्चों का शिकार करते हैं, जो भविष्य की उनकी आबादी में कमी लाता है। पशुओं के झुंडों का आना वर्षों से अब तक एक चुनौती बना हुआ है।
- **वांछनीय प्रजनन और जीवन:** इन सबसे भी अधिक, वांछनीय प्रजनन और हिरण के बच्चों का जीवन बचना जनसंख्या वृद्धि के लिए गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है।
- **मादा-पक्षपाती अनुपात:** एक और बड़ी चुनौती, हंगुल आबादी में पुरुष-मादा और हिरण के बच्चों-वयस्कों में असमानता का होना है। हंगुल की आबादी में गिरावट का मुख्य कारण वयस्कों का बच्चों में कम शामिल होना भी है।

## चिंताएं

- **अपने विशालकाय सींगों के समूह के लिए जाना जाता है, जो 11 से 16 अंकों के होते हैं,** हंगुल जम्मू और कश्मीर का राज्य पशु है। यह पशु जम्मू और कश्मीर राज्य के लिए उतना ही महत्वपूर्ण माना जाता है जितना कि बाघ पूरे भारत के लिए है।
- **पवित्र प्रजातियां:** वैश्विक स्तर पर, लाल हिरण दुनिया में सबसे व्यापक हिरण की प्रजातियों में से एक है। फिर भी कई लाल हिरण प्रजातियां स्थानीय रूप से विलुप्त हो गई हैं या गंभीर रूप से खतरे में हैं।
- **खाद्य श्रृंखला का संतुलन:** इस क्षेत्र की खाद्य श्रृंखला में हंगुल की एक अद्वितीय भूमिका है। एक प्रमुख शाकाहारी जानवर के रूप में, यह सुनिश्चित करता है कि चरागाह अपने स्थान पर बने रहें और जंगलों का हिस्सा बनकर न रह जाएं।
- **मानव-पशु विवाद को कम करना:** दूसरा, हंगुल तेंदुए की भूख को पांच से 10 दिनों तक शांत रख सकता है, इससे मानव-पशु संघर्ष कम हो रहा है।

## निष्कर्ष

- एक समय पर कश्मीर घाटी पर राज करने वाले शानदार और शाही हंगुल हिरण को, अपना अंतिम गढ़ अस्तित्व के खतरे में पड़ा नज़र आ रहा है, राज्य में चल रही चुनौतियों के बीच इसे सुरक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। हंगुल के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए, यह आवश्यक है कि संरक्षण के प्रयास संरक्षित क्षेत्रों से आगे बढ़कर किए जाएं। हालांकि, उनके संरक्षण के लिए व्यवस्थित प्रयास चल रहे हैं। लेकिन फिर भी, निरंतर अंतः प्रजनन और भौगोलिक अलगाव ने उनकी आनुवंशिक विविधता को कम कर दिया है और किसी भी प्राकृतिक आपदा या रोग के प्रकोप के कारण यह प्रजाति अस्थायी रूप से विलुप्त हो सकती है। हंगुल के लिए एक बहुस्तरीय रणनीति बनाया जाना आवश्यक है और लुप्तप्राय प्रजातियों को प्रोत्साहन देने की दिशा में पहला कदम एक जीवनक्षम पारिस्थितिकी तंत्र की पुनःस्थापना करना है।

## अतिरिक्त जानकारी – हंगुल की जनसंख्या की स्थिति

- 2007 में, कश्मीर के लाल हिरण की आबादी 197 बताई गई थी। 2009 में, बढ़कर यह 234 हो गई। हालांकि, 2009 के बाद इसकी आबादी कम होने लगी और 2011 में यह घटकर 218 हो गई और इसके बाद भी 2015 में यह घटकर 186 हो गई। 2017 की नवीनतम जनगणना में, इसकी संख्या घटकर 182 तक आ गई है।
- **2013 में, कश्मीर के राज्य वन्यजीव विभाग ने श्रीनगर अनंतनाग राजमार्ग पर शिकारगढ़ में एक बंधुआ प्रजनन केंद्र स्थापित किया है।** हालांकि, प्रजनन कार्यक्रम में हिरण के एक बच्चे को स्थानांतरित करने के कुछ दिनों के भीतर ही एक बच्चा तेंदुए का शिकार हो गया था। तब से, प्रजनन केंद्र में कुछ गड़बड़ियाँ चल रही हैं और वह सक्रिय अवस्था में भी नहीं है।
- लिंगानुपात में असमानता चिंता का एक अन्य कारण है। 1990 के दशक के पहले प्रति 100 मादाओं पर पुरुषों का अनुपात 21 से 51 तक था। हालांकि, यह अनुपात घटकर प्रति 100 मादाओं पर 12 पुरुषों का हो गया है। यह असंतुलन जन्म की दर में गिरावट लेकर आया है, जो चिंता का विषय है। यदि कश्मीरी लाल हिरण की आबादी को बढ़ाना है, तो निर्धारित समय के भीतर लिंग अनुपात को सामान्य स्थिति में लाना होगा।

## मुख्य प्रश्न

वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए संरक्षण के उपाय क्या हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



## हिमालय में येती के पैरों के निशान

### INDIAN ARMY



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जैव विविधता || पशु विविधता

### शीर्षक

सेना ने येती के पैरों के निशान हिमालय पर देखने का दावा किया है, इस पौराणिक जानवर के बारे में सब कुछ जानें

### यह खबरों में क्यों है?

सेना ने कहा कि उसके पर्वतारोहण अभियान दल को 9 अप्रैल, 2019 को नेपाल में मकालू बेस कैम्प के पास, 32.15 इंच के माप के येती के पैरों के निशान मिले हैं, और इस दृश्य की तस्वीरें पोस्ट कीं।



ADG PI - INDIAN ARMY  
@adgpi

For the first time, an #IndianArmy Mountaineering Expedition Team has sighted Mysterious Footprints of mythical beast 'Yeti' measuring 32x15 inches close to Makalu Base Camp on 09 April 2019. This elusive snowman has only been sighted at Makalu-Barun National Park in the past.



### येती के पैरों के निशान?

- मकालू 8,485 मीटर पर दुनिया का पांचवा सबसे ऊँचा पर्वत है। यह नेपाल, तिब्बत और चीन की सीमा पर माउंट एवरेस्ट से लगभग 19 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में महालंगुर हिमालय में स्थित है।
- येती या 'नृशंस हिममानव' की कथा, 1920 के दशक में प्रचलित थी। कल्पित कथा के अनुसार, वानर जैसा यह प्राणी हिमालय के क्षेत्रों में घूमता है, लेकिन इसे कभी देखा नहीं गया और इसका कोई सबूत भी नहीं है। यह नाम एक ब्रिटिश अन्वेषक द्वारा रखा गया था, जिसने पहली बार तिब्बत के लखपा ला में समान पदचिह्नों का प्रमाण दिया था।

क्षेत्रीय लोग इसे मेह-तेह (मानव-भालू) और कांग-मी (हिममानव) के नाम से भी जानते हैं।

➤ येती की कहानियाँ लोकप्रिय संस्कृति में जिंदा हैं, साहित्य, फिल्मों, संगीत और खेलों में अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख भी किया जाता है। वैज्ञानिक नियमित रूप से इस परिकल्पना पर से पर्दा उठाने का प्रयास कर रहे हैं और इन "दृश्यों" और "सबूतों" को पहाड़ों पर रहने वाली अन्य प्रजातियों जैसे भालू पर आरोपित कर रहे हैं।

➤ ऊपरी हिमालय में रहने वाले अपने कर्मियों द्वारा भारतीय सेना इन विशालकाय "रहस्यमयी पैरों के निशानों" की ली गई तस्वीरों और वीडियो को संबंधित विशेषज्ञों को भेजेगी।

उन्होंने उपग्रहों का उपयोग करके तस्वीरें भेजी हैं।



### क्या यह चर्चा क्रिप्टोजूलॉजी में रुचि बढ़ाएगी?

➤ समस्या यह है कि, ये सभी जीव वास्तविक नहीं हो सकते हैं। उनके अध्ययन को 'क्रिप्टोजूलॉजी' कहा जाता है, जिसका अर्थ है प्रछन्न जानवरों का अध्ययन, जिनकी अब तक कोई जानकारी नहीं है। इसे काफी हद तक एक 'छद्म विज्ञान' माना जाता है, जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

### बिना किसी वैज्ञानिक आधार के येती में विश्वास करना

- नवंबर 2017 का एक अध्ययन "दृढ़ता से यह कहता है कि पौराणिक कथाओं में येती की जैविक संरचना का आधार भूरा और काला भालू है।"
- इसकी हड्डियाँ, दांत, बाल, नाखून या शरीर का अन्य कोई भी अंग अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, इसलिए इससे एक विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन की भी अनुमति मिलती है, भारतीय सेना द्वारा जिन विशालकाय पैरों के निशानों की तस्वीरें दिखाई गई हैं, वे हिमालय में येती के अस्तित्व का कोई ठोस सबूत नहीं देते हैं, यह केवल एक धारणा है।

नोट्स

## अतिरिक्त जानकारी

<https://www.thehindu.com/news/national/army-claims-to-have-sighted-the-mysterious-yeti/article26988724.ece>

## अतिरिक्त जानकारी

- हिमालय में एक अभियान के दौरान **1921 में एक ब्रिटिश अन्वेषक चार्ल्स हावर्ड-बरी** को लखपा ला दर्रे के पास पहली बार येती के पैरों के निशान मिले थे।
- **1951 में, प्रख्यात अंग्रेजी हिमालयी अन्वेषक एरिक शिप्टन** ने येती के द्वारा पीछे छोड़े हुए कदमों के निशानों को कैमरे में कैद किया था, जिसमें पंजे के बजाय अंगूठे जैसी छाप दिखाई दी।
- **एक बार फिर से 1960 में सर एडमंड हिलेरी** का एक खोपड़ी को देखकर कहना था कि, उनके विचार से येती की खोपड़ी का आकार एक हेलमेट के जैसा है, लेकिन बाद में यह साबित हो गया कि यह सेराव (serow) की खोपड़ी है, जो बकरी जैसा एक जानवर है।
- **2010 में, चीनी शिकारियों ने एक बाल रहित, चार पैरों वाले जानवर को पकड़ा**, जो उनके अनुसार येती था, लेकिन उसकी पहचान सिवेट (civet) के रूप में हुई, एक बीमारी से पीड़ित होने के कारण उसके बाल झड़ गए थे।
- **2011 में, शोधकर्ताओं ने दावा किया** था कि उन्हें येती की उंगली मिल गई है; लेकिन उसका डीएनए एक मानव का साबित हुआ।
- **2013 में, नेशनल ज्योग्राफिक** ने हिमालय में येती की कहानियों पर एक वृत्तचित्र जारी किया।

## मुख्य परीक्षा का प्रश्न

सेना ने येती के पैरों के निशान हिमालय पर देखने का दावा किया है, इस अपने विचार व्यक्त करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## अंडमान द्वीपों में भारतीय बुलफ्रॉग का आक्रमण



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जैव विविधता || पशु विविधता

## शीर्षक

भारतीय बुलफ्रॉग अंडमान में आक्रामक व्यवहार करना

## समाचार में क्यों?

अंडमान द्वीपों में भारतीय बुलफ्रॉग बाहर से आए थे जो आक्रामक व्यवहार के हैं और मछली और छिपकली सहित अन्य स्थानीय वन्यजीवों को खा रहे हैं।

## आक्रामक प्रजातियों से क्या तात्पर्य है?

आक्रामक (invasive) प्रजाति एक ऐसी प्रजाति होती है, जो किसी विशिष्ट स्थान (एक परिचयात्मक प्रजाति) की मूल निवासी नहीं होती है और इनकी प्रवृत्ति वृहद मात्रा में फैलना होता है, जिससे कि वह पर्यावरण, मानव अर्थव्यवस्था या मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सके।

## भारतीय बुलफ्रॉग

- भारतीय बुलफ्रॉग होपलोबत्राचस टाइगरिनस।
- अब ये मूल (और अक्सर स्थानीय) मेंढक प्रजातियों के साथ स्थान साझा करते हैं।
- बुलफ्रॉग अनेक बार प्रजनन करते हैं: उनका प्रजनन समय बहुत कम अवधि का होता है।
- इस मेंढक के बच्चे मांसाहारी होते हैं और अन्य शाकाहारी मेंढक के बच्चों को (अपनी प्रजातियों सहित) खाते हैं।
- बुलफ्रॉग भारत की मुख्य-भूभाग में पाया जाता है और भारतीय वन्यजीव अधिनियम 1972 की अनुसूची IV के तहत इसे संरक्षण प्राप्त है।

## आक्रामक स्वभाव

- बड़े बुलफ्रॉग के बच्चे अन्य स्थानीय मेंढक के बच्चों को खा जाते हैं।
- जब बुलफ्रॉग के बच्चे मौजूद रहेंगे तो, दोनों ही संख्या में कम हो जाएंगे और स्थानीय मेंढकों के बच्चों का अस्तित्व शून्य तक आ जाएगा।
- बुलफ्रॉग टैडपोल के जीवित रहने का अनुपात अधिक होगा।
- स्थानीय मेंढक प्रजातियों के लिए यह चिंताजनक है।

## पुरुष-मेंढक संघर्ष

यह मांसाहारी जानवर वह सब कुछ खा सकता है जो उसके जबड़े में आसानी से आ जाता है: कनखजूरे, जोंक, स्थानीय मेंढक, छिपकलियां, छोटे सांप और यहां तक कि चूजे और बत्तख के बच्चे, ये सब द्वीप पर रहने वाले लोगों के भोजन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

## बुलफ्रॉग द्वीपों के लिए खतरा क्यों हैं?

- बुलफ्रॉग्स भारत के मुख्य भूभाग में पाए जाते हैं, लेकिन ये द्वीपों के एक ऐसे विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र में हैं जहां पर ये एक बड़ा खतरा बने हुए हैं।
- मुख्य भूमि के विपरीत, द्वीपों पर बड़े जानवरों के लिए संसाधन दुर्लभ हैं, क्योंकि प्राकृतिक आपदाएं अक्सर होती रहती हैं।
- यहाँ का वन्यजीव एक सूक्ष्म चित्र के रूप में विकसित हुआ है: वहाँ कोई बड़ा शाकाहारी नहीं है (सबसे अधिक अंडमान जंगली सुअर हैं) या बड़े मांसाहारी हैं।

## केंद्र में आक्रामक प्रजातियों

- वैश्विक स्तर पर, आक्रामक प्रजातियां, विशेष रूप से द्वीपों में, कई संगठनों का ध्यान अपनी ओर खींच रही हैं।
- जैव विविधता पर होने वाले सम्मेलन में कहा गया है कि 17 वीं शताब्दी से अब तक विलुप्त होने वाली प्रजातियों में 40% तक का योगदान आक्रामक आक्रामक प्रजातियों ने दिया है।
- आईयूसीएन ने आक्रामक जानवरों के प्रबंधन के लिए दिशानिर्देश तैयार किए हैं, विशेष रूप से उनके लिए जो द्वीपों में रहते हैं, जिसमें बड़े पैमाने पर डाटा संग्रह, सामुदायिक सहभागिता, नीतिगत उपाय और प्रबंधन योजनाएं शामिल हैं।

## अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.thehindu.com/sci-tech/science/indian-bullfrogs-take-to-invasive-behaviour-early-in-andamans/article26898389.ece>

## मुख्य परीक्षा का प्रश्न

बुलफ्रॉग द्वारा स्थानीय प्रजातियों के लिए उत्पन्न किया गया खतरा और आक्रामक प्रजातियाँ और जैव-विविधता। टिप्पणी।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



## इंडोनेशिया नई राजधानी बनाएगा



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जलवायु परिवर्तन || ग्लोबल वार्मिंग

### शीर्षक

इंडोनेशिया अपनी राजधानी को जकार्ता से स्थानांतरित कर रहा है

### समाचार में क्यों?

अंडमान द्वीपों में भारतीय बुलफ्रॉग बाहर से आए थे जो आक्रामक व्यवहार के हैं और मछली और छिपकली सहित अन्य स्थानीय वन्यजीवों को खा रहे हैं।

### संक्षेप में इंडोनेशिया

इंडोनेशिया भारतीय और प्रशांत महासागरों के बीच दक्षिण पूर्व एशिया का एक देश है। यह दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप देश है, जिसमें सत्रह हजार से अधिक द्वीप हैं। इंडोनेशियाई द्वीपसमूह का इतिहास उन विदेशी शक्तियों से प्रभावित रहा है, जिन्होंने उसके प्राकृतिक संसाधनों से फायदा उठाया है। इंडोनेशिया में सैकड़ों अलग-अलग जातीय और भाषाई समूह हैं, जिनमें सबसे बड़े और राजनीतिक रूप से प्रमुख-जातीय समूह जावानीज़ हैं।



### जकार्ता

► उत्तरी जकार्ता ऐतिहासिक रूप से एक बंदरगाह शहर रहा है और आज भी यह इंडोनेशिया के सबसे व्यस्त समुद्री बंदरगाहों में से एक **तंजुंग प्रियोक्** में स्थित है। इसका रणनीतिक स्थान है - जहाँ **सिलुंग नदी जावा सागर में मिलती है**, इसी नदी के कारण डच उपनिवेशवादियों ने इसे 17 वीं शताब्दी में अपना हलचल केंद्र चुना था।

► आज 1.8 मिलियन लोग नगर पालिका में रहते हैं, जो कि लुप्त होते बंदरगाह व्यवसायों, गरीब तटीय समुदायों और अमीर एशियाई लोगों की पर्याप्त आबादी का एक मिश्रण है। **1945 में इंडोनेशिया की आजादी के बाद से राष्ट्रपतियों द्वारा पुनर्वास रद्द किया जाता रहा है, लेकिन वहां अब लोगों की संख्या बढ़ रही है।**

### इस फैसले के पीछे क्या कारण हैं?

- बांडुंग इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्ता जिन्होंने जकार्ता की भूमि उपधारा का अध्ययन किया है, मानते हैं कि 2050 तक उत्तरी जकार्ता का लगभग 95% हिस्सा जलमग्न हो जाएगा।
- न्यूयॉर्क टाइम्स ने 2017 में बताया, आसपास के जावा सागर का स्तर जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप बढ़ रहा है, हालांकि यह उतना जल्दी नहीं हो रहा है जितना जल्दी परिवर्तन भूमि में हो रहा है।
- भीड़भाड़ और उससे संबंधित यातायात की भीड़ - जिसका अर्थ है कि सरकार के मंत्रियों को समय पर बैठकें करने के लिए पुलिस एस्कॉर्ट्स की आवश्यकता पड़ती है - ने भी राजधानी को स्थानांतरित करने के निर्णय में भूमिका निभाई है।
- यह कदम जलमग्न और बढ़ती भीड़ की समस्या को संबोधित करेगा, और संभावित रूप से मेगासिटी से परे आर्थिक अवसरों को फैलाने में मदद करेगा।
- इंडोनेशिया "पेसेफिक रिंग ऑफ फ़ायर" श्रेणी में आने वाला एक देश है, और जकार्ता इस तरह के स्थान के करीब है, जो कि प्राकृतिक आपदाओं के अधीन है।

### देश राजधानी को स्थानांतरित करने का विकल्प क्यों चुनते हैं?

- नए राजधानी शहर जिनके स्थान, कई स्तरों पर संतुलन और समावेश प्रदान करते हैं, अधिक सफल होने और समग्र रूप से राज्य की सफलता में योगदान करने की संभावना रखते हैं। क्षेत्रीय, आर्थिक, जातीय, धार्मिक जैसे स्तरों पर इनका योगदान महत्वपूर्ण होता है।
  - साथ ही साथ, एक नए राजधानी शहर को यथार्थवादी होना चाहिए। नई राजधानी के लिए मिस्त्र की योजना अपने आप में एक बुरा विचार नहीं है। लेकिन क्योंकि सरकार इसे आकर्षक बनाना चाहती है, इसलिए यह उन लोगों के लिए फायदेमंद नहीं होगा, जिनमें से कई गरीबी में रहते हैं।
  - एक सरल प्रशासनिक पूंजी का निर्माण करना बेहतर होगा जो राष्ट्र की आर्थिक स्थिति से मेल खाएगी और मिस्त्र के लोगों को अधिक अवसर प्रदान करेगी।
- अन्य प्रकार के संतुलन- आर्थिक, जातीय, धार्मिक - भी एक प्रेरणा हैं। उदाहरण के लिए, जब नाइजीरियाई सरकार ने 1990 में राजधानी को लागोस से अबूजा स्थानांतरित किया, तो उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि देश मोटे तौर पर ईसाई दक्षिण और मुस्लिम उत्तर में विभाजित था। लागोस दक्षिण में है, और अबूजा देश के बीच में है, इसलिए यह विचार किया गया कि राजधानी को उत्तर के करीब ले जाने से विभाजन को पाटने में मदद मिलेगी।



## राजधानी बदलने के संभावित परिणाम क्या हैं?

- यह पहला मामला नहीं है जहाँ कोई देश अपनी राजधानी बदलने का विचार लेकर आया है। ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील नाइजीरिया आदि देशों ने पहले भी ऐसा किया है।
- राजधानी को स्थानांतरित करने के पीछे बहुत से तर्क संतुलन के साथ करने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए, पूरे इतिहास में हम शासकों को विभिन्न क्षेत्रों को एकजुट करने के लिए एक नई राजधानी का उपयोग करते हुए देखते हैं। प्राचीन मिस्र में, राजा मेनस ने 3150 ईसा पूर्व में ऊपरी और निचले मिस्र को एक राज्य में मिला दिया, और उन्होंने मेम्फिस की राजधानी को बीच में रखा। भारतीय इतिहास में, ऐसे कई शासक हुए हैं जिन्होंने राजधानी बदली है। यहाँ तक कि अंग्रेजों ने अपनी राजधानी कलकत्ता से बदलकर दिल्ली कर ली थी। हालांकि राजधानी के बदलने या स्थानांतरण से अपेक्षित परिणाम नहीं मिल सकते हैं, यह हमेशा क्षेत्र के विकास के संदर्भ में उठाया गया कदम है और कभी-कभी राजनीति से प्रेरित भी होता है। सरकार ने यह नहीं कहा है कि नई राजधानी कहाँ होगी, संभावनाएं पलंगका राया के लिए जताई जा रही हैं।

**पलंगका राया** बोर्नियो द्वीप पर मध्य कालीमंतन प्रांत की राजधानी है। यह कहन और सबंगौ नदियों के बीच स्थित शहर है। इंडोनेशिया सरकार के मामले में, जकार्ता से राजधानी को स्थानांतरित करने के बाद सकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं:

- यह स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगा।
- यह सरकार के लिए मददगार होगा क्योंकि वह राजधानी शहर की आवश्यकताओं के अनुसार शहर की योजना बना सकती है।

## आलोचना

- हालांकि, आलोचकों का कहना था कि ताजे पानी को अलग करने से यह प्रदूषण को बढ़ाएगा, और इसमें मछुआरों को भी नज़रअंदाज किया गया है, जो समुद्र के साथ-साथ जलप्रपात केमुंग या झुग्गी बस्ती में रहते थे, जो पहले से ही अन्य बाढ़-शमन परियोजनाओं के कारण बड़े पैमाने पर निष्कासन का सामना करते रहे हैं। इसके अलावा, इसमें भूमि के उपसमूह की समस्या का समाधान नहीं किया गया है।
- हालांकि, कुछ आलोचकों ने कहा है कि पलंगका राया अपने स्वयं के प्रदूषण और भूमि उप-मुद्दों से ग्रस्त है, जिसे सरकार द्वारा अवशोषित किये जाने से वे गहरा जाएंगे। एक अर्थशास्त्री का कहना है कि इस कदम से नए मेज़बान शहर में असमानता बढ़ सकती है।

## अतिरिक्त संदर्भ

[http://www.newindianexpress.com/topic/Indonesia\\_capital\\_change](http://www.newindianexpress.com/topic/Indonesia_capital_change)

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

विश्व के इतिहास, यहां तक कि भारत में भी राजधानी बदलना कोई नई बात नहीं है। हाल ही में इंडोनेशिया द्वारा राजधानी को स्थानांतरित करने के संदर्भ में, परिणामों पर चर्चा करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## चीनी प्रतिबंध से प्लास्टिक कचरे का पुनर्मार्ग सशक्त किया जाएगा



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || पर्यावरण और पारिस्थितिकी || प्रदूषण

### शीर्षक

चीनी प्रतिबंध से प्लास्टिक कचरे का पुनर्मार्ग सशक्त किया जाएगा

### सुर्खियों में क्यों ?

► दुनिया के इस्तेमाल किए गए प्लास्टिक को स्वीकार करने पर चीन के प्रतिबंध ने पुनर्नवीनीकरण में उथल-पुथल मचा दी है, जिससे अमेरिका से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक का कचरा हर छोटे दक्षिण पूर्व एशियाई समुदायों के संयंत्रों में एकत्रित होने से अपशिष्ट पैदा हो गया है।

### कहानी

- 25 से अधिक वर्षों के लिए, अमीर और विकसित देश अपना प्लास्टिक कचरा गरीब एशियाई देशों में भेजते रहे हैं, उनमें से कई विकासशील देशों में ऐसे कचरे का प्रबंधन करने की क्षमता का अभाव है।
- अकेले चीन ने दुनिया के प्लास्टिक कचरे के आयात का बड़ा (45 प्रतिशत) हिस्सा लिया। देश को दुनिया भर से स्क्रेप प्लास्टिक के थोक प्राप्त हुए, इसे उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री में प्रसंस्करण किया गया जो निर्माताओं द्वारा उपयोग किया जा सकता था।
- चीन दुनिया का सबसे ज्यादा कूड़े का आयातक था। 2016 में देश को 7.3 मिलियन टन अपशिष्ट प्लास्टिक प्राप्त हुआ, जो दुनिया के आधे से अधिक अनुपयोगी प्लास्टिक के बराबर था।
- 2018 के शुरुआती चरण में, चीन ने प्लास्टिक कचरे के साथ-साथ कई अन्य वैसी वस्तुओं का निर्यात करने वाले लगभग सभी विदेशी देशों से आयात के लिए अपने दरवाजे बंद कर दिए।
- प्रतिबंध के बाद, चीन में, प्लास्टिक कचरे का आयात 2016 में 600,000 टन प्रति माह से घटकर 2018 में लगभग 30,000 टन प्रति माह हो गया है।
- इस कदम का उद्देश्य स्थानीय पर्यावरण और वायु गुणवत्ता की रक्षा करना था, जिसके कारण विकसित देशों को अपने प्लास्टिक कचरे को भेजने के लिए स्थानों को खोजने का संघर्ष करना पड़ रहा है।

### सबसे अधिक प्रभावित?

- 'एंटी-हाइड्रोजन पैनेल' विमान के अपहरण से निपटने के लिए एक समर्पित समिति है। इसे राष्ट्रीय संकट प्रबंधन समिति के बाद बनाया गया था। इस प्रतिबंध ने मुख्य रूप से दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ-साथ मलेशिया, थाईलैंड और वियतनाम सहित अन्य देशों को प्रभावित किया था। पुनर्चक्रण करने वाले चीनी लोगों के लिए स्थानांतरित करने का शीर्ष विकल्प मलेशिया था।
- इसने प्लास्टिक कचरे के विशाल टीले का निर्माण किया, जिसे खुले में फेंक दिया गया था, जर्मनी, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राज़ील से इस कचरे को दूर रखने के लिए रोज़मर्रा के सामानों की पैकेजिंग की आमद से निपटने के लिए, पुनर्चक्रण करने वाले लोग कड़ा संघर्ष कर रहे थे।
- ऑस्ट्रेलिया, यूरोप, अन्य बहुत से देश जो प्लास्टिक इकट्ठा करते हैं वे इसे खपाने के लिए विकल्प खोज रहे हैं। कचरे को संसाधित करने वालों के द्वारा उन्हें अपने ही देश में पुनर्चक्रण के लिय उच्च लागतों का सामना करना पड़ रहा है और कुछ मामलों में इसे लैंडफिल साइटों पर भेजने का सहारा लिया गया है क्योंकि स्क्रेप बहुत ही कम समय में ढेर पर परिवर्तित हो गया है।

### प्लास्टिक की विषाक्तता

- जब प्लास्टिक के कण टूटते हैं, तो वे नए रासायनिक और भौतिक गुण प्राप्त करते हैं।
- यह जोखिम बढ़ाता है क्योंकि जीवों पर उनका विषाक्त प्रभाव पड़ता है और पारिस्थितिक कामकाज के लिए एक संभावित खतरा बन जाती है।
- रासायनिक प्रभाव विशेष रूप से अपघटन स्तर पर समस्याग्रस्त होते हैं।
- प्लास्टिक से कणों के रूप में थैलेट्स और बायस्फेनॉल A (BPA) निकलते हैं। ये योजक अपने हार्मोनल प्रभावों के लिए जाने जाते हैं और कशेरुक और अकशेरुकी के हार्मोन प्रणाली को समान रूप से बाधित कर सकते हैं।
- इसके अलावा, नैनो-आकार के कणों के कारण ये कोशिकीय अवरोध, सूजन और यहां तक कि रक्त-मस्तिष्क अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं या नाल जैसे अत्यधिक चयनात्मक झिल्ली को पार कर सकते हैं।
- विभिन्न अन्य चीजों के बीच, कोशिका के अंदर, ये कण जिन अभिव्यक्ति और जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं में परिवर्तन ला सकते हैं।
- कोई भी सिंथेटिक या अर्ध-सिंथेटिक पॉलिमर "प्लास्टिक" होता है, जिसके कारण कई प्लास्टिक "पॉली", से शुरू होते हैं- जैसे पॉलीइथाइलीन, पॉलीस्टाइनिन और पॉलीप्रोपाइलीन। पॉलिमर अक्सर मुख्य रूप से कार्बन और हाइड्रोजन और कभी-कभी सल्फर, क्लोरीन, फ्लोरीन, फॉस्फोरस, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन या सिलिकॉन से बने होते हैं।

## चुनौतियां

- **सर्वव्यापी:** मुख्य चुनौती यह है कि **आर्कटिक से अंटार्कटिका तक**, हर जगह प्लास्टिक का मलबा पाया जाता है। यह कचरा हमारे **शहरों में सड़क नालियों को बंद कर देता है**, यह कैपग्राउंड्स और नेशनल पार्कों को गंदा करता है और माउंट एवरेस्ट पर भी जमा होता है।
- **सभी प्लास्टिक पुनर्चक्रित नहीं होते:** दुर्भाग्य से, हर तरह का प्लास्टिक पुनर्चक्रित नहीं किया जा सकता है। जब प्लास्टिक टूट जाते हैं, तो वे बस प्लास्टिक के छोटे टुकड़ों के एक समूह में परिवर्तित हो जाते हैं।
- हमेशा के लिये:** प्लास्टिक कठोर परिस्थितियों में भी अस्तित्व में रहता है, जैसे कि ब्लिस्टरिंग के तहत एक समुद्री वातावरण में तैरते हुए, बेमौसम धूप या आर्कटिक की बर्फ में सालों पहले से जमे हुए या कहीं सुदूर किनारे से कहीं पर छितराए हुए हैं। यही कारण है कि, **प्लास्टिक शायद मानवता को ही खत्म कर देगा।**

## पर्यावरण पर प्लास्टिक कचरे का प्रभाव

- **पर्यावरणीय गिरावट:** प्लास्टिक को टूटने में सैकड़ों या हजारों साल लग सकते हैं, इसलिए पर्यावरण को लंबे समय तक नुकसान होता है।
- **वायु प्रदूषण:** वायु प्रदूषण जीवों के लिए एक और मुद्दा है। खुली हवा में प्लास्टिक जलाने से बड़ी मात्रा में विषाक्त पदार्थ बाहर निकलते हैं, इससे वायु प्रदूषित होती है। यदि इन विषाक्त पदार्थों को साँसों से अंदर लिया जाता है, तो इससे श्वसन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।
- **समुद्री प्रदूषण:** महासागरों में, प्रदूषण ज्यादातर प्लास्टिक से होता है, और इसका समुद्री प्रजातियों पर भयानक प्रभाव पड़ता है। परिणामस्वरूप, यह मछली पकड़ने पर निर्भर समुदायों के लिए अर्थव्यवस्था और खाद्य आपूर्ति को भी प्रभावित करता है।
- **खाद्य श्रृंखला:** यदि प्लास्टिक का ज़हर छोटे समुद्री जीवों में प्रवेश करता है, तो उन्हें खाने वाले जानवर भी विषाक्त पदार्थों का सेवन करेंगे। विषाक्त पदार्थ खाद्य श्रृंखला में अपना काम करते हैं और सभी को प्रभावित करते हैं।
- **भूमि की समस्या:** कचरे में वृद्धि के साथ, जल्द ही कचरा डालने के लिए स्थानों को ढूँढना मुश्किल हो जाएगा। समय के साथ, लैंडफिल और डंप प्रणालियां अधिक जमीन लेंगी, जानवरों के निवास स्थान पर आक्रमण किया जाएगा और भूजल स्रोतों के करीब भी यह कचरा आ जाएगा।

## प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए कदम

### बेसल कन्वेंशन

- बेसल कन्वेंशन अंतरराष्ट्रीय संधि है जो खतरनाक कचरे की आवाजाही और उनके निपटान को नियंत्रित करती है।
- **संधि कानूनी रूप से बाध्यकारी है।**
- **समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन:**
- इसमें "भूमि आधारित स्रोतों से प्रदूषण को रोकने, कम करने और नियंत्रण करने" की प्रतिबद्धता है, जिसमें प्लास्टिक शामिल है।

## होनोलूलू रणनीति

- 2011 में सहमत, होनोलूलू रणनीति का उद्देश्य भूमि आधारित गतिविधियों से आने वाले समुद्री मलबे से निपटने में मदद करना है।

## भारत का योगदान

- **2015 में, भारत ने उनके पुनर्चक्रण में असमर्थता के कारण** प्लास्टिक अपशिष्ट विशेष रूप से PET बोतलों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया।
- **वैश्विक स्थिरता के भारत के नेतृत्व को मजबूत करते हुए,** देश ने **2022 तक सभी भारतीय राज्यों में एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा करके "हमारे सपनों के भारत को प्राप्त करने" का संकल्प लिया है।**
- भारत संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण के स्वच्छ समुद्र अभियान में शामिल होने के लिए भी प्रतिबद्ध है, जो समुद्री कूड़े पर ज्वार को पलटना चाहता है। इस प्रतिबद्धता के तहत, भारत एक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समुद्री कूड़े कार्रवाई अभियान के साथ-साथ भारत के तटीय जल में कुल समुद्री प्लास्टिक पदचिह्न को मापने के लिए एक कार्यक्रम स्थापित करेगा।

## निष्कर्ष

- प्लास्टिक के कचरे के पहाड़ दुनिया के समुद्रों में हर जगह पाए गए हैं, जो ग्रह पर गंदगी के धब्बों में से एक हैं। प्लास्टिक प्रदूषण का पर्यावरण पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है, लेकिन अच्छी खबर यह है कि यह प्लास्टिक कचरा अपरिहार्य नहीं है। हालांकि प्लास्टिक उत्पादों को पुनर्चक्रित करने से पर्यावरणीय क्षति का जोखिम कम हो सकता है लेकिन प्रतिबंध और अन्य कारणों से यह रास्ता कठिन लगता है। इस मामले में, अभी तक, प्लास्टिक प्रदूषण का एकमात्र समाधान कम प्लास्टिक का उत्पादन कर रहा है।

## अतिरिक्त संदर्भ

<https://indianexpress.com/article/world/dumping-plastic-waste-in-asia-found-destroying-crops-and-health-5690377/>

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- प्लास्टिक कचरे का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## ईशाद आम अपने ही प्रदेश में दुर्लभ हो रहा है



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जैव विविधता || पौधे की विविधता

### शीर्षक

ईशाद आम अपने ही प्रदेश में दुर्लभ हो रहा है

### खबरों में क्यों?

► उत्तर कन्नड़ जिले के अंकोला में, आम की एक स्थानीय किस्म को, अपनी ही मात्रभूमि में दुर्लभ होने का खतरा है।

### डाटा

► गर्मियों के दिनों में इस स्थानीय आम की प्रदेश के अंदर और बाहर दोनों जगह अच्छी मांग है, **उत्पादन और खपत के मामले में यह अल्फोंसो, मल्लिका जैसी आम की अन्य किस्मों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहा है।** एक स्थानीय आम की किस्म, ईशाद, सदियों से जिसके गूदे का प्रयोग मूल्यवर्धित उत्पादों को बनाने के लिए किया जाता रहा है, उसे अपनी ही **मात्रभूमि कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले, अंकोला** में दुर्लभ होने का खतरा है। इसका मोटा गूदा अभी भी पुराने ब्रांड नाम से जाना जाता है। एक दशक पहले प्रति वर्ष इसके गूदे की मात्रा **20,000 टन कम होती-होती वर्तमान में घटकर 10,000 से 12,000 टन के बीच** रह गई है, जो आम के दुर्लभ होते पेड़ों की कमी के कारण हो रहा है। प्रत्येक टिन का वजन 850 ग्राम है।  
► मई के मध्य में काटे जाने वाले आम का जीवन दो से तीन दिन का ही होता है। इसका गूदा एक वर्ष से अधिक चलता है। इसे सहकारी समिति से निर्यात नहीं किया जा रहा था। इस गूदे की मुख्य मांग मुंबई और हुबली में है।  
► वर्तमान समय में, गूदे की मांग में कमी नहीं आई है, क्योंकि सहकारियों द्वारा बनाया गया लगभग 95% गूदा हर साल बेचा जाता है। **लेकिन इस किस्म को संरक्षित करने की जरूरत है।**

### इसके बारे में अधिक

► ओरिएंटल कैनरीज़ एंड इंडस्ट्रीज़ ने 1908 में अंकोला में एक इकाई की स्थापना की, जिसमें **ईशाद आम से मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के लिए गूदा प्रयोग जाता था।**  
► तत्कालीन बॉम्बे सरकार ने लकड़ी की आपूर्ति करके इसका समर्थन किया।

► गूदा, जिसका निर्यात भी किया जा रहा था, उसे तत्कालीन **बॉम्बे-आधारित वीरचंद पानाचंद कंपनी** द्वारा भी बेचा जा रहा था।  
► बेसल मिशन, मंगलुरु में छपे एक पुरानी बाज़ार विवरणिका (marketing brochure) कहती है कि, इस गूदे का इस्तेमाल **जूस, शरबत, सलाद और आइसक्रीम बनाने के लिए किया जाता था।**  
► विवरणिका के अनुसार, गूदे का उपयोग 48 व्यंजनों को बनाने के लिए किया जा सकता है। इसका उपयोग संयुक्त राज्य **अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका** में किया जा रहा था।

### ईशाद आम

इस आम के दो प्रकार हैं;

► कारी ईशाद - जिसकी त्वचा पतली है, गूदा और मीठा दोनों ही अधिक होते हैं।  
► बिली ईशाद - जिसकी मोटी त्वचा होती है और इसमें गूदा और मिठास दोनों कम होते हैं।  
आम का जीवन दो, तीन दिन से अधिक का नहीं होता है। लेकिन इसका गूदा एक वर्ष से अधिक चलता है। एक सदी से भी अधिक समय से ईशाद आम का गूदा मूल्यवर्धित उत्पादों को बनाने के लिए प्रयोगा जाता है। **कुछ किसानों ने अंकोला तालुक, से बाहर इसे उगाने की कोशिश की, लेकिन वे असफल रहे।**

### अतिरिक्त जानकारी

► **विकास क्षेत्र:** ईशाद कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले, अंकोला, के एक स्थानीय आम की किस्म है।  
► **किस्में:** आम के दो प्रकार हैं - कारी ईशाद, जिसकी त्वचा पतली है, गूदा और मीठा दोनों ही अधिक होते हैं और बिली ईशाद, जिसकी मोटी त्वचा होती है और इसमें गूदा और मिठास दोनों ही कम होते हैं।  
► **कटाई का मौसम:** आम की कटाई मई के मध्य से की जाती है।  
► **गूदे की मांग:** मई के मध्य में काटे जाने वाले आम का जीवन दो, तीन दिन से अधिक का नहीं होता है। लेकिन इसका गूदा एक वर्ष से भी अधिक चलता है। एक सदी से भी अधिक समय से ईशाद आम का गूदा मूल्यवर्धित उत्पादों को बनाने के लिए प्रयोग जाता है।

### अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.thehindu.com/news/national/karnataka/ishad-mango-the-pride-of-ankola-is-becoming-rare/article26974419.ece>



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



## लक्षद्वीप ने कृतक खतरे से लड़ने के लिए बार्न उल्लू की भर्ती की गई।



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || पर्यावरण और पारिस्थितिकी || पारिस्थितिकी तंत्र

### शीर्षक

लक्षद्वीप ने कृतक खतरे से लड़ने के लिए बार्न उल्लू की भर्ती की गई।

### खबरों में क्यों?

- ▶ चूहों की बढ़ती हुई आबादी जो नारियल की पैदावार को तबाह कर रही है।
- ▶ लक्षद्वीप के केंद्रशासित प्रदेश ने मदद के लिए बार्न उल्लू की भर्ती की।
- ▶ लक्षद्वीप के केंद्र शासित प्रदेश ने कृतक प्रबंधन कार्यक्रम के तहत केरल के बार्न उल्लूओं की तीन जोड़ियों की भर्ती की है, जो एक चूहों की एक वृहद आबादी से लड़ने के लिए की गई है, जो उसकी नारियल की पैदावार के साथ तबाही मचा रहे हैं।

### बार्न क्या है?

- ▶ बार्न एक कृषि भवन है जो आमतौर पर कृषि और विभिन्न प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जाता है।
- ▶ यह उस संरचना को संदर्भित करता है जिसमें घर के पशुधन के साथ-साथ, मवेशी और घोड़े, उनसे संबंधित उपकरण और चारा, और अक्सर अनाज भी शामिल होता है।

### बार्न उल्लू की भर्ती

- ▶ नारियल द्वीपों के लिए एक पैसा कमाने का एक महत्वपूर्ण जाल है, लेकिन उत्पीड़क कृंतकों की उपज के 30-40% को हानि पहुंचाते हैं।
- ▶ हालांकि, चूहों को शिकार करने के लिए उल्लू को नियुक्त करना द्वीपवासियों के लिए बिल्कुल नया विचार नहीं है।
- ▶ इसी तरह के प्रयास कथित तौर पर 1960 के दशक में भी किए गए थे।
- ▶ 19 वीं शताब्दी में कृतक प्रबंधन के लिए पक्षियों को फिर से लाया गया।

### बार्न उल्लू ही क्यों ?

- ▶ कारण है, कि लक्षद्वीप में चूहे व्यावहारिक रूप से पेड़ों के शिखरों पर रहते हैं।

- ▶ यहां के नारियल के पेड़ एक साथ इतनी मात्रा में फैलते हैं कि वे एक जंगल जैसे लगते हैं। पत्ते एक दुसरे में समाहित होते हैं, जिससे कृंतकों को एक पेड़ से दूसरे पर जाने में आसानी होती है।
- ▶ इसके अलावा, निशाचर बार्न उल्लू एक प्राकृतिक श्रवण तंत्र से लैस प्राकृतिक चूहे के शिकारी हैं।
- ▶ जैविक नियंत्रण के लिए इनका चुनाव करना लक्षद्वीप के निर्णय के लिए एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रयास भी है।
- ▶ द्वीप एक निर्दिष्ट जैविक क्षेत्र है, कीट नियंत्रण के लिए रसायनों का उपयोग के लिए सख्त मनाही है।
- ▶ सफल होने पर, बार्न उल्लू अभियान को लक्षद्वीप के अन्य द्वीपों तक भी विस्तारित किया जाएगा।

### बार्न उल्लू के फायदे

- ▶ चुपचाप उड़ने वाला
- ▶ पेड़ों के ऊपर रहने वाले चूहे
- ▶ कृतक एक पेड़ से दूसरे में आसानी से आ- जा सकते हैं
- ▶ बार्न उल्लू चूहों के प्राकृतिक शिकारी हैं
- ▶ जैव नियंत्रण
- ▶ कीट नियंत्रण के लिए रसायनों के उपयोग के लिये सख्त मनाही है
- ▶ सफल होने पर, बार्न उल्लू अभियान को लक्षद्वीप के अन्य द्वीपों तक भी विस्तारित किया जाएगा।

### जैविक कीट नियंत्रण

- ▶ **जैविक नियंत्रण या बायोकेन्ट्रोल** अन्य जीवों का उपयोग करके कीटों, घुनों, खरपतवारों और पौधों की बीमारियों को नियंत्रित करने की एक विधि है। यह भविष्यवाणी, परजीवीवाद, शाकाहारी या अन्य प्राकृतिक तंत्र पर निर्भर करता है, लेकिन आम तौर पर एक सक्रिय मानव प्रबंधन भूमिका भी शामिल है। यह एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण घटक हो सकता है।

### अतिरिक्त जानकारी

- ▶ **वैज्ञानिक नाम:** टायटो अल्बा
- ▶ **सामान्य नाम:** सामान्य बार्न उल्लू।
- ▶ **बार्न उल्लू का वितरण:** यह दुनिया में लगभग हर जगह ध्रुवीय और रेगिस्तानी क्षेत्रों को छोड़कर, एशिया के उत्तर में हिमालय, अधिकांश इंडोनेशिया और कुछ प्रशांत द्वीपों में पाया जाता है।
- ▶ **शारीरिक विवरण:** सिर और पीठ पर की गई धूसर भूरी या भूरी रंग की धब्बेदार छटा का छायांकन है
- ▶ आंतरिक भाग सफेद और भूरे रंग में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं
- ▶ चेहरा चारित्रिक रूप से दिल के आकार का होता है और अधिकांश उप-प्रजातियों में सफेद होता है।
- ▶ **आहार:** बार्न उल्लू जमीन पर जानवरों का शिकार करने में माहिर होते हैं और उनके भोजन में लगभग सभी छोटे स्तनधारी होते हैं

## अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.thehindu.com/news/national/kerala/barn-owls-to-play-tom-to-fight-jerry-in-lakshadweep/article27082310.ece>

## मुख्य प्रश्न

- कीट प्रबंधन के कुछ उपाय कौन-से हैं?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## क्या रूसी चिनार के बीज कश्मीर में बीमारी का कारण बन सकते हैं ?



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जैव विविधता || पौधे की विविधता

### शीर्षक

क्या रूसी चिनार के बीज कश्मीर में बीमारी का कारण बन सकते हैं?

### खबरों में क्यों?

► हर साल मई में, कश्मीर घाटी में डॉक्टर रूसी पॉपलर के कारण होने वाली सांस की बीमारियों के रोगियों, विशेषकर बच्चों की अधिक संख्या का इलाज करते हैं।

### विषय

- **नाम:** "रूसी चिनार" नाम एक मिथ्या नाम है और इसका रूस से कोई लेना-देना नहीं है।
- इसका पेड़ एक पश्चिमी अमेरिकी प्रजाति से है जिसे अमेरिका में पूर्वी कॉटनवुड (पॉपुलस डेल्टोइड्स) के रूप में जाना जाता है।
- इस प्रजाति को स्थानीय रूप से रूसी फ्रास कहा जाता है।

### उपयोग

► घाटी से सेब और अन्य फलों के परिवहन के लिए लकड़ी के बक्से बनाने के लिए उपयोग किया जाता है, चिनार के पेड़ के उद्योग 600 करोड़ रुपये के हैं। हर साल घाटी में फल उद्योग को कम से कम 300 लाख लकड़ी के बक्से की जरूरत होती है। उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी का उपयोग सजावटी सामान और प्लाईवुड में भी किया जाता है।

### इतिहास

- **कश्मीर में 1982** में विश्व बैंक-सहयता प्राप्त सामाजिक वन योजना के तहत चिनार के पेड़ों की विविधता को पेश किया गया था।
- प्रजाति को विकसित होने में कम समय (10-15 वर्ष) लगता है, जबकि कश्मीर के चिनार को 30-40 वर्ष लगते हैं। उनकी उच्च उपज के कारण, लकड़ी और निर्माण उद्योग में चिनार का गहन उपयोग किया जाता है।

► **ग्रीष्मकाल के दौरान, पॉपुलस डेल्टोइड्स** - मादा चिनार - एक कपास जैसा पदार्थ छोड़ता है जो एलर्जी पैदा करता है और श्वसन संबंधी विकारों को बढ़ाता है। यह कपास स्थानीय लोगों के साथ-साथ पर्यटकों के लिए हाल के दिनों में एक अड़चन बन गया है।

► तीन साल पहले, इसी वजह से जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय ने घाटी में सभी रूसी पॉपलरों को काटने का आदेश दिया। दूसरी ओर, कुछ वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि इन पेड़ों के बीजों से एलर्जी नहीं होती है।

### उच्च न्यायालय का हस्तक्षेप

► 2014 में, एक श्रीनगर निवासी ने इस शिकायत के साथ उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया कि उसके पड़ोसी ने उसके घर के पास "रूसी पोपलर" लगाए थे और पेड़ों का पराग उसके परिवार, विशेष रूप से उसकी बीमार मां और उसके बच्चों में एलर्जी पैदा कर रहा था। आवेदक ने पेड़ों को हटाने की मांग की। अदालत ने श्रीनगर में मादा "रूसी पोपलर" की बिक्री, खरीद और वृक्षारोपण पर प्रतिबंध लगा दिया।

### अतिरिक्त संदर्भ

<https://indianexpress.com/article/explained/do-russian-poplar-seeds-cause-may-illness-in-kashmir-the-fears-the-science-5724268/>

### मुख्य प्रश्न

► क्या 'रूसी चिनार के बीज कश्मीर में बीमारी पैदा कर सकते हैं? टिप्पणी।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

## चिंकारा अभयारण्य को अधिसूचित किया गया।



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जैव विविधता || पौधे की विविधता

### शीर्षक

चिंकारा अभयारण्य को अधिसूचित किया गया।

### खबरों में क्यों?

► एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, 16 मई, 2019 को कर्नाटक की सरकार ने तुमकुरु जिले के सिरा तालुक के बुक्कापटना को चिंकारा या भारतीय गेज़ल के लिए एक वन्यजीव अभयारण्य के रूप में अधिसूचित किया गया है। बुक्कापटना, भारत में चिंकारा के सबसे दक्षिणी में क्षेत्र है।

### विवरण

- 148 वर्ग किलोमीटर के कुल क्षेत्रफल के साथ, यह कर्नाटक में चिंकारा के लिए एकमात्र अन्य संरक्षित क्षेत्र से भी बड़ा है, जो राज्य के उत्तरी भाग में बगलकोट जिले में ये दहल्ली में स्थित है।
- मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि अभयारण्य की स्थापना का श्रेय वन्यजीव संरक्षणवादी संजय गुब्बी को जाता है, जो गैर-लाभकारी, प्रकृति संरक्षण फाउंडेशन के साथ काम करते हैं।
- उन्होंने तेंदुए को कैमरे में चित्रित करते हुए उस इलाके में चिंकारा की बहुतायत पाई और प्रजातियों के लिए एक अभयारण्य स्थापित करने का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव को जनवरी 2019 में कर्नाटक के राज्य वन्यजीव बोर्ड और 16 मई को जारी अधिसूचना द्वारा अनुमोदित किया गया था।

### चिंकारा के बारे में

- **चिंकारा (गजेला बेनेट्टी)**, को भारतीय गैज़ल के नाम से भी जाना जाता है।
- छह उप-प्रजातियाँ
- यह 65 सेमी (26 इंच) लंबा होता है और इसका वजन लगभग 23 किलोग्राम (51 पौंड) होता है। इसके पास चिकनी, चमकदार फर के साथ एक लाल ग्रीष्मकालीन परत भी होती है।
- चिंकारा शुष्क मैदानों और पहाड़ियों, रेगिस्तानों, शुष्क झाड़ियों और हल्के जंगलों में रहते हैं।

### खतरे

- अफगानिस्तान, ईरान और पाकिस्तान में मांस और ट्राफियों के लिये व्यापक शिकार के कारण चिंकारा को खतरा है।
- कृषि और औद्योगिक विस्तार के कारण इनके निवास स्थान को बड़ा खतरा है। इन देशों में स्थिति स्पष्ट नहीं है।

### मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

- चिंकारा के लिए क्या खतरे हैं?

नोट्स



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)



## गुजरात के गिर के जंगल में शाकाहारी जानवरों की जनगणना



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जैव विविधता || पशु विविधता

### शीर्षक

गुजरात के गिर के जंगल में शाकाहारी जानवरों की जनगणना

### खबरों में क्यों?

- हर साल गर्मियों में, गुजरात का वन विभाग गिर के जंगल में शाकाहारी जानवरों की जनगणना करता है।
- इस वर्ष की कवायद का विशेष महत्व है क्योंकि यह अगले साल होने वाली शेरों की जनगणना से पहले की आखिरी जनगणना है, जो हर पांच साल में एक बार होती है।

### शाकाहारी जीवों की जनगणना

- शाकाहारी जानवरों की जनगणना में चित्तीदार हिरण, नीले बैल (नीलगाय), सांबर, चिंकारा, चार सींग वाले मृग (चोशिंगा) और जंगली सूअर, साथ ही साथ भारतीय लंगूर और मोर शामिल हैं।

### महत्व

- खुर वाले जंगली जानवर और लंगूर एशियाई शेरों के मुख्य शिकार हैं।
- यह गणना शिकार आधार की उपलब्धता प्रदान करती है।
- एक मजबूत शिकार आधार।
- 2013-14 में, शाकाहारी जानवरों की पिछली जनगणना की संख्या 1.32 लाख थी, जो 2012-13 में गिने गए 1.25 लाख जानवरों से लगभग अधिक थी।

### यह गर्मियों में आयोजित क्यों किया जाता है?

- गर्मियों के दौरान, वनस्पति कम हो जाती है।
- इसके अलावा, जंगली जानवर जल के स्थानों पर एकत्रित होते हैं।
- जनगणना के लिए वन को 19 मार्गों और वन प्रभागों में विभाजित किया गया है।

## हाल के वर्षों में जनसंख्या का रुझान?

- 1974 से, गिर के जंगल में शाकाहारी लोगों की आबादी बढ़ रही है।
- 2013 में, खुर वाले जानवरों की आबादी 1,26,893 या 76.49 जानवरों प्रति वर्ग किलोमीटर होने का अनुमान लगाया गया था।
- यह मांसाहारी जानवरों के लिए 8000 किग्रा बायोमास की उपलब्धता को इंगित करता है, जो तंजानिया के सेरेनगेटी नेशनल पार्क में इस प्रकार के स्तरों के बहुत करीब है।
- 2010 में खुरों वाले जानवरों की जनसंख्या 1,07,172 थी।

## भारत में एशियाई शेर संरक्षण

- पूर्वी भारत में परशिया (ईरान) से लेकर पालामाउ तक के एशियाई शेर अंधाधुंध शिकार और आवास संकट के कारण विलुप्त होने की कगार पर थे।
- 1890 के अंत तक गुजरात के गिर के जंगलों में 50 से कम शेरों की एकल आबादी बनी रही।
- **IUCN लाल सूची स्थिति: लुप्तप्राय**
- राज्य सरकार और केंद्र सरकार द्वारा समय पर और कड़े सुरक्षा उपायों के कारण, एशियाई शेरों की संख्या 500 से अधिक हो गई है।
- वर्ष 2015 की अंतिम जनगणना में 1623.79 वर्ग किमी के गिर संरक्षित क्षेत्र में 523 एशियाई शेरों की आबादी की बात कही गयी थी, जिसमें गिर राष्ट्रीय उद्यान, गिर अभ्यारण्य, पनिया अभ्यारण्य, मटियाला अभ्यारण्य समीपवर्ती वनों, संरक्षित वनों और अवर्गीकृत वन शामिल हैं।

## अतिरिक्त जानकारी - गिर राष्ट्रीय उद्यान

- गिर दुनिया के लोकप्रिय एशियाई शेरों का एकमात्र प्राकृतिक आवास है।
- गिर वन राष्ट्रीय उद्यान, गुजरात में एक वन्यजीव अभ्यारण्य है।
- इसकी स्थापना एशियाई शेरों, तेंदुओं और मृगों की रक्षा के लिए की गई थी।
- गिर क्षेत्र की सात प्रमुख बारहमासी नदियाँ हिरन, शतरुणजी, दातारडी, शिंगोदा, मछुंदरी, गोदावरी और रावल हैं।
- इस क्षेत्र के चार जलाशय चार बाँधों में हैं, जिनमें से प्रत्येक हिरन, मछुंदरी, रावल और शिंगोदा नदियों पर स्थित है, और इनमें भी कमलेश्वर बांध, गिर की जीवन रेखा के नाम से जाना जाता है।
- 1955 में समतापऊ और रायज़ादा द्वारा गिर के जंगल के सर्वेक्षण में 400 से अधिक पौधों की प्रजातियों को दर्ज किया गया था।
- चैंपियन और शेथ द्वारा 1964 के वन प्रकार के वर्गीकरण के अनुसार, गिर वन, "बहुत शुष्क सागौन वन" वर्गीकरण के अंतर्गत आता है। सागौन, शुष्क पर्णपाती प्रजातियों के साथ उपजता है।

## अतिरिक्त संदर्भ

<https://indianexpress.com/article/explained/herbivore-census-gir-asiatic-lion-5726060/>

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

एशियाई शेर संरक्षण परियोजना की व्याख्या करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जलवायु परिवर्तन || जलवायु परिवर्तन से निपटने

### शीर्षक

भारत, चीन द्वारा वैश्विक हरियाली के प्रयासों का नेतृत्व

### खबरों में क्यों?

► एक नए उपग्रह आधारित अध्ययन से पता चला है कि चीन और भारत दुनिया भर में "हरियाली प्रयासों" में वृद्धि का नेतृत्व कर रहे हैं।

### जाँच - परिणाम

- अनुसंधान दल ने पृथ्वी पर वनस्पति के भूमि क्षेत्र की कुल मात्रा और समय के साथ इसमें आए परिवर्तन (2000-17) को निर्धारित किया है।
- NASA के मॉडरेट रिज़ॉल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोमाडोमीटर (MODIS) डेटा के माध्यम से, दल ने पाया कि 2000 के दशक की शुरुआत से वैश्विक हरियाली (हरी पत्ती) क्षेत्र 5% बढ़ गया है।
- यह प्रति दशक 2.3% के पत्ती क्षेत्र में शुद्ध वृद्धि को इंगित करता है, जो 18 साल की रिकॉर्ड अवधि (2000 से 2017) में  $5.4 \times 106$  वर्ग किमी. नए पत्ती क्षेत्र को जोड़ने के बराबर है।
- यह अमेज़न के क्षेत्र के बराबर है।
- चीन, अकेले पत्ती क्षेत्र में वैश्विक शुद्ध वृद्धि का 25% हिस्सा रखता है। भारत ने अतिरिक्त 6.8% का योगदान दिया है।
- चीन में हरियाली जंगलों (42%) और खेतों (32%) से है, लेकिन भारत में ज्यादातर खेतों (82%) से है वहीं जंगलों (4.4%) से मामूली योगदान मिलता है।

### MODIS

- MODIS (या मॉडरेट रेजोल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रोमाडोमीटर), भूमि उपग्रहों (मूल रूप से EOS AM-1) और जल उपग्रहों (मूल रूप से EOS PM -1 के रूप में जाना जाता है) में एक महत्वपूर्ण उपकरण है।
- भूमि उपग्रह की कक्षा पृथ्वी के चारों ओर समयबद्ध है, भूमध्य रेखा पर उत्तर से दक्षिण की ओर से गुजर वह सुबह के समय गुजरती है, जबकि जल उपग्रह दोपहर में भूमध्य रेखा के ऊपर दक्षिण से उत्तर की ओर गुजरता है।

- भूमि MODIS और जल MODIS प्रत्येक 1 से 2 दिनों में पूरी पृथ्वी की सतह की निगरानी करते हैं, जो 36 वर्णक्रमीय बैंड या तरंग दैर्ध्य के समूहों में डेटा प्राप्त कर रहे हैं।
- महत्व: ये डेटा वैश्विक गतिशीलता और भूमि पर होने वाली प्रक्रियाओं, महासागरों और निचले वातावरण में हमारी समझ को बढ़ाएँगे। MODIS, मान्य, वैश्विक, इंटरैक्टिव अर्थ सिस्टम मॉडल के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है जो वैश्विक परिवर्तन की सटीक भविष्यवाणी करने में सक्षम है और हमारे पर्यावरण की सुरक्षा के विषय में महत्वपूर्ण निर्णय लेने में नीति निर्माताओं की सहायता करने के लिए पर्याप्त है।

### प्रमुख बातें

- यह अध्ययन पूरी तरह से वन संबंधित डेटा के साथ-साथ उपग्रह डेटा पर आधारित था।
  - चीन या भारत में इस बात का आकलन करने के लिए कोई भी भौतिक जाँच नहीं की गई थी कि किस तरह के पेड़ या वनस्पति इस प्रकार के अध्ययन के लिए चुने गए थे।
  - पत्तों की प्रचुरता के मद्देनजर पेड़ों की गुणवत्ता अच्छी है।
  - उपग्रह डेटा में वैश्विक स्तर पर प्रजातियों को सटीक रूप से पहचानने की क्षमता नहीं है।
- जब पहली बार पृथ्वी की हरियाली देखी गई थी, तो यह माना गया था कि गर्म, आर्द्र जलवायु और पृथ्वी की उर्वरता वायुमंडल अतिरिक्त कार्बन डाइऑक्साइड के जुड़ने से हो रही है, उदाहरण के लिए इस प्रकार की जलवायु, उत्तरी जंगलों में अधिक पत्ती का विकास कर रही है।
- अब, MODIS डेटा के साथ जो हमें वास्तव में छोटे पैमानों पर घटनाओं को समझने में मदद कर रहा है, हम देखते हैं कि मनुष्य भी योगदान दे रहे हैं।

### भारत का विकास

- केवल 2.7% के वैश्विक वनस्पति क्षेत्र के साथ, वैश्विक स्तर पर पत्ती क्षेत्र में भारत की कुल वृद्धि 6.8% है।
- यह अपेक्षित है क्योंकि भारत में अधिकांश भूमि प्रकार कृषि भूमि ( $2.11 \times 106$  वर्ग किमी) है।
- इसी अवधि के दौरान भारत में कुल अनाज उत्पादन में 26% की वृद्धि हुई है।
- भारत में केवल कुछ ही जंगल हैं, और इसीलिए उनका योगदान कम है।
- आंकड़े बताते हैं कि आजादी के बाद से, भारत की 1/5वीं भूमि लगातार जंगलों के अधीन रही है।
- फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया की स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट 2017 के मुताबिक वन क्षेत्र 2015 के बाद से 6,600 वर्ग किमी या 0.21% बढ़ा है।

## अतिरिक्त संदर्भ

<https://www.thehindu.com/sci-tech/energy-and-environment/india-china-lead-global-greening-effort-study/article26252190.ece>

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

► भारत में वनीकरण की व्याख्या करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट- विलुप्त होने के खतरे में एक मिलियन प्रजातियां

प्रशान्त धवन द्वारा



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जैव विविधता || संरक्षण के प्रयासों

### शीर्षक

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट- विलुप्त होने के खतरे में एक मिलियन प्रजातियां

### सुर्खियों में क्यों ?

► हाल ही में संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट से पता चलता है कि लगभग एक मिलियन प्रजातियां दशकों के भीतर विलुप्त होने वाली हैं, जबकि पृथ्वी के संसाधनों के संरक्षण के मौजूदा प्रयास संभवतः तीव्र कार्रवाई के बिना विफल हो जाएंगे।

### रिपोर्ट का नाम

► जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर 2019 वैश्विक मूल्यांकन रिपोर्ट।

### रिपोर्ट किसने प्रकाशित की है?

► यूनेस्को

### रिपोर्ट के बारे में

- यह वैश्विक मूल्यांकन अध्ययन (यूनेस्को द्वारा) 2005 के बाद पहली ऐसी रिपोर्ट है।
- यह अपनी तरह का पहला परीक्षण है जिसमें स्वदेशी और स्थानीय ज्ञान, मुद्दे और प्राथमिकताएँ शामिल हैं
- यूनेस्को मुख्यालय में 130 से अधिक सरकारी प्रतिनिधिमंडलों ने अपनी रिपोर्ट अनुमोदन के लिए प्रस्तुत की थी।
- रिपोर्ट में कम से कम 50 देशों के 400 विशेषज्ञों के काम की विशेषताओं को दिखाती है।
- अध्ययन में प्रमुख अंतरराष्ट्रीय लक्ष्यों पर प्रगति पर भी चर्चा की गई है, जैसे कि :
  - सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी)
  - आइची (Aichi) जैव विविधता लक्ष्य
  - जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता
- रिपोर्ट में पिछले 50 वर्षों में "अभूतपूर्व" जैव विविधता और पारिस्थितिक तंत्र परिवर्तन के पांच मुख्य संचालकों की भी जांच की गई है, उन्हें निम्न के रूप में पहचाना जाता है

1. भूमि और समुद्री उपयोग में परिवर्तन
2. जीवों का प्रत्यक्ष शोषण
3. जलवायु
4. प्रदूषण
5. विदेशी प्रजातियों का आक्रमण

### रिपोर्ट की खोज

- चार प्रजातियों में से एक विलुप्त होने के खतरे में है।
  - अध्ययन में कहा गया है कि मानव गतिविधियाँ "पहले से कहीं अधिक प्रजातियों के लिए खतरा पैदा कर रही हैं"।
  - मजबूत सुरक्षात्मक उपायों के बिना प्रजातियों के विलुप्त होने की वैश्विक दर में "और अधिक तेजी" होगी, जो पहले से ही "कम से कम पिछले 10 मिलियन वर्षों में औसतन दस से सौ गुना अधिक है।
  - स्तनधारियों की पालतू नस्लों का नुकसान:
    - 2016 तक, स्वदेशी लोगों और स्थानीय समुदायों सहित कई स्थानीय प्रयासों के बावजूद, खाद्य और कृषि के लिए उपयोग किए जाने वाले स्तनधारियों की लगभग 9% घरेलू नस्लें विलुप्त थीं।
    - स्तनधारियों की कम से कम 1,000 से अधिक पालतू नस्लों को खतरा है।
  - फसल सुरक्षा को खतरा:
    - कई जंगली फसल की प्रजातियों को लंबे समय तक खाद्य सुरक्षा के लिए आवश्यक "प्रभावी खाद्य सुरक्षा" की कमी है।
    - जबकि पालतू स्तनधारी और पक्षियों की जंगली प्रजातियों की स्थिति "बिगड़ती जा रही है।
    - कृषि में लचीलेपन से नुकसान
    - कृषि की फसलों की विविधता, जंगली फसलों की प्रजातियों और घरेलू किस्मों में कमी का मतलब है कि खेती भविष्य के जलवायु परिवर्तन, कीटों और रोगजनकों के सामने कमजोर होगी।
  - असतत समृद्धि:
    - जबकि अधिकतम स्थानों पर अब पहले से कहीं अधिक भोजन, ऊर्जा और सामग्री की आपूर्ति लोगों को की जा रही है, भविष्य में इस तरह का योगदान देने की क्षमता प्रकृति की कीमत पर बढ़ रही है।"
- जीवमंडल, जिस पर संपूर्ण निर्भरता के रूप में मानवता टिकी हुई है, मानव इतिहास के किसी भी समय की तुलना में तेजी से घट रही है।

### समुद्री प्रदूषण '1980 के बाद से दस गुना बढ़ गया है'

- यद्यपि वैश्विक रुझान मिश्रित हैं, कुछ क्षेत्रों में वायु, जल और मिट्टी के प्रदूषण में वृद्धि जारी है।
- विशेष रूप से 1980 से समुद्री प्लास्टिक प्रदूषण दस गुना बढ़ गया है, जिससे कम से कम 267 प्रजातियां प्रभावित हुई हैं, जिनमें 86 प्रतिशत समुद्री कछुए, 44 प्रतिशत समुद्री पक्षी और 43 प्रतिशत समुद्री स्तनधारी शामिल हैं।

## रिपोर्ट का महत्व

- इस ऐतिहासिक रिपोर्ट को अपनाने के बाद, कोई भी यह दावा नहीं कर सकेगा कि उन्हें खतरे के बारे में पता नहीं था।
- यह प्रकृति की स्थिति, पारिस्थितिक तंत्र और कैसे प्रकृति सभी मानव गतिविधि को कम करती है पर संपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।
- इसका मिशन जैव विविधता के स्थायी उपयोग, दीर्घकालिक मानव कल्याण और सतत विकास के लिए नीति-निर्माण को मजबूत करना है।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि "लोगों द्वारा प्रकृति के अमूल्य योगदान की रक्षा करना आने वाले दशकों में निर्णायक चुनौतियाँ लेकर आएगा।
- रिपोर्ट से पता चलता है कि नीतियाँ, प्रयास और कार्य, हर स्तर पर सफल होंगे, केवल तभी जब यह सर्वश्रेष्ठ ज्ञान और प्रमाणों पर आधारित हों।"



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## सनस्क्रीन क्रीमों द्वारा प्रवाल भित्तियों का हनन



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

### प्रासंगिकता

GS 3 || पर्यावरण || जैव विविधता || समुद्री जीव

### शीर्षक

सनस्क्रीन क्रीमों द्वारा प्रवाल भित्तियों का हनन

### खबरों में क्यों?

► हाल में हुए अध्ययनों में पाया गया है कि कई लोकप्रिय उत्पादों में सनस्क्रीन रसायन वास्तव में प्रवाल भित्तियों के हनन के लिए उत्तरदायी हैं। मुख्य रासायनिक अभियुक्त ऑक्सीबेनज़ोन तथा ऑक्टिनॉक्सेट हैं, जो मानव त्वचा पर आतपदाह के परिणामस्वरूप यूवी किरणों को हानिरहित ऊष्मा में परिवर्तित करते हैं।

### प्रवाल भित्तियां क्या हैं?

► प्रवाल आनुवंशिक रूप से समरूप जीवों से बने होते हैं जिन्हें पॉलीप कहा जाता है। इन पॉलीप में ज़ोक्सांथेला नामक सूक्ष्म शैवाल होते हैं जो उनके ऊतकों के भीतर निवास करते हैं।  
► प्रवाल भित्तियों और शैवाल का परस्पर संबंध है।

### प्रवाल विरंजन क्या है?

► जब प्रवाल तापमान, प्रकाश या पोषक तत्वों की अवस्थिति में परिवर्तन से दबाव का सामना करते हैं, तो वे अपने ऊतकों में निवासित सहजीवी शैवाल ज़ोक्सांथेला को निष्कासित कर देते हैं, जिससे उनका रंग श्वेत हो जाता है। इस घटना को प्रवाल विरंजन कहा जाता है।

### प्रवाल की रक्षा

► रसायनों से प्रवाल भित्तियों की रक्षा करने के कदम हेतु पश्चिमी प्रशांत राष्ट्र पलाऊ विभिन्न सनस्क्रीन पर प्रतिबंध लगाने वाला पहला देश बन गया है। वैज्ञानिकों ने इन रसायनों को उल्लेखनीय क्षति हेतु उत्तरदायी बताया है।

### रसायन जो प्रवाल विरंजन को गति प्रदान करते हैं

- वैज्ञानिकों ने कहा कि सनस्क्रीन से निकलने वाले रसायन, जो तैराक जल में धोता है या सीवर प्रणाली के माध्यम से समुद्र में प्रवेश करता है और गंभीर नुकसान पहुंचाता है।
- यहां तक कि जल में सनस्क्रीन की निम्न संकेन्द्रण भी अप्रौढ़ प्रवाल के विकास में बाधा डाल सकती है।
- यह स्थानीय प्रवाल विरंजन का कारण बनता है और मछलियों के हार्मोन संबंधी प्रणाली में रोध जनित कर उनके प्रजनन को बाधित कर सकता है।

### यह कदम

- अनुमानित 14,000 टन लोशन प्रति वर्ष विश्व के महासागरों में मिलता है।
- वर्ष 2017 की एक रिपोर्ट में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में से एक पलाऊ है, जिसमें जेलीफिश झील में व्यापक रूप से सनस्क्रीन उत्पाद पाए गए।
- वर्ष 2015 में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि सनस्क्रीन में ऑक्सीबेनज़ोन प्रवाल की वृद्धि में रोधक पैदा करता है और भित्तियों के भीतर रहने वाले शैवाल के लिए विषाक्त है।

### प्रवाल विरंजन के कारण

- समुद्री तापमान में वृद्धि
- महासागरीय अम्लीकरण
- सौर तथा पराबैंगनी विकिरण
- संक्रामक रोग
- रासायनिक प्रदूषण
- अवसादन में वृद्धि

### संबंधित प्रभाव

► विरंजन प्रक्रिया के बाद, यदि प्रवाल पोलिप भुखमरी से मर जाते हैं, तो अपक्षय के कारणवश वे कठोर प्रवाल प्रजातियां अपने कैल्शियम कार्बोनेट ढांचे को छोड़ देंगी, जिनका अभिग्रहण शैवाल द्वारा किया जाएगा, जो प्रभावी रूप से प्रवाल-वृद्धि को रोक देगा और अंततः, प्रवाल ढांचा नष्ट हो जाएगा और परिणामस्वरूप चट्टान संरचना गिर जाएगी।

### आगे की राह

- अनियोजित तटीय विकास को रोकना
- चिरस्थायी मतस्य पालन को बढ़ावा देना
- रसायन द्वारा संवर्धित उर्वरकों के उपयोग को कम करना
- हानिकारक औद्योगिक अपशिष्ट का प्रबंधन
- जल प्रदूषण में कमी
- प्रवाल भित्तियों पारिस्थितिकी प्रणालियों के लिए सबसे बड़ा वैश्विक खतरा जलवायु परिवर्तन है, अतः भूमण्डलीय तापक्रम में वृद्धि वाली गतिविधियों को रोकने के लिए सभी संभव उपाय करने चाहिए।

## मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

- हम प्रवाल को कैसे संरक्षित रख सकते हैं, टिप्पणी करें।



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स



## भूगोल

## कंचनजंगा एवरेस्ट की तुलना में कठिन और खतरनाक क्यों है ?



(वीडियो देखने के लिए उपरोक्त छवि पर क्लिक करें)

## प्रासंगिकता

GS 1 || भूगोल || भारतीय भौतिक भूगोल || पर्वत

## शीर्षक

कंचनजंगा एवरेस्ट की तुलना में कठिन और खतरनाक क्यों है? कंचनजंगा बनाम एवरेस्ट

## सुर्खियों में क्यों ?

- कोलकाता के दो पर्वतारोहियों के कंचनजंगा पर्वत पर मरने की आशंका है, जो दुनिया का तीसरा सबसे ऊंचा पर्वत है जिसकी ऊंचाई 88686 मीटर है।
- रिपोर्टों के अनुसार, दोनों कलकत्ता निवासी ऊंचाई से संबंधित बीमारी से पीड़ित होने के बाद मर गए।

## क्यों

- कंचनजंगा पर्वत, उत्तर बंगाल या सिक्किम से देखे जाने पर पर्यटकों को विस्मयाभिभूत कर देते हैं, पर्वतारोहियों के लिए चढ़ाई करने के लिए सबसे जोखिम भरी चोटियों में से एक है।
- पर्वतारोही, पर्वत खतरनाक होते हैं, लेकिन बंगाल से प्रशिक्षित पर्वतारोही कैसे और क्यों मारे गए हैं, इसका अच्छी तरह से अध्ययन नहीं किया गया है।
- यह पाया गया है कि 8,000 मीटर से ऊपर शिखर से उतरने के दौरान ज्यादातर मौतें होती हैं।
- मृत्यु का कारण बनने वाले जिन कारकों की पहचान की गई है उनमें से मुख्य हैं, उच्च अक्षांशीय मस्तिष्क शोफ (सेरेब्रल एडिमा), गिरती हुई बर्फ और उच्च- अक्षांशीय पुलमोनरी एडिमा हैं।

## कारण

- मृत्यु को वर्गीकृत किया गया था -
- **दर्दनाक**, गिरने या बाहरी खतरों जैसे हिमस्खलन से;
- **गैर-दर्दनाक**, उच्च अक्षांश की बीमारी, हाइपोथर्मिया या अन्य चिकित्सा कारणों से; या
- अनुभवी हिमालयी पर्वतारोहियों दिखाई न पड़ना।

## चुनौतियां

- कंचनजंगा भारत की सबसे ऊँची चोटी है और पूर्व की ओर ऊँची चोटियाँ 8,000 मीटर से ऊँची होती हैं।
- **हिमपात और हिमस्खलन**: बंगाल में एवरेस्ट्स के अनुसार, हिमपात और हिमस्खलन का लगातार खतरा पर्वतारोहियों के लिए सबसे अधिक खतरनाक है।
- **ऑक्सीजन स्तर**: शीर्ष के पास, हवा में ऑक्सीजन समुद्र स्तर की लगभग एक तिहाई होती है।
- मौसम की स्थिति और बर्फ का फिसलना: पर्वतारोहियों के काम को और अधिक कठिन बनाने वाले कुछ कारकों में से अप्रत्याशित मौसम की स्थिति और हर कदम पर बर्फ के फिसलने की संभावना है।
- वे पहले पर्वतारोही जो 8,000 मीटर से अधिक की चोटियों पर चढ़ चुके हैं, दुनिया के तीसरे सबसे ऊंचे पर्वत पर पैर रखने से पहले, दो बार सोचते हैं।
- निम्न ऑक्सीजन स्तर और तीव्र ठंड भी प्रमुख कारक हैं।
- हर साल अधिकतम 20-25 लोग कंचनजंगा पर चढ़ते हैं, इस बार यह 34 लोगों के साथ सबसे अधिक संख्या थी, जो शिखर तक पहुंचने का प्रयास कर रहे थे।
- दूसरी ओर, हर साल 300-350 पर्वतारोही एवरेस्ट पर चढ़ते हैं।

## शेरपा

- **निम्न मृत्यु दर**: अवरोहण के दौरान शेरपाओं के बीच मृत्यु दर कम होने से पता चलता है कि उच्च ऊंचाई के अनुकूल होने में जब समय अधिक लगता है जीवित रहने की संभावना बढ़ सकती है।
- अधिकांश शेरपा पैदा होते हैं और अपना जीवन उच्च ऊंचाई पर जीते हैं और अभियान रोजगार के लिए प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया शायद उन लोगों का चयन करती है जो काम के लिए सबसे अच्छे रूप में अनुकूलित होते हैं और सबसे कुशल होते हैं।
- इसलिए इन निम्न क्षेत्रों पर रहने वालों की उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों से परिचित होने की क्षमता पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

## सुरक्षित वापसी

- 8,000-मीटर से ऊपर प्रति घंटा मस्तिष्क कोशिका खोता है, जिससे अचानक थकान, सिरदर्द, उल्टी और नींद न आना जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।
- पर्वतारोहियों के अनुसार जिन्होंने एवरेस्ट पर चढ़ाई की है, उन्होंने एक सफल अभियान को पूरा करने के लिए अपने शरीर को समझा है ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे समय पर वापस जा सकें।

- जैसा कि बताया गया है, बहुत से लोग शिखर पर पहुंचने के लिए अपनी ऊर्जा का प्रयोग करते हैं और लौटते समय बीमार पड़ जाते हैं, वे थके हुए होते हैं और परिणामस्वरूप अन्य पर्वतारोहियों से पीछे रह जाते हैं।
- अब तक जिन लोगों की मृत्यु हुई है, उनमें से कई में भ्रम, शारीरिक समन्वय की कमी और बेहोशी जैसे लक्षण पैदा हो गए थे, जो उच्च अक्षांशीय मस्तिष्क शोफ (सेरेब्रल एडिमा), मस्तिष्क की सूजन, मस्तिष्क की रक्त वाहिकाओं के रिसाव के परिणामस्वरूप होने वाली सूजन का संकेत देते हैं।
- एक बार जब आप थके हुए होते हैं तो आप धीमे हो जाते हैं और चूंकि ऑक्सीजन की आपूर्ति सीमित होती है, इसलिए जोखिम होता है।
- विशेषज्ञों का कहना है कि कंचनजंघा में संचालन जटिल है और उन गाइडों को ढूंढना मुश्किल हो जाता है जिन्होंने पहले पहाड़ पर चढ़ाई की हुई है और एक बार फिर से उसे दोहराने को तैयार हैं।
- कंचनजंघा एवरेस्ट की तुलना में तीन गुना कठिन है।
- एवरेस्ट कमर्शियल है, बहुत सारे लोग वहां जाते हैं, एवरेस्ट में शेरपा की संख्या अधिक उपलब्ध है।
- वहाँ हेलीकॉप्टर उपलब्ध होते हैं और बचाव भी आसान होता है।
- कंचनजंघा एक लंबा और कठिन पर्वत है।

### मुख्य प्रश्न

- कंचनजंघा पर्वत पर चढ़ाई करना उन लोगों के लिए अभी भी एक चुनौती है, जिन्होंने एवरेस्ट को नापा हुआ है?



(वीडियो देखने के लिए QR कोड को स्कैन करें)

नोट्स

## स्पाइस ऑफ़ दा मंथ

## स्पाइस ऑफ़ दा वीक श्रृंखला के बारे में

- "स्पाइस" श्रृंखला एक ऐसी पहल है जिसका उद्देश्य लोक सेवाओं और राज्य सिविल सेवा परीक्षा के लिए उत्तर और निबंध लेखन में सुधार करना है।
- तैयारी करते समय, उम्मीदवार अधिकतर समय स्टैटिक किताबों और करेंट अफेयर्स से सम्बंधित पत्रिकाओं को पढ़ने और रिवाइज़ करने में बिताते हैं लेकिन वास्तविक परीक्षा परिदृश्य में अपने उत्तरों को कैसे समृद्ध बनाया जाय इस तरीके में चूक जाते हैं।
- उदाहरण: एक अच्छी तरह से लिखे गए और उच्च अंक देने वाले उत्तर में कुछ सहायक उदाहरण या प्रासंगिक आँकड़े / उद्धरण, परिचय देने के लिए एक उचित परिभाषा या निष्कर्ष निकालने के लिए कुछ बड़े विचार शामिल हैं।
- यहां तक कि निबंध लेखन में भी, कई छात्र अच्छे उदाहरण, उद्धरण, आँकड़े इत्यादि का एक समर्पित भंडार तैयार नहीं करते हैं - जबकि ये उनके निबंध को समृद्ध और पठनीय बना सकते हैं।
- इस साप्ताहिक श्रृंखला में, हम ऐसी सामग्री (जिसे 'स्पाइस' कहा जाता है) को एक साथ रखने की कोशिश करते हैं जिसका उपयोग सीधे आप के उत्तरों और निबंध में किया जा सकता है।
- हमारा मानना है कि यदि इस सामग्री का उपयोग बुद्धिमानी से किया जाए तो यह आपके उत्तरों को प्रति प्रश्न कम से कम 1 से 2 अंक अधिक दे सकता है - जो कि टॉपर को बाकी उम्मीदवारों से अलग करने के लिए आवश्यक है।
- आखिर में महत्वपूर्ण है कि हम अपने प्रयास में तब सफल होंगे जब प्रत्येक गंभीर उम्मीदवार अपने दैनिक अध्ययन में 'स्पाइस' को पहचान सकें तथा उत्तर/निबंध में इसका प्रयोग कर अधिकतम अंक अर्जित कर सकें।

डिस्क्लेमर: स्पाइस आपकी मौजूदा तैयारी में एक ऐड-ऑन है। यह सैथेटिक किताबों और / या करेंट अफेयर्स की तैयारी का प्रतिस्थापन नहीं है।

## महीने के महत्वपूर्ण विषय: मई 2019

## सप्ताह की परिभाषाएं

पर्यावरण	सतत विकास	► संयुक्त राष्ट्र के अनुसार (UN के ब्रंटलैंड आयोग ने 1987 में इस शब्द को लोकप्रिय बनाया), इसे इस प्रकार परिभाषित किया गया है: "भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करना।
	जलवायु परिवर्तन	► वैश्विक या क्षेत्रीय जलवायु चलन में एक बदलाव, विशेष रूप से जो 20वीं सदी के मध्य से लेकर अंत तक स्पष्ट हो गया था और जिसे जीवाश्म ईंधन के उपयोग से उत्पन्न वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड के बढ़ते स्तर के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।
	वैश्विक तापमान (ग्लोबल वॉर्मिंग)	► GHG की सांद्रता में वृद्धि के कारण पृथ्वी का औसत वैश्विक तापमान गर्म होता है, जिससे ग्रीनहाउस प्रभाव बढ़ता है। ► पिछले 100 वर्षों के दौरान, वैश्विक औसत तापमान में 0.3-0.60 C की वृद्धि हुई है ► ग्रीनहाउस प्रभाव वायुमंडल में अधिक ऊष्मा ऊर्जा को अवशोषित करने और दीर्घावधि ऊर्जा को फिर से उत्सर्जित करने का कारण बनता है।
	पारिस्थितिकी तंत्र	► पारिस्थितिकी तंत्र जीवित जीवों, उनके भौतिक वातावरण और किसी स्थान की एक विशेष इकाई में उनके सभी अंतर्संबंधों का परिसर है। (ब्रिटानिका)
	जलवायु न्याय	► जलवायु न्याय एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग ग्लोबल वॉर्मिंग को नैतिक और राजनीतिक मुद्दे का रूप देने के लिये किया जाता है, बजाय इसे पूरी तरह से पर्यावरण या प्रकृति में भौतिक रूप में प्रदर्शित करने के।

## इस महीने के उदाहरण

## राज्यवस्था:

चुनाव	सोशल मीडिया का प्रभाव	<p>► ट्विटर इंडिया पर 1 जनवरी से 23 मई के बीच # लोकसभा चुनाव 2019 के लिये 396 मिलियन से अधिक ट्वीट किये गये।</p> <p>सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने कहा कि चुनाव के आसपास 1 जनवरी और 12 मई 2014 के बीच दर्ज 56 मिलियन ट्वीट्स की तुलना में इस बार 600% की वृद्धि थी।</p>
राज्य सरकार	राज्यपाल बनाम CM शासन में सोशल मीडिया का उपयोग	<p>► मद्रास उच्च न्यायालय ने फैसला दिया कि पुडुचेरी के उपराज्यपाल (LG), केंद्र शासित प्रदेश के नित्य प्रतिदिन के प्रशासन के साथ हस्तक्षेप नहीं कर सकते हैं जब वहां एक निर्वाचित सरकार पहले से ही है। अदालत ने कहा कि L-G की तरफ से लगातार हो रहे हस्तक्षेप से एक "समानांतर सरकार" की स्थिति उत्पन्न होगी।</p> <p>► न्यायाधीशों ने सरकारी अधिकारियों के सोशल मीडिया समूहों का हिस्सा होने के कथित अभ्यास पर भी एतराज जताया, जिसके माध्यम से LG उन्हें सार्वजनिक शिकायतों के निवारण के लिए निर्देश जारी कर रहे थे। न्यायाधीशों ने उन्हें याद दिलाया कि यदि प्रशासन से जुड़े मुद्दों की बात आती है तो सरकारी अधिकारी, नियमों के अनुसार, संचार के केवल अधिकृत माध्यमों का उपयोग करने के लिए बाध्य हैं।</p>
न्यायतंत्र	न्यायिक सक्रियता	<p>► नदियों, झीलों, तालाबों और अन्य जल स्रोतों के खराब प्रबंधन के लिए सरकारों को प्रेरित करते हुए, मद्रास उच्च न्यायालय ने मुख्य सचिव के नेतृत्व में एक विशेष विंग के गठन का आदेश दिया है ताकि सभी जल निकायों को बहाल किया जा सके ताकि राज्य बाढ़ मुक्त हो सके और पानी की आवश्यकताओं में पर्याप्तता और आत्मनिर्भरता भी प्राप्त कर सके।</p>
	यौन उत्पीड़न	<p>► न्यायमूर्ति बोबडे समिति ने CJI के खिलाफ SC के एक पूर्व सदस्य द्वारा लगाए गए यौन उत्पीड़न के आरोपों में "कोई यथार्थ नहीं" पाया है। SC द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है कि समिति की रिपोर्ट को गोपनीय रखा जाएगा।</p> <p>► सर्वोच्च न्यायालय ने इंदिरा जयसिंग बनाम सर्वोच्च न्यायालय, भारत के 2003 के अपने कथित फैसले के हवाले से कहा कि इन-हाउस जाँच रिपोर्ट "विचारशील" थी और "किसी अन्य व्यक्ति के लिए खुलासे के उद्देश्य से नहीं थी"।</p> <p>► 2003 का निर्णय, हालांकि, ऐसी स्थिति के विचाराधीन नहीं था, जिसमें CJI स्वयं इस मामले में जांच के अधीन थे।</p> <p>► इसके अलावा, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013 की धारा 13 में यह प्रावधान है कि दोनों पक्षों को रिपोर्ट की एक प्रति प्राप्त करने का अधिकार है।</p>
शासन	आरक्षण	<p>► SC &amp; ST कर्मचारियों को पदोन्नति में आरक्षण देने वाले 2018 कर्नाटक कानून को बरकरार रखने के अपने फैसले में, सर्वोच्च न्यायालय ने निम्नलिखित पर कहा:</p> <p>► औपचारिक बनाम मूलभूत समानता</p> <p>► समानता के वास्तव में औपचारिक या मूलभूत होने के लिए, इस सिद्धांत को समाज में मौजूद असमानताओं को दूर करने के लिये उन्हें पहचानना होगा। आरक्षण इस प्रकार अवसर की समानता के नियम का अपवाद नहीं है। ये बल्कि उन संरचनात्मक स्थितियों के लिए औपचारिक व मूलभूत समानता की सच्ची पूर्ति हैं, जिन परिस्थितियों में लोग पैदा होते हैं।</p> <p>► प्रशासन में दक्षता</p> <p>► न्यायालय ने यह तर्क भी दिया है कि आरक्षण प्रशासन में दक्षता पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा, और इसे "रूढ़िवादी धारणा" करार भी दिया।</p> <p>► यह रूढ़िवादी है, क्योंकि यह सामाजिक पूर्वाग्रह की गहरी जड़ें जमा देता है। संघ या किसी राज्य के मामलों में प्रशासन की दक्षता को एक समावेशी अर्थ में परिभाषित किया जाना चाहिए, जहां समाज के विभिन्न हिस्सों को लोगों का और लोगों के द्वारा शासन की सच्ची आकांक्षा का प्रतिनिधित्व प्राप्त होता है।</p> <p>► योग्यता बनाम दक्षता</p> <p>► एक 'मेधावी' उम्मीदवार केवल एक 'प्रतिभाशाली' या 'सफल' व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह भी होता है, जिसकी नियुक्ति SC और ST के सदस्यों के उत्थान के संवैधानिक लक्ष्यों को पूरा करती है और प्रशासन के विविधात्मक और प्रातिनिधिक रूप को सुनिश्चित करती है।</p>



सूरत अग्नि त्रासदी	<p>► एक अधिकारी ने कहा कि अग्नि सुरक्षा के नियमों का पालन नहीं करने के लिए सूरत में अग्नि त्रासदी से ग्रस्त इमारत को एक नोटिस जारी किया गया था, साथ ही यह भी कहा गया कि अग्निशमन विभाग के अधिकारियों ने नोटिस पर ध्यान नहीं दिया और इमारत को सील भी नहीं किया गया था।</p> <p>► गुजरात में, अधिकारियों ने कोचिंग सेंटर और ट्यूशन क्लास को उस समय तक बंद करने का आदेश देते हुए सार्वजनिक नोटिस जारी किया, जब तक सभी शहरों और जिला मुख्यालयों में अग्नि सुरक्षा तंत्र के उचित ऑडिट नहीं किए जाएंगे।</p> <p>► मुख्यमंत्री ने प्रशासन को, सभी अस्पतालों, स्कूलों, ऊंची इमारतों, सिनेमा हॉल, शॉपिंग मॉल और बाजारों में अग्नि सुरक्षा प्रणालियों का व्यापक ऑडिट करने का निर्देश दिया है।</p>
--------------------	---

## अर्थव्यवस्था

बैंकिंग और वित्त	जोखिम प्रबंधन	<p>► RBI ने 5,000 करोड़ से अधिक के आकार वाले सभी शैडो बैंकों को स्पष्ट रूप से मुख्य जोखिम अधिकारियों (CROs) को उनकी निर्दिष्ट भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के साथ नियुक्त करने के लिए कहा है।</p> <p>► CRO, NBFC के पदानुक्रम में एक वरिष्ठ अधिकारी होगा, जिसे जोखिम प्रबंधन के क्षेत्र में पर्याप्त व्यावसायिक योग्यता / अनुभव प्राप्त होगा।</p>
	बैंकिंग सुधार	<p>► बैंकिंग सुधारों को चार व्यापक क्षेत्रों के समाधान पर कार्य करना चाहिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> <li>1. परियोजनाओं को पुनर्जीवित कर ऋण पुनर्गठन कर सकें, जिनको ऋण के पुनर्गठन के बाद पुनः प्राप्त किया जा सकता है।</li> <li>2. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में शासन और प्रबंधन में सुधार।</li> <li>3. गैर-बैंकों और बाजार में जोखिम हस्तांतरण को प्रोत्साहित कर जोखिम रहित बैंकिंग करना।</li> <li>4. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए, और सामान्यतः अधिक बैंकों के लिए सरकारी आदेशों की संख्या कम करना।</li> </ol>
बाहरी क्षेत्र	भारत और WTO	<p>► विश्व व्यापार संगठन में, भारत ने व्यापार नीतियों का 'निष्पक्ष मूल्यांकन' करने की बात कही।</p> <p>► भारत, विश्व व्यापार संगठन में अन्य विकासशील देशों के समर्थन के साथ किसी देश की सेवा व्यापार नीतियों का आकलन करने की "पक्षपाती" प्रणाली में सुधार करने की कोशिश कर रहा है।</p>
	अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध	<p>► अमेरिका और चीन के बीच व्यापार तनाव बढ़ने से चीन अपने निर्यात को भारत सहित उभरते बाजारों (EM) की तरफ जाने से रोक सकता है।</p> <p>► अतीत में, चीन ने इस तरह की प्रवृत्ति दिखाई है और भारत सहित कई बाजारों में अपने उत्पादों को निम्न दरों पर धकेल दिया है।</p> <p>► यह संभवतः भारतीय बाजारों में मांग-आपूर्ति की गतिशीलता को बाधित कर सकता है, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक सामान, लोहा और इस्पात और जैविक रसायनों जैसे उत्पादों को।</p>
आधारिक संरचना	बिजली और ऊर्जा	<p>► 15 राज्यों में डिस्कॉम के क्राइसिल विश्लेषण के अनुसार, राज्य के स्वामित्व वाली बिजली वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) का सकल बाहरी ऋण इस वित्तीय वर्ष के अंत तक पूर्व-उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना (UDAY) के स्तर को बढ़ाकर 2.6 लाख करोड़ करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जो कुल घाटे का 85% है।</p> <p>► अधिकांश राज्यों में राजकोष सीमित होने के कारण, उनके डिस्कॉम को निरंतर वित्तीय सहायता देना मुश्किल हो सकता है। क्राइसिल के बयान में कहा गया है कि डिस्कॉम को विवेकपूर्ण टैरिफ बढ़त और कुल तकनीकी और वाणिज्यिक (AT&amp;C) घाटे में कमी के जरिए वाणिज्यिक रूप से व्यवहार्य बनना होगा।</p> <p>► सरकार ने उन रिपोर्टों का खंडन किया है जिनमें कहा गया है कि बिजली वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) के ऋण स्तर पूर्व-UDA स्तर तक पहुंच गए हैं।</p>

	जलवायु स्मार्ट फसलें	<p>► ICRISAT ने गर्मी और सूखा बर्दाश्त करने वाले काबुली चने के एक जीन की पहचान की है।</p> <p>► बढ़ते तापमान और जलवायु परिवर्तन के कारण जलवायु में उतार-चढ़ाव बढ़ने के साथ, इस जीन की पहचान से काबुली चने की नई किस्मों को विकसित करने में मदद मिलेगी जो 38 ° C तक तापमान सहन कर सकती हैं।</p> <p>► साथ ही, उपयोगी लक्षणों के साथ अन्य जीन की पहचान उपज बढ़ाने और कीटों व रोगों से बेहतर प्रतिरोध क्षमता प्रदान करने में मदद करेगी।</p>
कृषि	कृषि के लिए प्रौद्योगिकी	<p>► फसल बीमा के दावा संबंधी मामलों में देरी को कम करने और किसानों के लिए लंबित मुआवजे की सटीकता बढ़ाने के लिए, एक पायलट परियोजना, इस गर्मी में पंचायत स्तर पर उपज का अनुमान लगाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग का परीक्षण करेगी।</p> <p>► सैटेलाइट और रिमोट सेंसिंग डेटा, मानव रहित हवाई वाहनों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों का उपयोग, उपज अनुमानों का आकलन करने के लिए किया जाएगा, जिसमें समय-प्रयोग और श्रमसाध्य फसल-कटाई प्रयोगों की आवश्यकता नहीं होगी।</p>
	कृषि पारिस्थितिकी	<p>► आसन्न भूजल संकट को देखते हुए, हरियाणा सरकार ने आगामी मौसम में चावल की बुवाई को न करने का निर्णय लिया है।</p> <p>► किसानों ने सरकार से कहा है कि वह पहले MSP में वैकल्पिक फसलों की खरीद के लिए एक तंत्र पेश करे ताकि किसान हाशिए पर न हों।</p>
उद्योग	मेक इन इंडिया	<p>► जापान के यामाहा कॉर्पोरेशन ने चेन्नई, भारत में संगीत वाद्ययंत्रों के लिए पहला कारखाना खोला, ताकि इसे एक निर्यात केंद्र बनाया जा सके।</p> <p>► शुरुआत में, यह कारखाना घरेलू बाजार की मांगों को पूरा करेगा। बाद में, यह उत्पादित वस्तुओं का 50% निर्यात करने की योजना बना रहा है।</p>

## समाज और मानव विकास

	मानव तस्करी	<p>► चीन में, विदेशी दुल्हनों की मांग बढ़ गई है, एक बच्चे की नीति ने पुरुषों के प्रति देश में महिलाओं के संतुलन को कम कर दिया है। दुल्हनें शुरू में बड़े पैमाने पर वियतनाम, लाओस और उत्तर कोरिया से आ रही थीं। अब पुरुष वर्ग अन्य देशों की ओर बढ़ रहे हैं।</p> <p>► पाकिस्तान से गरीब ईसाई लड़कियों को तस्करी कर चीन ले जाया जा रहा है। एक बार चीन पहुँचने के बाद, लड़कियों की उनकी मर्जी के खिलाफ शादी कर दी जाती है और इस प्रकार वे दूरदराज के क्षेत्रों में स्वयं को अलग-थलग पाती हैं, जहां उनके साथ दुर्व्यवहार होने का खतरा रहता है, संवाद करने में भी असमर्थ होती हैं, ऐसी लड़कियों को एक गिलास पानी के लिए भी अनुवाद ऐप निर्भर होना पड़ रहा है।</p>
समाज	अंतर जातीय विवाह	<p>► अहमदनगर में एक युवा जोड़े को उनके अंतर-जातीय विवाह का विरोध करने वाले रिश्तेदारों ने अगवा कर ज़िंदा जला दिया था, जिस पर शहर आधारित दलित संगठन, ने मांग की है कि राज्य सरकार जिले को "अत्याचार-प्रवण" (atrocities-prone) घोषित करे।</p> <p>► इसने जाति-तनाव को कम करने और अंतर-जातीय विवाह में जोड़ों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए बनाई गई योजना के कार्यान्वयन की भी मांग की है।</p>
	जाति आधारित हिंसा	<p>► भील समुदाय से ताल्लुक रखने वाली पायल तडवी ने कथित तौर पर तीन उच्च जाति के लोगों द्वारा उत्पीड़न किए जाने के बाद आत्मदाह किया।</p> <p>► इससे जातिगत भेदभाव, उत्पीड़न और शैक्षणिक संस्थानों में लोगों के आरक्षण और नौकरियों में आरक्षण को लेकर लोगों में नाराजगी पैदा हो गई है और इस समस्या पर वाद-विवाद आरंभ हो गया है।</p> <p>► यह हाशिए के समुदायों से आने वाले मेडिकल छात्रों द्वारा आत्मदाह की श्रृंखला में नवीनतम मामला है।</p> <p>► 2010 की शुरुआत में, दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में MBBS के दलित छात्र बालमुकुंद भारती को उनके कमरे में लटका पाया गया था।</p> <p>► मार्च 2012 में, AIIMS में एक और MBBS छात्र ने आत्मदाह कर लिया था। अनिल कुमार मीणा एक आदिवासी समुदाय से थे।</p>

	क्षेत्रवाद - असम	<p>► असम में एक प्रभावशाली, शताब्दी पुराने साहित्यिक संगठन (असम साहित्य सभा) ने एक फरमान जारी किया है जिसमें कहा गया है कि जो लोग असमी भाषा या किसी अन्य स्वदेशी भाषा को नहीं जानते हैं उन्हें राज्य में काम करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।</p>
समाज और महिलाएं	महिलाओं को रूढ़िबद्ध करती प्रौद्योगिकी	<p>► अधिकांश AI, आवाज सहायकों, के रूप में युवा महिलाओं काम पर रखा जाता है और उनकी आवाज का ज्यादातर उपयोग, सवालों का जवाब देने या मौसम की जांच करने, संगीत बजाने या अनुस्मारक निर्धारित करने जैसे कार्यों में किया जाता है।</p> <p>► संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, यह एक संकेत है कि महिलाएं बिना किसी एजेंसी की सहायता के, विनम्रता के साथ, सहायता मांगने वालों को प्रसन्नता देने के लिए उत्सुक हैं और हमेशा अपने मालिक की मदद करने के लिए तत्पर रहती हैं, इस धारणा से हानिकारक रूढ़ियां मज़बूत हो रही हैं।</p> <p>► रिपोर्ट में आह्वान किया गया है कि कंपनियां, महिलाओं को स्वाभाविक रूप से डिजिटल सहायक बनाने से बचें और ध्वनि को "लिंगविहीन" बनाने के तरीकों का पता लगाने की दिशा में काम करें।</p>
	प्रौद्योगिकी में महिलाएं	<p>► यूनेस्को के अनुसार, महिलाओं का STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) क्षेत्रों के अध्ययन और करियर में काफी कम प्रतिनिधित्व है।</p> <p>► ऐसा इसलिए है क्योंकि अधिकांश युवा महिलाएं खुद को STEM के सापेक्ष नहीं देखती हैं और मानती हैं कि ये विषय उनके रचनात्मक होने और दुनिया में अपना प्रभाव बनाने की इच्छा की पूर्ति नहीं कर सकते हैं।</p> <p>► प्रभाव:</p> <p>► विशेषज्ञ इसे एक हानिकारक प्रवृत्ति कहते हैं क्योंकि यह प्रौद्योगिकी की दुनिया में लिंग अंतर को और अधिक बढ़ा देगा।</p> <p>► इसके अलावा, STEM क्षेत्रों से दूर हटने पर, महिलाएं केवल अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकियों और नवाचारों में योगदान देने से चूक जाएंगी।</p> <p>► UNESCO के अनुसार, विज्ञान अनुसंधान और विकास में 29% महिलाएं हैं, दक्षिण और पश्चिम एशिया में निम्न स्तर 19% और मध्य एशिया में सबसे उच्च 48% हैं।</p>
	व्यवसायों में लिंग विविधता	<p>► ILO की रिपोर्ट में कहा गया है कि लिंग की विविधता में सुधार करने वाली कंपनियां - विशेष रूप से जो शीर्ष पर हैं - बेहतर प्रदर्शन करती हैं और उच्च मुनाफ़ा कमाती हैं, जबकि महिलाओं का रोज़गार बढ़ाने वाले देशों में बेहतर आर्थिक विकास होता है।</p> <p>► रिपोर्ट के अनुसार, "लिंग विविधता एक स्मार्ट व्यवसाय रणनीति है," जो 70 देशों में लगभग 13,000 कंपनियों के सर्वेक्षण पर आधारित है।</p>
मानव विकास	ट्रांस वसा	<p>► WHO ने 2023 तक औद्योगिक रूप से उत्पादित वैश्विक खाद्य आपूर्ति से ट्रांस वसा (trans fat) को खत्म करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय खाद्य और पेय गठबंधन (IFBA) के साथ भागीदारी की है।</p>
	स्वास्थ्य शासन	<p>► भारत में, दिमागी तौर पर मृत घोषित होने को, मानव अंग का प्रत्यारोपण अधिनियम 1994 में केवल अंग दान के संबंध में परिभाषित किया गया है।</p> <p>► अधिनियम में यह निर्दिष्ट नहीं करता है कि क्या उस व्यक्ति से ICU देखभाल वापस ली जा सकती है यदि मरीज़ को दिमागी तौर पर मृत घोषित कर दिया गया है। हालांकि इसमें अंग दान भी प्रस्तावित नहीं किया गया है।</p> <p>► केरल राज्य, सभी चिकित्सा सुविधाओं की गहन देखभाल इकाइयों (ICU) में मस्तिष्क-मृत्यु के अनिवार्य प्रमाणीकरण की ओर बढ़ रहा है, फिर भले ही अंग दान ही क्यों न हो।</p> <p>► यह मस्तिष्क-मृत प्रमाणीकरण और अंग दान को पृथक करेगा, और अधिक स्पष्टता लाएगा कि डॉक्टरों को ICU में एक मरीज़ की देखभाल के लिए कैसे आगे बढ़ना चाहिए जिसे दिमागी तौर पर मृत घोषित किया गया है, लेकिन साथ ही जिनके परिवार ने अंग दान के लिए सहमति नहीं दी है।</p>
	किशोर गर्भावस्था	<p>► भारत में डेटा का विश्लेषण करने वाले द लैसेट चाइल्ड एंड अडोलेसेंट हेल्थ में छपे एक अध्ययन के अनुसार, किशोरावस्था में गर्भधारण, शिशुओं के पोषण में कमी में योगदान देता है।</p> <p>► यह विश्लेषण, नीतियों और कार्यक्रमों को, शादी में देरी करने की सलाह देता है, खासकर उन जिलों में जहां बाल विवाह का प्रचलन अधिक है।</p>

कैंसर	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ कैंसर से निपटने की दिशा में मरीज़ की देखभाल के लिए एक-समान मानकों को स्थापित करने के इस तरह के पहले प्रयास में, राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (NHA) और नेशनल कैंसर ग्रिड (NCG) ने, आयुष्मान भारत- पीएम जन आरोग्य योजना (PMJAY) के तहत एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।</li> <li>▶ जनवरी 2019 में PM JAY के बेहतर कार्यान्वयन के लिए सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेंसी को "राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण" के रूप में पुनर्गठित किया था।</li> <li>▶ नेशनल कैंसर ग्रिड, भारत भर में प्रमुख कैंसर केंद्रों, अनुसंधान संस्थानों, रोगी समूहों और धर्मार्थ संस्थानों का एक नेटवर्क है।</li> </ul>
-------	---

## अंतरराष्ट्रीय संबंध, प्रतिरक्षा और सुरक्षा

सुरक्षा खतरे	साइबर सुरक्षा	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ भारत इस महीने के अंत तक अपनी साइबर सुरक्षा एजेंसी शुरू करने के लिए तत्पर है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में होगा और यह राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा सलाहकार के साथ मिलकर काम करेगी। ऐसी खबरें थीं कि पाकिस्तान के हैकरों ने पुलवामा हमले के ठीक बाद कम-से-कम 90 भारतीय सरकारी वेबसाइटों और महत्वपूर्ण प्रणालियों को हैक करने की कोशिश की।</li> </ul>
	सोशल मीडिया और द्वेषयुक्त भाषण	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ क्राइस्टचर्च में भयावह हमलों के दो महीने बाद, फेसबुक, गूगल, अमेज़ॉन, माइक्रोसॉफ्ट और ट्विटर अपने प्लेटफार्मों पर हिंसक सामग्री को संबोधित करने के लिए एक साथ आए हैं।</li> <li>▶ कंपनियों ने क्राइस्टचर्च कॉल टू एक्शन पर हस्ताक्षर किए हैं, जो वैश्विक सरकारों और इन तकनीकी निगमों द्वारा घृणास्पद और द्वेषयुक्त भाषणों को रोकने के लिए एक प्रतिबद्धता है।</li> <li>▶ न्यूजीलैंड सरकार द्वारा प्रस्तावित, क्राइस्टचर्च कॉल, इस विश्वास पर टिका है कि "स्वतंत्र, मुक्त और सुरक्षित इंटरनेट, समाज को असाधारण लाभ प्रदान करता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए सम्मान, स्वाभाविक है। हालांकि, किसी को भी आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी सामग्री तैयार करने या साझा करने का अधिकार नहीं है।"</li> </ul>
भारत और पड़ोसी	चीन	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ बेल्ट एंड रोड फ़ोरम (BRF) को छोड़ने के भारत के फैसले से, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के तहत की गई परियोजनाओं की सूची में से, बांग्लादेश-चीन-भारत-म्यांमार (BCIM) आर्थिक गलियारा बाहर किया जा सकता है।</li> <li>▶ जबकि, दक्षिण एशिया में तीन प्रमुख उपक्रमों की योजना है-</li> <li>▶ चीन-म्यांमार आर्थिक गलियारा (CMEC)</li> <li>▶ नेपाल-चीन ट्रांस-हिमालयी बहु-आयामी कनेक्टिविटी नेटवर्क, जिसमें नेपाल-चीन क्रॉस-बॉर्डर रेलवे शामिल है;</li> <li>▶ चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC)</li> </ul>
	एक्ट ईस्ट	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ श्रीलंका, जापान और भारत ने संयुक्त रूप से कोलंबो बंदरगाह पर ईस्ट कंटेनर टर्मिनल (ECT) विकसित करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। ECT, चीन समर्थित अंतरराष्ट्रीय वित्तीय शहर से लगभग 3 किमी दूर स्थित है, जिसे "बंदरगाह शहर" ("port city") के रूप में जाना जाता है।</li> </ul>
	बांग्लादेश	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ राज्य प्रसारक प्रसार भारती, बांग्लादेश के संस्थापक पिता शेख मुजीबुर रहमान के जीवन पर श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित एक फीचर फिल्म का सह-निर्माण करेगा, और बांग्लादेश स्वतंत्रता युद्ध पर एक वृत्तचित्र भी बनाएगा।</li> <li>▶ यह पूर्वोत्तर में नागरिकों के राष्ट्रीय रजिस्टर (जो बांग्लादेशी प्रवासियों का विघटन करना चाहता है) पर उग्र बहस को लेकर बनाई जा रही है।</li> </ul>
प्रतिरक्षा	विदेशी आयात पर निर्भरता	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ भारतीय सेना, इज़राइली स्पाइक-LR एंटी-टैंक मिसाइलों और रूसी इगला-S वेरी शॉर्ट रेंज एयर डिफेंस सिस्टम (VSHORAD) को आपातकालीन खरीद के तहत नई वित्तीय शक्तियों के माध्यम से खरीदने की प्रक्रिया में है।</li> </ul>



वैश्विक राजनीति	<p>▶ संयुक्त राष्ट्र व्यापक योजना (JCPOA) के रूप में ज्ञात 2015 के बहुपक्षीय सौदे से हटने के संयुक्त राज्य अमेरिका के फैसले के जवाब में ईरान परमाणु समझौते के लिए अपनी कुछ प्रतिबद्धताओं को कम करेगा।</p> <p>▶ ईरान की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने कहा कि अब वह खुद को समृद्ध यूरेनियम और भारी पानी के स्टॉक पर सहमत प्रतिबंधों से बाध्य नहीं मानता है।</p> <p>▶ यह उन पांच देशों को संप्रेषित किया जाएगा जो अभी भी सौदे के पक्ष में हैं - ब्रिटेन, चीन, फ्रांस, जर्मनी और रूस।</p>
-----------------	---

## भूगोल और पर्यावरण

जैवविविधता	सुरक्षा और संरक्षण	<p>▶ आंध्र प्रदेश के मदनपल्ले विभाग और कर्नाटक से सटे होर्स्ले हिल्स के आसपास के जंगलों में बारिश और पानी के स्रोतों में तेजी से कमी आने से वन्यजीव प्रभावित हुए हैं।</p> <p>▶ जंगली जानवरों को चिलचिलाती गर्मी से बचाने और उनकी प्यास बुझाने के लिए, चित्तूर पश्चिम वन प्रभाग ने जंगलों में पीने योग्य पानी के गड्ढे और नमकीन पानी के निकायों के लिए युद्ध स्तर पर कदम आगे बढ़ाए हैं।</p> <p>▶ हॉर्सले हिल्स में जंगली सूअर, खरगोश, भालू, जंगली कुत्ते, तेंदुए, मोर और विभिन्न प्रकार के पक्षियों और सरीसृप प्रजातियों के अलावा, सांभर और काले-हिरन सहित मृग प्रजातियों की एक समृद्ध उपस्थिति है।</p>
	कृषि जैव विविधता	<p>▶ एक स्थानीय आम की किस्म जिसे ईशाद कहा जाता है, पर अपनी ही भूमि, उत्तरा कन्नड़ जिले के अंकोला में दुर्लभ होने का खतरा मंडरा रहा है। इसका कारण संकर किस्मों से प्रतिस्पर्धा है। इस आम का गूदा मूल्यवर्धित उत्पादों को बनाने के लिए एक सदी से भी अधिक समय से उपयोग किया जा रहा है।</p>
	सुरक्षा और संरक्षण	<p>▶ अरुणाचल प्रदेश के पक्के टाङ्गर रिजर्व में किए गए अध्ययन में पाया गया है कि हॉर्नबिल, बीज फैलाने वाले बड़े आकार के शीर्ष संवाहकों में से एक हैं।</p> <p>▶ यह भी दुखद है कि उन्हें खतरा भी सबसे ज्यादा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनका शिकार मांस के लिये किया जाता है और आदिवासी समुदाय उनके पंखों का उपयोग सिर पर पहने जाने वाले कपड़ों के लिए करते हैं।</p>
	खतरे	<p>▶ अरुणाचल प्रदेश के पक्के टाङ्गर रिजर्व में किए गए अध्ययन में पाया गया है कि हॉर्नबिल, बीज फैलाने वाले बड़े आकार के शीर्ष संवाहकों में से एक हैं।</p> <p>▶ यह भी दुखद है कि उन्हें खतरा भी सबसे ज्यादा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनका शिकार मांस के लिये किया जाता है और आदिवासी समुदाय उनके पंखों का उपयोग सिर पर पहने जाने वाले कपड़ों के लिए करते हैं।</p>
	संरक्षण और पुनरुद्धार	<p>▶ पहली बार, शोधकर्ताओं ने सफेद और भूरे बालोंवाली विशाल गिलहरी के घोंसले देखे हैं, जो एक लुप्तप्राय प्रजाति है, और जो पूर्वी घाट में गिंगी के पास पक्कमलाई रिजर्व फॉरेस्ट में WPA 1972 की अनुसूची -1 के तहत सूचीबद्ध है। यह विशाल गिलहरी आमतौर पर पश्चिमी घाट में घोंसला बनाने के लिए जानी जाती है।</p>
पर्यावरण	तटीय विनियमन	<p>▶ सर्वोच्च न्यायालय ने चेतावनी दी है कि प्राकृतिक जल प्रवाह वाले संवेदनशील क्षेत्रों के पर्यावरण में अनियंत्रित निर्माण गतिविधियों का विनाशकारी प्रभाव पड़ता है और प्राकृतिक आपदाएँ होती हैं जो तमिलनाडु, केरल और उत्तराखंड में हाल ही में आई बाढ़ के रूप में देखी गई थीं।</p> <p>▶ यह टिप्पणियाँ, केरल में अधिकारियों को एक महीने के अंदर मारडु पंचायत में पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में स्थित कुछ अपार्टमेंट ब्लॉकों को ध्वस्त करने के लिए दिशा-निर्देश के तहत, की गई थीं।</p> <p>▶ इसमें कहा गया है कि जिस क्षेत्र में निर्माण किया गया था वह तटीय प्रभावित जल निकायों के ज्वारीय प्रभावित क्षेत्र का हिस्सा था और तटीय विनियमन क्षेत्र अधिसूचना के अधीन कड़े रूप से प्रतिबंधित था।</p>

	प्लास्टिक प्रदूषण विनियमन	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों में अपने इलेक्ट्रॉनिक और प्लास्टिक कचरे को फेंकने से रोकने के लिए भारत द्वारा पेश किया गया एक प्रस्ताव, जिनेवा के बेसल कन्वेंशन की हाल ही में संपन्न बैठक में विफल हुआ।</li> <li>▶ प्लास्टिक कचरे से होने वाला प्रदूषण महामारी के स्तर तक पहुंच गया है, अनुमानित 100 मिलियन टन प्लास्टिक अब महासागरों में पहुंच गया है और 80% -90% प्लास्टिक कचरा भूमि आधारित स्रोतों से आता है।</li> <li>▶ भारत के कानून वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक और प्लास्टिक कचरे को देश में आयात करने की अनुमति नहीं देते हैं। SEZ में केवल प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक कचरे का पुनर्चक्रण करने वालों को ही कचरा आयात करने की अनुमति दी गई थी। हालांकि, उन्हें इस साल 31 अगस्त के बाद ऐसा करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।</li> <li>▶ इन प्रतिबंधों के बावजूद, देशों ने विभिन्न प्रकार के प्लास्टिक और ई-कचरे को भारतीय बंदरगाहों पर भेजना जारी रखा।</li> </ul>
	उत्सर्जन में प्रौद्योगिकी का योगदान	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ प्रौद्योगिकी को अक्सर दुनिया की पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के रूप में देखा जाता है, लेकिन यह समस्या का भी हिस्सा है। 1MB ई-मेल भेजना CO2 उत्सर्जन के 20 ग्राम के बराबर होता है।</li> <li>▶ फिर दुनिया भर में डेटा की विशाल मात्रा को नष्ट करने वाले सर्वर फ़ार्म भी हैं, जिन्हें चलाने और ऊर्जा देने के लिये एयर कंडीशनिंग की ज़रूरत पड़ती है और जिसके लिये भारी मात्रा में बिजली की आवश्यकता होती है जो उपकरण को बहुत अधिक गर्म होने से बचाती है।</li> <li>▶ फ्रांसीसी थिंक-टैंक शिफ्ट परियोजना ने हालिया रिपोर्ट में कहा कि "मौजूदा वैश्विक ऊर्जा मिश्रण के तहत, ICT से GHG उत्सर्जन की हिस्सेदारी 2013 में 2.5% से बढ़कर 2020 में 4% हो जाएगी।"</li> <li>▶ यह इस क्षेत्र को, नागरिक उड्डयन (2018 में उत्सर्जन का 2% हिस्सा) क्षेत्र और ऑटोमोबाइल (8%) तक पहुंच बनाने की तुलना में, इस क्षेत्र को अधिक कार्बन-सघन बनाता है और ।</li> </ul>
	CFC 11	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ प्रतिबंधित रासायनिक CFC-11 के उत्सर्जन का पता पूर्वी चीन से लगाया गया है। शोधकर्ताओं के एक अंतरराष्ट्रीय दल ने कहा कि ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाली गैस का उत्सर्जन पूर्वी चीन से मुख्य रूप से दो भारी औद्योगिक प्रांतों से हो रहा है।</li> </ul>
आपदा प्रबंधन	वृक्षारोपण	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ ओडिशा सरकार ने तटीय क्षेत्र में चक्रवात फानी के कारण लुप्त हुई हरियाली को बहाल करने के लिए 200 करोड़ रुपये की पंचवर्षीय योजना शुरू की है।</li> <li>▶ पौधे प्रेमियों ने भुवनेश्वर शहर प्रशासन से देशी प्रजातियों के रोपण का आग्रह किया है जो भविष्य में मजबूत चक्रवाती हवाओं का सामना कर सकेंगे।</li> <li>▶ करंज, छतियाना, नीम, बहड़ा, जामुन, आम और अर्जुन जैसे देशी प्रजातियाँ हवा की तेज़ गति के समक्ष स्थिर खड़ी रहें।</li> <li>▶ हालांकि इन पेड़ों ने अपनी शाखाओं का 50% हिस्सा खो दिया। स्पष्ट है कि यदि भविष्य में वृक्षारोपण किया जाए तो इन प्रजातियों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।</li> </ul>
वैश्विक शिपिंग मार्ग	आर्कटिक नौ-परिवहन	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ रूस ने आर्कटिक की वाणिज्यिक क्षमता में सुधार करने के लिए जहाजों के अपने बेड़े को नवीनीकृत करने और विस्तार करने के लिए एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम का हिस्सा परमाणु-संचालित आइसब्रेकर प्रक्षेपित किया है।</li> <li>▶ उस तिकड़ी में से एक जहाज को, यूराल नामक जहाज की उपाधि दी गई है, जो पूरा होने पर दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली आइसब्रेकर होगा।</li> <li>▶ गर्म जलवायु चक्रों के बीच, रूस नए बुनियादी ढांचे का निर्माण कर रहा है और अपने बंदरगाहों पर नज़र रख रहा है क्योंकि यह उत्तरी समुद्री मार्ग (NSR) को अधिक यातायात के लिये तैयार कर रहा है जिसे उसने साल भर नौवहन करने योग्य परिकल्पना की है।</li> </ul>
स्वच्छ ऊर्जा	किशोर गर्भावस्था	<ul style="list-style-type: none"> <li>▶ 24 मई को, दुर्जय कार्यक्षेत्र में कुशल भारतीय वायु सेना (IAF) के, रूसी निर्मित AN-32 विमान को औपचारिक रूप से बेड़े में प्रमाणित किया गया था, जिसमें मिश्रित जैव ईंधन के 10% तक मिश्रित ईंधन शामिल था।</li> </ul>

## विज्ञान और प्रौद्योगिकी

प्रगति	उत्तम चालकता (सुपर कंडक्टर)	<p>► किसी सामग्री को एक सुपरकंडक्टर तब कहा जाता है जब यह इलेक्ट्रॉन के प्रवाह में प्रतिरोध के बिना बिजली का संचालन करता है। सुपरकंडक्टर बहुत अधिक दक्षता वाले उपकरणों का निर्माण करने में मदद करेंगे, जिससे ऊर्जा में बड़ी बचत होगी।</p> <p>► अब तक, वैज्ञानिक केवल शून्य डिग्री सेल्सियस से काफी नीचे के तापमान पर ही सामग्री को अतिचालक बनाने में सक्षम रहे हैं जिससे इसकी व्यावहारिक उपयोगिता बहुत मुश्किल बनी हुई है।</p> <p>► भौतिकी में, लगभग एक सदी तक परिवेश के तापमान पर अतिचालकता को हासिल करना बहुत कठिन रहा है और IISc, बेंगलुरु की एक टीम ने पुष्टि की है कि जिस सामग्री का उन्होंने परीक्षण किया है वह परिवेश के तापमान और दबाव में अतिचालकता के प्रमुख गुणों को प्रदर्शित करती है।</p>
	प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण	<p>► IIT बॉम्बे के शोधकर्ताओं ने देश का पहला स्वदेशी रूप से अभिकल्पित और निर्मित माइक्रोप्रोसेसर - AJIT विकसित किया है।</p> <p>► यह नवोन्मेष न केवल देश के आयात को कम कर सकता है, बल्कि भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स में आत्मनिर्भर भी बना सकता है।</p>
अंतरिक्ष	NASA मिशन	<p>► नासा 2024 तक चंद्रमा पर पहली महिला भेजने की योजना बना रहा है। इस कार्यक्रम का नाम "आर्टेमिस" रखा गया है जो ग्रीक में चंद्रमा की देवी और अपोलो की जुड़वां बहन है।</p>
	नई शुरुआत	<p>► बुधवार को किये गये एक लॉन्च में, ISRO के एक PSLV रॉकेट ने RISAT-2B को पृथ्वी से 556 किमी ऊपर कक्षा में तैनात किया है जो X6-बैंड माइक्रोवेव पृथ्वी अवलोकन उपग्रह है।</p> <p>► उपग्रह से मिलने वाला डेटा सशस्त्र बलों, कृषि पूर्वानुमान और आपदा राहत एजेंसियों के लिए महत्वपूर्ण होगा।</p> <p>► इसरो ने कहा कि नया उपग्रह "कृषि, वानिकी और आपदा प्रबंधन में भारत के सारे मौसमों में [अंतरिक्ष-आधारित] क्षमताओं को बढ़ाएगा।"</p>
चौथा IR	ब्लॉकचेन	<p>► हैदराबाद को दुनिया के शीर्ष 10 ब्लॉकचेन शहरों का रूप देने के लिये, तेलंगाना राज्य सरकार ने अपनी मसौदा ब्लॉकचेन नीति जारी की है।</p> <p>► इसने भारत के पहले ब्लॉकचेन जिले की अवधारणा की है जो हैदराबाद के अंदर एक भौतिक क्षेत्र होगा जो सभी प्रमुख ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी कंपनियों को शामिल करेगा और अनुसंधान, नमोन्मेष और उद्योग सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक विशाल इनक्यूबेटर और एक विश्व स्तरीय सुविधा प्रदान करेगा।</p> <p>► 2016 की शुरुआत में भी, तेलंगाना सरकार ने तेलंगाना में IoT आधारित उत्पाद विकास कंपनियों और अन्य नमोन्मेष को प्रोत्साहित करने के लिए विशिष्ट इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) और स्मार्ट प्रौद्योगिकी की नीति जारी की थी।</p>

## नीति शास्त्र

मूल्य	साहस, सक्रियता, सहानुभूति	<p>► श्री अल्फ्रेड ब्राउनेल को लाइबेरियाई गांव में एक ताड़ के तेल की कंपनी द्वारा कथित दुर्व्यवहार को उजागर करने और इन्हें लगभग 50 वर्ग किमी जंगल को, ताड़ के पेड़ों वाले क्षेत्र में परिवर्तित होने से रोकने में मदद करने के लिए गोल्डमैन पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह क्षेत्र हाथियों, बौने गैंडों और चिंपांज़ियों का घर है।</p>
	दृढ़ता इच्छा शक्ति	<p>► बछेन्द्री पाल सभी प्रतिकूलताओं को झेलते हुए 23 मई, 1984 को 8,848 मीटर ऊंचे माउंट एवरेस्ट की चोटी पर तिरंगा फहराने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।</p> <p>► 2019 में, वह देश के तीसरे सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार, पद्म भूषण की प्राप्तकर्ता भी हैं।</p>
	निस्सवार्थता त्याग सक्रियतावाद देश प्रेम	<p>► हरिद्वार में एक 27 वर्षीय युवा स्वामी आत्मबोधानंद ने गंगा को पोषित करने वाली प्रमुख नदियों पर रेत खनन और आगामी बांधों के विरोध में अपना 194 दिन का उपवास तोड़ दिया है। उन्होंने 86 वर्षीय G D अग्रवाल, पूर्व प्रोफेसर और उपदेशक के, 111 दिन के उपवास के बाद, जिनकी 11 अक्टूबर को दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई थी, के बाद उपवास शुरू किया था।</p>

## डेटा

राज्यव्यवस्था	राजनीति का अपराधीकरण	<p>► 43% नव-निर्वाचित सांसदों पर हत्या और बलात्कार सहित आपराधिक आरोप हैं।</p>
	चुनाव	<p>► मतदाता मतदान - EC के अनुसार, 2014 में 66.40 प्रतिशत के विपरीत 2019 के चुनावों में मतदाताओं की संख्या 67.11 प्रतिशत के साथ अब तक का सर्वाधिक रही है।</p> <p>► NOTA - NOTA वोट पिछली बार से लगभग अपरिवर्तित रहे हैं। 2019 में, लगभग 1.04% मतदाताओं ने महसूस किया कि कोई भी उम्मीदवार उनके वोट के योग्य नहीं था। 2014 में, इन मतदाताओं की संख्या लगभग 1.08% थी।</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• NOTA का विकल्प भारत में पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज बनाम भारत सरकार के फैसले में 2013 के सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश के बाद पेश किया गया था।</li> </ul>
	चुनाव में महिलाओं की जीत	<p>► महिला - 17 वीं लोकसभा में 78 महिला सांसद दिखेंगी जो अब तक की अधिकतम होंगी (16वीं लोकसभा में 66 थीं)।</p> <p>► चुनी गयी 78 महिला सांसद कुल 716 महिला उम्मीदवारों में से थीं जिन्होंने चुनाव लड़ा, यानि इनकी सफलता दर 10.9% रही। यह पुरुषों की 6.4% सफलता दर से बहुत अधिक है।</p> <p>► महिला उम्मीदवारों द्वारा दिखाई गई उच्च सफलता दर पिछले रिकॉर्ड के अनुरूप है।</p>
समाज	महिलाएं	<p>► WHO द्वारा प्रकाशित वैश्विक अनुमान बताते हैं कि दुनिया भर में लगभग हर 3 में से 1 (35%) महिला ने अपने जीवनकाल में साथी द्वारा शारीरिक या यौन हिंसा या गैर-साथी यौन हिंसा का अनुभव किया है।</p> <p>► ILO ने हाल ही में अपनी दूसरी वैश्विक रिपोर्ट जारी की है, जिसका शीर्षक था वीमेन इन बिजनेस एंड मैनेजमेंट: द बिजनेस केस फॉर चेंज।</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• लिंग विविधता के लाभों को पुनः प्राप्त करने के लिए उद्यमों द्वारा 30 प्रतिशत महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान आवश्यक है।</li> <li>• सर्वेक्षण के अधीन उद्यमों में से लगभग आधे उद्यमों ने महिलाओं के प्रवेश स्तर पर प्रबंधन पदों में 30 प्रतिशत से कम हिस्सेदारी की सूचना दी।</li> <li>• 60 फीसदी कंपनियों में, 30 फीसदी से कम वरिष्ठ प्रबंधक और शीर्ष अधिकारी महिलाएं हैं।</li> </ul>
विकास	स्वास्थ्य	<p>► दवा-प्रतिरोधी रोग 2050 तक हर साल 10 मिलियन लोगों की मौत का कारण बन सकते हैं, रोगाणुरोधी प्रतिरोध नामक एक रिपोर्ट में संयुक्त राष्ट्र के तदर्थ अंतर-समन्वय समूह ने ऐसी चेतावनी दी है।</p> <p>► इसमें कहा गया है कि 2030 तक, रोगाणुरोधी प्रतिरोध 24 मिलियन लोगों को अत्यधिक गरीबी में धकेल सकता है।</p>
पर्यावरण	NCAP के लक्ष्य	<p>► केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) को लागू करने के लिए एक समिति का गठन किया है, जिसका उद्देश्य 2024 तक कम से कम 102 शहरों में 20% -30% तक PM प्रदूषण को कम करना है।</p> <p>► जनवरी 2019 में अनावरित NCAP, वायु प्रदूषण से निपटने के लिए राज्यों और केंद्र को एक रूपरेखा प्रदान करने के लिए एक योजना के रूप में परिकल्पित किया गया है।</p>
	समुद्र तल की वृद्धि	<p>► 2013 में, IPCC ने अनुमान लगाया था कि दुनिया भर में समुद्र का स्तर 2100 तक 52 सेमी से 98 सेमी तक बढ़ जाएगा। हालांकि, 22 शोधकर्ताओं के एक समूह के एक नए अध्ययन में कहा है कि वास्तविक स्तर 2 मीटर से ऊपर जा सकता है, अगर वर्तमान तरह से ही उत्सर्जन में वृद्धि जारी रहती है, तो - ये वो परिणाम जिसे उन्होंने "संभाव्य" कहा है।</p> <p>► यदि ऐसा हुआ तो, 1.8 मिलियन वर्ग किलोमीटर भूमि का नुकसान होगा, जिसमें खाद्य उत्पादन के महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं, और 187 मिलियन लोगों को विस्थापित करना पड़ सकता है।</p>
	जैवविविधता	<p>► जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के साथ जुड़कर आर्थिक विकास की अनियंत्रित होड़ ने लगभग एक मिलियन प्रजातियों को विलुप्तप्राय की सूची में डाल दिया है, वैज्ञानिकों ने संयुक्त राष्ट्र की एक एजेंसी के जरिए आधुनिक सभ्यता द्वारा प्राकृतिक दुनिया को हुए नुकसान पर एक ऐतिहासिक रिपोर्ट में ऐसा कहा है। मुख्य संदेश: हमेशा की तरह के व्यवसाय को समाप्त होना होगा।</p>



अर्थव्यवस्था	तेल आयात	<p>► सऊदी अरब पारंपरिक रूप से भारत का शीर्ष तेल स्रोत रहा है, लेकिन यह पहली बार था कि 2017-18 के वित्तीय वर्ष में इसकी जगह ईराक ने ली।</p> <p>► ईराक ने लगातार दूसरे वर्ष, भारत के शीर्ष कच्चे तेल आपूर्तिकर्ता के रूप में, 2018-19 में देश की 1/5वीं तेल आवश्यकताओं को पूरा किया है।</p>
	राष्ट्रीय आय और बेरोजगारी	<p>► जनवरी-मार्च 2019 की तिमाही में भारत की GDP 5.8% पर बढ़ी, जो पूरे साल की वृद्धि को पिछले पांच सालों के निम्नस्तर 6.8% तक ले गई।</p> <p>► मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल के पहले दिन जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2017-18 में बेरोजगारी दर 45 साल के उच्च स्तर तक बढ़कर 6.1% पर पहुंच गई।</p>

## बड़े विचार

राज्यवस्था	तकनीकी राष्ट्रवाद	<p>► पिछले हफ्ते, ट्रम्प प्रशासन ने अमेरिकी कंपनियों को विदेशी-निर्मित उन उपकरणों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था जो "राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकते थे।" कई बड़ी कंपनियों ने हुवाएई के साथ काम करना बंद कर दिया है।</p> <p>► तकनीकी-राष्ट्रवाद:</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• प्रतिबंधों का एक प्रभाव ऐसा भी देखा गया है कि कुछ चीनी उपभोक्ताओं के बीच राष्ट्रवादी भावना बढ़ी है: हाल के महीनों में आईफोन की बिक्री में गिरावट आई है, जबकि हुवाएई के उत्पादों में तेजी देखी गई है।</li> </ul> <p>► तकनीक की विफलता:</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• वैश्विक नमोन्मेष के लिए इसके अप्रत्याशित परिणाम भी हो सकते हैं। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि डिजिटल कंपनियां अब आगे बढ़ने के बारे में नहीं सोच सकती हैं। हुवाएई का कहना है कि वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स आपूर्ति श्रृंखला में विश्वास को मिटाकर, ट्रम्प के कार्यों ने तेजी से विभाजित तकनीकी दुनिया का निर्माण किया है।</li> </ul>
अर्थव्यवस्था	पलायन (प्राइवेट प्लेन ट्रेन)	<p>► अफ्रीका-एशिया बैंक और न्यू वर्ल्ड वेल्थ की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2018 में लगभग 5,000 उच्च संपत्ति वाले व्यक्तियों या कुल गणना के 2% लोगों ने विदेशों में स्थानान्तरण किया है। यह केवल चीन और रूस के बाद सभी देशों में तीसरा सबसे अधिक बहिर्वाह है।</p> <p>► प्रवासन के कारण कई हैं, जीवन की उच्च गुणवत्ता और बेहतर शिक्षा के अवसरों से लेकर काले धन पर सरकार की रोक तक।</p> <p>► लेकिन यह पलायन, आर्थिक दृष्टिकोण से चिंताजनक नहीं है क्योंकि भारत जितने धनाढ्य खो रहा है उनकी तुलना में कहीं अधिक नए करोड़पति तैयार कर रहा है।</p>

## विचार

नेतृत्व	<ul style="list-style-type: none"> <li>► "कुछ पागल लोग, जो यह सोचते हैं कि वे दुनिया को बदल सकते हैं, आमतौर पर बदल देते हैं।" - स्टीव जॉब्स</li> <li>► राजनेता वह है जो सिद्धांतों पर से नज़र खोए बिना परिस्थितियों से निर्देशित होकर अदृष्ट पराक्रम का प्रदर्शन कर सकता है। - एडमंड बर्क</li> <li>► नेता बनने से पहले, स्वयं का विकास ही सफलता है। जब आप नेता बन जाएंगे, आपके लिए सफलता अन्यो के विकास में सहायता करना होगा। - जैक वेल्च, GE के CEO</li> <li>► प्रबंधन का मतलब लोगों को, उन चीजों को करने के लिए राजी करना है जो वे नहीं करना चाहते हैं, जबकि नेतृत्व का मतलब लोगों को उन चीजों को करने के लिए प्रेरित करना है जिसके लिये उन्होंने सोचा था कि वे कभी नहीं कर पाएंगे। - स्टीव जॉब्स</li> <li>► "जो एक अच्छा अनुयायी नहीं हो सकता, वह एक अच्छा नेता नहीं हो सकता है।" - अरस्तू</li> <li>► तुम्हारे पास सिर्फ़ कर्म करने का अधिकार है, कर्म के फल का नहीं</li> <li>कर्म के फल को अपना लक्ष्य मत बनने दो</li> <li>लेकिन निष्क्रियता में भी तुम्हारी कोई आसक्ति नहीं होनी चाहिए। - गीता</li> </ul>
मीडिया	<ul style="list-style-type: none"> <li>► "मीडिया का काम पीड़ितों को सहूलियत देना और सहूलियतधारियों को पीड़ित करना है।" - अरुंधति रॉय</li> <li>► "मीडिया का काम सत्ता को सच्चाई दिखाना है।" - एमी गुडमैन, ब्रॉडकास्ट पत्रकार</li> <li>► सोशल मीडिया असली तुल्यकारक है। यह किसी भी इच्छुक को एक मंच और आवाज़ देता है।</li> <li>► हमारे पास जितना अधिक सोशल मीडिया है, हम सोचते हैं कि हम उतने ही जुड़ रहे हैं, लेकिन वास्तव में हम एक-दूसरे से अलग हो रहे हैं।</li> </ul>
गरीबी	<ul style="list-style-type: none"> <li>► "गरीबी हिंसा का सबसे बुरा रूप है।" - महात्मा गांधी</li> <li>► गरीबी सिर्फ़ पैसे की कमी नहीं है; यह एक इंसान के रूप में किसी की पूरी क्षमता को महसूस करने में असमर्थता है - अमर्त्य सेन</li> <li>► गरीबी पर काबू पाना परोपकार का काम नहीं है; यह न्याय का कार्य है। - नेल्सन मंडेला</li> <li>► गुलामी और रंगभेद की तरह, गरीबी स्वाभाविक नहीं है। यह मानव निर्मित है और इसे मानव के कार्यों से दूर किया जा सकता है। - नेल्सन मंडेला</li> <li>► अमीर और गरीब के बीच का अंतर धन नहीं है, बल्कि अवसर है। - मुहम्मद यूनुस</li> <li>► अवांछित, अप्रिय और अकेले होने की गरीबी सबसे बड़ी गरीबी है। - मदर टेरेसा</li> <li>► आप आँकड़ों पर भूखे को खाना नहीं खिला सकते। - हेनरिक हेन</li> </ul>
शक्ति	<ul style="list-style-type: none"> <li>► "सत्ता भ्रष्ट होती है, और निरपेक्ष सत्ता बिल्कुल भ्रष्ट होती है। महापुरुष हमेशा लगभग बुरे आदमी होते हैं।" - लॉर्ड एक्टन</li> <li>► "शक्ति नहीं, बल्कि भय भ्रष्ट करता है। जो सत्ता को हासिल करते हैं, सत्ता खोने का डर, उन लोगों को भ्रष्ट करता है और सत्ता का डर, उन लोगों को भ्रष्ट कर देता है जो इसके अधीन होते हैं।" - आंग सान सू की</li> <li>► लगभग हर व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों का सामना कर सकता है, लेकिन यदि आप किसी व्यक्ति के चरित्र का परीक्षण करना चाहते हैं, तो उसे शक्ति दें। - लिंकन</li> </ul>
धर्म	<ul style="list-style-type: none"> <li>► "अच्छा होना और अच्छा करना, संपूर्ण धर्म है" - स्वामी विवेकानंद (SV)</li> <li>► ऋग्वेद- "एकं सत्यम् विप्रः बहुदा वदन्ति": सत्य एक है, शिक्षित इसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं।</li> <li>► "दुनिया में लोग इतने भूखे हैं, कि भगवान रोटि के अलावा अन्य किसी रूप में उनके सामने प्रकट नहीं हो सकते हैं।" - गांधी</li> <li>► "मैं उसे धार्मिक कहता हूँ जो दूसरों की पीड़ा को समझता है।" - गांधी</li> <li>► "भगवान का कोई धर्म नहीं है।" - गांधी</li> </ul>

## मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

### अर्थव्यवस्था / अन्तराष्ट्रीय संबंध

प्रश्न 1 संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बीच व्यापार युद्ध और उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं पर इसके प्रभाव को लेकर चर्चा करें, विशेष रूप से भारत पर।

### राज्यव्यवस्था

प्रश्न 2 हाल के लोकसभा चुनावों के प्रकाश में, चुनाव आयोग को वास्तव में स्वतंत्र और जवाबदेह निकाय बनाने के लिए आवश्यक उपायों पर चर्चा करें।

### अर्थव्यवस्था

प्रश्न 3 हाल ही में जारी किया गया डाटा इस बात पर प्रकाश डालता है कि भारत में बेरोजगारी 45 वर्ष के उच्च स्तर पर है। भारत में बेरोजगारी की उच्च दर के कारण क्या हैं? रोजगार उत्पत्ति में सरकार की क्या भूमिका है?

### विज्ञान और प्रौद्योगिकी

प्रश्न 4 NASA का आर्टेमिस कार्यक्रम क्या है? इसके महत्व पर चर्चा करें।

### शासन / आपदा प्रबंधन

प्रश्न 5 सूरत अग्निकांड त्रासदी शासन में विभिन्न स्तरों पर कमियों को उजागर करती है। इन कमियों पर चर्चा करें और उन्हें दूर करने के उपाय सुझाएं।

## प्रीलिम्स कैप्सूल

1) भारत के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह पीड़ितों और उनके परिवारों को राहत देने के बारे में सिफारिशें कर सकता है।
  2. यह न तो वैधानिक है और न ही संवैधानिक निकाय है।
  3. यह मानवाधिकारों से संबंधित अदालती कार्यवाही में हस्तक्षेप कर सकता है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं

- a) 1 और 3
- b) 2 और 3
- c) 1 और 2
- d) 1, 2 और 3

2) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय की कुल स्वीकृत संख्या 31 है।
  2. राष्ट्रपति के पास सर्वोच्च न्यायालय की शक्तियाँ निर्धारित करने का अधिकार है।
- नीचे दिए गए कथनों का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

3) लैडरबैक टर्टल (leatherback turtle) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. IUCN द्वारा इसे खतरे के कगार के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
  2. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत में लैडरबैक टर्टल के लिए एकमात्र रहने लायक स्थल है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

4) निम्नलिखित में से कौन से देश आर्कटिक परिषद के सदस्य हैं?

1. कनाडा
2. रूस
3. संयुक्त राज्य अमेरिका
4. भारत
5. फिनलैंड

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) 1, 2 और 5
- b) 2, 3 और 4
- c) 1, 3 और 5
- d) 1, 2, 3 और 5

5) आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक (ADMM) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह आसियान में उच्चतम रक्षा सलाहकार और सहकारी तंत्र है।
  2. भारत का प्रतिनिधित्व रक्षा मंत्री द्वारा किया जाता है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2



6) जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर अंतरसरकारी विज्ञान-नीति मंच के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह जैव विविधता की स्थिति और समाज को प्रदान करने वाली पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का आकलन करता है।
  2. यह एक स्वतंत्र अंतर सरकारी निकाय है, जिसकी स्थापना 2012 में सदस्य देशों द्वारा की गई थी।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

7) फॉल आर्मी वॉर्म (Fall armyworm) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह भारत की एक आक्रामक प्रजाति है।
  2. यह कीट है जो केवल मक्का की फसल पर हमला करता है और इसे काफी नुकसान पहुंचाता है।
- निम्नलिखित कथनों में से कौन सही है?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

8) 'चांदका वन्यजीव अभयारण्य' हाल ही में खबरों में देखा गया निम्न में से किस राज्य में स्थित है:

- a) ओडिशा
- b) महाराष्ट्र
- c) आंध्र प्रदेश
- d) छत्तीसगढ़

9) FAME (फास्टर एडॉप्शन एंड मैनुफैक्चरिंग ऑफ हाइब्रिड एंड इलेक्ट्रिक व्हीकल्स) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसका उद्देश्य हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक दोनों प्रकार के वाहनों को अपनाने और बाजार निर्माण के लिए वित्तीय और मौद्रिक प्रोत्साहन प्रदान करना है।
  2. यह केवल मांग निर्माण पर केंद्रित होगा।
  3. FAME 2 योजना का उद्देश्य वाणिज्यिक बेड़े में इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या में वृद्धि करना है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) 1 और 2
- b) 2 और 3
- c) 1 और 3
- d) 1, 2 और 3

10) वायुमंडलीय उपद्रव (चक्रवात) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. चक्रवात फानी इस सदी में बंगाल की खाड़ी के ऊपर सबसे लंबे समय तक चलने वाला चक्रवात था।
  2. जितनी धीमी गति से चक्रवात यात्रा करता है और जितने लंबे समय तक वह समुद्र के ऊपर बना रहता है, वह उतना ही तीव्र होता जाता है।
  3. हिंद महासागर में भूमंडलीय ऊष्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग) तीव्र प्रणालियों को गति दे रही है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) 1 और 2
- b) 2 और 3
- c) 1 और 3
- d) 1, 2 और 3

11) बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) का विरोध कर रहा है जो BRI का एक प्रमुख कार्यक्रम है।
  2. जर्मनी, बेल्ट एंड रोड पहल में शामिल होने वाला, पहला G7 देश है।
  3. BRI का उद्देश्य एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़कर एक व्यापार, निवेश और बुनियादी ढाँचा नेटवर्क का निर्माण करना है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है / हैं?

- (a) 2 और 3
- (b) 1 और 3
- (c) 1 और 2
- (d) 1, 2 और 3

12) वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री करते हैं।
2. इसका गठन स्वतंत्रता से पहले किया गया था।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

13) केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. निदेशक का चयन लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013 के तहत गठित एक उच्च-पदस्थ (high-profile) समिति द्वारा किया जाता है।
2. डीएसपीई (दिल्ली विशेष पुलिस प्रतिष्ठान) अधिनियम, सीबीआई को मामलों की जांच की कानूनी शक्ति देता है।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

14) हंगुल के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

1. IUCN के अनुसार यह गंभीर रूप से खतरे में है।
2. यह भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के तहत संरक्षित है।

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

15) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. कृषि के बाद, महिला श्रमिकों का सबसे बड़ा अनुपात निर्माण में वितरित किया गया।
2. भारत में महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर (LFPR) में 2011-2018 से गिरावट देखी गई।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

16) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. गृह मंत्रालय (MHA) प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन के लिए केंद्र सरकार में नोडल मंत्रालय है।
2. राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) के अध्यक्ष गृह मंत्री हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

17) भारत के दूसरे चंद्र मिशन, चंद्रयान -2 के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर रोवर को उतारने वाला, भारत पहला देश होगा।
2. चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव में कुछ महत्वपूर्ण बर्फ निक्षेप/संचय हैं।

नीचे दिए गए कोड में से सही उत्तर का चयन करें:

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

18) इंडियन नेशनल सेंटर फॉर ओशन इन्फॉर्मेशन सर्विसेज (INCOIS) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत भारत सरकार का एक स्वायत्त संगठन है।
  2. समाज, उद्योग, सरकारी एजेंसियों और वैज्ञानिक समुदाय को महासागर की जानकारी और सलाहकारी सेवाएं प्रदान करना अनिवार्य है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?
- a) केवल 1
  - b) केवल 2
  - c) 1 और 2 दोनों
  - d) न तो 1 और न ही 2

19) निम्नलिखित में से कौन-सा संयुक्त राष्ट्र के जैश-ए-मोहम्मद के सरगना मौलाना मसूद अजहर को वैश्विक आतंकवादी के रूप में नामित करने का प्रभाव हो सकता है?

1. संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य राज्यों को उसके व्यक्तिगत प्रवेश को बाधित करना या अपने क्षेत्रों में स्थानांतरित करने से रोकना आवश्यक है।
  2. संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य राज्यों को उसके धन और अन्य वित्तीय संपत्तियों या आर्थिक संसाधनों को फ्रीज़ करने की आवश्यकता है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?
- a) केवल 1
  - b) केवल 2
  - c) 1 और 2 दोनों
  - d) न तो 1 और न ही 2

20) निम्नलिखित में से कौन सा अभ्यास सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि कर सकता है?

1. सकल स्थायी पूंजी निर्माण दर में वृद्धि
  2. पूंजी उत्पादन अनुपात में वृद्धि
  3. बचत दरों में वृद्धि
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?
- (a) 1 और 2
  - (b) 2 और 3
  - (c) 1 और 3
  - (d) 1, 2 और 3

21) अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक सम्मेलन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसका उद्देश्य आतंकवादियों तक वित्त स्रोत और धन, हथियारों और उनको सुरक्षित ठिकानों तक पहुंचने से रोकना है।
  2. यह संधि का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के सभी रूपों का अपराधीकरण करना है।
  3. इस सम्मेलन के तहत मसूद अजहर को वैश्विक आतंकवादी घोषित किया गया।
- उपरोक्त कथनों में से कौन सा सही है / हैं?
- a) 1 और 3
  - b) 2 और 3
  - c) 1 और 2
  - d) 1, 2 और 3

22) MANAV- मानव एटलस पहल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह मानव संसाधन और विकास मंत्रालय (MHRD) की एक परियोजना है।
  2. इसका उद्देश्य भारत के सभी नागरिकों का एक एटलस तैयार करना है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?
- a) केवल 1
  - b) केवल 2
  - c) 1 और 2 दोनों
  - d) न तो 1 और न ही 2

23) लूनर रीकॉनसिंस ऑर्बिटर (LRO) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसका उद्देश्य चंद्रमा पर सुरक्षित लैंडिंग साइटों और संभावित संसाधनों का पता लगाना है।
2. यह एक नासा का रोबोटिक अंतरिक्ष यान है जो वर्तमान में चंद्रमा की परिक्रमा कर रहा है।
3. एलआरओ कैमरे द्वारा लिए गये चित्र के विश्लेषण के अनुसार चंद्रमा लगातार सिकुड़ रहा है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) 1 और 2
- b) 2 और 3
- c) 1 और 3
- d) 1, 2 और 3

24) कॉलेजियम प्रणाली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसका भारत के मूल संविधान में उल्लेख नहीं किया गया था, क्रमिक संशोधनों द्वारा जोड़ा गया है।
  2. इसका उपयोग उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति और स्थानांतरण के लिए किया जाता है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

25) फॉरेन कंट्रीब्यूशन ऐक्ट (Regulation) (FCRA) अधिनियम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह एनजीओ को दिये जाने वाले विदेशी योगदान और उपयोग को स्वीकार करने, का प्रयोग करने और रिपोर्ट करने के लिए एक तंत्र निर्धारित करके नियमित करता है।
  2. इसका उद्देश्य राष्ट्रहित में हानिकारक किसी भी गतिविधि के लिए विदेशी योगदान के उपयोग को रोकना है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

26) निम्नलिखित में से किस कारण से रुपया कमजोर होगा?

1. निर्यात में वृद्धि।
  2. भारत में एफडीआई का व्यापक प्रवाह।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

27) औद्योगिक उत्पादन सूचकांक के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी किया गया है।
  2. सेवा क्षेत्र और विनिर्माण क्षेत्र दोनों इस सूचकांक का हिस्सा हैं।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

28) राष्ट्रीय ई-विधान आवेदन (NeVA) परियोजना के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह केंद्रीय प्रायोजित योजना है।
  2. इसके कार्यान्वयन के लिए, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय नोडल मंत्रालय है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2



29) ग्लोबल ड्रग सर्वे (GDS) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह UNDP द्वारा संचालित है।
  2. इससे पता चलता है कि भारतीय, अन्य राष्ट्रीयताओं (other nationalities) से अधिक अपने शराब सेवन को कम करने के लिए मदद मांग रहे हैं।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?
- a) केवल 1
  - b) केवल 2
  - c) 1 और 2 दोनों
  - d) न तो 1 और न ही 2

30) शून्य छाया दिवस के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. हर साल केवल एक शून्य छाया दिन होता है।
  2. यह केवल उन स्थानों पर मनाया जाता है जो कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच आते हैं।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?
- a) केवल 1
  - b) केवल 2
  - c) 1 और 2 दोनों
  - d) न तो 1 और न ही 2

31) ईश्वर चंद्र विद्यासागर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वह बंगाली दैनिक सोम प्रकाश कौमुदी अखबार के संस्थापक / संपादक थे।
  2. विधवा पुनर्विवाह के लिए उनके अभियान के कारण हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 पारित किया गया था।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?
- a) केवल 1
  - b) केवल 2
  - c) 1 और 2 दोनों
  - d) न तो 1 और न ही 2

32) हाल ही में हुए 17 वें लोकसभा चुनाव के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. 2019 में लोकसभा चुनाव में VVPAT का पहली बार इस्तेमाल किया गया
  2. महिलाओं ने इन चुनावों के दौरान सभी राज्यों में पुरुषों की तुलना में कम मतदान किया।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?
- a) केवल 1
  - b) केवल 2
  - c) 1 और 2 दोनों
  - d) न तो 1 और न ही 2

33) जैविक भारत लोगो के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. खाद्य सुरक्षा नियामक एफएसएसआई ने इस प्रमाणन के बिना किसी भी जैविक उत्पाद की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया है।
  2. यह जैविक उत्पादों को गैर-जैविक उत्पादों से अलग करने के लिए एक पहचान चिह्न है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?
- a) केवल 1
  - b) केवल 2
  - c) 1 और 2 दोनों
  - d) न तो 1 और न ही 2

34) प्रवाल भित्तियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. प्रवाल पानी में कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर को नियंत्रित करते हैं।
  2. प्रवाल भित्तियाँ, उष्णकटिबंधीय वर्षावनों द्वारा पोषित किए गए जानवरों की तुलना में कहीं अधिक पशु फ़ाइला की मेजबानी करते हैं।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?
- a) केवल 1
  - b) केवल 2
  - c) 1 और 2 दोनों
  - d) न तो 1 और न ही 2

35) रिसैट श्रृंखला के उपग्रह के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. रिसैट श्रृंखला का पहला उपग्रह हाल ही में लॉन्च किया गया था।
  2. यह घने मेघावरणांक में से घुस सकता है और जमीन पर छिपी वस्तुओं की पहचान कर सकता है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

36) संविधान के अनुच्छेद 324 के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. हाल ही में भारत के चुनाव आयोग ने भारतीय इतिहास में इस अनुच्छेद का इस्तेमाल अनुसूचित समय से पहले अभियान को समाप्त करने के लिए किया था।
  2. इसमें चुनाव आयोग में निहित होने वाले चुनावों के अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण का प्रावधान है।
  3. यह अनुच्छेद बताता है कि संसद के सदन या राज्य के विधानमंडल के किसी भी सदन के चुनाव के लिए प्रत्येक प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र के लिए एक सामान्य मतदाता सूची होगी।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) 2 और 3
- b) 1 और 3
- c) 1 और 2
- d) 1, 2 और 3

37) न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह इसरो की पहली वाणिज्यिक शाखा है।
  2. यह एसएसएलवी बाजार की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए लघु उपग्रह लॉन्च वाहन (एसएसएलवी) और ध्रुवीय उपग्रह लॉन्च वाहन (पीएसएलवी) का उत्पादन करेगा।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

38) एलिफेंट बांड के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इन बॉन्ड से बने फंड का इस्तेमाल केवल हाथी के कल्याण के लिए किया जाएगा।
  2. एलिफेंट बॉन्ड 25 साल का सॉवरेन बॉन्ड है जिसमें अधोषित आय की घोषणा करने वाले लोग 25 फीसदी निवेश करने के लिए बाध्य होंगे।
- नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें:

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

39) बिस्मटेक के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के सात देशों का एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है।
  2. BIMSTEC मुक्त व्यापार क्षेत्र फ्रेमवर्क समझौते (BFTAFA) पर सभी सदस्य देशों द्वारा हस्ताक्षर किए गए हैं।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

40) रोगाणुरोधी प्रतिरोध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. विकासशील देशों में एंटीबायोटिक दवाओं की अधिक पहुंच के कारण वैश्विक रूप से रोगाणुरोधी प्रतिरोध बढ़ रहा है।
  2. यह दवा के प्रभाव का विरोध करने के लिए एक माइक्रोब की क्षमता है जो एक बार सफलतापूर्वक माइक्रोब का इलाज कर सकता है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

41) अतिचालकता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. अतिचालकता कुल शून्य विद्युत प्रतिरोध की एक घटना है।
  2. अतिचालकता वायर के लूप के माध्यम से एक विद्युत प्रवाह बिना किसी शक्ति स्रोत के अनिश्चित काल तक जारी रह सकता है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

42) माप की मूलभूत इकाइयों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

1. एम्पीयर को इलेक्ट्रॉन के आवेश के आधार पर परिभाषित किया गया है।
  2. किलोग्राम प्लांक स्थिरांक के आधार पर परिभाषित किया गया है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

43) ब्रह्मोस के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह दुनिया की सबसे तेज पराध्वनिक (supersonic) क्रूज मिसाइल है।
  2. इसे पनडुब्बी, जहाज, विमान और जमीन से लॉन्च किया जा सकता है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

44) फॉल आर्मीवॉर्म के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. फॉल आर्मीवॉर्म मुख्य रूप से मक्का को प्रभावित करता है, लेकिन चावल और ज्वार के साथ-साथ कपास और कुछ सब्जियों को भी प्रभावित करता है।
  2. अब तक भारत की फसलों पर फॉल आर्मीवॉर्म के हमले की कोई खबर नहीं है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

45) भारत में मलेरिया उन्मूलन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने 2030 तक भारत से इस बीमारी को खत्म करने के लिए 'मलेरिया उन्मूलन अनुसंधान गठबंधन' (MERA) शुरू किया है।
  2. राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीबीडीसीपी) का लक्ष्य "2030 तक मलेरिया मुक्त भारत" प्राप्त करना है।
- निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

46) आकाश रक्षा प्रणाली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह एक लंबी दूरी की गतिशील सतह (mobile surface) से हवा में मार करने वाली मिसाइल रक्षा प्रणाली है।
  2. इसमें कूज और बैलिस्टिक मिसाइल दोनों के हवाई लक्ष्यों को बेअसर करने की क्षमता है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

47) क्राइस्टचर्च कॉल समाचार हाल ही में देखा गया है:

- a) शरणार्थियों की मदद करना
- b) उग्रवाद पर ऑनलाइन अंकुश लगाना
- c) ईसाई धर्म का प्रचार
- d) उपरोक्त में से कोई नहीं

48) नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ़ इंडिया लिमिटेड के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एनएसई की स्थापना 1992 में देश में पहले डिम्युचुरलाइज्ड इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज के रूप में हुई थी।
2. एनएसई सह-स्थान सुविधा के तहत, ट्रेडिंग सदस्य अपने सर्वर को एक्सचेंज के डेटा सेंटर में रख सकते हैं, जहां उन्हें मूल्य भरण तक तेजी से पहुंच प्राप्त होती है।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

49) आपदा न्यूनीकरण और पुनर्प्राप्ति के लिए वैश्विक सुविधा (GFDRR) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा, यह प्रबंधित अनुदान-निधिकरण तंत्र है।
  2. जीएफडीआरआर आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए सेंडाई फ्रेमवर्क के कार्यान्वयन में योगदान देता है।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) 1 और 2 दोनों
- d) न तो 1 और न ही 2

50) पूर्व से पश्चिम तक हिंद महासागर क्षेत्र के आसपास के शहरों की व्यवस्था करें:

1. मुंबई
2. कोलंबो
3. विक्टोरिया
4. माले
5. चेन्नई

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन करें:

- (a) 1, 3, 4, 2 और 5
- (b) 2, 4, 3, 1 और 5
- (c) 3, 2, 4, 1 और 5
- (d) 2, 5, 1, 4 और 3



## प्रीलिम्स कैप्सूल के उत्तर

### 1) समाधान: (a)

- कथन 1 सही है: यह पीड़ितों और उनके परिवारों को राहत देने के बारे में सिफारिशें कर सकता है। यह मानव अधिकारों के क्षेत्र में काम करने के लिए गैर-सरकारी संगठनों और संस्थाओं की व्यवस्थापिका सभा के प्रयासों को प्रोत्साहित करता है।
- कथन 2 गलत है: भारत का राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) एक वैधानिक सार्वजनिक निकाय है जिसका गठन 12 सितंबर 1993 को, 28 सितंबर 1993 के मानव अधिकार अध्यादेश के तहत किया गया था।
- कथन 3 सही है: यह मानवाधिकारों से संबंधित अदालती कार्यवाही में हस्तक्षेप कर सकता है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=mK2i8NMILD0> and PIB Study IQ

### 2) समाधान: (a)

- कथन 1 सही है: वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय की कुल स्वीकृत संख्या 31 है।
- कथन 2 गलत है: संसद के पास सर्वोच्च न्यायालय की शक्तियों को निर्धारित करने का प्राधिकार है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=2bIBAgdgyY>

### 3) समाधान: (c)

- कथन 1 सही है: लेदरबैक समुद्री कछुआ, जिसे कभी-कभी ल्यूट टर्टल या लेदरी कछुआ भी कहलाया जाता है, सभी जीवित कछुओं में से सबसे बड़ा है। इसे IUCN द्वारा लुप्तप्राय प्रजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- कथन 2 सही है: पिछले कुछ वर्षों में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में इस कछुए के औसतन 1,000 चमड़े के घोंसले/रहने के स्थान पाए गए हैं, जिससे यह दक्षिण एशियाई क्षेत्र में महत्वपूर्ण घोंसले/रहने के स्थान बनाने वाला और भारत में एकमात्र है।

स्रोत: पर्यावरण अध्ययन Study IQ करंट अफेयर्स

### 4) समाधान: (d)

- आर्कटिक परिषद एक अंतर-सरकारी मंच है। 1996 के ओटावा घोषणा ने 1996 में आर्कटिक परिषद की स्थापना की। इसके उद्देश्य हैं: विशेष रूप से सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण जैसे आम मुद्दों पर आर्कटिक राज्यों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना है। कनाडा, डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे, रूस, स्वीडन और संयुक्त राज्य अमेरिका आर्कटिक परिषद के सदस्य हैं। भारत के पास पर्यवेक्षक का दर्जा 2013 से है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=wahOK-GBlos>

### 5) समाधान: (a)

- कथन 1 सही है: यह आसियान में उच्चतम रक्षा सलाहकार और सहकारी तंत्र है। इसका उद्देश्य रक्षा और सुरक्षा चुनौतियों की अधिक समझ के माध्यम से आपसी विश्वास और दृढ़ता को बढ़ावा देना है।
- कथन 2 गलत है: सभी आसियान सदस्य राज्यों, अर्थात् ब्रुनेई दारुस्सलाम, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओ, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, और वियतनाम ये सब, ADMM के सदस्य हैं। इस बैठक में भारत को आमंत्रित नहीं किया गया था।

स्रोत: दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ

### 6) समाधान: (c)

- कथन 1 सही है: IPBES एक वैश्विक वैज्ञानिक निकाय है जो जलवायु परिवर्तन (आईपीसीसी) के बेहतर-ज्ञात अंतर सरकारी पैनल की रचना और कार्यप्रणाली के समान है जो पृथ्वी के भविष्य की जलवायु के बारे में अनुमान लगाने के लिए वैज्ञानिक साहित्य की आवधिक समीक्षा करता है। IPBES प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र और जैव विविधता के लिए एक समान काम करने के लिए अनिवार्य है।
- कथन 2 सही है: यह जैव विविधता की स्थिति और समाज को प्रदान करने वाली पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं का आकलन करता है। यह एक स्वतंत्र अंतर सरकारी निकाय है, जिसकी स्थापना 2012 में सदस्य देशों द्वारा की गई थी।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=IDeskBvT61I> and Daily Current Affairs Study IQ

### 7) समाधान: (a)

- कथन 1 सही है: फॉल आर्मीवॉर्म (एफएडब्ल्यू) एक कीट है जो 80 से अधिक फसल प्रजातियों पर पोषित होता है, जिससे आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण खेती के अनाज जैसे कि मक्का, चावल, ज्वार और फलियां और साथ ही साथ सब्जी की फसल और कपास को नुकसान होता है। यह अमेरिका के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल निवासी है। यह भारत में एक आक्रामक प्रजाति है।
- कथन 2 गलत है: उच्च परक्रामण से मक्का ही नहीं बल्कि महत्वपूर्ण उपज को नुकसान हो सकता है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=HUd9Ad0nejc> और दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ

## 8) समाधान: (a)

► चंडका वन्यजीव अभयारण्य भारतीय राज्य ओडिशा में कटक के दक्षिण तट पर स्थित एक वन्यजीव अभयारण्य है।

स्रोत: दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ, फानी चक्रवात ।

## 9) समाधान: (c)

► FAME का लक्ष्य देश में हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक दोनों तरह के वाहनों को अपनाने और बाजार निर्माण के लिए राजकोषीय और मौद्रिक प्रोत्साहन प्रदान करना है। इसमें 4 फोकस क्षेत्र हैं यानी टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट, डिमांड क्रिएशन, पायलट प्रोजेक्ट और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर। FAME 2 योजना का उद्देश्य बिजली की गतिशीलता को बढ़ावा देना और वाणिज्यिक बेड़े में इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या में वृद्धि करना है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=kAoZYFlaGlg>

## 10) समाधान: (d)

► कथन 1 सही है: चक्रवात फानी सदी में बंगाल की खाड़ी पर सबसे लंबे समय तक रहने वाला चक्रवात था।

► कथन 2 सही है: जितनी धीमी गति से एक चक्रवात यात्रा करता है और जितनी देर तक यह समुद्र के ऊपर रहता है, उतना ही तीव्र होता जाता है।

► कथन 3 सही है: ग्लोबल वार्मिंग हिंद महासागर में तीव्र प्रणालियों को गति दे रही है। चक्रवात गर्म सागर से अपनी ऊर्जा प्राप्त करते हैं। हम हिंद महासागर के त्वरित गरम होने का अवलोकन कर रहे हैं और यह तीव्र प्रणालियों के लिए अग्रणी है। यह जलवायु परिवर्तन को अभिव्यक्त करता है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=rM3VCkr0Ltk>

## 11) समाधान: (b)

► कथन 1 सही है: भारत ने BRI का विरोध किया है और BRI शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लिया। इसमें संप्रभुता, पारदर्शिता और एकतरफा निर्णय लेने के मुद्दों का हवाला दिया गया है। भारत का BRI का विरोध का मुख्य कारण CPEC है जो BRI का एक प्रमुख कार्यक्रम है।

► कथन 2 गलत है: बेल्ट एंड रोड पहल में शामिल होने वाला इटली पहला G7 देश बन गया है।

► कथन 3 सही है: BRI का उद्देश्य एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़ने वाले एक व्यापार, निवेश और बुनियादी ढाँचे का निर्माण करना है।

स्रोत : <https://www.youtube.com/watch?v=qivuXPimPdl>

## 12) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत स्वायत्त निकाय है। इसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री द्वारा की जाती है।

► कथन 2 सही है: वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद की स्थापना 1942 में सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1960 के तहत की गई थी।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=xYTx-MYPmKA>

## 13) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: 2014 तक, नियुक्तियां दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना (डीएसपीई) अधिनियम, 1946 के आधार पर की गई थीं। 2014 में, लोकपाल अधिनियम ने सीबीआई निदेशक की नियुक्ति के लिए एक समिति प्रदान की थी: प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में, अन्य सदस्य - विपक्ष के नेता / एकल सबसे बड़े विपक्षी दल के नेता, भारत के मुख्य न्यायाधीश / सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे।

► कथन 2 सही है: डीएसपीई (दिल्ली विशेष पुलिस प्रतिष्ठान) अधिनियम, 1946 लाया गया जिसने सीबीआई को मामलों की जांच की कानूनी शक्ति दी।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=YuroYudF04U>

## 14) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: यह IUCN की रिपोर्ट के अनुसार गंभीर रूप से लुप्तप्राय है। यह जम्मू और कश्मीर का राज्य पशु है।

► कथन 2 सही है: यह भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के तहत संरक्षित है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=XDIY5FC5Ihs>

## 15) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: महिला श्रमिकों का सबसे बड़ा अनुपात कृषि (63%) में वितरित किया गया, इसके बाद विनिर्माण (13%) हुआ।

► कथन 2 सही है: भारत में महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) 2011-2012 में 31.2% से गिरकर 2017-2018 में 23.3% हो गई।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=MleZFN2SPFo> और दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ

## 16) समाधान: (a)

► कथन 1 सही है: केंद्र सरकार में प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन के लिए नोडल मंत्रालय गृह मंत्रालय (MHA) है।

► कथन 2 प्रोत्साहन है: NDMA का अध्यक्ष प्रधानमंत्री है।

स्रोत: पीआईबी और द हिंदू करंट अफेयर्स Study IQ

## 17) समाधान: (c)

► चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर वाला रोवर उतारने वाला, भारत पहला देश होगा। नासा के अनुसार, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के कुछ क्षेत्र स्थायी रूप से ज्वालामुखी के आकार वाले गड्ढों पर सौरमंडल के न्यूनतम तापमान के साथ अपनी छाया बनाए रखते हैं, जहां हमेशा बर्फ जमी रहती है। इन गड्ढों को महत्वपूर्ण हिम निक्षेप माना जाता है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=ACv8kd6MScw> और दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ

## 18) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: यह पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत भारत सरकार का एक स्वायत्त संगठन है। ESSO-INCOIS को 1999 में पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) के तहत एक स्वायत्त निकाय के रूप में स्थापित किया गया था और यह पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संगठन (ESSO) की एक इकाई है।

► कथन 2 सही है: समाज, उद्योग, सरकारी एजेंसियों और वैज्ञानिक समुदाय को सर्वोत्तम, रूप से महासागर जानकारी और सलाहकार सेवाएं प्रदान करना अनिवार्य है।

स्रोत: पीआईबी दैनिक विश्लेषण अध्ययन बुद्धि

## 19) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: सभी सदस्य राज्यों को अपने क्षेत्र के माध्यम से इस व्यक्ति को प्रवेश करने या स्थानांतरित करने से रोकने की आवश्यकता है।

► कथन 2 सही है: संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य राज्यों को धन और अन्य वित्तीय संपत्तियों या उसके आर्थिक संसाधनों को स्थिर करने की आवश्यकता है।

स्रोत: [https://www.youtube.com/watch?v=LaN136O5M\\_o](https://www.youtube.com/watch?v=LaN136O5M_o)

## 20) समाधान: (c)

► बचत दर में वृद्धि और सकल स्थिर पूंजी निर्माण दर में वृद्धि से जीडीपी को बढ़ावा देने की क्षमता है। पूंजी उत्पाद अनुपात: यह पूंजी की एक इकाई का उत्पादन करने के लिए आवश्यक पूंजी की मात्रा है। यह तकनीकी प्रगति, पूंजीगत सामान मशीनरी की कीमतों जैसे कारकों पर निर्भर करता है। भारत में, उच्च पूंजी अनुपात विकास दर के कम होने के कारण से है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=FBwr4gEjbtK>

## 21) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: इसका उद्देश्य आतंकवादियों तक, वित्त के स्रोत धन और हथियारों और सुरक्षित ठिकानों तक उनकी पहुंच से सुरक्षा प्रदान करना है।

► कथन 2 सही है: यह संधि अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के सभी रूपों का अपराधीकरण करने का इरादा रखती है।

► कथन 3 गलत है: भारत ने 1996 में इस सम्मेलन का प्रस्ताव रखा था। यह अभी तक लागू नहीं है।

स्रोत: [https://www.youtube.com/watch?v=LaN136O5M\\_o](https://www.youtube.com/watch?v=LaN136O5M_o)

## 22) समाधान: (d)

► जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) ने मानव शरीर क्रिया विज्ञान पर ज्ञान में सुधार की दिशा में मानव एटलस पहल शुरू की है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=juLA4lxD4cs>

## 23) समाधान: (d)

► यह नासा का एक रोबोटिक अंतरिक्ष यान है जो वर्तमान में चंद्रमा की परिक्रमा कर रहा है। इसकी विस्तृत मानचित्रण योजना सुरक्षित लैंडिंग स्थलों की पहचान कर रही है, जो चंद्रमा पर संभावित संसाधनों का पता लगा रही है, विकिरण पर्यावरण की विशेषता और नई प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन कर रही है। नासा के लूनर रेकॉन्सेन्स ऑर्बिटर द्वारा कैप्चर की गई इमेजरी के विश्लेषण के अनुसार, चंद्रमा लगातार सिकुड़ता जा रहा है, इसकी सतह पर सलवटें और दरारें पड़ रही हैं।

स्रोत: दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ

## 24) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: भारत के मूल संविधान में या लगातार संशोधनों में कॉलेजियम का कोई उल्लेख नहीं किया गया है। न्यायाधीशों की नियुक्ति की कॉलेजियम प्रणाली का उदय तीन न्यायाधीशों के मामले के माध्यम से हुआ था, जिसने 28 अक्टूबर, 1998 को संवैधानिक लेखों की व्याख्या की थी।

► कथन 2 सही है: कॉलेजियम प्रणाली एक प्रणाली है जिसके तहत सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों / वकीलों की नियुक्तियों / उन्नयन और उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के स्थानांतरण, भारत के मुख्य न्यायाधीश और चार वरिष्ठ-उच्चतम न्यायालय के अधिकांश न्यायाधीश, के एक फोरम द्वारा किए जाते हैं।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=hVc9CNOIZRY>

## 25) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: यह एनजीओ को दिये जाने वाले विदेशी योगदान और उपयोग को स्वीकार करने, का प्रयोग करने और रिपोर्ट करने के लिए एक तंत्र निर्धारित करके नियमित करता है।

► कथन 2 गलत है: इसका उद्देश्य राष्ट्रहित में हानिकारक किसी भी गतिविधि के लिए विदेशी योगदान या विदेशी आतिथ्य के प्रयोग को रोकना है।  
स्रोत: दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ और पीआईबी

## 26) समाधान: (d)

► रुपया कमजोर होगा: विदेशी कोष का बड़ा बहिर्वाह और इसका प्रवाह नहीं होना, कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि और निर्यात में कमी और आयात में वृद्धि।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=S5pnJbycjBk>

## 27) समाधान: (d)

► कथन 1 गलत है: औद्योगिक उत्पादन (IIP) एक सूचकांक है जो भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों के प्रदर्शन को दर्शाता है। केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO) द्वारा मासिक आधार पर IIP का अनुमान और प्रकाशन किया जाता है। एक अखिल भारतीय सूचकांक के रूप में, यह अर्थव्यवस्था में सामान्य स्तर की औद्योगिक गतिविधि दिखाता है।

► कथन 2 गलत है: IIP केवल खनन, विनिर्माण और बिजली क्षेत्रों तक सीमित है।

स्रोत: पीआईबी Study IQ

## 28) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: संसदीय मामलों का मंत्रालय (MoPA) सभी 31 राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों में विधानसभाओं के कार्यान्वयन के लिए नोडल मंत्रालय है। यह एक मिशन मोड प्रोजेक्ट (MMP) है जो डिजिटल इंडिया प्रोग्राम के तहत आता है।

► कथन 2 सही है: ई-विधान के लिए धनराशि MoPA द्वारा दी जाती है और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमआईटीवाई) द्वारा तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है। N-eVA की केंद्रीय प्रायोजित फंडिंग योजना उत्तरी-पूर्वी पहाड़ी राज्यों के लिए 60:40 और 90:10 तथा केंद्र शासित प्रदेश राज्य के लिए 100% के अनुपात से होती है।

स्रोत: दैनिक पीआईबी Study IQ और करंट अफेयर्स

## 29) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: ग्लोबल ड्रग सर्वे (जीडीएस) लंदन, ब्रिटेन में स्थित एक स्वतंत्र अनुसंधान संगठन है।

► कथन 2 सही है: ग्लोबल ड्रग्स सर्वे, जो पहली बार भारत के लिए उत्तरदायी बना है, का कहना है कि, अन्य देश के नागरिकों से अधिक भारतीय अपने शराब के सेवन को कम करने के लिए मदद मांग रहे हैं। आने वाले वर्ष में 51% लोग कम पीना चाहते हैं।

स्रोत: दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ

## 30) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: यह तब होता है जब सूर्य दोपहर में लगभग ठीक ऊपर होता है। हर साल दो शून्य छाया दिन होते हैं।

► कथन 2 सही है: यह केवल उन स्थानों पर देखा जाता है जो उष्णकटिबंधीय कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच स्थित हैं।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=zJabfIKIHPw> and दैनिक करंट अफेयर्स

## 31) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: वह बांग्ला दैनिक सोम प्रकाश के संस्थापक / संपादक थे, लेकिन संवाद कौमुदी के संस्थापक नहीं थे। संवाद कौमुदी राजा राम मोहन राय से संबंधित है।

► कथन 2 सही है: विधवा पुनर्विवाह के लिए उनके अभियान के कारण हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 पारित किया गया था

स्रोत: [https://www.youtube.com/watch?v=KI9NQ\\_EuJ3g](https://www.youtube.com/watch?v=KI9NQ_EuJ3g) और करंट अफेयर्स Study IQ

## 32) समाधान: (d)

► कथन 1 गलत है: यह पहली बार नहीं है कि लोकसभा चुनाव में VVPAT का उपयोग किया गया है, 2014 के लोकसभा चुनाव में कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में VVPAT का भी उपयोग किया गया है।

► कथन 2 गलत है: 17 वें लोकसभा चुनावों में, 13 राज्यों में पुरुषों की तुलना में महिला मतदाताओं की संख्या बढ़ गई, जबकि 2014 में सिर्फ 10 राज्यों में ऐसा हुआ था।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=7wQTck92EG0>



## 33) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: खाद्य सुरक्षा नियामक एफएसएसएआई ने छोटे जैविक उत्पादकों को 12 लाख रुपये से अधिक का वार्षिक कारोबार करने की अनुमति दी है, ताकि अप्रैल 2020 तक बिना प्रमाणन के, वे उपभोक्ताओं को सीधे अपनी उपज बेच सकें, लेकिन वे 'जैविक भारत लोगो' का अपने उत्पादों पर प्रयोग नहीं कर पाएंगे।

► कथन 2 सही है: जैविक भारत लोगो कार्बनिक उत्पादों को गैर-कार्बनिक लोगों से अलग करने के लिए एक पहचान चिह्न है।

स्रोत: पीआईबी Study IQ वीडियो

## 34) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: प्रवाल पानी में कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर को नियंत्रित करते हैं।

► कथन 2 सही है: प्रवाल भित्तियाँ, उष्णकटिबंधीय वर्षावनों द्वारा पोषित किए गए जानवरों की तुलना में कहीं अधिक पशु फ़ाइला की मेजबानी करते हैं।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=7tSjWbtihuo> <https://www.youtube.com/watch?v=-0a6hA1TwNk>

## 35) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: रिसैट सीरीज़ रिसैट 2 में पहला उपग्रह 20 अप्रैल, 2009 को लॉन्च किया गया था। 300 किलो के उपग्रह में इज़राइल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज द्वारा बनाए गए एक्स-बैंड सिंथेटिक एपर्चर रडार सेंसर का इस्तेमाल किया गया था। स्वदेश में विकसित रडार इमेजिंग उपग्रह, रिसैट -1 को 26 अप्रैल, 2012 में लॉन्च किया गया था। इन सभी उपग्रहों में पांच साल का मिशन जीवन था।

► कथन 2 सही है: सामान्य ऑप्टिकल इमेजिंग उपग्रहों के विपरीत, एक रडार इमेजिंग उपग्रह घने बादल कवर के माध्यम से घुस सकते हैं और जमीन पर छिपी वस्तुओं की पहचान कर सकता है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=YH9yFrFGQac>

## 36) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: हाल ही में भारत के चुनाव आयोग ने बढ़ती हिंसा के कारण पश्चिम बंगाल में समय से पहले अभियान को समाप्त करने के लिए भारतीय इतिहास में पहली बार इस अनुच्छेद का इस्तेमाल किया।

► कथन 2 सही है: अनुच्छेद 324 - यह चुनाव आयोग में निहित होने वाले चुनावों के अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण को व्यक्त करता है।

► कथन 3 गलत है: अनुच्छेद 325 - संसद के सदन या राज्य के विधानमंडल के किसी भी सदन के चुनाव के लिए प्रत्येक प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र के लिए एक सामान्य मतदाता सूची होगी।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=nb888HGGHNs>

## 37) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: एंटिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की पहली वाणिज्यिक शाखा है। न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड को अंतरिक्ष विभाग (DoS) द्वारा इसरो के नए वाणिज्यिक शाखा के रूप में पंजीकृत किया गया था।

► कथन 2 सही है: यह दुनिया भर में अनुप्रयोगों के लिए विभिन्न उप-प्रणालियों की आपूर्ति सहित SSLV बाजार की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए लघु उपग्रह लॉन्च वाहन (एसएसएलवी) और ध्रुवीय उपग्रह लॉन्च वाहन (पीएसएलवी) का उत्पादन भी करेगा। भारतीय उद्योग इंटरफेस के माध्यम से इस तकनीक का अनपेक्षित लाभ होगा।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=qMmude4JBY8>

## 38) समाधान: (d)

► कथन 1 गलत है: इन बॉन्ड्स से बने फंड का इस्तेमाल सिर्फ इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के लिए किया जाएगा।

► कथन 2 गलत है: हाथी बॉन्ड 25-वर्ष के संप्रभु बॉन्ड हैं, जिसमें अघोषित आय की घोषणा करने वाले लोग 50 प्रतिशत निवेश करने के लिए बाध्य होंगे।

स्रोत: दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ

## 39) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग उपक्रम (बिम्स्टेक) दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के सात देशों का एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है। BIMSTEC के सदस्य देश बांग्लादेश, भारत, म्यांमार, श्रीलंका, थाईलैंड, नेपाल और भूटान, बंगाल की खाड़ी पर निर्भर देशों में से हैं।

► कथन 2 सही है: बिम्स्टेक के फ्री ट्रेड एरिया फ्रेमवर्क एग्रीमेंट (BFTAFA) पर सभी सदस्य देशों ने हस्ताक्षर किए हैं।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=FAfFL7o3JQI>

## 40) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: विकासशील देशों में एंटीबायोटिक दवाओं की अधिक पहुंच के कारण वैश्विक रूप से रोगाणुरोधी प्रतिरोध बढ़ रहा है। प्रतिरोधी रोगाणुओं का इलाज करना अधिक कठिन है, वैकल्पिक दवाओं या एंटीमाइक्रोबियल की उच्च खुराक की आवश्यकता होती है।

► कथन 2 सही है: रोगाणुरोधी प्रतिरोध एक माइक्रोब की क्षमता है जो दवा के प्रभावों का विरोध करता है जो एक बार सफलतापूर्वक माइक्रोब का इलाज कर सकता है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध (एआर या एबीआर) शब्द एएमआर का उपवर्ग है, क्योंकि यह केवल एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति प्रतिरोधी बैक्टीरिया पर लागू होता है। प्रतिरोधी रोगाणुओं का इलाज करना अधिक कठिन है, वैकल्पिक दवाओं या एंटीमाइक्रोबियल की उच्च खुराक की आवश्यकता होती है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=dGi9IMxqFnE>

## 41) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: अतिचालकता बिल्कुल शून्य विद्युत प्रतिरोध की घटना है।

► कथन 2 सही है: अतिचालकता वायर के लूप के माध्यम से एक विद्युत धारा बिना किसी बिजली स्रोत के अनिश्चित काल तक बनी रह सकती है।

स्रोत: पीआईबी Study IQ और डेली करंट अफेयर्स Study IQ

## 42) समाधान: (c)

► किलोग्राम को प्लांक स्थिरांक के आधार पर परिभाषित किया गया है। एम्पियर को इलेक्ट्रॉन के आवेश के आधार पर परिभाषित किया गया है। दूसरा सीज़ियम -133 परमाणु के विकिरण के आधार पर परिभाषित किया गया है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=tsBjmoJN6Pg>

## 43) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: ब्रह्मोस एक मध्यम दूरी की रैमजेट सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है। यह दुनिया की सबसे तेज सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है।

► कथन 2 सही है: यह पनडुब्बी, जहाज, विमान या भूमि से लॉन्च किया जा सकता है।

स्रोत: पीआईबी Study IQ <https://www.youtube.com/watch?v=v4Npnay-FEO>

## 44) समाधान: (a)

► कथन 1 सही है: पतन आर्मीवॉर्म अमेरिका के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल निवासी है। यह पहली बार 2016 की शुरुआत में मध्य और पश्चिमी अफ्रीका में पाया गया था और अब उप-सहारा अफ्रीका में फैल गया है और हाल ही में यमन और भारत में पहुंचा है। लार्वा चरण में यह कीट फसलों को नुकसान पहुंचाता है, 80 से अधिक पौधों की प्रजातियों को अपना खाना बनाती है। एफएडब्ल्यू मुख्य रूप से मक्का को प्रभावित करता है, लेकिन चावल और ज्वार के साथ-साथ कपास और कुछ सब्जियां भी प्रभावित होती हैं।

► कथन 2 गलत है: फॉल आर्मीवॉर्म (स्पोडोप्टेरा फ्रुगुइपर) ने तिरुचि, करूर, पेरम्बलुर और तमिलनाडु के कई अन्य जिलों में मक्के की फसलों को व्यापक नुकसान पहुंचाया है।

स्रोत: दैनिक करंट अफेयर्स Study IQ और <https://www.youtube.com/watch?v=HUd9Ad0nejc>

## 45) समाधान: (b)

► भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने मलेरिया नियंत्रण पर काम करने वाले साझेदारों का समूह - 'मलेरिया उन्मूलन अनुसंधान गठबंधन (MERA) भारत' शुरू किया है - 2030 तक भारत से इस बीमारी को खत्म करने के लिए प्राथमिकताओं, योजना और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए। राष्ट्रीय भारत के वेक्टर बॉर्न डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम (NVBDCP) ने 2030 तक "मलेरिया मुक्त भारत" की व्यापक दृष्टि को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक रूपरेखा विकसित की है। NVBDCP की राष्ट्रीय सामरिक योजना स्पष्ट रूप से मलेरिया उन्मूलन प्रयासों का समर्थन और मार्गदर्शन करने के लिए अनुसंधान की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करती है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=JV8kf4GP2jY>

## 46) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: आकाश एक मध्यम दूरी की अस्थिर सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल रक्षा प्रणाली है जिसे रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) द्वारा विकसित किया गया है और भारत के अन्य रडार और नियंत्रण केन्द्रों के लिए मिसाइल सिस्टम के लिए नियत भारत इलेक्ट्रॉनिक्स (BEL) और भारत डायनामिक्स लिमिटेड (BDL) द्वारा निर्मित किया गया है।

► कथन 2 सही है: इसमें लड़ाकू जेट, क्रूज मिसाइल और हवा से सतह की मिसाइलों के साथ-साथ बैलिस्टिक मिसाइलों जैसे हवाई लक्ष्यों को बेअसर करने की क्षमता है।

स्रोत: [https://www.youtube.com/watch?v=9KN2m\\_8Aj-Q](https://www.youtube.com/watch?v=9KN2m_8Aj-Q)

## 47 समाधान: (b)

► क्राइस्टचर्च कॉल समझौतों का एक गैर-बाध्यकारी सेट है जो सरकारों और प्रमुख तकनीकी कंपनियों के एक समूह पर हस्ताक्षर करेगा। यह सोशल मीडिया और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर आतंकवादी और हिंसक चरमपंथी सामग्री को खत्म करने के लिए हस्ताक्षर करने वाले राष्ट्रों को अपने एल्गोरिदम का मूल्यांकन करने के लिए कहेंगे जो उपयोगकर्ताओं को चरमपंथी सामग्री के लिए प्रत्यक्ष करते हैं, और चरमपंथी सामग्री की तलाश करने वाले लोगों को पुनर्निर्देशित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=yI4zy9vM0U&t=1s>

## 48) समाधान: (c)

► कथन 1 सही है: नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ़ इंडिया लिमिटेड (NSE) मुंबई में स्थित भारत का प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज है। NSE की स्थापना 1992 में देश में पहले डिम्युचुराईज्ड इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज के रूप में हुई थी।

► कथन 2 सही है: एनएसई सह-स्थान सुविधा के तहत, व्यापार सदस्य अपने सर्वर को एक्सचेंज के डेटा सेंटर में रख सकते हैं, जहां वे ट्रेडों के तेजी से निष्पादन में मदद करते हुए मूल्य प्रबंधन तक तेजी पहुंचते हैं। एनएसई की सह-स्थान सुविधा, लागत के लिए दलालों तक पहुंच प्रदान करती है। ज्यादा पहुंच का मतलब है कि दलाल व्यापार को तेजी से निष्पादित कर सकते हैं। भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI) ने नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) को छह महीने के लिए प्रतिभूति बाजारों पर धन जुटाने से रोक दिया है और NSE के सह-स्थान घोटाले के तहत NSE पर 1000 करोड़ रुपये का जुर्माना भी लगाया है।

स्रोत: <https://www.youtube.com/watch?v=y4K0NDcQZ7A>

## 49) समाधान: (b)

► कथन 1 गलत है: यह विश्व बैंक द्वारा प्रबंधित एक अनुदान-वित्तपोषण तंत्र है, जो दुनिया भर में आपदा जोखिम प्रबंधन परियोजनाओं का समर्थन करता है।

► कथन 2 सही है: देशों को आपदा जोखिम प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन अनुकूलन को विकास की रणनीतियों और निवेश कार्यक्रमों में एकीकृत करने और आपदाओं से जल्दी और प्रभावी ढंग से उबरने में मदद करने के लिए जीएफडीआरआर आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए सेंडाई फ्रेमवर्क के कार्यान्वयन में योगदान देता है।

स्रोत: दैनिक करंट अफेयर्स और पीआईबी Study IQ

## 50) समाधान: (d)



Source: [https://www.youtube.com/watch?v=\\_2ZiYnsI9gQ](https://www.youtube.com/watch?v=_2ZiYnsI9gQ)